॥ भूमिका ॥

जर्राही की विद्या भारतवर्ष में बहुत प्राचीन काल से चली आती है। आर्य ग्रन्थों में इसका सविस्तर वर्णन है परन्तु काल के प्रभाव से अब इसका वर्ताव जैसा कि चाहिये नहीं पाया जाता तो भी हिन्दुस्तान के गांव २ और शहर २ में ऐसे २ क्रिया कुशल मनुष्य विद्यमान हैं जिन के द्वारा ऐसे २ इलाज हुए है जिनको देखकर पश्चिमी डाक्टर और सर्जन लोग भी चकित होजाते हैं। चरक सुश्रुत, वाग्भट इत्यादि प्राचीन चिकित्सकोंने अपनी पुस्तकों में इस विषय को बहुत विस्तार के साथ लिखा है और जिन अस्त्र शस्त्रों को डाक्टरों के हाथ में देखकर वह उन्हीं की ईजाद समझी जाती है उनकी आकृति बनाने की क्रिया और काम मे लाने की रीति सब कुछ उनके ग्रन्थो मे मिलती है।

उर्दू भाषा में भी कई एक ग्रन्थ इस प्रकरण में प्रकाशित होचुके हैं परन्तु हिन्दी भाषा में ऐसे ग्रन्थों की बहुत कमी है, इसी कमी के पूरा करने के लिये यह उद्योग किया गया है। इस ग्रन्थ में जर्राही के कामका यथा शक्ति पूरा २ विवरण दिया गया है और अनेक चित्रों से इसको चित्रित किया गया है। सूचीपत्र पर सरसरी नजर डालने से विदित होगा कि जर्राही विद्या के अतिरिक्त और भी अनेक रोगों के उपाय और परीक्षित प्रयोग इसमें लिखे गये हैं। इसके बनानेमें उर्दू के मुफीदुल अजसाम संस्कृत की सुश्रुत संहिता, तथा अन्य अनेक उर्दू, फारसी, हिन्दी, संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी ग्रन्थों में सहायता लीगई है आशा है कि सर्व साधारण और मुख्यतः वैद्य हकीम और जर्राह लोगों को इस ग्रन्थ से पूरी २ मदद मिलेगी॥

ग्रन्थकार

विषय सूची वृहत् जर्राही प्रकाश

❀ तीसरा भाग ❀

चौथा भाग

॥ इति ॥

❀ तिब्बे इहसानी ❀

इस पुस्तक को देखकर पाठक अवश्य आह्लादित होंगे इस पुस्तक के आरम्भ में वैद्यों और रोगियों के उपयोगी ७२ नियम, और प्रथम और द्वितीय परिच्छेद में गर्भ रहने के उपायों से लेकर सन्तानोत्पत्ति,वालकों की और उनका पालन पोषण तीसरे परिच्छेद में वालकों की पूर्ण चिकित्सा चौथे परिच्छेद में शरीरकी व्याख्या, मुसहिल वमन, सींगी, जौंक लगाना आदि एवम् विना औषध के चिकित्सा करने का उपाय, पांचवें परिच्छेद में औषधियोंके गुणों की व्याख्या, छठेमें वीस अध्यायों में सिरसे पांव तक के समस्त रोगोंका निदान तथा चिकित्सा जो खास पुरुष और खास स्त्रियों को होते हैं एवम् वाजी करण की औषधों का वर्णन, सप्तम में अनेक प्रकार के ज्वरोंकी चिकित्सा, अष्टम में नाना भांति के विषों की चिकित्सा नवम में प्रथित औषधों के परीक्षित और विख्यात नुसखे जो वैद्यों और अत्तारों को बनाने पड़ते हैं अर्थात् इत्रीफल, जवारिस रोगन, शिकंजवीन, माजून, शर्वत, गोला, मरहम, तेजाव, चूर्ण, अर्क, लौक, हलुआ, याकूती आदि दशम परिच्छेद के आदि में हिन्दी वैद्यक के अनेक परीक्षित प्रयोग जैसे चन्द्रोदय, मृगांग, मालतीवसन्त, पाककुश्ते वनाने की तरकीवें और अन्तमें अनेक प्रकार के अनाज, मांस, फल दूध, कन्द, साग, तरकारी, चोवचीनी, और माल जोवनके वनाने तथा उसके सेवनकी विधि सरल भाषामें सविस्तर वर्णन है कहां तक कहैं यह पुस्तक यूनानी और मिश्रानी का कल्प वृक्ष है सुविज्ञ ग्रन्थकारने सचमुच दरियाको कूजे में भरा है । मोटे कागज पर छपी है जिल्द वहुत मजवूत वांधी गई है मूल्य केवल १) आना ।

केशकल्पद्रुम अर्थात् खिजाव शतक ।

इस पुस्तक में वालों पर खिजाव करने के उत्तमोत्तम१०० नुसखे वड़े वड़े हकीमों तथा वैद्यो के अजमाये हुए संग्रह करके लिखे गये हैं एक एक नुसखा वुड्ढों को जवान वनाने और वे रोजगारों को धन कमाने के लिये काफी है मूल्य ।) आना मात्र है ।

मिलने का पता–

लाला श्यामलाल हीरालाल श्यामकाशी प्रेस मथुरा ।

॥ श्रीजगदीश्वरायनमः ॥

बृहत जर्राही प्रकाश

प्रथम भाग।

मस्तक के फोड़े का वर्णन

एक फोड़ा (देखो चित्र नं० १) सिर के तालू पर पोस्त के

चित्र नं० १

दाने की बराबर होता है और इसके आस पास हथेली के बराबर स्याही होती है, यह स्याही आंधी लहर देती है और ज़हरबाद से सम्बन्ध रखती है यहां तक मे स्याही फैलती है कि समस्त शरीर श्याम वर्ण होजाता है ऐसा रोगी चार या आठ पहर के अनन्तर मृत्यु के सन्मुख पहुंच जाता है। यदि कोई उत्तम मरहम और चतुर उस्ताद जर्राह मिल जाय तो

चिकित्सा करने से आराम हो भी जाता है और जो वरम की स्याही कंठ से नीचे उतर आई होय तो रोग को असाध्य जानो और फोडे का निशान ऊपर लिखे चित्र में देखलो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से होती है कि पहिले सेरू की फस्द खोले और तीन छटांक रुधिर निकाले और फस्द के पीछे वमन कराना हित है क्योंकि यह रोग दिल अर्थात् हृदय के समीप में होता है ऐसा न हो कि मवाद नीचे उतर आवे । वमन की औषधि यह है ।

❀ नुसखा वमन कराने की ❀

सिरका १० तोले, लाल बूरा २ तोले, मैंनफल ६ माशे इन सबको दो सेर जल में औटावे जब आधा जल बाकी रहजाय तब उतार कर रखले फिर इसको दो तथा तीन बार में पिलादे तो वमन हो जायगी और उस दाने पर तथा उस स्याही पर तेजाब लगावें तथा प्लास्टर रक्खें जब छाला पडजाय तो दूसरे दिन प्रातःकाल काट डालें फिर ऐसा मरहम लगावै कि जिस से घाव न भर जावे और खूब मवाद निकल जावै । वह मरहम यह है ।

❀ नुसखा मरहम ❀

तूतिया हारुनी १ तोला; जंगाल हरा १ तोले; तबकी हरताल ६ माशे, कच्चा सुहागा चौकिया १ तोले, बिरोजा तर ४ तोले, फिटकिरी १ तोले, आंबाहलदी १ तोले इन सबको महीन पीसकर बिरोजे में मिलावे फिर उस में गौका घृत ८ तोले थोडा २ करके मिलावें फिर ब्रांडी शराब तथा [illegible] से इस मरहम को खूब धोकर घाव पर लगावै

जब वो घाव सुरखी पर आजाय तब यह दूसरा म... ल-
गाना चाहिये ।

❀ दूसरा मरहम ❀

कालेतिल का तेल ऽ। सेर लेकर गरम करै फिर आदमी के सिरकी हड्डी २ तोले, नीमके पत्ते १ तोले इन दोनों को तेल में डालकर जलावे जब जल जाय तब तेल का छान डाले पीछे दो तोले मोम मिलावै और मुर्दासंग ६ माशे, सफेदा काशगरी ६ माशे, इन सबको पृथक पृथक पीस छानकर पृथक पृथक उस तेलमें डाले और मंदी आगपर पकाकर चाशनी करे जब उस चाशनीका तार बंधने लगै तौ अफीम छःमाशे मिलावे जब अफीम उसमें मिलजावे तब उतार कर ठण्डा करके रख छोडे फिर इस मरहम को उस घाव पर लगावे और देखे कि कहीं और सूजन तो नहीं है और जो सूजन होय तो उस सूजन पर यह लेप लगावे ॥

❀ लेप की विधि ❀

सूरंजान कडवा ६ माशे, नाखूना १ तोले अमलतास का गूदा २ तोले, बाबूने के फूल १ तोले, अफीम दो माशे इन सबको हरी मकोय के रस में पीसकर गुनगुना करके लगावे फिर दो चार दिनके पीछे देखे कि उस घाव में से पीव निकलती है या पानी निकलता है जो पानी निकलता हो तो उस मरहम का लगाना बंद करे और यह दूसरा मर हम लगावे ।

❀ दूसरा मरहम ❀

पहिले रोगन गुल १२ तोले गरमकरै और पीला मोम २

चिकित्सा करने से आराम हो भी जाता है और जो वरम की स्याही कंठ से नीचे उतर आई होय तो रोग को असाध्य जानो और फोडे का निशान ऊपर लिखे चित्र में देखलो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से होती है कि पहिले सेरू की फस्द खोले और तीन छटांक रुधिर निकाले और फस्द के पीछे वमन कराना हित है क्योंकि यह रोग दिल अर्थात् हृदय के समीप में होता है ऐसा न हो कि मवाद नीचे उतर आवे। वमन की औषधि यह है।

❀ नुसखा वमन कराने की ❀

सिरका १० तोले, लाल बूरा २ तोले, मैंनफल ६ माशे इन सबको दो सेर जल में औटावे जब आधा जल बाकी रहजाय तब उतार कर रखले फिर इसको दो तथा तीन बार में पिलादे तो वमन हो जायगी और उस दाने पर तथा उस स्याही पर तेजाब लगावें तथा प्लास्टर रक्खें जब छाला पडजाय तो दूसरे दिन प्रातःकाल काट डालें फिर ऐसा मरहम लगावे कि जिस से घाव न भर जावे और खूब मवाद निकल जावे। वह मरहम यह है।

❀ नुसखा मरहम ❀

तूतिया हालनी १ तोला; जंगाल हरा १ तोले; तबकी हरताल ६ माशे, कच्चा सुहागा चौकिया १ तोले, बिरोजा तर ३ तोले, फिटकिरी १ तोले, आंबाहलदी १ तोले इन सबको महीन पीसकर बिरोजे में मिलावे फिर उस में गौका घृत २ तोले थोडा २ करके मिलावें फिर ब्रांडी शराब तथा [illegible] में इस मरहम को खूब धोकर घाव पर लगावै

जब वो घाव सुरखी पर आजाय तब यह दूसरा मरहम लगाना चाहिये ।

❀ दूसरा मरहम ❀

कालेतिल का तेल ऽ। सेर लेकर गरम करे फिर आदमी के सिरकी हड्डी २ तोले, नीमके पत्ते २ तोले इन दोनों को तेल में डालकर जलावे जब जल जाय तब तेल का छान डाले पीछे दो तोले मोम मिलावै और मुर्दासंग ६ माशे, सफेदा काशगरी ६ माशे, इन सबको पृथक पृथक पीस छानकर पृथक पृथक उस तेलमें डाले और मंदी आगपर पकाकर चाशनी करे जब उस चाशनीका तार बंधने लगै तो अफीम छःमाशे मिलावे जब अफीम उसमें मिलजावे तब उतार कर ठण्डा करके रख छोड़े फिर इस मरहम को उस घाव पर लगावे और देखे कि सुर्खी और सूजन तो नहीं है और जो सूजन होय तो उस सूजन पर यह लेप लगावे ॥

❀ लेप की विधि ❀

सूरंजान कडवा ६ माशे, नाखूना १ तोले अमलतास का गूदा २ तोले, बाबूने के फूल १ तोले, अफीम दो माशे इन सबको हरी मकोय के रस में पीसकर गुनगुना करके लगावे फिर दो चार दिनके पीछे देखे कि उस घाव में से पीव निकलती है या पानी निकलता है जो पानी निकलता हो तो उस मरहम का लगाना बंद करे और यह दूसरा मरहम लगावे ।

❀ दूसरा मरहम ❀

पहिले रोगन गुल १२ तोले गरमकरै और पीला मोम

तोले उसमें डालकर पिघलावै फिर संग जराइत २ माशे, रस कपूर २ माशे, सफेदा काशगरी २ माशे, मुर्दासंग २ माशे मुर्गी के अण्डे के छिलके की भस्म ३ माशे, नीलाथोथा जला हुआ २ रत्ती, इन सबको पीस छानकर उस तेल में मिलावे जब थोड़ी चाशनी हो जाय तो नीचे उतार लेवे और ठण्डा करके घावपर लगावे और रोगी को हलवान का शोरवा और रोटी या मूंगकी दाल रोटी खिलानी चाहिये और खटाई लाल मिर्च आदि सबसे परहेज करना चाहिये और जो इस दवा के लगाने से पानी निकलना बन्द न हो तो इस की चिकित्सा करनी छोडदे और जानले कि यह फोडा जहरबादका है। यदि आदि में छालाप्रगट होवेतो उसमें चीरादेय और दोतीन दिन तक नीम के पत्ते बांधे पीछे यह मरहम लगावे।

❀ मरहम की विधि ❀

हले ११ तोले रौगनगुल गरम करे फिर उसमें नीमके पत्तों का रस ४ माशे बकायन के पत्तों का रस ४ माशे. बाग् बेरके पत्तों का रस ४ माशे, हरे अमल तास के पत्तों का रस ४ माशे, हरे आमले का रस चार माशे, इन सब रसों को उस तेल में मिलावे जब रस जलजाय और तेल मात्र रहजाय तब पीलामोम २ तोले, सफेद मोम १ तोले डाले फिर सफेदा १ तोले, मुर्दासंग ४ माशे. दम्मुल अखवैन ४ माशे नीलाथोथा ४ रत्ती इन सबको महीन पीसकर उस तेल में मिलावे जब चाशनी हो जाय तब उतारलें फिर उसको घावपर लगावे।

और एक फोडा माथेपर तथा कनपटी तथा गुद्दी पर ऐसा

होता है कि उसमें कुछ भय नहीं होता या तो वो आपही फूट कर अच्छे हो जातेहैं या चीरने वा मरहम लगाने से अच्छे हो जाते हैं ऐसे सब प्रकार के फोडों के वास्ते बहुत अच्छे २ दोचार मरहम इस ग्रन्थ के अंत में लिखेंगें जो सब प्रकार के फोडों और घावों को बहुत जल्दी अच्छा कर देते हैं।

और एकरोग सिरमें यह होता है कि (देखो चित्र नं० २)

चित्र नं० २

बहुतसी छोटी २ फुन्सी होकर सिर में से पानी निकलता है और जहां वह पानी लगजाता है वहां सब दानों की सूरत एकसी होजाती है और वह पानी चेपदार गोंद के पानी के सदृश होताहै इन फुंन्सियों का स्थान ऊपर लिखे चित्र में समझ लेना उस पर यह मरहम लगाना चाहिये ॥

❀ मरहम की विधि ❀

गौका घृत धुला हुआ आधपाव, कबेला ६ माशे, काली मिर्च २ माशे, सिंगरफ २ माशे, इन सबको पीस छानकर उस घीमें मिलावे फिर उस को एक रातभर ओसमें धर-

रक्खे दूसरे दिन लगावै परन्तु इस दवा के लगानेसे पहिले उस स्थानको गरम जलसे सांभर मिलाकर धोडाले इसी तरह सात दिन तक मरहम लगावे तो आराम होजयगा और जो इससे आराम न होवे तो पारा छः माशे, अजवायन खुरासानी, पान बंगलामसाले सहित चार नग पाहिले मरहमकी दवाइयां उस में मिलावे फिर सांभर नमक के गरम जलसे धोके यही मरहम लगावे और नीचे लिखी दवा पिलावेः—

❀ नुस्खा पीने का ❀

गुलाब के फूल ४ माशे, मुनक्का ७ दाने, गुलाबनफशा ६ माशे, सूखी मकोय २ माशे इन सबको रात को पानी में भिगोदे और सवेरेही औटाकर छानले फिर इसमें १ तोले मिश्री मिलाकर पिलावे और चौथे दिन यह दवा देवेः—

❀ नुसखा दूसरा ❀

उसारा रेवंद चीनी २ माशे, शक्कर एक तोले गुलकंदमें मिलाकर खिलावे इस प्रयोग से कै और दस्त भी होंगे और कलिया दाल, भात, खाने को देना चाहिये फिर दूसरे दिन यह दवाई देवेः—

❀ नुसखा ❀

बिही दाना २ माशे, रेशा खतमी ४ माशे, मिश्री एक तोला इनका लुआब निकाल कर पिलावे जब मवाद निकल जावे तब आराम होजावेगा ॥

❀ गलेके फोड़ेका यत्न ❀

फोड़ा (देखो चित्र नं० ३) गर्दन या गुद्दी पर होता

चित्र नं० ३

इस की गुद्दी पर फोड़ा है पहिले सूजनसी होकर बड़ा होजाता है।

है पहले तौ वरम मालूम होताहै उस वक्त उसके घरके लोग तथा अन्य पुरुष अपनी मतके अनुसार सुनी सुनाई औषध तथा सेकादि करतेहैं जब ये पाँच चार दिनका हो जाता है तब उसमें पीड़ा और जलन पैदा होतीहै तब हकीमके पास जाते हैं जब उस पीडा के कारण ज्वर होताहै तब बहुत से मूर्ख हकीम चिकित्सा करतेहैं जब उससे कुछ नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं और कोई जर्राह भी ऐसा मूर्ख होता है कि उस सूजन पर तीव्र लेप लगा देताहै तौ उससे भी रोगी को कष्ट पहुँचता है और जब यह सूजन पैदा होती है उस वक्त इसकी सूरत कछुए कीसी होती है फिर भिड़के छत्ते के समान सूराखदार होजाताहै इसका निशान इस ऊपर लिखी तसवीर में समझ लेना इस रोग पर ऐसा लेप लगाना चाहिये जो इस सूजनको बैठादे वह दवा यह है।

नुसखा लेप।

वालछड़ १ तोले, नागरमोथा ६ माशे, रेवंद खताई ६

दूसरे दिन लगावै परन्तु इस दवा के लगानसे पहिले उस
को गरम जलसे सांभर मिलाकर धोडाले इसी तरह सात
तक मरहम लगावे तो आराम होजयगा और जो इससे
म न होवे तो पारा छः माशे, अजवायन खुरासानी, पान
समसाले सहित चार नग पहिले मरहमकी दवाइयां उस
लावे फिर सांभर नमक के गरम जलसे धोके यही मरहम
वे और नीचे लिखी दवा पिलावैः—

❀ नुसखा पीने का ❀

लाब के फूल ४ माशे, मुनक्का ७ दाने, गुलाबनफसा
शे, सुखी मकोय २ माशे इन सबको रात को पानी में
दे और सबेरेही औटाकर छानले फिर इसमें १ तोले
ी मिलाकर पिलावै और चौथे दिन यह दवा देवैः—

❀ नुसखा दूसरा ❀

मारा रेवंद चीनी २ माशे, लेकर एक तोले गुलकंदमें
कर खिलावै इस प्रयोग से कै और दस्त भी होंगे और
ठ्या दाल, भात, खाने को देना चाहिये फिर दूसरे दिन
दवाई देवैः—

❀ नुसखा ❀

बेदी दाना २ माशे, रेशा खतमी ४ माशे, मिश्री एक
ा इनका लुआब निकाल कर पिलावै जब मवाद निकल
तब आराम होजावेगा ॥

❀ गलेके फोड़ेका यत्न ❀

क फोड़ा (देखो चित्र नं० ३) गर्दन या गुद्दी पर होता

चित्र नं० ७

इस की गुद्दी पर फोड़ा है पहिले सूजनसी होकर बड़ा होजाता है।

है पहले तो वरम मालूम होताहै उस वक्त उसके घरके लोग तथा अन्य पुरुष अपनी मतके अनुसार सुनी सुनाई औषध तथा सेकादि करतेहैं जब ये पांच चार दिनका हो जाता है तब उसमें पीड़ा और जलन पैदा होतीहै तब हकीमके पास जाते हैं जब उस पीडा के कारण ज्वर होताहै तब बहुत से मूर्ख हकीम चिकित्सा करतेहैं जब उससे कुछ नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं और कोई जर्राह भी ऐसा मूर्ख होता है कि उस सूजन पर तीव्र लेप लगा देताहै तो उससे भी रोगी को कष्ट पहुँचता है और जब यह सूजन पैदा होती है उस वक्त इसकी सूरत कछुए कीसी होती है फिर भिड़के छत्ते के समान सूराखदार होजाताहै इसका निशान इस ऊपर लिखी तसवीर में समझ लेना इस रोग पर ऐसा लेप लगाना चाहिये जो इस सूजनको बैठादे वह दवा यह है।

नुसखा लेप।

वालछड़ १ तोले, नागरमोथा ६ मासे, रेवंद खताई ६

ाशे नाखूना ६ माशे, उश्क रूमी ६ माशे, मगज फल्लूस
तोले इन सबको हरी मकोयके अर्कमें पीसकर गुन गुना
ेप करै और सरेरू नसकी फस्त खोले जब उस फोड़े की
ूरत बदलजावे तब वह मरहम लगावे जो पहिले वर्णन की
ाई है और घावपर यह दवा लगावै ।

नुसखा ।

ानपात्र का गूदा ५ तोले लेकर बकरीके दूधमें भिगादे
फिर उसको निचोडकर खरल करे और उसमें दम्मुल अखवेन
मर, अंजरूत, अफीम ये सब दवा छः माशे और शहद ४
ोले, मुर्गीके ३ अंडेकी जर्दी इन सबको एकत्र कर खरल करे
ौर फोडा जहांतक फैलाहो उतना ही बड़ा एक फाया बना
र उसपर इस दवाको लगाकर इस फाये को फोडे पर लगादे
ब उसमेंछीछडे दीखें तो काटकर निकाल देवैजब फोडालाल
ोजाय और उसमेंमें दुर्गंधि न आवै तब इस दवा को बंद
र यह मरहम लगाना शुरू करे ।

मरहम की विधि ।

पहले गुलरोगन दो छटांक गरम करके उसमें जलजोति दो
ोले कूटकर डाले जब उसका रंग अत्यन्त लाल होजावे तब
उसको छानले फिर उसमें मोम २ तोले, नीलाथोथा हरा १
ती मिलावे और इसमें १ तोले, जैतूनका तेल मिलाकर रख
ोडे और उसघावपर लगावे और इस रोगवाले मनुष्यको धोवा
मूंगकी दाल और रोटी खिलाना चाहिये और पानीको औटावे
जब आधापानी जलजावे तबठंडा करके रखछोडे प्यास
लगे जब इसी पानी को पिलावे कच्चा पानी न पिलावे ॥

कानकी लौके फोडे का यत्न ।

एक (फोडा देखो चित्र नं ४) कानकी लौके पास होता है

चित्र नं० ४

इसमें केवल सूजन की गांठगी होती है पीछे पककर फोड़ा होजाता है इस फोड़ेका निशान ऊपर लिखी तसवीरमें है इस फोडेकी चिकित्सा इस प्रकार करना चाहिये कि पहिले इसपै ऐसी दवा लगावे जिससे ये फोड़ा नरम होजावे क्यों कि जो इस कच्चे फोड़े में चीरा लगाया जावे तो रोग बढ़ जाता है इस लिये चार दिनकी देरी होजाय तो कुछ हानि नहीं परन्तु कच्चे पर चीरा देनेसे रोगकी वृद्धि होती है और पहले लगाने की दवा यह है :—

नुसखा ।

शहतूत के पत्ते २ तोले, नीमके पत्ते २ तोले, सफेद प्याज १ तोले, सांभर नोन ६ माशे इन सबको महीन पीस गरम करके लगावे जो इसके लगाने से फूट जायगो अच्छा है नहीं तो इसको नशतर से चीर देवे अथवा जैसा समय

पर उचित समझे वैसा करे फिर यह मरहम लगावैः—

मरहम की विधि ॥

सरसों का तेल ७ तोले लेकर आगपर गरम करे फिर इसमें पीला मोम ३ तोले, संग बसरी २ तोले, उरदका आटा २ तोले इन सबको उस तेल में मिलाकर खूब रगड़े और ठंडा करके फोड़े पर लगावे और जो इस मरहम से आराम न हो, तो वह मरहम लगावे कि जिससे रतनजोत मिली है और जब मांस बराबर हो जावे तब नीचे लिखी काली मरहम लगावैः—

काली मरहम ।

कड़वा तेल १० तोले, सिंदूर ४ तोले, इन दोनों को लोहे की कड़ाई में आगपर पकावे और नीमके सोटे से घोटता रहे जब इसका तार बंधने लगे तब उतार कर रख छोड़े और फोड़े पर लगावे और फोड़े में चीरा देना हो तो चौड़ा चीरा देवे क्योंकि कम चीरा देनेसे इसमें मवाद रह जायगा ।

आंख के फोड़े का यत्न ।

यह फोड़ा आंख के कोए में होता है यह आपही फूट जाता है इस फोड़े को इस तसवीर में देखो [चित्र नम्बर५]

चित्र नं० ५

आंख का फोड़ा ।

इस फोड़े का [illegible] यह है कि पहले वह मरहम लगावे

जिसमें नीलाथोथा और जंगाल पडा है जो इस पुस्तक में ऊपर वर्णन हुई है जब उसका मवाद निकल जाय तब यह मरहम लगावैः—

॥ मरहम की विधि ॥

ऊंट के दाहिने घुटना की हड्डी २ तोले घी में जलाकर निकाल ले और मोंम सफेद नौ माशे, सिंदूर गुजराती ४ माशे मिलाकर रगडे और लगावे और नाक में यह हुलास सुंघावैः—

॥ सुघाने की हुलास ॥

नकछिकनी एक तोले, सूखा तमाखू ६ मासे, काली मिर्च २ माशे सबको पीस कर सुंघावै क्योंकि मवाद ऊपरकी ओर झुक जायगा तौ अच्छा होगा यह स्थान नासूर का है और जो इस दवासे आराम न हो तौ ऊंटके दाहिने घुटनेकी हड्डी बासी पानी में घिसकर उसकी बत्ती रक्खे और उसीका फाया बनाकर रक्खे क्यों कि यह चिकित्सा नासूर की है और यह फोड़ा भी नासूरही के भेदोंमें से है दूसरे उपाय से कम आराम होता है ॥

॥ नेत्रों की वाफनी का यत्न ॥

एक रोग पलकोंमें ऐसा होता है कि वह पलकके बालोंको उड़ा देता है और पलकें लाल पड़जातेहैं इसका इलाज यहहैः—

नुसखा ।

तिल का तेल पौने छः छटांक लेकर कांच के पात्रमें धरै और उसमें गुलाब के ताजी फूल ५ तोले मिलाकर ४० दिन तक रक्खा रहने दे अगर ताजी फूल न मिलेतो सूखे फूलोंको

उचित समझे वैसा करे फिर यह मरहम लगावेः—

मरहम की विधि ॥

सरसों का तेल ७ तोले लेकर आगपर गरम करे फिर इसमें
मोम ३ तोले, संग जसरी २ तोले, उरदका आटा २
इन सबको उस तेल में मिलाकर खूब रगड़े और ठंडा
फोड़े पर लगावे और जो इस मरहम से आराम न हो,
वह मरहम लगावे कि जिससे रतनजोत मिली है और जब
बराबर हो जावे तब नीचे लिखी काली मरहम लगावेः—

काली मरहम।

कडवा तेल १० तोले, सिंदूर ३ तोले, इन दोनों को लोहे
कड़ाई में आगपर पकावे और नीमके सोटे से घोटता रहे
इसका तार बंधने लगे तब उतार कर रख छोड़े और
पर लगावे और फोड़े में चीरा देना हो तो चौड़ा चीरा
क्योंकि कम चीरा देनेसे इसमें मवाद रह जायगा।

आंख के फोड़े का यत्न।

फोड़ा आंख के कोये में होता है यह आपही फूट
है इस फोड़े को इस नम्बर ९ में देखो। [चित्र नम्बर ९]

[illegible] ९ [illegible]

[illegible]

[illegible] फोड़े [illegible] है कि पहले यह मरहम लगावे

जिसमें नीलाथोथा और जंगाल पड़ा है जो इस पुस्तक में ऊपर वर्णन हुई है जब उसका मवाद निकल जाय तब यह मरहम लगावै:—

॥ मरहम की विधि ॥

ऊंट के दाहिने घुटना की हड्डी २ तोले घी में जलाकर निकाल ले और मोम सफेद नौ माशे, सिंदूर गुजराती ४ माशे मिलाकर रगडे और लगावे और नाक में यह हुलास सुंघावै:—

॥ सुघाने की हुलास ॥

नकछिकनी एक तोले, सूखा तमाखू ६ मासे, काली मिर्च २ माशे सबको पीस कर सुंघावै क्योंकि मवाद ऊपरको और झुक जायगा तौ अच्छा होगा यह स्थान नासूर का है और जो इस दवासे आराम न हो तौ ऊंटके दाहिने घुटनेकी हड्डी बासी पानी में घिसकर उसकी बत्ती रक्खे और उसीका फाया बनाकर रक्खे क्यों कि यह चिकित्सा नासूर की है और यह फोड़ा भी नासूरही के भेदोंमें से है दूसरे उपाय से कम आराम होता है ॥

॥ नेत्रों की वाफनी का यत्न ॥

एक रोग पलकोंमें ऐसा होता है कि वह पलकके बालोंको उड़ा देता है और पलके लाल पड़ जातेहैं इसका इलाज यहहै:—

नुसखा ।

तिल का तेल पौने छः छटांक लेकर काच के पात्रमें धरे और उसमें गुलाब के ताजी फूल ५ तोले मिलाकर ४० दिन तक रक्खा रहने दे अगर ताजी फूल न मिलैतो सूखे फूलोंको

उचित समझे वैसा करे फिर यह मरहम लगावैः—

मरहम की विधि ॥

ारसों का तेल ७ तोले लेकर आगपर गरम करे फिर इसमें
ा मोम १ तोले, संग वसरी २ तोले, उरदका आटा २
ऽ इन सबको उस तेल में मिलाकर खूब रगड़े और ठंडा
के फोड़े पर लगावे और जो इस मरहम से आराम न हो,
वह मरहम लगावे कि जिससे रत्नजोत मिली है और जब
त बराबर हो जावे तब नीचे लिखी काली मरहम लगावैः—

काली मरहम ।

कडवा तेल १० तोले, सिंदूर ४ तोले, इन दोनों को लोहे
कढ़ाई में आगपर पकावे और नीमके सोटे से घोटता रहे
ा इसका तार बंधने लगे तब उतार कर रख छोड़े और
ड़े पर लगावे और फोड़े में चीरा देना हो तो चौड़ा चीरा
ं क्योंकि कम चीरा देनेसे इसमें मवाद रह जायगा ।

आंख के फोड़े का यत्न ।

(फाड़ा आंख के कोए में होता है यह आपही फूट
ा ॥ है इस फोड़े को इस तसवीर में देखो [चित्र नम्बर५]

फोड़े की चिकित्सा यह है कि पहले वह मरहम लगावे

जिसमें नीलाथोथा और जंगाल पडा है जो इस पुस्तक में ऊपर वर्णन हुई है जब उसका मवाद निकल जाय तब यह मरहम लगावैः—

॥ मरहम की विधि ॥

ऊंट के दाहिने घुटना की हड्डी २ तोले घी में जलाकर निकाल ले और मोंम सफ़ेद नौ माशे, सिंदूर गुजराती ४ माशे मिलाकर रगडे और लगावे और नाक में यह हुलास सुंघावैः—

॥ सुंघाने की हुलास ॥

नकछिकनी एक तोले, सूखा तमाखू ६ मासे, काली मिर्च २ माशे सबको पीस कर सुंघावै क्योंकि मवाद ऊपरकी ओर झुक जायगा तौ अच्छा होगा यह स्थान नासूर का है और जो इस दवासे आराम न हो तौ ऊंटके दाहिने घुटनेकी हड्डी बासी पानी में घिसकर उसकी वत्ती रक्खे और उसीका फाया बनाकर रक्खे क्यों कि यह चिकित्सा नासूर की है और यह फोड़ा भी नासूरही के भेदोंमें से है दूसरे उपाय से कम आराम होता है ॥

॥ नेत्रों की बाफनी का यत्न ॥

एक रोग पलकोंमें ऐसा होता है कि वह पलकके बालोंको उड़ा देता है और पलकें लाल पड़जातेहैं इसका इलाज यहहैः--

नुसखा ।

तिल का तेल पौने छः छटांक लेकर कांच के पात्रमें धरे और उसमें गुलाब के ताजी फूल ५ तोले मिलाकर ४० दिन तक रक्खा रहने दे अगर ताजी फूल न मिलेंतो सूखे फूलोंको

ार पानी में औटावै जब आधा पानी रहै तब छानकर फिर
: सेर तिलका तेल डाल कर औटावे जब पानी जल जाय
र तेल मात्र रह जाय तब ठंडा करके शीशी में भर रक्खे
का हकीम लोग गुल रोगन बोलते हैं और अकसर बना
ाया अत्तारों की दुकान पर मिलता है ऐसा गुल रोगन
मासे, मुर्गी के अण्डे की सफेदी दो मासे, कुलफा के पत्ते
मासा, इन सबको मिलाकर पलकों पर लेप करै ॥

॥ दूसरा नुस्खा ॥

बादाम की मींगी स्त्री के दूध में घिस कर लगाया करे ॥
थवा अजमोद को मुर्गी के अंडे की सफेदी में घिस कर
ाया करे अथवा धतूरे के पत्तोंका अर्क और भांगरेके पत्तों
अर्क इन दोनों को मिलाकर इसमें सफेद कपड़ा भिगोकर
ाले और गौके घीमें उस कपड़े की बत्ती बनाकर जलावे
र मिट्टी के बरतन में उसका काजल पाड कर नित्य प्रति
ाने से सब पलक ठीक होकर असली सूरत पर
ाजांयगीं ॥

दूसरा रोग ।

इस में नेत्र के ऊपर की वाफनी में खपटा सा जम जाता
इस रोगके होने से पलक भारी हो जाते हैं और भैंडे आ-
ी की तरह देखने लगता है ऐसे रोगमें आंखोंमें चांदीकी
ाई का फेरना बहुत गुण करता है ॥

नेत्र के नासूर का इलाज ॥

एक फोड़ा आंख के कोए में होता है जहां से गीड अ-
र् आंख का मल निकलता है (देखो चित्र नंबर ६)

चित्र नं० ७

इस चित्र की आंख के कोने में जो स्याही की बूंद मालूम होती है उसको नासूर जानना चाहिये।

और इस फोड़े की यह परीक्षा है कि पहिले तो इसकी रंगत लाल होती है फिर इसका मुख सफेद होजाता है फिर पक कर घाव होजाता है फिर घाव के होने पर नेत्रों को बड़ा कष्ट होता है इसको पहिले हकीमों ने नासूर वर्णन किया है और इस फोड़े में और पहिले लिखे हुए आंखके फोड़े में इतनाही भेद है कि इसका मुख सफेद होता है और पहिले फोड़े का मुख लाल होता है यह फोड़ा रिसने लगता है और कभी फिर भर आता है इसकी चिकित्सा यह है ॥

इलाज ।

(१) अलसी और मेथी का लुआब निकाल कर आंखों में टपकाने से यह रोग जाता रहताहै अथवा (२) मुर्गी के अंडेकी जर्दी और केशर इन दोनों को पीस कर घाव पर लगावै अथवा [३] अफीम और केशर इन दोनों को पीस कर नेत्रों के ऊपर लगावै ॥

और जो यह रोग बहुतही दुख देने लगे तो कुत्तेकी ज
को जलाकर उस मनुष्य की लार में घिसकर नेत्रोंमें ल
से नासूर बहुत जल्दी अच्छा होता है आंखके
के फोडों का इलाज हम लिख आये हैं वे भी इसमें
करते हैं, अथवा एलुआ, लोबान, अनार के फूल, म
मक्खी, दंमुल अखैवन; फिटकरी ये सब दवा तीन
माशे ले और इनको महीन पीसकर गुलाब जल में मिल
इसकी लंबी गोली बनाले फिर नासूर के मुँह को पोंछ
उस में टपकावे तो सात दिन के लगाने से बिल
आराम हो जायगा ।

नेत्र के घाव का यत्न ।

एक फोड़ा [चित्र नंबर ७] इस प्रकार का होता है

नेत्रों में गेहूं के आकार कासा दिखाई देने लगता है इ
चिकित्सा यह है ॥

नुसखा गोली।

सोनामक्खीको गधी के दूध में आठ पहर भिगोकर छाया में सुखावै और अफीम २॥ माशा कतीरा ३॥ माशे, दरयाई १॥ माशे, कुंदरू गोंद ३॥ माशे, सफेदा २ तोला चार माशे, बबूल का गोंद १४ माशे, इन सबको कूट छान कर मुर्गे के अंडेकी सफेदी में मिलाकर गोलियां बनावे और १ गोली को पानी में घिसकर हररोज आंखों में लगाया करै तो यह घाव शीघ्र अच्छा होजायगा।

पलकों की सूजन का यत्न।

एक रोग ऐसा होताहै कि पलकों के किनारे पर सूजन होजाती है उसका इलाज यह है [१] मोम को गरम करके लगावै। (२) किसमिस को चीर कर उसे गरम करके सूजन पर लगावै। [३] बडी कौड़ी पानी में घिसकर पलक की सूजन पर लगावै। [४] मक्खी के सिरको काट कर सूजनपर लगावै तो सूजन अच्छी हो जाती है [५] रसौत को पानी में घिसकर पलक की सूजन पर लगाया करै तो जाती रहती है॥

नोट--प्रकट हो कि नेत्रों के रोग तो बहुत हैं इस लिये उन सबके इलाज विस्तार पूर्वक अन्य भाग में लिखेंगे यहां तो केवल घाव और फोड़ा की चिकित्सा वर्णन की गई है।

नाक के फोड़ों का यत्न।

एक फोडा नाक में होता है उसको नाकड़ा कहते हैं॥ इस फोडे का निशान नीचे लिखी तसवीर (चित्र नं० ८) में

नाकड़ा रोग।

१०. चित्र

समझ लेना इस रोग की चिकित्सा यह है कि पहिले यह सूंघनी सुंघावैः—

सूँघने की दवा।

सेंधा नमक, चौकिया सुहागा, कच्ची फिटकरी, जंगाल जला हुआ इन सब औषधियों को बराबर ले महीन पीसकर सुंघावै जब वह फोडा चारो ओर से नाककी त्वचा को छोड दे तो उस सडे हुए मासको सुई से छेदकर निकाल डाले फिर यह मरहम लगावैः—

मरहम की विधि।

गौ का घी २ तोले, नीला थोथा २ माशे, जंगाल २ माशे, पीली राल २ माशे, सफेदा काशगरी ६ माशे, इन सब को महीन पीसकर उसको घृतमें मिलाकर पानी से खूब धोके लगावै तो ईश्वर की कृपा से बहुत जल्दी आराम होगा।

नाक के भीतर घाव की दवा।

मोम पीला एक तोला, गुलरोगन २ तोले लेकर इसमें मोम

पिघलावै फिर उसमें मुरदासंग २ माशे, वंग ४ माशे ये सब मिलाकर नाकमें भरे तौ घाव शीघ्र अच्छा हो जायगा अथवा बनशन के फूल ९ माशे, बीहदाने ६ माशे, इन दोनों को थोडे पानी मे ओटावै फिर मसल कर छानले फिर इसको २ तोले गुलरोगन में मिलावै, और एक तोले सफेद मोम मिलाकर मरहम बनाकर घाँव पर लगावैः—

❀ नाक के दूसरे घाव की दवा ❀

मुरगी की चर्बी और मोम इन दोनों को बराबर लेकर घी में पकावै जब ठंडा होजाय तब उसमें सफेद कपड़े की बत्ती बनाकर नाक में रक्खे अथवा सफेद कत्था और मुर्गी की चरबी इन दोनों को पीसकर नाकके भीतर लेप करै अथवा मुरदा संग; भैंस के सींग का गूदा, मुर्गे की चरबी इन सब को गुल रोगन में पकावे जब मरहम बनजाय तब फिर उस में रुई की बत्ती भिगोकर नाक में रक्खे।

अथवा मोम ३॥ माशे, कपूर ३॥ माशे, सफेदा १। तोले, गुल रोगन १४ माशे पहिले गुलरोगन को गरम कर फिर उसमें मोम को मिलावे और सफेदा के पानी से धोकर मिलावे फिर इसे गरम कर खूब घोटे जब मरहम के सदृश हो जाय तब रख छोड़े फिर उस घाव को देखै जो घाव नाक में बहुत भीतरा होवे तौ इसकी बत्ती बनाकर नाकमें रक्खे और जो घाव पास हो तौ वैसे ही लगादेः—

❀ नकसीर की चिकित्सा ❀

जो नाक से रुधिर बहा करता है उसे नकसीर कहते हैं यह दो प्रकार की होती है एक तौ गोहरान से, दूसरा खून

बोहरान के कारण से हो तो उस

हैं कि चौथे सातवें नवें ग्यारहवें और चौदहवें
के दिनों में उत्पन्न होती है उसे बन्द न करे
बन्द करने से जान का भय है और जो बोह-
से न हो तो कुदरू गोंद के द्वारा बंद करदेवे

❀ नुसखा ❀

लताई, वंश लोचन, सफेद कत्था बड़ी इला-
सिलखड़ी, इनकी बराबर लेके पीसकर रख
पर तथा कनपटी पर लगावे।

❀ नुसखा ❀

तोले, बबूल के पत्ते १ तोले, हरी मेंहदी
मले १ तोला, सफेद चन्दन १ तोले इन
ावे और जो इस से भी बन्द न हो तो

❀ नुसखा ❀

तुख्मरेहां १ तोला, सफेद चन्दन १ तोला, कपूर ६ माशे इनको महीन पीसकर हरे धनिये के अर्क में मिलाकर लेप कर यह औषधि बड़ी विचित्र चमत्कारक है:—

❀ पीनस की चिकित्सा ❀

एक रोग नाक में होता है उसे पीनस कहते हैं यह रोग उपदंश से सम्बन्ध रखता है जो रोगी यह बात स्वीकार न करे और कहै कि उपदंश नहीं हुआ तौ विश्वास न करे क्यों कि उपदंश बाप दादे से भी हुआ करते हैं यह बात बहुत से हकीम और डाक्टरों ने पुस्तकों में लिखी है और किसी २ का मत है कि पीनस गरम नजले से भी होता है यह अपनी आंखों से भी देखा है। इस रोग में प्रथम सुगंधि और दुर्गंधि कुछ नहीं प्रतीत होती फिर मस्तक और ल-लाटमें पीडा हुआ करती है और आवाज में भी कुछ फरक होजाता है और उसकी चिकित्सा यह है कि उस रोगी को जुल्लाब देवै और फस्द खोले और वमन करावे और नीचे लिखी हुई नास सुँघावे:—

❀ नास की विधि ❀

पलास पापडा; कंजाकी मिंगी, लाल फिटकरी, लाल नकछिकनी, सूखी तमाखू इन सबको समान भाग ले पीस छान कर सुंघावे जो अधिक छींक आवै तौ शीघ्र आराम हो जायगा नहीं तौ नाकके बीचमें की हड्डी जाती रहती है उसके लिये देवदारू का तेल और अंगरेजी तारचीन का तेल बहुत गुणदायक होता है अथवा कद्दू का तेल व काहू

का तेल वा पेठ का तेल गुण करता है और जो और सामर्थ्य हो तो चोवचीन या उशवा का माजून का सेवन करावे अन्त को हड्डी निकल कर नाक वैठ जाती है और वाणी वदल जाती है ऐसी दवाइयों से घाव अच्छा होजाताहै परन्तु रूपतो विगडही जाता है और जो ये रोग उपदंश के कारण से होतो उसकी चिकित्सा इस प्रकार से करे कि पहिले तो जमालगोटा का जुलाव देवे फिर वेगोलियां खिलावे जो इस पुस्तक में उपदंश की चिकित्सा में लिखी हैं और नुसखा भी इसी रोगकाहै जो उपदंशके संवधसेहै

❀ नुसखा ❀

काली मिर्च, पीपल वडी. सूखे आमले एक एक तोले ले और सवको कूट छानकर सातवर्ष के पुराने समान भाग गुड में मिलाके छोटे जंगली वेर के प्रमाण गोलिया वनावै और प्रातःकालके समय एक गोली दहीकी मलाईमें लपेटकर खिलावे और ऊपरसे दहीका तोड पिलावे और कलिया या दाल और रोटी खिलावे और औटाहुआ जल पिलावे इस गोली के सेवन करने से नाकके सवरोग अच्छे होजांयगे।

❀ नाक की नोक के फोडे का इलाज ❀

एक फोडा नाककी नोक पर होताहै (देखो चित्र नं० १०) उसकी सूरत काली होती है और वह जोक सदृश वढ़जाता है परंतु उसका काटना कठिन है क्यों कि इसका रुधिर वन्द नहीं होता है मैं ने एक वार एक मनुष्य के यह रोग देखा उस की चिकित्सा अपने हाथ से की परन्तु ठीक न वनी तव को लाचार होकर मैं ने और मेरे मित्र डाक्टर

बाबू जमना प्रसाद साहब ने उस के घर के लोगों से

इस चित्र में नाक की नोंक पर फोड़ा है।

चित्र नं० ७

कहदिया कि रोग असाध्य है और प्राणका संकट है और उनकी अनुमति लेकर उसकी चिकित्सा अनेक प्रकार से की परन्तु बस न चला ये बातें इस लिये वर्णन की हैं कि यदि कोई चिकित्सक इस फोड़े वाले मनुष्यको देखे तो बिना वि-चारे इसकी चिकित्सा का साहस न करे क्योंकि मेरी बुद्धिमें यह रोग असाध्य है।

एक फोडा मुख के भीतर कौवा के पास होता है उसको खुनाक कहते हैं उसका इलाज यह है कि पहिले सरारू नस की फस्द खोले फिर यह ग़रारा करावेः—

नुसखा।

शहतूत के पत्ते ४ नग, कोकनार ४ नग, असबंद १ तोले, साबन मसुर २ तोले, इन सब चीज़ों को दो सेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहजाय तब इसके ग़रग़रे करावै और जो आराम न हो तो यह औषधि देवे।

नुसखा ।

गेंहू की भुसी ६ माशे, नाखूना १ तोले, खतमी के फूल १ तोले, सूखा जूफा १ तोले, सेंधा नमक ६ माशे इन सबको तीन सेर जल में औटावे जब एक सेर पानी जलजावे तब ग़रग़रा करावे और जो इस दवा के करने से फोडा फूटजावे तो अच्छा है, नहीं तो नीचे लिखी हुई औषधि सेवन करावे यह तेजाब के सदृश है ॥

नुसखा ।

अनार की छाल ६ माशे, मूली के बीज ६ माशे, सफेदा फिटकरी ६ माशे, नोसादर २ माशे, इन सबको आधसेर तेज सिरके में औटा कर ग़रग़रा करावे. जब फोडा फूटजाय तो देखना चाहिये घाव है या पुर गया जो पुरजाय तो यह दवाई करनी चाहिये ।

नुसखा ।

काकनार २ नग, गेंहू की भुसी ६ माशे, खतमी के फूल६ माशे, गुल्नार खुश्क ६ माशे; इन सबको पानी में औटाकर गरगरा करावे यदि घाव होतो नीचे लिखी दवा करे ।

घावकी दवा ।

खतमी १ तोला, खतमीके फूल १ तोला, वनफशा के फूल १ तोला; लिसोडा १ तोला, मेथी के बीज एक तोला, इनसब को जोकुट करके एक सेर नदीके जलमें आठ पहर भिगोकर काले तिलों का तेल मिलाकर औटावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रहिजाय तब तेल को छान ले और घाव पर लगावे ॥

एक फोड़ा मुखमें जीभके नीचे होता है उसकी सूरत छाले की सी होती है। और एक फोड़ा पहलू की ओर को झुका हुआ होता है जिसके कारण बाहर की ओर एक गुठलीसी होती है उस गुठली पर यह लेप लगावे।

लेप की विधि ॥

निर्विसी हरीमकोय इनमें घिसकर गरम करके लगावे और जो छालासा होता है उसकी चिकित्सा इस रीति से करैः—

नुसखा।

वायविडंग, माई छोटी, माई बड़ी; हरी माजूफल, सैंधानमक इन सबको बराबर लेके पानी में औटाके कुल्ले करे यदि फूट जावे तो उसकी चिकित्सा यह है ॥

❀ नुसखा ❀

धनियां सूखा, कत्था सफेद, माजूफल इन सबको बराबर ले महीन पीसकर लगावे और इन्हीं के कुल्ले करावे और और उसमें दूषित मांस उत्पन्न होजाता है और सब जीभ पर छा जाता है तो उसको बीस बाईस वर्षके उपदंश का मवाद समझे इसकी चिकित्सा बहुत कठिन है और बहुतसे फोडे इसी कारण होते हैं कि कोई रोगी इस रोगको स्पष्टता से नहीं बताता इसकी चिकित्सा यह है कि उस बुरे मांसको जीभ पर से अलग काट डाले यदि उसमें से रुधिर बंद न हो तो यह दवा करैः—

❀ नुसखा ❀

बनात की राख, अरने उपले की राख, सीपका चूना, सासूका कोयला, संगजराहत, रूमीमस्तंगी, सियार की खाल

खरगोशकी खाल, गोमाका रस, छयोंढ के पत्तों का रस इनमें से एक एक औषध पीसकर लगावै जब रुधिर बंद हो जाय तब जुल्लाव देवै और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावै और ये औषधि घावपर लगावै ।

❀ नुसखा ❀

फिटकरी कच्ची ४ माशे, नीलाथोथा भुना ४ माशे, गौका घृत ४ तोले इन दोनों को दवाइयों को पीसकर घी में मिलावे और जलसे खूब धोकर लगावे ।

दूसरा फोड़ा जो पहलू की ओरको झुका हुआ होता है और उसकी गुठली बाहर को होती है उस गुठली पर तो वह लेप करे जो पहिले इस रोग पर वर्णन कर चुके है और भीतर को नीचे लिखी दवा लगावै ॥

नुखसा ।

रूमीमस्तगी, सफेद कत्था, माजूफल भुनाहुआ, वंसलोचन, गाजमा की भस्म ये सब दवा चार २ माशे ले इन सबको महीन पीसकर लगावै और मूंगकी धोवादाल और बिना चुपड़ी गेहूं की रोटी खाने को दे ।

होटके फोड़े का इलाज ।

एक फुंसी होठों पर होती है उसपर शुद्ध करने वाला मरहम लगावे कि जिससे वह मवादको शीघ्रही निकाल देता है और केले के पत्तों पर गुलरोगन लेकर गले में बांधे इससे सूजन दूर होजाती है इसकी इलाज शीघ्र ही करना चाहिये क्यों कि ये फोड़ा पेटमें उतर जाता है इस का मुख बाहर की ओर करने के लिये नीचे लिखी हुई मरहम काम में लावे ॥

नुसखा ।

बिरोजा दो तोले, रेवत चीनी छः माशे, अंजरूत चार माशे, इन सबको पीसकर मिलावे और फिर इस मरहम को जलमें धोकर लगावे जब फूट जावे और मवाद निकल जावे तो यह दवा लगावेः—

नुसखा ।

रसौत १ माशे, तगर की लकडी तीन माशे इन सबको पीसकर गोके घी में मिलावे और जो कढाई में डालकर खूब घोटे तौ वहुत उत्तम है इस दवा के दस पांच बार लगाने से आराम होजाता है ॥

एक फोड़ा डाढ़में होता है उसका इलाज यह है ।

नुसखा ।

नीम के पत्ते, बकायन के पत्ते, संभालू के पत्ते, नरम्मा के पत्ते, इन चारों को बराबर लेकर जलमें औटाकर वफारा देवे, और उसी को बांधे और उसी के जलमें कुल्ले करावे ॥ और जो भीतर ही फूट जावे तौ उत्तम है और बाहर फूटे तो दांतके उखाडे बिना आराम न होगा और जो यह फोडा बाहर हुआ हो और बाहर ही फूटे तो उसको चीर डाले और चार फांक करे तथा नीमके पत्ते और नमक बांधे और जो मरहम ऊपर वर्णन किये गये हैं उन में से कोई मरहम लगावे ॥ और जो इनसे आराम न होतो उसपर यह मरहम लगाना चाहिये ॥

नुसखा ।

काले तिलों का तेल ५ तोला, मोम सफेद १ तोला, दो

वान एक तोला मुर्दासंग ५ माशे, नीलाथोथा एक माशे पहिले तेलको गरम करके फिर उसमें मोम डालकर पिघलावै पीछे सब दवाइयों को पीसकर मिलावै जब मरहम खूब पकजावे तब खूब रगडे और ठंडा करके काममें लावै और जो भीतर फूटे तौ वह कुल्ले करावै जो खुनाक रोग में वर्णन किये गये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध होजाय तो वह तेल भरदे जो ऊपर कह आये हैं ॥ और यहां भी लिखते हैं कि वह तेल तारपीन या जलपाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे २ छाले होंय तौ बरफ के पानी से कुल्ले करावे तौ निश्चय आराम हो जायगा ॥

ठोड़ी के फोडे का इलाज।

एक फोडा ठोडी पर होता है उसके आस पास लालसूजन होती है, इस फोडेका चिह्न चित्रनम्बर ११ में देखो

चित्र नं० ११

इलाज ।

इस फोडे पर जंगालका मरहम लगाना चाहिये अथवा वह मरहम लगावै जिसमें रेवतचीनी और विरोजा मिला है जब मवाद निकल जावै तब स्याह मरहम लगावै और जो उसके नीचे गुठली हो जाय तो उसपर नीमके पत्ते अथवा जैतके पत्ते और नोंन पीसकर बांधे जब वह पक जावे तब वे मरहम लगावै जो ऊपर लिखे गये हैं ।

❀ कान के रोगों की चिकित्सा ❀

(१) यदि कान बहता हो तो उस की यह औषधि है कि हरी मकोय, नीम के पत्ते लेकर दोनों को जोश करे पहिले भपारा कान में दे फिर उसी जलको काम में डाल और निकाल उसके पीछे नीम की पत्ती का अरक और शहद मिलाकर गर्म करै और डाले:—

(२) कान के भीतर एक छोटासा फोड़ा होता है (देखो

चित्र नम्बर १२) उसकी चिकित्सा यह है कि फिटकरी

फंद तथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डालदेवै और ऊपरसे कागजी नींबू का अर्क डालदे यदि वह फोड़ा फूट जाय तो मादर का पत्ता गर्म करके अर्क उसका निचोड़ै जब मवाद बंद होजाय और पीड़ा शांत हो जाय तो मूली के पत्ते मीठे तेलमें जला के छानले और उस तेलको कान में डालतो आराम होजायगा—

❀ दांतोंकी पीड़ाका इलाज ❀

जो दांतोंमें पीडाहो अथवा हिलतेहों या उनमें से रुधिर बहताहो तथा दांतो से दुर्गंधि आती हो तो ये दवाई करैः

❀ नुसखा ❀

कत्था सफेद १ तोला, फिटकरी सफेद ६ माशे, माजूसब्ज ६ माशे इन तीनो को जौकुट करके सेर भर पानी में जोश करें जब आधा जल जाय तब कुल्ली करे दूसरी औषधि यह हैः—

॥ नुसखा ॥

फिटकरी सफेद २ माशे, अनारका छिलका तीनमाशे [illegible] २ माशे इन को एक सेर पानीमें औटाकर कुल्ले [illegible] और जम्बीरीके पत्ते दांतोंपर मले (दूसरा नुसखा) [illegible] बनायां तेज सिरकेमें पीस कर मले (तीसरा नुसखा) [illegible] वृक्षका छिलका, कचनार के वृक्षका छिलका, खजूर का छिलका; महुए की छाल इन सबको अलग अलग जलावे और उनकी राख एक एक तोला और रूमी मस्त-[illegible] चार माशे सफेद मूंगे की जड़ छः माशे माजू सब्ज भुना हुआ ६ माशे कत्था सफेद ६ माशे सोना मक्खी

तीन माशे. इन सबको पीसकर मिस्सी के सदृश दांतों पर मले, (चौथा नुसखा) सफेद कत्था एक तोले फिटकरी सफेद छः माशे माजूफल छः माशे इन तीनों को जौकुट करके एक सेर जलमें औटावे जब आधा पानी जलजाय तब कुल्ले करावे [पांचवा नुसख । लोह चूरा ८ तोले, हरा माजूम ४ तोले, नीला थोथा भुना हुआ १ तोले, सफेद कत्था २ तोले; छोटी इलायची के दाने ६ माशे इन सबको महीन पीसकर मिस्सी की तरह दांतोंपर मले (छटा नुसखा) लोह चूरा पाव सेर बिना छेदके माजूफल आध पाव छोटी इलायची छिलके समेत १ तोले, नीलाथोथा १ तोला, लाल कत्था १ तोला, रूमी मस्तंगी४माशे, हराकशीश४माशे सोना माखी ४ माशे इन सबको महीन पीसकर दांतोंपर मले (सातवां नुसखा) तांबे का बुरादा १ छटांक, अनारका छिलका १ छटांक माजूफल २॥ तोले, फिटकरी १ तोले इन सबको महीन पीसकर दांतोंपर मले (आठवां नुसखा) रूमी मस्तंगी, माजूफल; हराकशीश, माई वड़ी, हर्डका छिलका, फिटकरी भुनी, नीलाथोथा भुना, मौलसरीके पेड़की छाल सबको बराबर लेके महीन पीसकर दांतोंपर मंजन करे और मुखको नीचा करके लार टपकावे फिर पानखाकर लारको बंदकरै (नवां नुसखा) कपूर को गुलाब जलमें और सिरके में मिलाकर इन तीनोको गोके दूधमें मिलाकर कुल्ले करावे (दसवां नुसखा) कपूर और नमक दोनों को पीसकर दांतो पर मले (ग्यारहवां नुसखा) फिटकरी भुनी एक भाग, शहत दो भाग, सिरका १ भाग इन तीनों को आगपर पकावै जब गाढा होजावे

तब दांतों पर मले तौ दांतका हिलना बंद हो ॥ (बारहवां नुसखा) सुपारी की राख; कत्था सफेद, काली मिर्च, रूमी मस्तंगी, सैंधानमक इन सब दवाओं को बराबर ले महीन पीसकर दांतोंको मले तो दांतों का हिलना बंद होय (तेरहवां नुसखा) माजूफल,कुलफाके बीज इनको पानी में पीसकर कुल्ले करावे तो दांत और मसूडोंसे खून निकलना बंद होय[चौदहवां नुसखा] बारहसींगे के सींगकी भस्म सैंधानमक इन दोनों को महीन पीसकर दांत और मसूडोंपर मलनेसे खून निकलना बंद होय [पन्द्रहवां नुसखा]पुराना लोहेका चूरण इबुल्लास रूमीमस्तंगी इन तीनों को बराबर ले महीन पीसकर दांतों पर मलने से खून निकलना बंद होता है [सोलहवांनुसखा] माजूफल फिटकरी इन दोनों को बराबर ले और सिरके में जोश करके कुल्ले करने से मसूडों का घाव अच्छा होता है [सतरहवां नुसखा] कुदरूगोंद मस्तगी इनको पीसकर मसूडों के घाव पर लगाना चाहिये:--

गंज का इलाज ।

बहुधा सिरमें गंज होताहै उसकी यह चिकित्सा है काली मिर्च छः माशे कलोंजी एक तोले इन दोनों दवाइयों को गौ के घी में जलावे और खरल में घोटे जब मरहम के सदृश होजावे तो पानी में धोले और मुकत्तर कर अर्थात टपका लेवे पहले उसके जलसे सिरको धोवे फिर इस मरहम को लगावे और जो इससे आराम न हो तो यह दवाई लगावे:—

नुसखा ।

काली मिर्च छः माशे, कमेला हरा छः माशे, महँदीके पत्ते

हरे छः माशे, सूखे आमले छः माशे, नीमके पत्ते छः माशे, नीलाथोथा छः माशे, सरसों का तेल, पांच तोले, पहिले तेल को कढ़ाई में गरम करे फिर इन सब दवाइयों को डाले जब जलजाय तब घोटकर ठंडा करके लगावै [दूसरा नुसखा] हालम दो तोले लेकर जलावै जब जलकर कोयला होजाय तब पीसकर कडवे तेलमें मिलावै फिर इसको दोपहर तक धूपमें धरे रक्खे फिर इसको लगावै तो गंज निश्चय अच्छी होयः—

जानना चाहिये कि सिरके फोड़ों के भेद तो बहुत हैं जो सबको वर्णन किया जाय तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा इसलिये संक्षेप से लिखते हैं जो फोड़े सिर में होते हैं उन सब की चिकित्सा इन्हीं मरहम से करनी चाहिये क्योंकि ये सब मरहम बहुत ही गुण कारक और मुजर्रिब है ॥

कंठ के फोड़े का इलाज ।

एक फोड़ा कंठ में होता है उसे कंठमाला भी कहते हैं[देखो

चित्र नं० १२

चित्र नं० १२] उसकी सूरत पहिले ऐसी होती है कि बांई

तब दांतो पर मले तौ दांतका हिलना बंद हो ॥ (बारहवां नुसखा) सुपारी की राख; कत्था सफेद, काली मिर्च. रूमी मस्तंगी, सेंधानमक इन सब दवाओं को बराबर ले महीन पीसकर दांतोंको मले तो दांतों का हिलना बंद होय (तेरहवां नुसखा) माजूफल.कुलफाके बीज इनको पानी में पीसकर कुल्ले करावे तो दांत और मसुडोंसे खून निकलना बंद होय[चौदहवां नुसखा] बारहसींगे के सींगकी भस्म सैंधानमक इन दोनों को महीन पीसकर दांत और मसुडोंपर मलनेसे खून निकलना बंद होय [पन्द्रहवां नुसखा]पुराना लोहेका चूरण हबुल्लास रूमीमस्तंगी इन तीनों को बराबर ले महीन पीसकर दांतों पर मलने से खून निकलना बंद होता है [सोलहवांनुसखा] माजूफल फिटकरी इन दोनों को बराबर ले और सिरके में जोश करके कुल्ले करने से मसूडों का घाव अच्छा होता है [सतरहवां नुसखा] कुदरूगोंद मस्तगी इनको पीसकर मसूडों के घाव पर लगाना चाहिये:--

गंज का इलाज ।

बहुधा सिरमें गंज होताहै उसकी यह चिकित्सा है काली मिर्च छः माशे कलोंजी एक तोले इन दोनों दवाइयों को गौ के घी में जलावे और खरल में घोटे जब मरहम के सदृश होजावे तो पानी में घोले और मुकत्तर कर अर्थात् टपका लेवे पहले उसके जलसे सिरको धोवे फिर इस मरहम को लगावे और जो इससे आराम न हो तो यह दवाई लगावे:—

नुसखा ।

काली मिर्च छः माशे, कमेला हरा छः माशे, मकोईके पत्ते

हरे छः माशे, सूखे आमले छः माशे, नीमके पत्ते छः माशे, नीलाथोथा छः माशे, सरसों का तेल, पांच तोले, पहिले तेल को कढ़ाई में गरम करे फिर इन सब दवाइयों को डाले जब जलजाय तब घोटकर ठंडा करके लगावे [दूसरा नुसखा] हालम दो तोले लेकर जलावे जब जलकर कोयला होजाय तब पीसकर कडवे तेलमें मिलावे फिर इसको दोपहर तक धूपमें धरे रक्खे फिर इसको लगावे तो गंज निश्चय अच्छा होय:—

जानना चाहिये कि सिरके फोड़ों के भेद तो बहुत हैं जो सबको वर्णन किया जाय तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा इसलिये संक्षेप से लिखते हैं जो फोड़े सिर में होते हैं उन सब की चिकित्सा इन्हीं मरहम से करनी चाहिये क्योंकि ये सब मरहम बहुत ही गुण कारक और मुजर्रिब है ॥

कंठ के फोड़े का इलाज।

एक फोड़ा कंठ में होता है उसे कंठमाला भी कहते हैं [देखो

चित्र नं० १३

चित्र नं० १३] उसकी सूरत पहिले ऐसी होती है कि चां

आर वा दाहिनी ओर गले में गुठली सी होजाती है फिर बढ़कर बडी गांठ होजाती है ॥ इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये कि पहिले तो तहलील अर्थात् बैठाने वाली दवाई लगाना चाहिये क्योंकि जो यह बैठ जावे तो बहुत ही अच्छा है और बैठाने वाली दवा यह है।

❀ नुसखा ❀

खूबकलां पांच तोले सूरंजान कडवा एक तोले कुदरूगोंद एक तोले इनसब को हरी कासनी के रसमें पीसकर लगावै और उस्के पत्ते गरम करके बांध जब वे गुठलीयां न दीखे तो फस्त खोलै और वमन करावे और जो इससे आराम न होय तो उक्त दवाइयों को सोयेके अर्कमें पीसकर लगावे और जो वर्णन की हुई दवाइयों से गुठलियां न बैठें तो यह लेप करे जो नीचे लिखाजाता है ॥

। लेप ।

गुलावके फूल, गिले अरमनी गुलनार, सूखी मकोय, दम्मुल अखवैन तुखमगोरद इन सब दवाइयोंको एक एक तोला लेकर मुर्गीके अंडेकी सफेदीमें मिलाकर गोलियां बनाकर छाया में सुखावे फिर एक गोली अंगूर के सिरके में घिसकर लगावै और जो इसके लगाने से भी न बैठे और पक जावै तो यह दवा करै ॥

❀ नुसखा ❀

रविवार वा मंगलवार को एक गिरगट को मारे आक के पत्ते नग७ भिलावे नग७ इनसबको आधपाव कडवे तेल में जलाकर खूबघोटै और ठंडा करके लगावे और कदाचित

इस घावके आस पास स्याही आजाय और घावसे पानी निकलता होतो बहुत बुरा है ॥

अथवा जो स्याही न हो और गांठ फूटी भी न हो तो उसके बैठानेको और दवा लिखते हैं ।

छुहारे की गुठली, इमलीके पत्ते, इमली के चीयां, महँदीके पत्ते इन सबको बाराबर ले महीन पीसकर गुनगुना करके पतला पतला लेप करै ॥

अथवा एक मूसेको तिलके तेलमें पकावैफिर उस तेलको लगावै तो गांठ बैठ जायगीः—

अथवा दो मुख के सांपको मारकर जमीन में गाढ़दे जब उसका मांस गल जावै तब हड्डीको डोरेमें बांधकर गले में बांधना अथवा बूदार चमडा बांधना अच्छा होता हैः—

अथ धुकधुकी कीं यत्न ।

एक घाव कंठमें होता है उसको धुकधुकी कहते हैं[देखो] चित्र नं० १४ उसकी सूरत यह है कि उसमें से दुर्गंध आया

चित्र नं० १४

करती है और कंठमे लेकर छातीके नीचेतक घाव होता है

वैद्यों ने लिखा है कि ये फोडा अच्छा कम होता है इस
चिकित्सा यह है:—

❀ नुसखा ❀

समुद्रफेन पावसेर को पीस छानकर एक तोले नित्य
खावे और उस के ऊपर जामुन के पत्ते पानी में पीस
पालेवै और उस घाव पर ये दवा लगावे(नुसखा)मनुष्य
सिरकी हड्डी को वासी जलमें घिसकर लगावै:—

❀ नुसखा ❀

सुकर की विष्ठा बालक के मूत्र में पीसकर लगावे:—

नुसखा ।

एक छछूंदर को मार कर अरने कण्डों में जलावे
थोडी जलने को बाकी रहजाय तब बुझावे और बगला
में इतवार और मंगल को खिलावे और पहले ३ दिन
भात खिलावे ऐसी औषधि रोगी को बतानी नहीं चा
कि घृणा उत्पन्न होजाती है:—

❀ कखराई का इलाज ❀

एक फोडा कांख में होता है उसको लौकिक में कख

यूनानी में खनाज़ीर कहते हैं (देखो चित्र नं० १५) उसकी सूरत यह है कि किसी २ मनुष्य के बगल में कई गुठलियां होती हैं और एक उनमें से पकजाती है जब तक मवाद निकल कर वह अच्छी नहीं होने पाती तबतक और दूसरी पैदा होजाती है इसी प्रकार से कई बार करके छः सात होजाती हैं और एक सूरत यह है कि एक गुठलीसी होकर पकजाती है वह फूट गई तो बहुत अच्छा है नहीं तो चीरा देना पड़ता है बिना चीरनेके अच्छी नहीं होती। जो रोगी बलहीन हो तो फोड़े की यह सूरत होती है जो ऊपर कह आये हैं और जो बलवान हो तो यह सूरत होती है कि पहिले कांखमें सूजनसी होती है और बहुत कड़ी होती है वह बहुत दिनों में पकती है देर होने के कारण नश्तर वा तेजाब लगाते हैं तो रुधिर निकलता है बस यही हानि है जब नीम बंध चुकती है तो मरहम लगाने के पीछे पानी निकला करता है बस इसी प्रकार से रोग बढ़ जाता है। इस फोड़ेकी चिकित्सा यह है कि पहिले वे पत्तियां बांधे जो डाढ़ के फोड़े के वास्ते वर्णन कर चुके हैं जब नरम होजाय तब वह मरहम लगावै जिस में नान पाव का गूदा लिखा है अथवा यह औषध लगावैः—

नुसखा।

गेहूं का मैदा, शहद, और मुर्गी के अण्डे की जर्दी इन तीनों को मिलाकर लगावै इस दवा के लगाने से बहुत जल्दी फूट जावेगा और नरम होतो चीर देवे फिर नीम के पत्ते नमक और शहत बांधे और यह मरहम लगावैः—

❀ मरहम ❀

नीलाथोथा तीनमाशे, अनार की कली जलाहुआ एकतोले इन दोनों को पीसकर खालिस शहद मिलाकर रगडे जब मरहम के समान होजाय तब लगावै और जो इससे आराम न हो तो यह दवा लगावेः—

नुसखा ।

सूअर की हड्डी और सूअर के बाल जलाकर दोनों एक२ तोले लेकर सूअर की चरबी में मिलाकर खूब रगडे और लगावे और घाव न सूखा हो तो सूअर की हड्डी या बालों की भस्म उसपर बुरके तो घाव सूख जावेगा और जर्राहको चाहिये कि घावपर निगाह रक्खे कि घाव पानी न देवे जो घावमें से पानी निकलता हो तो उसके कारण को जानना उचित है कि किस कारण से उसमें से पानी निकलता है ॥ प्रकृति मनुष्य की चार प्रकार की होती है । पानी तो रतूबत के कारण से निकलता है और रुधिर पित्त के कारण से और पीली पीब कफके कारण से और खालिस पीब खुश्की के कारण से निकला करती है और उचित है कि जो मरहम हितकर प्रतीत हो वही लगावे ।

छाती के फोड़े का इलाज ।

एक फोड़ा छाती मे तीनचार अंगुल ऊपर होता है देखो (चित्र नं० १६) उसकी सूरत यह है कि पहिले तो डोरासा होता है और फिर बढजाता है इस फोड़ा को बढजाने पर तहलील करना अर्थात् बैठाना अच्छा नहीं क्योंकि बाईं ओर को होता है तो इसमें बड़ा भय रहता है कि नीचे न

उतर जाय औ.र जो दाहिनी ओर होवे तो कुछ डर नहीं
ओर जो आदि में बैठ जाय तो भी कुछ डर नहीं और पक

चित्र नं० ७

जावे तो चीर डालें और नीम के पत्ते बांधें फिर उस के घाव पर
यह मरहम लगावे ।

❀ मरहम की विधि ❀

राल सफेद २ तोले, नीलाथोथा १ रत्ती, विलायती साबन
एक माशे इन सबको पीसकर गौके पांच तोले घीमें मिला-
वै फिर इसको पानी से धोकर घाव पर लगावे ऐसी सूरत
का फोड़ा बालकके हो अथवा तरुण के बुद्धिमानी से चि·
कित्सा करै और ख्याल रक्खें कि पानी, रतूबत से देता है
और खून पित्त से और पतली पीप बरूदत से देता है जो
पीप का रंग सफेद जर्दी लिये हुए हो और गाढ़ा हो तो
मिजाज के अनुसार जानो । और इस फोडे की पीप
सफेद पीलापन लिये निकलै तो शीघ्र आराम होजायगा
और जो सफेद लाल रंग मिला हो तो इसी मरहम में जो

अभी ऊपर वर्णन की है काशगरी सफेदा चार माशे मिला और इसी घाव पर लगावे ईश्वर की कृपा से बहुत शी आराम हो जायगा आगे जैसी सलाह उस्तादों की है वैसा करे।

स्त्री की छाती के फोड़े का इलाज

एक फोड़ा दूधवाली स्त्रीके स्तनपर होतीहै उसकी चिकित्सा भी इसी प्रकार से होसकती है जैसी कि ऊपर छाती के फोडे में अभी लिख चुके हैं और उस फोड़े पर पहिले वोही मरहम लगावे जिसमें अंडेकी जर्दी लिखी है अथवा वह मरहम लगावे जिसमें नानपाव का गूदा लिखा है इन मरहमों के लगाने से फोडा फूट जाय तो उत्तम है और इनके लगाने से न फूटे तो वह मरहम लगावे जिसमें आंब हल्दी लिखी है और जो इस से भी न फूटे तो इसमें चीर देवे और जो आपही फूट जावे तो बहुत ही उत्तम है और जो फूटे फोड़े के घावका मुख ऊपर को हो और दवाने से पीव निकलती हो तो उसके नीचे नश्तर देवे वा गुदी के नीचे बांधे और बालक को दूध पिलाना बंद न करे और जो दूध पिलाने में हानि समझें तो न पिलावे और यह मरहम लगावे।

❀ मरहम ❀

सुपारी अधभुनी ६ माशे, कत्था अदभुना सफेद ६ माशे सिंदूर गुजराती ६ माशे, सफेदा-काशगरी ६ माशे; गौका घृत सात तोले पहिले घीको गरमकरके उसमें एक तोले पीला मोम डाले फिर सब दवाइयों को पीस कर मिलादे और खूब

घोटे जब ठण्डा होजाय तब छः माशे पारा मिलाकर खूब रग
डे फिर इसको लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होय।
एक फोड़ा दूध रहित स्तनों में होता है उसकी सूरत यह है
कि पहिले मांसके ऊपर एक फुन्सी मसूर की दालकी बराबर
होतीहै और भीतर एक गुठली चनेके प्रमाण होती है वह
दिनप्रति दिन बढती जाती है और वह फुन्सी अच्छी हो
जातीहै और वह गुठली यदि तरुणी स्त्री के हो तो एक अ-
थवा दोवर्ष के पीछे आम की बराबर होजातीहै और जो वृद्ध
स्त्री के होयतो आठ नौ महिनों के पीछे आमकी बराबर हो
जातीहै जब गुठली इतनी बढ़जातीहै तब सूजन हो जातीहै
और उस में पीड़ा होती है और ज्वर भी हो आता है और
दवाइयां पिलानेसे तपजाता रहताहै और उस गुठली पर
घरकी अथवा उन लोगोंकी दवाई लगातेहैं जो कुछभी नहीं
जानते जब किसीसे आराम नहीं होता तब जर्राहको बुलाते
हैं यह गुठली पत्थरके समान होतीहै इसे कंकर वेल कहतेहैं
काटसे भी नहीं कटती इसकी चिकित्सा में जर्राह को उचित
है कि हकीम की सम्मति भी लेतारहै क्योंकि दवाओं की
प्रकृति को वे लोग खूब जानतेहैं और लेप करने को यह
औषधि है पहिले नीचे लिखा बफारा देवेः—

❀ बफार की दवा ❀

संभालूके पत्ते महुएके पत्ते इन दोनों को पानीमें औटा कर
बफारा देवे और यही पत्ते बांधे जो कुछ आराम हो तो यह
करते रहना चाहिये नहीं तो लोवे का साग औटा कर बांधे
और जो इस से भी आराम न हो तो यह लेप लगावेः—

ॐ लेपकी विधि ॐ

नाख्नूना एक तोला, खुब्बाजीके बीज एक तोला; खतमी के फूल एक तोला, खतमीके बीज एक तोला, अनकनाम का गूदा दो तोले, शोरंजन कडवा, बनफसाके फूल, इक्कलुनी, अल्सी ये सब दवा छः छः माशे; इन सबको पीसकर गरम करके लगावे। जो इससे आराम होजाय तो उत्तम है और हकीम को चाहिये कि इस रोगी को जुल्लाब देवे तथा फस्त खोले और जो आराम न हो तो वह दवाई लगावे कि जिसमें [illegible] है जिनका वर्णन ऊपर कर दिया गयाहै और एक [illegible] है।

कतर कर लगावै, जो इसके लगाने से फूट जावै तो जेत के पत्ते और नीमके पत्ते बांधे जब फोड़ेमें कड़ापन न रहे तो ऊपर कहे हुए मरहमोंमें से कोई तेज मरहम लगावै और जो फोड़े के फूटने के पीछे उसमें सड़ा हुआ मांस उत्पन्न होजावै तो चिकित्सा न करे और जो चिकित्सा करनी आवश्यक हो तो सम्पूर्ण स्तन को कटवा डालेतो आराम होगा और हकीम को चाहिये कि दवाई प्रकृति के अनुसार करे और जर्राह को उचित है कि वह मरहम लगावे जिससे घाव पानी न देवे। और जो स्तन न काटा जावै वह मरहम यह है।

❀ मरहम ❀

जंगाल एक तोला, शहद दो तोला, सिरका दो तोला; इन सबको मिलाकर पकावै जब तार बँधने लगे तब ठण्डा करके लगावै और घावको देखना चाहिये कि घावमें रुधिर निकलता है या पानी निकलता है और असाध्य का लक्षण यहहै कि घावके चारों ओर स्याही होतीहै और दुर्गंध आती है और पीप काली निकलतीहै और फफोदीके सदृश सफेदी होती है। फिर उस घावकी चिकित्सा न करे क्योंकि उसको कभी आराम न होगा। और असाध्यका यह लक्षणहै कि घाव चारों ओरसे लाल होता है और पीव गाढा और पीलापन लिये निकलता है जो घावकी सूरत ऐसी हो तो निःसन्देह चिकित्सा करे परमेश्वरके अनुग्रहसे निश्चय आराम होगा।

एक फोड़ा छातीपर कौडी के पास अथवा कौडीके स्थान पर होता है जैसा इस नीचे लिखे चित्र नं० १७ में है इसका इसका तेज मरहम से पकाकर फोड़े अथवा चीरडाले उस

❀ लेपकी विधि ❀

नाखूना एक तोला, खुब्बाजीके बीज एक तोला; खतमी के फूल एक तोला, खतमीके बीज एक तोला, अमलतास का गूदा दो तोले, शोरंजन कडवा, बनफसाके फूल, उश्करूमी, अलसी ये सब दवा छः छः माशे; इन सबको पीसकर गरम करके लगावै। जो इससे आराम होजाय तो उत्तम है और हकीम को चाहिये कि इस रोगी को जुल्लाब देवे तथा फस्त खोले और जो आराम न हो तो वह दवाई लगावे कि जिसमें खूबकलां है जिनका वर्णन ऊपर कर दिया गयाहै और एक नुसखा लेप का यह है।

❀ लेपकी विधि ❀

मुर्दासंग, शोरंजान कड़वा, गिले अरमनी, सूखीमकोय. सब बराबर ले, इन सबको पानी में पीसकर लगावे जो इस से भी आराम न होवै तो देखे कि फोड़ा कहां से नरम है। उस पर जैतके पत्ते, नीम के पत्त और सांभर नमक पानी में पीस कर बांधे और आस पास वह लेप लगावे जो ऊपर कह आये हैं और जो इन पत्तों से भी न फूटे तो नीमकी छाल पानी में घिसकर लगावे और जो किसी से आराम न होवे तो ये फाया लगावै।

❀ फाये की विधि ❀

काले नेन तल्क, बबूल का गोंद; लौंग, विलायती साबुन मैना मुनक्का इन सबको बराबर ले पानी में पीसकर कपड़े पर लेप कर खलठोड और समय पर फोड़े की बराबर फाया

कतर कर लगावै, जो इसके लगाने से फूट जावै तो जैत के पत्ते और नीमके पत्ते बांधे जब फोड़ेमें कड़ापन न रहेतो ऊपर कहे हुए मरहमोंमें से कोई तेज मरहम लगावे और जो फोड़े के फूटने के पीछे उसमें सड़ा हुआ मांस उत्पन्न होजावे तो चिकित्सा न करे और जो चिकित्सा करनी आवश्यक हो तो सम्पूर्ण स्तन को कटवा डालेतो आराम होगा और हकीम को चाहिये कि दवाई प्रकृति के अनुसार करे और जर्राह को उचित है कि वह मरहम लगावे जिससे घाव पानी न देवे। और जो स्तन न काटा जावे वह मरहम यह है।

❀ मरहम ❀

जंगाल एक तोला, शहद दो तोला, सिरका दो तोला; इन सबको मिलाकर पकावे जब तार बँधने लगे तब ठण्डा करके लगावै और घावको देखना चाहिये कि घावमें रुधिर निकलता है या पानी निकलता है और असाध्य का लक्षण यहहै कि घावके चारों ओर स्याही होतीहै और दुर्गंध आती है और पीप काली निकलतीहै और फफोदीके सदृश सफेदी होती है। फिर उस घावकी चिकित्सा न करे क्योंकि उसको कभी आराम न होगा। और असाध्यका यह लक्षणहै कि घाव चारों ओरसे लाल होता है और पीव गाढ़ा और पीलापन लिये निकलता है जो घावकी सूरत ऐसी हो तो निःसन्देह चिकित्सा करे परमेश्वरके अनुग्रहसे निश्चय आराम होगा।

एक फोड़ा छातीपर कौडी के पास अथवा कौडीके स्थान पर होता है जैसा इस नीचे लिखे चित्र नं० १७ में है इसको इसका तेज मरहम से पकाकर फोड़े अथवा चीरडाले ...

भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्योंकि यह फोडा रह·

चित्र नं० १७

जाता है। और जो बादमें सामने बत्ती जावेतो चिकित्सा न करे, और जो दांहीं तथा बांई ओर बत्ती जावे तो इसी प्रकार से चिकित्सा करै। जेसे कि ऊपर वर्णन कर आये हैं, और एक फोड़ा पीठ पर होता है उस की भी चिकित्सा उसी रीतसे करनी चाहिये जैसा कि

चाहिये कि स्याही न आने पावै और जो स्याही आ जावै तो चिकित्सा न करे; क्यों कि यह असाध्य है परन्तु जो करनी आवश्यक हो तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार करै और आगे लिखी यह मरहम लगावै ।

❀ मरहम ❀

नीम के पत्ते एक सेर, आंवा हलदी आध पाव, हलदी कच्ची आध पाव, काले तिल का तेल एक सेर, पहिले तेल को तांबे के बर्तन मे गरम करे फिर उसमें नीम के पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जलकर स्याह होजावे तो उनको निकाल कर दोनों औषधियों को जौ कूट करके तेल में डाले जब वेभी स्याह होने लगें तब तेलको छानकर रक्खे और फोड़े पर लगावे और जो इसके लगाने से कुछ आराम न हो तौ वही करे जो ऊपर वर्णन किया गया है और समय पर जैसी सम्मति हो वैसे करै परन्तु जहां तक हो सके इसको असाध्य कहकर छोड़ देना चाहियेः—

एक फोड़ा पेड़ू और जांघ के बीच में होता है वह भी कण्ठ माला के भेदों में से है और लौकिक में उस का नाम (वद) विख्यात है । उसकी सूरत यह है कि पहिले एक गुठली सी होती है और लोग उसको उपदंश के संदेह में छिपाते हैं यद्यपि वह बालकों के भी हो जाता है और जो उसको न छिपावै तौ शीघ्र आराम हो सक्ता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पड़ जाती है और इसका इलाज बहुत से हकीमों ने अपनी अपनी किताबों में लिखा है और अपनी बुद्धि के अनुसार इसकी चिकित्सा लिखते हैं बुद्धि-

भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्योंकि यह फोड़ा रह-

चित्र नं० १७

जाता है। और जो घावमें सामने बत्ती जावेतो चिकित्सा
न करे, और जो दांहीं तथा बांई ओर बत्ती जावे तो
इसी प्रकार से चिकित्सा करै। जैसे कि ऊपर वर्णन
कर आये हैं, और एक फोड़ा पीठ पर होता है उस की
भी चिकित्सा उसी रीतसे करनी चाहिये जैसा कि
छाती के फोड़का वर्णन कर आये हैं; और वह मरहम

चाहिये कि स्याही न आने पावै और जो स्याही आ जावै तो चिकित्सा न करे; क्यों कि यह असाध्य है परन्तु जो करनी आवश्यक हो तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार करे और आगे लिखी यह मरहम लगावै।

❀ मरहम ❀

नीम के पत्ते एक सेर, आंवा हलदी आध पाव, हलदी कच्ची आध पाव, काले तिल का तेल एक सेर, पहिले तेल को तांवे के बर्तन में गरम करे फिर उसमें नीम के पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जलकर स्याह होजावे तो उनको निकाल कर दोनों औषधियों को जौ कूट करके तेल में डाले जब वेभी स्याह होने लगें तब तेलको छानकर रक्खे और फोड़े पर लगावे और जो इसके लगाने से कुछ आराम न हो तो वही करै जो ऊपर वर्णन किया गया है और समय पर जैसी सम्मति हो वैसे करै परन्तु जहां तक हो सके इसको असाध्य कहकर छोड़ देना चाहिये:—

एक फ़ोड़ा पेडू और जांघ के बीच में होता है वह भी कण्ठ माला के भेदों में से है और लौकिक में उस का नाम (बद) विख्यात है। उसकी सूरत यह है कि पहिले एक गुठली सी होती है और लोग उसको उपदेश के संदेह में छिपाते हैं यद्यपि वह बालकों के भी हो जाता है और जो उसको न छिपावै तो शीघ्र आराम हो सक्ता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पड़ जाती है और इसका इलाज बहुत से हकीमों ने अपनी अपनी किताबों में लिखा है और अपनी बुद्धि के अनुसार इसकी चिकित्सा लिखते हैं कुछ

वालों को चाहिये कि पहिले वे दवा लगावे जिससे यह बेठ जावे बैठालने की दवा यह हैः—

❀ नुसखा ❀

चूना एक तोला लेकर उसे मुर्गी के एक अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करे अथवा मनुष्यके सिरकी हड्डी पानी में घिसकर लगावै। अथवा ईसबगोल को पानी में पीसकर वदके ऊपर लेप करै, अथवा सफेद कत्था, कलमी तंज केवला, बबुल का गोंद, छः छः माशे इन सबको पानी में पीसकर गाढ़ा २ लेप करे और जो न बढे तो पकने की दवाई लगावे वह दवा यह है।

रता है और पके हुएको फोड देता है और अध कच्चे
ाडे को पका देता है ।

❀ नुस्खा लेप ❀

हालों, तज, अलसी, मैथी के वीज, ये सब एक २ ताले
एलुआ कमंगरी, साबुन, भैसागूगल, रेवत चीनी. लाल
सज्जी ये सब छः छः माशे इन सबको पीस छान कर मा-
फिक फोड़े के पानी में गरम करके लेपकरे और ऊपर से
बंगला पान गरम करके वांध देवै और इस लेपके बहुतसे
गुणहैं और जो इस लेपको चोटपर लगावै तो सज्जी न
डाले किन्तु सज्जी के बदले सैंधा नमक मिलावै । और
जो चोटसे हड्डी टूट गई हातो आंवा हल्दी और मिलादेवै
तो परमेश्वर के अनुग्रह से आराम होजायगाः—

एक फोडा अंडकोशों के नीचे होताहै उसको भंगदर कह
तेहैं उसमें सूजन होती है और ज्वर भी होता है उसकी चि-
कित्सा बदकी चिकित्सा के अनुसार करनी योग्य है और
उन्ही पत्तियोंका बफारा देवै और वह लेप लगावै जिसमें
अलसी और मैथी लिखी है जब नरम होजावै तो चीरने
में देरी न करै फिर पीछे नीमके पत्त और नमक वांधे और
यह मरहम लगावैः—

❀ मरहम की विधि ❀

पहिले गायकाघृत सात तोले लेकरगरम करै फिर दोतोले
सफेद मोम उसमें डालकर पिघलावै फिर सिंदूर गुजराती दो
तोले, सिंगरफ, सफेद जीरी, सेलखड़ी, काली मिर्च, कत्था.
सफेद फिटकरी, सुपारी ये सब एक एक तोले और लीला

थोथा एक माशे ले इन सबको महीन पीसकर उसी घृत में मिलावै और आगपर रक्खे जब खूब चासनी होजावे तो ठंडा करके लगावै और जो इनसे आराम न हो तो वह मरहम लगावे जिसमें बेरके पत्ते हैं और जो रह जावे तो तेजाब लगावे जिसमें गिरगट है ।

❀ गुदाके फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा गुदामें होता है इसको भवासीर कहते हैं यह फोडा कई तरह का होता है एक वह है जिसमें घावहो और उसे आराम नहो वह फिर पकेगा और फेटगा और इसी प्रकारसे रहेगा और जो बहुतसे घाव होंतो सबको अच्छा करदेवे और एक घाव को रहने देवै जिससे मवाद निकलता रहे इस फोडे को हकीम और डाकटर लोग असाध्य कहते हैं और इसीसे इसपर ये मरहम लगाना मुनासिबहै ।

❀ मरहम ❀

काले तिलोंका तेल छः माशे, कच्चामोम चार माशे, नर सूअरकी चरबी दो तोले. राल बिलायती एक तोले. इन सबको पकाकर बछिया के मूत्र में धोकर लगावे ॥ अथवा ॥ सांपका सिर नग १ छंछूदर नग २ सूअर का विष्टा सात तोले. सूअरकी चरबी दो तोले. हुक्का नारियल पुराना दो नग. काले तिलों का तेल १ सेर. इन सब दवाइयोंको तेलमें डालकर तेलको छानकर लगावे जब उस ओरसे मल और रुधु निकलने लगे तो चिकित्सा न करे इसबावमें से पीव नहीं निकलती है किन्तु पानी निकला करता है ।

❀ गर्दन के फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा दोनों कंधोंके बीच में होता है जिसको बड़े २ ग्रथों में खञ्जरबेग लिखा है और सुनाभी है और सूरत उसकी यह है कि पहिले सूजन के साथ सखती होती है जब वह फूटता है तो खराब मांस होजाता है दोनों ओरसे उसके पुठे एक जंतु के सदृश होतेहैं और लोग उसको न्यौला कहते हैं और मैंने भी सुना था कि वह रोगी का कलेजा खाताहै। परन्तु निश्चय किया गया तो मालूम हुआ कि ये बात झूठ है जब उसको गौर कर देखा तो खराब मांस मालूम हुआ परन्तु इस फोड़े को अच्छा होता कहीं नहीं देखा है। अगर खराब मांस कटजाय तो कुछ आराम होना कठिन नहीं परन्तु उस मांस को जहां तक बनें वहां तक दवा से काटना चाहिये।

❀ इसके काटने की दवा आगे लिखते हैं ❀

❀ नुसखा ❀

शहद २ तो०, जंगार २ तोले, तेजसिरका७तो०, इनको मिलाके पकावे जब तार बंधने लगे तो ठंडा करके लगावे और सूखी औषध दूषित मांसके काटने की यह है।

❀ नुसखा ❀

संखिया सफेद, नीला थोथा, नौसदर, फिटकरी भुनी, कच्चा सुहागा, चौकिया, गुलाबी मज्जी, हल्दी जली हुई इन सबको महीन पीसकर लगावे। अथवा काष्ठिक की बत्ती लगावे, काष्टिक एक अंग्रेजी दवा है, इस फोडे को छुरी से काटना अच्छा नहीं है क्योंकि नित्य घटता बढ

ता है इस लिये नस्तर से नहीं काटते हैं और सब जर्राह छुरी से काटते हैं इसी कारण वह फोडा खराब होजाता है और अच्छा नहीं होताहै। और उसके आस पास यह लेप लगाना चाहिये।

❀ लेप ❀

त्रिवी खताई, जहरमोहरा खटाई मुरिद के बीज; गुलेनार गुलाब के फूल, दम्बुल अखवेन, इन सबको बराबर ले हरी मकोय के अर्क में पीसकर लगावै। परन्तु इसरोग वाले की फस्द अवश्य खोलनी चाहिये। और वमन भी करावै, और गिजा गोस्तका शोरबा और रोटी खिलावै।

॥ कन्धे के फोडे का यत्न ॥

एक फोडा कंधे पर होता है और यह भी नासूर का स्थान है उसको भी चीर डाले अथवा तेजाब लगावै और फो-

ड डाले इनफोडों का निशान ऊपरालिखी तसवीरमें देखले
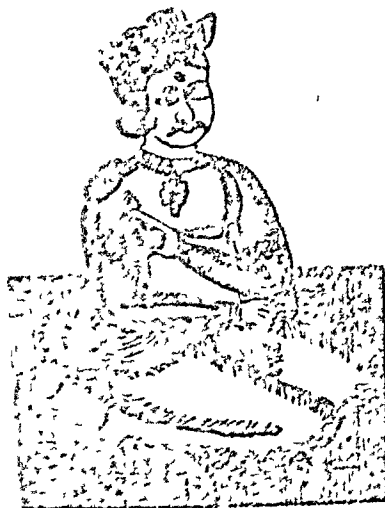
जो यह फोड़ा आपही फूट जावे तो वह मरहम लगावै, जिसमें सुहागा और नीलाथोथा है जब वह घाव अच्छा होजाय और बत्ती आनेके माफिक स्थान रहजावे तो चीर-डाले या तेजाब लगावे और जो चारों ओर से बराबर अ-च्छा होजाय तो सुखाने के वास्ते यह मरहम लगावे:-

❀ मरहम की विधी ❀

पहिले शीशे की गोली का कुश्ता करै और उसकी भस्म ६ माशे लेवे और सफेदा काशगरी ६ माशे, सिन्दूर ६ माशे, राल सफेदा २ माशे गौ का घी ६ माशे, इन सबको पीसकर गरम करके मिला देवै फिर मोम पीला ६ माशे मिलाकर खूब रगड़े उसको घाव पर लगावे:-

❀ बांहके फोडेका यत्न ❀

एक फोडा बांहपर होताहै इसका निशान चित्र नम्बर

११ में देखलो और चिकित्सा इस प्रकार से करो जैसी कि कंधेके फोड़ेमें वर्णन की गईहै और कंधे से घुटने तक सात फोडे होतेहैं और एक फोड़ा कोहनी पर होताहै उसमें से पानी निकलता है उस पर यह मरहम लगावे:-

❀ मरहम ❀

काले तिलोंका तेल पावभर, सफेद मोम दो तोले नीला थोथा दो माशे, सोनाभाखी दो माशे, मस्तंगी रूमी छः माशे गिरोजा तर छः माशे, माजू दो तोले, बहरोजा सूखा एक तोला.नौसादर पांच माशे,मुर्दासंग५ माशे, सेलखड़ी ३ माशे कम और सुर्ख २ माशे फली पोरा सुर्ख २ माशे, फली पोरा स्याह २ माशे, सुहागा चौंकिया भुना २ माशे, जंगाल एक तोले प्रथम तेलको गरम करे फिर ये सब दवा महीन पीसकर डाले जब मरहम के सदृश होजावे तब ठंडा करके लगावे ॥ और घुटने के नीचे मात फोड़े होते हैं तिसका नगबीर में समझो ॥

❀ अंगुली के फोड़ेका यत्न ❀

एक फोड़ा अँगुली में होताहै उसको विषहारी कहतेहैं और कुछ से मनुष्य इसको नियारा कहते हैं जो उसमें सुराग़ात होतो नश्तर डाले और जो न काटे तो तेजाब लगावे जब मांस कट जावे तो मरहम लगावे जिससे अँगुलीको फायदा है।

॥ पीठके फोड़ेका इलाज ॥

एक फोड़ा पीठमें होताहै उसको अदीठ कहते हैं । और उसके आसपास ४ फोड़े होतेहैं और वह फोड़ा पीठ के बीचमें होताहै वह केंकड़ेके सदृश होताहै और लम्बाव तथा चौड़ाव में बहुत बड़ा होताहै और उस फोड़ेमें पकजाने के पीछे एक छिद्र होताहै और उसमें से पानी निकलता है अथवा पका पीव निकलताहै और लोहू नहीं निकलताहै इस फोड़ेका निशान चित्र नं० ५० में देख लो ।

चित्र नं० ५०

इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि उसको चार फांक करके चार अंगुल चीरडाले और उसके आसपासको सांभर नमक, नीमके पत्ते, फिटकरी और मु-हला औषधकर साफ करता रहै जिससे वह शुद्ध हो । परन्तु ध्यान रक्खे कि इसकी सूजन और जोर की न रह जावे और जो देखे पीप से सूजन चढ़े और [illegible] आवे तो [illegible] हाथ की वासलीक रगकी फस्द खोले और जरूरत होवे रुधिर निकाले और जो इतना करनेसे न मिटे तो [illegible]

दिनके पीछे बायें हाथकी भी फस्द खोलै और फोड़े पर ये मरहम लगावैः—

❀ मरहम की विधि ❀

थूक,चूना,सज्जी, नीला थोथा,साबुन,राई,चौकिया सुहागा आक का दूध यह सब दवा एक एक तोले गौका घृत ११ तोले प्रथम घृतको गरम करके प्रथम साबुन मिलावै पीछे बाकी दवाइयां पीसकर जुदा जुदा बराबर तोल कर मिलावै और आग पर जब खूब चाशनी होजाय- तब ठंडा कर के लगावै और जो घाव भर आनेके पीछे सूजनहो आवै और सूजनके पीछे पेचिश होजावै तो उसकी चिकित्सा करना कठिन है और ये दवाई पिलावैः—

❀ नुसखा ❀

तुख्म खतमी, रेशा खतमी, छःछः माशे इन दोनोंको रात्रि को पानीमें भिगोदे और सबेरे ही छानकर फिर पहले चार माशे तुख्म रेहाँ फँकाके ऊपर से इसे पिलादे और जो इन चारों फोड़ों में से वाँई ओरका फोडा होवै तो भी इस प्रकार से चिकित्सा करै जैसाकि अभी वर्णन कीया है और जो फोड़ा दाहिनी ओर हो तो उसके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोड़ा कुछ बहुत भयानक नहीं है जैसी चाहैं तैसी चिकित्सा करें [illegible]

उसमेंसे आहार निकलता है और ये फोडा बडी मुशकिल से अच्छा होता है वरने अच्छा नहीं होता ॥

चित्र नं० २१

एक फोडा कोखपर होता है उसका चिकित्सा उसी भांति से करनी चाहिये जैसा कि ऊपर वर्णन करी गई है ॥

नाभि के फोडे का यत्न ।

एक फोडा नाभिके स्थानपर होता है देखो चित्र नं० २२

चित्र नं० २२

चिकित्सा उसकी इस प्रकार से करे कि पहिले उन पत्ति

दिनके पीछे बायें हाथकी भी फस्द खोलै और फोड़े पर ये मरहम लगावैः—

❀ मरहम की विधि ❀

चूक, चूना, सज्जी, नीला थोथा, साबुन, राई, चौकिया सुहागा आक का दूध यह सब दवा एक एक तोले गौका घृत ११ तोले प्रथम घृतको गरम करके प्रथम साबुन मिलावै पीछे बाकी दवाइयां पीसकर जुदा जुदा बराबर तोल कर मिलावै और आग पर जब खूब चाशनी होजाय. तब ठंडा कर के लगावे और जो घाव भर आनेके पीछे सूजनहो आवे और सूजनके पीछे पेचिश होजावे तो उसकी चिकित्सा करना कठिन है और ये दवाई पिलावैः—

❀ नुसखा ❀

तुख्म खतमी, रेशा खतमी, छःछः माशे इन दोनोंको रात्रि को पानीमें भिगोदे और सबेरे ही छानकर फिर पहले चार माशे तुख्म रेहाँ फँकाके ऊपर से इसे पिलादे और जो इन चारों फोड़ों में से बांई ओरका फोडा होवै तो भी इस प्रकार से चिकित्सा करे जैसाकि अभी वर्णन कीया है और जो फोडा दाहिनी ओर हो तो उसके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोडा कुछ बहुत भयानक नहीं हैं जैसी चाहे वैसी चिकित्सा करे ईश्वर आराम करदेगा ॥

❀ पसली के फोडे का यत्न ❀

एक फोडा पसलियों पर होता है देखो चित्र नम्बर २१ इसकी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्यों कि यह स्थान नाजुक का है और बांई ओर का फोडा पेटमें उतर जाता है

सब एक एक तोला, जदवार खनाई अर्थात् निर्विसी छः मासे, रक्तचंदन १ तोला, सफेद चंदन १ तोला, अफीम१तोला मेथी १ तोला, नीमकी छाल १ तोला, इनसब को जल में पीसकर गरम करके लगावे। और जितने फोडे पीठ की ओर होतेहैं उन सबकी चिकित्सा करना बहुत कठिन है उन सब पर लेप लगाना गुण करता है ॥

ॐ चूतड़ के फोडे का इलाज ॐ

एक फोडा चूतड के ऊपर होता है चाहे दांहीं ओर हो या बांई ओर हो उसकी चिकित्सा भी इन्हीं मरहमों से करना चाहिये क्योंकि कुछ डरका स्थान नहींहै और जो इन मरहमों से आराम न होतो यह मरहम लगावेः—

ॐ नुसखा ॐ

काले तिलोंका तेल १५ तोला, विलायती साबुन २ तोला सफेदा काशगरी २ तोला, मोंहरा गुजराती २ तोला, प्रथम तेल को गरम कर उसमें साबुन को पिघलाकर चाशनी करे जब मरहम ठीक होजाय तब उसे ठंडा कर घाव में लगावे।

अथवा सफेद राल २ तोला, महीन पीस छानकर तेल २ तोला, लेकर मिलावै और नदीके जलमें धोवै सब खूब [illegible] नीलाथोथा [illegible] पीसकर मिलाकर घाव में लगावे —

[illegible] के नीचे के फोडे का इलाज [illegible]

[illegible] के नीचे [illegible] होता है [illegible] [illegible] बहुत [illegible] और [illegible]

का बफारा देवे जो ऊपर अण्डकोशों के फोडे की चिकि॰ में कही गई है और नीमके पत्ते, सफेद प्याज के पत्ते, नमक इन सबको पीसकर के गरम करके लगावे और फोड़ा ठीक ठीक पकजावे तो चीर डाले और जो आप फूट जावे तौ भी नश्तर देना उचित है क्यों कि इसका म वाद गुदा के द्वारा होकर निकलने लगता है इसी लिये न श्तर मे चार फांक करके ये मरहम लगावैः—

॥ मरहम ॥

काले तिलोंका तेल आधसेर, सफेद मोम दो तोले मुर्दासिंग छः तोले, सफेद कत्था एक तोले, कपूर छःमाशे, नीलाथोथा चार रत्ती, अरंडके पत्तों का रस चार तोले, प्रथम तेलकोगरम कर फिर मोम डालकर पिघलावै फिर इन सब दवाइयों को मिलाकर जलावे और सब दवा पीसकर मिलाके चाशनी दे फिर ठंढा करके काममें लावे और गाढा और बुरा पीब निकले तो ये दवाई पिलावे ॥

राळ एक एक तोला, जदवार खताई अर्थात् निर्विसी छः मासे, रक्तचंदन १ तोला, सफेद चंदन १ तोला, अफीम १ तोला [illegible]श्री १ तोला, नीमकी छाल १ तोला, इनसब को जल में पीसकर गरम करके लगावे। और जितने फोडे पीठ की ओर होते हैं उन सबकी चिकित्सा करना बहुत कठिन है इन सब पर लेप लगाना गुण करता है॥

❀ चूतड़ के फोड़े का इलाज ❀

एक फोडा चूतड के ऊपर होता है चाहे दांहीं ओर हो या बांईं ओर हो उसकी चिकित्सा भी इन्हीं मरहमों से करना चाहिये क्योंकि कुछ डरका स्थान नहीं है और जो इन मरहमों से आराम न होतो यह मरहम लगावे:—

❀ नुसखा ❀

काले तिलोंका तेल १५ तोला, विलायती साबुन ३ तोला सफेदा काशगरी २ तोला, सफेदा गुजराती २ तोला, प्रथम तेल को गरम कर उसमें साबुन को पिघलाकर चाशनी करे जब मरहम ठीक होजाय तब उसे ठंडा कर घाव में लगावें।

अथवा सफेद राल २ तोला, महीन पीस छानकर तेल ७ तोला, लेकर मिलावे और नदी के जलमें धोवे जब खूब [illegible] मुर्दासंग ४ मासे, नीलाथोथा २ [illegible] मिलाकर घाव [illegible]

का इफारा देवे जो ऊपर अण्डकोशों के फोड़े की चिकित्सा में कही गई है और नीमके पत्ते, सफेद प्याज के पत्ते, खारी नमक इन सबको पीसकर के गरम करके लगावे और जो फोड़ा ठीक ठीक पकजावै तो चीर डाले और जो आपही फूट जावे तो भी नश्तर देना उचित है क्यों कि इसका मा-वाद गुदा के द्वारा होकर निकलने लगता है इसी लिये न-श्तर से चार फांक करके ये मरहम लगावैः—

ये सब एक एक तोला, जदवार खताई अर्थात् निर्विसी छः मासे, रक्तचंदन १ तोला, सफेद चंदन १ तोला, अफीम १ तोला मिश्री १ तोला, नीमकी छाल १ तोला, इनसब को जल में पीसकर गरम करके लगावे। और जितने फोडे पीठ की ओर होतेहैं उन सबकी चिकित्सा करना बहुत कठिन है उन सब पर लेप लगाना गुण करता है॥

❀ चूतड़ के फोडे का इलाज ❀

एक फोडा चूतड के ऊपर होता है चाहे दांही ओर हो या बांही ओर हो उसकी चिकित्सा भी इन्ही मरहमों से करना चाहिये क्योंकि कुछ डर का स्थान नहींहै और जो इन मरहमों से आराम न होतो यह मरहम लगावे:—

❀ नुसखा ❀

काले तिलोंका तेल १५ तोला, विलायती साबुन २ तोला उशैरा काशगरी ९ तोला, नकरा गुजराती २ तोला, प्रथम तेल को गरम कर उसमें साबुन को मिलाकर चाशनी करे जब मरहम ठीक होजाय तब उसे ठंडा कर घाव में लगावे।

भेदों में से नहीं है लेकिन यह स्थान नासूर का है उसकी सूरत यह है कि पहिले एक गुठलीसी होती है और आपही आप रिसने लगती है उसकी चिकित्सा, इसप्रकारसे करनी चाहिये प्रथम उसमें चीरा देकर उसकी चार फांक करै क्यों कि उसके भीतर एक छीछडा होता है सो वगैर चीरने के उसका निकलना कठिन है इस लिये इसमें चीरा देकर छीछडा निकालकर फिर यह मरहम लगावैः—

नुसखा ।

पहिले काले तिलोंका तेल पांच तोले गरम करै फिर उसमें छः माशे मोम डाले और सोंफ गिले अरमनी, मुर्दासंग नीलाथोथा ये सब एक २ तोला लेकर महीन पीसकर मिलावै ओर मंदी आग में पकाकर ठंडा करके लगावैः—

❀ जांघके फोडेका यत्न ❀

एक फोडा जांघ में होता है देखो चित्र नं० २३ उसको

चित्र नं० २३
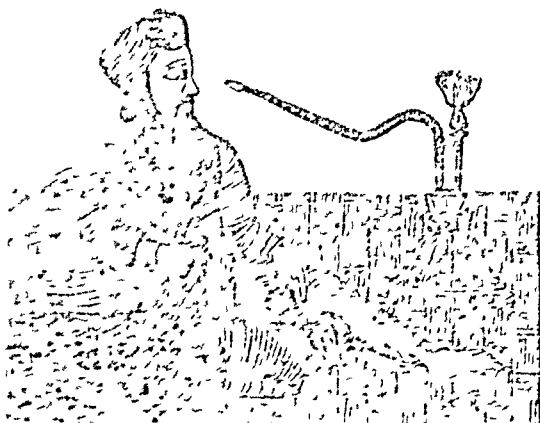
और चिकित्सा उसकी यह है कि उसको ठीक २ चीर डाले और सब मवाद निकाल देने पीछे उसके बुरे मांसको इतना काटे कि चार २ अंगुल गहरी होजावे फिर उसपर नीम के पत्ते सफेद बूरा फिटकरी इन सबको एक हफ्ताह तक बांधे फिर ये मरहम लगावै ।

❀ मरहम की विधि ❀

राल सफेद दो तोला, नीलाथोथा एक रत्ती, इन दोनों को महीन पीसकर छः तोला घृतमें मिलावे फिर उसमें एक मासे साबुन डाले फिर उसको नदी के जल से अथवा वर्षा के जल या बरफ के जल से खूब धोकर लगावै और एक फोड़ा जांघ के नीचे की ओर होता है वह भी इनहीं मरहमों से अच्छा होता है ।

❀ घोंटू के फोडे का इलाज ❀

एक फोड़ा घुटने के जोड़ पर होता है उसकी चिकित्सा बहुतही कठिन है क्योंकि पहिले एक पीली फुन्सी होती है उसकी तसवीर आगे देखलो जब वह फुन्सी फूट जाती है तो उसके चारों से बहुत घाव होजाता है अन्त को उसमें बत्ती जाने लगती है फिर वह असाध्य होजाता है और जो मनुष्य उसकी चिकित्सा करै तो इस प्रकार से करै पहिले तेजाब लगाकर घाव बढ़ादे और उसमें एक सफेदसा मांस होता है उसको निकाल डाले जब घाव कच्चा होजाय तो वह मरहम लगावे जिसमें रतनजोत है और उसके लगाने से आराम न हो तो ये आगे लिखी मरहम लगावे ।

❀ मरहम की विधि ❀

कुंदरू गोंद १ तोला, पारा ६ माशे, काले तिलों का तेल १ तोला, इन सबको एक कढ़ाई में डालकर खूब रगड़ डाले जब मरहम के सदृश होजाय तब लगावै ।

❀ पिंडली के फोडे का इलाज ❀

एक फोडा पिंडली पर होता है उसकी सूरत यह है पहिले इसकी चिकित्सा यह है कि तहलील करने वाला लेप लगावै तो तहलील होजावै, और वासलीक नसकी फस्द खोलै और यह आगे लिखा लेप लगाना चाहिये ।

❀ लेप ❀

अमलतास २ तोला, बाबूना के फूल १ तोला, खतमी के फूल १ तोला, सूखी मकोय १ तोला, नाखूना १ तोला गिले अरमनी १ तोला, मूरिदके बीज ६ माशे, अफीम २ माशे सुरंजान कड़वा ६ माशे, निर्बिसी ६ माशे इन सब को पानी में पीसकर गरम करके लगावै और अरंड के पत्ते बांधे और जो घाव लाल होजाय तो वह मरहम लगावे जिस में नानपान का मुर्दा है और जो वह फूटजाय तो यह निश्चय करें कि घाव के नीचे सखती है वा नरमी जो नरमी हो तो नश्तर देवै जो सखती हो नर्म करके नश्तर दे और मरहम लगावै जिसमें वर्षा काजल लिखा है ये तसवीर पिंडली के फोड़े की है (देखो चित्र नं० २१) दूसरी सूरत इस फोड़े की यह है कि पहिले एक छाला सा होता है और [illegible] २ अंगुल्की नीचे मवाद होता है जब वह छाला [illegible] और मवाद न निकले वा दबाने से निकलता हो

चित्र नं २४

तो नश्तर देवे उसपर नीमके पत्ते और नमक बांधे फिर यह नीचे लिखा मरहम लगावे।

❀ नुस्खा ❀

पहिले काले तिलों का तेल पाव सेर लेकर गरम करे फिर सफेद शलगम २ तोले मिलाये गुजराती नग २, नीमके पत्तों की टिकिया २ तोला उसमें जलाकर फेंकदे और ९ तोला सिंदूर मिलाकर मन्दी २ आगपर पकावे जब चाश्नी हो जाय तब ठण्डा करके लगावे।

❀ पिंडली के दूसरे फोडे का यत्न ❀

एक फोड़ा पिंडली से छः अंगुल नीचे होता है और वह बहुत काल में पकता है एक या दो वर्ष के पीछे फूटता है तो उसमें पानी निकलता है और रुधिर भी उसमें से निकला करता है। उस पर वह मरहम लगावे जिसमें सफेद जीरा है अथवा यह मरहम लगावे।

❀ नुस्खा मरहम ❀

लाल मैनफल, बबूल का गोंद, लौंग फूलदार, साबुन

विलायती, भैंसा गूगल, इन सबको बराबर ले जलमें महीन पीसकर एक कपड़े पर लेप करके मोमजामा सा बना रक्खे और समय पर फाया कतर कर लगावै ये बहुत ही उत्तम है हरएक कच्चे फोड़े पर इसको लगाना चाहिये इस फोड़े को बीढ़ा कहते हैं और जब वह पकजावै तब उसपर वह मरहम लगावै जिसमें साबुन है अथवा ये मरहम लगावै।

नुसखा

जंगाल, सुहागा चौकिया कच्चा आमाहल्दी तीन तीन माशे, बिरौजा पांच तोले, साबुन छः माशे, इन सब को मिलाकर और पानी से धोकर लगावै।

❀ गट्टे के फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा पांवके गट्टे पर होता है जो वह शीघ्र अच्छा हो जाय तो उत्तम है नहीं तो उसमें म्हाड़ियां निकला करती हैं और देखा है कि ऐसा फोड़ा वर्षा में ही अच्छा होता है और इस फोडेकी वही चिकित्सा करै जो अभी वर्णन की है

❀ पांव के तलुए के फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा पांव के तलुए में होता है इसकी भी यही चिकित्सा है जो अभी ऊपर वर्णन की है।

❀ पांव की अंगुली के फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा पांवकी अंगुलियों पर होता है इसकी विचार करे कि वह उपदंशके कारण करके तो नहीं है जो उसका यह कारण नहीं तो वही चिकित्सा करै जो हाथकी अंगुलियों के फोडेकी है और जो यह फोड़ा उपदंशके कारण हो तो उसकी यह सूरत होती है कि पांव की अंगुलियां

गलकर गिरपड़ती है और चिकित्सा करनेसे घाव होजाता
है और पांव बेकार होजाता है ।

अब जानना चाहिये कि शरीर में बहुत से फोड़े होते हैं
उन सबकी व्यवस्था वर्णन करूं तो ग्रंथ बहुत बढ़जायगा
इस लिये दो चार नुसखे मरहम और तेलके लिखदेता हूं
जो सब प्रकार के फोड़ों को गुणदायक हैं आगे कच्चे फोड़ों
की चिकित्सा है ॥

नुसखा ।

गुलाबकी पत्तियों को गुलाबजल में पीसकर गरम करके
गाढ़ा गाढ़ा लेपकरै और ऊपर से बंगलापान बांधे तो सब
प्रकार के फोड़ों को तहलील करै और जो मवाद तहलील
होने के योग्य न होगा तो पका देवैगा ॥

अथवा--बबूलगोंद, कमीला सुर्ख, कुम्हला, एक एक तोले
इनको पानी में पीसकर लगावे और उस पर बंगला पान
गरम करके बांधे ॥

अथवा--पहिले घृतको गरम करके उसमें चार माशे काली
मिरच और इतनीही कलौंजी पीसकर डाले इन सबको मि-
लाकर पकावै जब दवा जलजावैं तब लोहे के घोटे से खूब
रगडे जब मरहम के सदृश होजावै तब काममें लावै ॥

अथवा--कडवा तेल पांच तोला, कमीला, काली मिरच,
मेंहदी के पत्ते हरे, नीमके पत्ते, सूखे आमले यह सब दवा छः
छः माशे नीलाथोथा चार माशे इन सबको तेलमें जलाकर
लोहे के दस्ते से खूब रगड कर लगावे ॥

❀ दाद का यत्न ❀

जो दाद रोग थोडे दिनोंका होयतो ये दवा लगाना चाहिये

❀ नुसखा ❀

सूखे आमले, सफेद कत्था, पवांड के बीज, इन तीनों को बराबर लेकर दही के तोडमें पीसकर महँदी के सदृश लगावै

अथवा ।

पलास पापड़ा, नीलाथोथा. सफेद कत्था, इन सबको बराबर लेकर कागजी नीबूके रसमें पीसकर दाद पर लेपकरै और थोडी देर धूप में बैठा रहै सात दिन के लगाने से बिलकुल आराम हो जायगा ।

अथवा ।

कपास के बीजों को कागज़ी नीबू के रसमें पीसकर रक्खै पहिले दादको कंडेसे खुजाकर फिर इस लेपको लगावै ।

अथवा ।

अफीम, पँवार के बीज, नौसादर, खैरसार, इनसब दवाइयों को बराबर ले नीबू के रसमें पीसकर दादमें लेप करै तो दाद बहुत जल्द आराम होजायगा ।

अथवा ।

गन्धक, माजूफल, नीलाथोथा, इनतीनोंको बराबर ले हुक्केके पानीमें तथा कागज़ी नीबूके रसमें पीसकर लगावैः—

अथवा ।

राई २॥ माशे कूटछानकर सिरकेमें मिलाकर लेपकरै तो दाद जाय ये । दवा उसवक्त करना उचित है कि जब दाद खालके नीचे पहुंच गयाहो । और जो खाल के नीचे न

पहुँचा हो तो यह लेप करे ॥

❀ नुसखा ❀

गंधकपीली छःमाशे लेकर कूट छानकर उसमें थोड़ा पारा कपड़े में छानकर गंधक को बराबर ले और गौका घी और बकरे की चरबी तीन बार जलसे धोई हुई इन दोनों को साढ़े सोलह २ माशे ले इन सबको मिलाकर खूब मथे कि पारा मरजावे फिर इसके दोभाग करले और इसका एक भाग धूप में वा आगके सामने बैठकर मले फिर एक घड़ी पीछे गरम जलसे स्नान करे ये दवाई खुजली को भी दूर करती है ॥ और किसी मनुष्यके दाद बहुत दिनके होगये हों तो उसकी ये दवा करे ।

॥ नुसखा ॥

पंवार के बीज एक तोले पानीमें पीसकर और तीन माशे पारा मिलाकर खूब खरल करे जब मरहमके सदृश होजावे तो दादको खुजाके इसदवाको लगावैतो निश्चय आरामहोय

❀ अथ खुजली का यत्न ❀

जानना चाहिये कि खुजली रोग दो प्रकार का होता है एकतो सूखी दूसरीतर अवहम पहिलेतर खुजलीकेयत्नलिखतेहैं

❀ नुसखा ❀

लाल कमेला एक तोले, चौकिया सुहागा भुना एक तोले फिटकरी एक तोले,इन तीनोंको महीन पीसकर दोतोले कड़ वे तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करे इसी तरह तीन दिन तक करे फिर तीन दिनके बाद लोनी मिट्टी शरीर में मल कर स्नान करडाले तो खुजली जाय ।

अथवा।

कबेला, सफेद कत्था, महँदी; ये तीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीन माशे, काली मिर्च एक माशे, इन सबको महीन पीसकर छानकर गौके धुले हुए घृतमें मिलाकर चार दिन तक मर्दन करे फिर लौनी को शरीर पर मलकर स्नान करे तो खुजली निश्चै जाय।

और जो खुजली सूखी हो तो हम्माम में स्नान करना गुण करता है. और जुल्लाब लैना फायदा करता है तथा शातिरे का अर्क पीना फायदा करता है और करूत का लेप करना भी लाभ दायक होता है:—

करूत के लेप की विधि

करूत को पीसकर दो घडी तक गरम जलमें भिगो रक्खे फिर इसको खूब मले जब मरहम के सदृश होजाय तब उस में खट्टा दही वा सिरका १२ तोले, और गंधक आमला सार ३॥ तोले. कूट छानकर इन सबको २२॥ माशे तिल के तेलमें मिलाकर तीन भाग करे और सवेरेही एकभाग को शरीरपर मलकर फिर हम्माम में जाकर गैहूं की भुसी और सिरका बदनपर मलकर गरम जलसे स्नान करडाले तो खुजली निश्चय जाय ये लेप दोनों तरह की खुजली को गुण करता है।

अथवा।

सिरके उत्पन्न करनेवाली वस्तु पिस्ता मदिरा और शहत न खाय और नित्य हम्माममें स्नान करे और जुल्लाव लेवे। और मुंजिसके बाद नित्य रातको नीबूका रस वा अंगूरका रस

अथवा सिरका थोड़ा गुलाबजल और रोगन अथवा मीठेतेल मेंमिलाके गुनगुना करके मालिश करैतो सूखी खुजलीजाय और जो खुजली थोड़े दिनकी होयतो यह दवा लगावैः—

❀ नुसखा ❀

सिरसों ४ तोला लेकर जलमें महीन पीसकर गुनगुना करके उबटनाकरै फिर गरम जलसे स्नान करैतो सूखीखुजलीजाय

❀ घावोंका यत्न ❀

अब हर प्रकारके घावोंका यत्न लिखते हैं ॥

जानना चाहिये कि मनुष्यके शरीरमें घाव बहुत प्रकारसे होताहै । सबोंको यथा क्रमसे नाम लिखूं तो ग्रंथ बहुत बढ़ जायगा इस सबबसे सूक्ष्म घावोंके नाम लिखता हूं ॥

❀ घावोंके नाम ❀

(१) अग्निसे जला (२) तेल घृत आदिसे जला (३) चोट लगनेका (४) लाठी आदिकी चोटका (५) पत्थर ईंट की चोटका (६) तलवार का (७) बंदूककी गोलीका (८) तीरका इत्यादि आठ प्रकारके घाव हैं और बहुत से वैद्यक ग्रंन्थोंमें घाव और सूजन छःप्रकारका लिखाहै वायु का १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रुधिरके दूषित होनेका ५ किसी प्रकारकी लकड़ी आदिकी चोट लगनेका ६।

❀ अथ वायुके घावका लक्षण ❀

वायुका घाव और सूजन विषम पकता है पित्तका व्रण भी तत्काल पकताहै कफका व्रण देरमें पकताहै रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल पकताहै ।

❀ सूजन के घावका लक्षण ❀

जिस व्रण में गरमी और सूजन थोड़ी होय और कड़ी होय और उसका त्वचाके सदृश वर्ण होय और दर्द कम हो तो जान लेना चाहियें कि अभी व्रण कच्चा है व्रण उसको कहते हैं कि प्रथम शरीरके किसी स्थान पर सूजनहो और फिर वह पके और फोड़े के समान होजाय फिर फूट कर घाव होजायः—

❀ व्रणकी सूजनके लक्षण ❀

जिस मनुष्यकी सूजन अग्निकी तरह जले और खीरकी तरह पके और चेंटी की तरह काटे और हाथसे दावने पर सुई छिदने कीसी पीड़ाहो और उसमें दाह बहुतहोय उस का रंग बदल जाय और सोनेके समय शान्तहो और उस में विच्छूके काटनेकासा दर्द होय और सूजन गाढी होय और जितने उसके पकनेके यत्न करै तौभी पके नहीं और उस सूजनमें तृषा ज्वर अरुचि होय यह लक्षण जिसमें होय तो जानिये कि यह सूजन पक गईहै ॥ और जो सूजन पक जातीहै तो उसकी पहिचान यहहै कि उसमें पीड़ा नहोय ललाई थोडी होय बहुत ऊंचा न होय और सूजनमें तह पड़जाय और पीड़ा होय खुजली बहुत चले सवेरे उपद्रव जाते रहैं पीछे वह सूजन न जाय खाल फटने लगे और उस में अंगुली लगाने मे पीड़ा होय राध निकले इतने लक्षण होय तो जानिये कि सूजन पक गई है इन कच्चे पक्के व्र णोंको जगह भली प्रकार से पहचान कर चिकित्सा करै ॥ और जो जगह कच्ची सूजन तथा फोड़ेको चीरे और उस

यह ज्ञान न हो कि पका है या नहीं तो ऐसे जर्राह से इला-
ज नहीं कराना चाहिये । य व्रणकी सूजन के लक्षण
कहे वहुत से हिन्दुस्तानी वैद्यों ने घाव ८ प्रकारके लिखे हैं
यथा वातके, पित्तके, कफ के सन्निपातके, वात पित्तके, वात
कफके, पित्त कफके चोट के ।

❀ घावों का यत्न ❀

इस प्रकरणमें अपने और उस्ताद के आजमाये हुए नुसखे
लिखता हूं कि जिसके लगानेसे हज़ारों रोगियों को आ-
राम किया है ।

❀अग्नि से जले का प्रयत्न ❀

जो मनुष्य अग्नि से जलजाय तो उसको अग्निसे तपा
वे तो शीघ्र आराम होय ।

अथवा अगर आदि गरम वस्तुओं का लेप करे ।

अथवा औषधियोंके घृतको या गायके घृतको गरम कर
फिर ठंडा करके लेपकरे ।

अथवा वंसलोचन बड़की जड़. रक्त चन्दन, रसोत, गेरू
गिलोय, इनको महीन पीस घृतमें मिलाय लेपकरे ॥

अथवा मोम, महुआ, राल ; लोध, मजीठ, रक्तचंदन,
मूर्वा, इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर गौके घृत में
पकावे पीछे इस घृत का लेप करे ।

अथवा पटोल का पचांग लेकर उसे पानीमें औटावे जब
पानी जल कर चौथा हिस्सा रहजावे तब कड़वे तेलमें मिला
कर पकावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रहजाय
तब ठंडा करके लगावे ॥

अथवा पुराना खाने का गीला चूना लेकर इसीको दही के तोड़ में मिलाकर लेप करै । और जो तेलसे जला होगा तो उसके फफोलें दूर हो जांयगे ।

अथवा जौ को जलाकर इसकी राखको तिलोंके तेलमें मिलाकर घृत मिलाकर लेप करै ।

❀ अथ तेल से जलेहुए का उपाय ❀

तिलका तेल पावभर, और खानेका चूना गीला पुराना ४ पैसेभर उसको हाथसे तीन घंटे तक मसले जल मरहमके सदृश हो जावे तब रुई के फायेसे जले हुए स्थान पर लगावै तो अच्छा होय ।

❀ तलवार के घावों का यत्न ❀

जिस मनुष्य के तलवार अथवा और किसी शस्त्र की धार लगने से खाल फट जाय अथवा और त्वचा की आकृति बदल जाय तो जर्राह को उचित है कि ऐसे रोगी को ऐसे मकान में रक्खे जिस में वायु न लगे फिर खालको सीधी कर के सूत से टांके लगावै उन टांको के घाव के स्थानमें गेहूं की मैदामें पानी और घृत मिलाय पकाले जब पानी जल जाय घृतमात्र रहजाय तब उसकी लोई बनाय सुहाता २ सेक करै तो घाव तत्काल अच्छा होजायगा ।

❀ अथवा ❀

कुटकी, मोम, हल्दी, मुलेठी, करणगच की जड और [illegible] के पत्र और करणगच के फल, पटोल पत्र, चमेली [illegible] नीम के पत्ते इन सबको बराबर ले के घृत में पकावे [illegible]

अथवा–शस्त्र के लगने से जिस मनुष्य का खून बहुत निकल गया हो और उसके वायु की पीड़ा हो आवे उसके दूर करने के वास्ते उस रोगी को घी पिलाना चाहिये और जिस मनुष्य का तलवार आदि से शरीर कटजाय उस के गंगेरन की जड़ का रस घाव में भरदे तो घाव त काल भर जाय इस घाव वाले का शीतल यत्न करना चाहिये और जो घावका रुधिर पेडू में चला जाय तो जुल्लाब देना चाहिये जिसका नुसका यह है:—

बांस की छाल, अरण्ड का वक्कल, गोखरू, पाषाण भेद इन सबको बराबर कर पानी में औटावै फिर इस में भुना हींग और सेंधा नमक मिलाकर पिलावै तो कोठे का रुधिर निकल जाय ॥

❀ अथवा ❀

जव, कुथली, सेंधानोन, रूखा अन्न इनको खाना भी बहुत फायदा करता है ॥

अथवा—चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, पटोल कुटकी, दारूहलदी, गौरीरस, मजीठ, हडकी छाल, मोम. लीलाथोथा, सहत, कणगच के बीज. ये सब बराबर ले और इन सबके बराबर गौ का घृत ले और इन से अठगुना पानीले इन सबको इकट्ठा कर मंदी आग से पकावें जब पानी जल जाय और घृत मात्र रह जावे तब उतार कर ठण्डा करे फिर इस घृतकी बत्ती करके लगावै ।

अथवा--चमेली, नीम, पटोल, किरमाला, इन चारों के पत्ते, मोम, महुआ, कूट, दारू हल्दी, पीली हल्दी, कुटकी

मजीठ हाले की छाल, लोध; तज, कमलगट्टा, गौरी रस नीलाथोथा, किरमाला की गिरी, ये सब दवा बराबर ले इनको पानी में औटावे फिर इनके पानी में मीठा तेल मिलाकर मन्दी आग से पकावै जब पानी जल जावे और खालिस तेल रहजावे तब इस तेल की बत्ती बनाकर घाव में लगावै तो घाव बहुत जल्द अच्छा होजायगाः—

अथवा--चीता, लहसन, हींग, सर फोका; और कलिहारी की जड़, सिंदूर, आतीस; कूट इन औषधियों को पानी में औटावे जब चौथाई पानी रह जावे तब उस पानी मे कड़वा तेल मिलाकर मन्दी आंच से पकावे जब पानी जल जाय और खालिस तेल रह जाय तब इस तेल को रुई तथा कपडे की बत्ती आदि से किसी तरह घाव पर लगावै तो घाव शीघ्र अच्छा होजायः--

अथवा--गिलोय, पटोल की जड, त्रिफला; वायविडंग इन सबको बराबर ले महीन पीस के इन सबकी बराबर गूगल मिलाकर धर रक्खे, फिर इस में से एक तोला पानी के साथ नित्य खाय तो घाव निश्चय भर आवेगाः--

अब ये तो हम ने शस्त्रादिक का मिला हुआ यत्न लिखा इस में कुछ स्थान भेद नहीं लिखा चाहे सब शरीर में किसी जगह शस्त्र लगा हो तो इन्हीं दवाओं से यत्न करना चाहिये अब हम स्थान २ के घावों का यथाक्रम यत्न लिखते हैं।

जो किसी मनुष्य के सिर में तलवार लगी हो और घाव गहरा होगया हो, और हड्डी तक उतर गई हो और चोट मे हड्डी के कई टूक हो गये हों तो सब टुकडों को अमल के

अनुसार मिलावै और जो चूरा हो तो निकाल डाल और
उस घाव पर गोमा का रस लगावै फिर घाव में टांके भर
देवै फिर इस दवाई से सेकै ।

❀ सेक की दवा ❀

आमां हल्दी, मेदा लकड़ी, काले तिल, सफेद शकर गेहूं
की मैदा, घी इन सबका हलुआ बनाकर सेके और उसी को
बांधे ओर जो तलवार आडी पडी हो और सिरकी खोपड़ी
जुदी हो जावे तो दोनों को मिलाकर बांधे और पूर्वोक्तरीति
से सेक के मरहम लगावै ॥

❀ मरहम की विधि ❀

सफेदा कासगरी, मुर्दासंग, रसकपूर, अकरकरा गुजराती
माजूः ये सब दवा एक एक तोले सिंगरफ चार माशे, इन
सबको पीसकर चार तोले घृत में मिलाकर नदी के जल से
धोकर घाव पर लगाया करै और ध्यान रक्खे कि घाव में
स्याही न आने पावै ॥

और जो किसी के गलेपर तलवार लगे और उसके लगने
से घाव बहुत होजावै तो जर्राहको उचित है कि पहिले
रुधिर से घावको शुद्ध करै फिर टांके लगादे और केवल
आंबाहल्दी से अथवा हलुए से सेक कर वो मरहम लगावे
जिसमें नौकिया सुहागा लिखा है जब पीव गाढी और
सफेद निकले और पीलापन लिये हो तो वह मरहम लगावै
जो अभी ऊपर वर्णन कर चुके हैं ।

और जो तलवार कांधे पर पड़े और हाथ लटक जाय
तो उसको मिलाकर टांके भर देवै और उसमेंभी यही मर-

सूत तेल में तरकरके भरै और खूब बांधे और अंडखानेको दे और मकोयका अर्क पिलावै वा गोमाका साग पकाकर खि-लाया करै और यथोचित पथ्य करावै और घाव पर ध्यान रक्खें कि पीव पीवही के सदृश हो और स्याही नहो और ऐसे घायल को ऐसे एकांत स्थान में रक्खे कि जहां किसी का शब्द भी पहुँचने न पावै ॥ और जो किसी मनुष्य के हाथपर तलवार लगी हो और दो घड़ी व्यतीत होगई होय तो वो घायल अच्छा न होगा और जो थोड़ी देर हुई हो और हड्डी बराबर कटगई हो तो आराम हो जायगा क्यों कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक सा-ध्य है और ठंडा होगया हो तो असाध्यहै और जो तलवार से अंगुलियां कट जावें और गिर न पड़ें तो अच्छी हो सकती हैं और किसी के चूतड पर तलवार लगे तो उसकी चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है यह स्थान बहुत भया-नक नहीं है और किसी के अंडकोशों पर ऐसी तलवार लगे कि फोते कटजावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकडे मिलाकर ऊपर से शीघ्र टांके लगा देवे और इस प्रकार से बांधे कि भीतर से फोतों का जख्म मिला रहे और उस पर वह लगावें जो अंग्रेजो के यहां लड़ाई पर लगाते हैं और जो समय पर वह प्राप्त न हो सके तो देवदारू का तेल वा ठिमूटा का तेल लगावें और जो [illegible] से पांव के नख तक घाव होतो उसकी चिकित्सा उसके अनुसार करनी चाहिये और जो सिरसे पांव तक कोई घाव बहुत कठिन होतो उसकी वह चिकित्सा करे जो क्रमसे और

हम लगावे जो अभी ऊपर कह आये हैं। और एक सांच लकड़ी का बनाकर कांधे पर बांधे तो आराम होजायगा।

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा हो तो डरना न चाहिये और उस रोगी की मन लगाकर चिकित्सा करै जो टुकडे होगये हांय तो देखै कि रोगी में सांस है वा नहीं जो सांस होतो चिकित्सा करै और जो सांस बलके साथ आता हो तो और घायल की बुद्धि और औसान ठीक हों तो समझना चाहिये कि रोगी असाध्य है कोई दम का महमान है परन्तु जो हृदय में गुर्दे में और कलेजे में घाव न आया हो तो टांके लगाकर चिकित्सा करै जो परमेश्वर अनुग्रह होगा तो घायल का प्राण बच जायगा और जो हृदय गुर्दे और कलेजे में घाव होगया हो तो उस घायल की चिकित्सा व्यर्थ है और जो इन में घाव न हो तो चिकित्सा करै और उक्त मरहम को बनाकर लगावै अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करै अथवा यह तेल बनाकर लगावे।

तेल की विधि

दारुहल्दी, आँबाहल्दी, भड़भूजे की छानमत का धूम ये तीनों दो दो तोले इन सबको जौकुट करके नदीके जल में अथवा वर्षा के जलमें भिगोदे और सवेरे काले तिलों का तेल डालकर निकालकर मंदमंद आगपर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तो छानकर धररक्खे ॥

और इसमें पुराना लत्ताका कपड़ा भिगोकर घाव पर

सूत तेल में तरकरके भरे और खूब बांधे और अंड खानेको दे और मकोयका अर्क पिलावे वा गोमाका साग पकाकर खि- लाया करै और यथोचित पथ्य करावे और घाव पर ध्यान रक्खें कि पीव पीवदी के सदृश हो और स्याही नहो ओ ऐसे घायल को ऐसे एकांत स्थान में रक्खे कि जहां किसी का शब्द भी पहुँचने न पावै ॥ और जो किसी मनुष्य के हाथपर तलवार लगी हो और दो घड़ी व्यतीत होगई होंय तो वो घायल अच्छा न होगा और जो थोड़ी देर हुई हो और हड्डी बराबर कटगई हो तो आराम हो जायगा । क्यों कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक सा- ध्य है और ठंडा होगया हो तो असाध्यहै और जो तलवार से अगुलियां कट जावे और गिर न पड़ें तो अच्छी हो सकती हैं और किसी के चूतड पर तलवार लगे तो उसकी चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है यह स्थान बहुत भया नक नहीं है और किसी के अंडकोशों पर ऐसी तलवार लगे कि फोते कटजावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकडे मिलाकर ऊपर से शीघ्र टांके लगा देवे और इस प्रकार से बांधे कि भीतर से फोतों का जख्म मिला रहे और उस पर वह लगावै जो अंग्रेजो के यहां लगाई पर लगाते हैं और जो समय पर वह प्राप्त न हो सके तो देवदारू का तेल पाढिस्टा का तेल लगावें और जो [illegible] से पांव के नख तक घाव होतो उसकी चिकित्सा उ[illegible] अनुसार करनी चाहिये और जो सिरसे पांव तक कोई घाव बहुत कठिन होतो उसकी वह चिकित्सा करे जो कमर औ[illegible]

हम लगावै जो अभी ऊपर कह आये हैं। और एक सांचा लकड़ी का बनाकर कांधे पर बांधे तो आराम होजायगा।

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा हो तो डरना न चाहिये और उस रोगी की मन लगाकर चिकित्सा करै जो टुकडे होगये हांय तो देखै कि रोगी में सांस है वा नहीं जो सांस हो तो चिकित्सा करै और जो सांस बलके साथ आता हो तो और घायल की बुद्धि और औसान ठीक हों तो समझना चाहिये कि रोगी असाध्य है कोई दम का महमान है परन्तु जो हृदय में गुर्दे में और कलेजे में घाव न आया हो तो टांके लगाकर चिकित्सा करै जो परमेश्वर अनुग्रह करेगा तो घायल का प्राण बच जायगा और जो हृदय गुर्दे और कलेजे में घाव होगया हो तो उस घायल की चिकित्सा व्यर्थ है और जो इन में घाव न हो तो चिकित्सा करै और उक्त मरहम को बनाकर लगावै अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करै अथवा यह तेल बनाकर लगावै।

❀ तेल की विधि ❀

सूत तेल में तरकरके भरै और खूब बांधे और अंड खानेको दे
और मकोयका अर्क पिलावे वा गोभीका साग पकाकर खि-
लाया करै और यथोचित पथ्य करावै और घाव पर ध्यान
रक्खें कि पीव पीवड़ी के सदृश हो और स्याही नहो और
ऐसे घायल को ऐसे एकांत स्थान में रक्खे कि जहां किसी
का शब्द भी पहुँचने न पावै ॥ और जो किसी मनुष्य
के हाथपर तलवार लगी हो और दो घड़ी व्यतीत होगई होंय
तो वो घायल अच्छा न होगा और जो थोड़ी देर हुई
हो और हड्डी बराबर कटगई हो तो आराम हो जायगा ॥
क्यों कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक सा-
ध्य है और ठंडा होगया हो तो असाध्यहै और जो तलवार
से अंगुलियां कट जावें और गिर न पड़ें तो अच्छी हो
सकती हैं और किसी के चूतड़ पर तलवार लगे तो उसकी
चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है यह स्थान बहुत भया
नक नहीं है और किसी के अंडकोशों पर ऐसी तलवार
लगे कि फोते कटजावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर
दोनों टुकडे मिलाकर ऊपर से शीघ्र टांके लगा देवे और
इस प्रकार से बांधे कि भीतर से फोतों का जख्म मिला
रहे और उस पर वह लगावे जो अंग्रेजों के यहां लड़ाई
पर लगाते हैं और जो समय पर वह प्राप्त न हो सके तो
देवदारू का तेल वा ठियुरा का तेल लगावै और जो [illegible]
से पांव के नख तक घाव होतो उसकी चिकित्सा उ[illegible]
अनुसार करनी चाहिये और जो सिरसे पांव तक कोई घाव
बहुत कठिन होतो उसकी वह चिकित्सा करे जो कमर और

हाथ के घावकी वर्णन कीगई है और इन स्थानोंके सिवाय शरीर में किसी जगह तलवार के लगने से घावहों तौ सब जगह की चिकित्सा इसी तरह इनहीं औषधियों से करनी चाहिये, और तलवार, सेल, फरसा, चक्र, इतने शस्त्रों के घावों का इलाज इन्हीं दवाओं से होता है ॥

अथतीर लगने के घाव का यत्न

जो किसी मनुष्य के बदन में तीर लगा हो और घाव के भीतर अटक रहा होतौ घावको चारों ओर से दवा कर निकाले और घावको चौडा करै कि हाथ से तीर निकल सके और भीतर के तीर की परीक्षा यह है कि उस घाव में दूसरे तीसरे दिन रुधिर बहने लगता है और तीर जोड की जगह रह जाता है ॥

और जो मांस में लगता है तो पार होजाताहै उसके घाव पर दोनों ओर मरहम लगावै और बीच में एक गद्दी बांधे इस प्रकार की चिकित्सा में परमेश्वर अपने अनुग्रह से आराम कर देता है ।

यदि किसी की छाती या नाभि में तीर लगे और पार हो जावे या जो तीर लगकर अलग निकल जावे तो उपरोक्त चिकित्सा करे और जो भीतर अटक रहे तो औजार से निकाल कर यह रोगन भरे ॥

नुसखा रोगन

[illegible] का अर्क, गोमा का अर्क, नीमके पत्तों का अर्क, [illegible] का अर्क, दो दो तोले, गेरू, अफीम एक २ तोले, [illegible] पाव भर तिलके तेल में मिलाकर चालीस दिन तक

धूपमें रक्खे और ऐसे समय पर काममें लावे ॥ यह तेल अन्य प्रकारके घावों को भी भर देता है ॥

यदि किसीके पेढू में तीर लगाहो तो बहुत समझ के चिकित्सा करे क्योंकि यह स्थान कोमल है जो इस स्थान में तीर लगकर निकल गया हो तो उत्तम है और जो रहगया होतो कठिनतासे निकलता है क्योंकि यह स्थान न तो चीरनेके योग्य है और न तेजाब लगानेके योग्य है अतएव वहां चुम्बक पत्थरको पहुंचावे तो उत्तम है ॥ क्योंकि लोह को चुम्बकका पत्थर खैंच लेताहै और जो तीर पार निकल गया होतो वह चिकित्सा करे जो ऊपर वर्णन की गई है और जिसमें भांगरे का अर्क लिखा है ॥

यदि किसीकी जंघामें तीर लगेतो वह स्थान भी तीर के भीतर रहजाने काहै क्योंकि मांस और हड्डी यहां की भीतरी है ॥ उचित है कि घावको चीरकर तीरको निकाले इसमें कुछ डर नहीं है परन्तु डर यहहै कि जो घाव भीतर रहजाय तो बहुत काल में अच्छा होता है और जोड़ों के घावोंकी व्याख्या ऊपर वर्णन हो चुकी है इसलिये घावको चौड़ा करके तीर निकाले तो हड्डी का हाल जाना जावे कि हड्डी में कुछ हानि पहुँची या नहीं जो हड्डी पर हानि पहुँची होतो हड्डी की किरचें निकालकर चिकित्सा करे ॥

यदि किसी के घुटने में तीर लगेतो उसकी भी वही व्यवस्था जानो जो जंघा के बाब में वर्णन कीगई है ॥ और मैंने तीर के घाव घुटने से पांव तक कम देखे हैं यदि ऐसे पांव में

गार लगभी जाय तो उसी प्रकार से चिकित्सा करै जैसा कि ऊपर से वर्णन करते चले आये हैं:—

❀ घावकी परीक्षा ❀

जिस घाव में तीर आदि शस्त्रकी नोंक रहजाय उसकी पहचान यह है कि घाव काला और सूजन से युक्त हो फुंसियों को लिये हो और उस घाव का मांस बुंद बुंदे समान ऊंचा होय और उस में पीड़ा होय तो उस घावको शस्त्र समेत जानिये ॥

❀ कोठे की परीक्षा ❀

जिस मनुष्य के कोष्ट में तीर रह गया हो उसकी पहचान यह है कि शरीर की सातों त्वचा और शरीर की नसोंको नांघ कर पीछे उन नसों को चीर कर और कोष्ट के विषे रहा हुआ वह शस्त्र अफरा करै और घाव के मुख में अन्न और मल मूत्र को ले आवे तब जानले कि इस के कोष्ट में शस्त्र रहा है ॥

जो कुछ दूरसे लगी हो तो भेजे के भीतर रहजाती है और निकालने के समय रोगी के बलको देखना चाहिये कि गो-ली निकालनेमें वह मरतो न जायगा और जो उसका मर-जाना संभव होतो चिकित्सा न करै और जो देखेकि रोगी इस कष्टको सहसक्ताहै और उसके बंधुलोग प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देते हैं तो निःसंदेह भेजेमें से गोली को निकाले और सिरके घावको सेकना कम उचित है,और चिकित्सा के समय पहले यह मरहम लगावै जिससे जला मांस निकल जावैः—

❀ मरहम की विधि ❀

जंगाल हरा, खालिस शहद, एक एक तोले, सिरका तेज दो तोले, इन सबको मिलाकर कलछी में पकावै जब चास-नी होने पर आवै तब ठंडा करके लगावै ।

❀ दूसरा नुसखा ❀

मुर्गी के अंडे की सफेदी दो अदद, आतशी शराब चार तोले दोनों को मिलाकर लगावै ।

यदि गोली गले में लगी हो तो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करै जैसी कि ऊपर वर्णन की गई है ।

यदि गोली किसी की छाती में लगी हो तो उसकी व्य-वस्था यह है कि जिस ओर को मनुष्य फिरता है तो गोली भी उसी ओर को फिरजाती है यदि कोई बलवान होगा तो गोली निकल जायगी,और निर्बल होगा तो रह जायगी इस पर खूब ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उसका घाव टेढ़ा हो-ताहै और छाती की बराबरमें दिल यानी हृदय उपस्थित है उसका ध्यान भी अवश्य रखना चाहिये और जो गोली

कपडे से लिपटी हुई होती है तो वह गोली निकल जाती है और कपडा रहजाता है और जिस ओर को गोली निकल जाती है उस ओर का घाव चौडा हो जाता है उचित है कि घावको चीरकर वा पकाकर पहिले कपडे को निकाल लेवे और कपड़े रहजाने की यह पहिचान है कि घावमें से पतली और स्याह पीव निकला करती है पहिले घाव को शुद्ध करले क्योंकि जब घाव शुद्ध होजायगा और जला हुआ मांस निकल जाता है तो घाव शीघ्र अच्छा होजाता है और धीरज से उसकी चिकित्सा करे घबराहट को काम में न लावै।

यदि किसी की छाती से पेडूतक गोली लगी हो तो उस को भी चिकित्सा इसी प्रकार से करनी चाहिये जैसी कि ऊपर वर्णन की गई है।

यदि किसी के अंडकोषों में वा जंघासे पिंडली तक कहीं गोली लगी हो तो चिकित्सा के समय देखे कि गोली निकलगई वा नहीं, निकलगई हो तो उत्तम है और जो रहगई हो तो गोली को निकालकर घावको देखे कि हड्डी तो नहीं टूटी यदि हड्डी टूटगई हो तो छोटे टुकड़ों को निकाल डाले और बड़े टुकड़ों को वहांही जमादे और उसपर सुर्ख [illegible] भरदे और स्टिकिन एक अंग्रेजी दवा है उसका फाया लगादेवे और खूब कसकर बांधे और तीन [illegible] पीछे खोलकर देखे कि हड्डी जमी वा नहीं जो जम गई हो तो उत्तम है नहीं तो उनको भी निकाल डाले अथवा [illegible] वैसा करे और देखता रहे कि घाव

में सफेदी और उसके आस पास स्याही तो नहीं हुई और
घावमेंसे दुर्गंधि तो नहीं आती और पीवतो नहीं निकलता
क्योंकि यह लक्षण बहुत बुरे होते हैं और गोली के हरएक
घावमें वह दवाई लगावै जो सिरके घावमें वर्णन की है अ-
थवा उस दवाई को लगावै जिसमें अंडेकी सफेदी है उसदवा
ईमें पुरानी रुईको भिगोकर घावपर रखना चाहिये और सम्पू
र्ण शरीर में किसी मुकामपर गोली लगी हो उन सब जगह
के घावोंका इलाज इन्हीं औषधियों से होता है ।

यदि किसीके विषकी बुझी तलवार, तीर, बरछा, कटार;
फरसा, चक्र, आदि शस्त्र लगेहों तो उसकी यह परीक्षाहैकि
घाव तो ऊपर बढ़ता जाता है,और मांस गलताजाताहै और
दुर्गंध आती है और प्रतिदिन घावका रंग बुरा होता जाता
है और वहां का मांस तथा रुधिर स्याह पडजाता है बस
उचित है कि पहिले सब स्याह मांसको काट डाले जो रुधिर
जारी होजाय तो रुधिर बंद करने वाली दवाई करे जो ऊपर
वर्णन की है और दूसरे दिन गेरू नमक फिटकरी गुनगुनी
करके बांधे और यह मरहम लगावै ।

॥ मरहम की विधि ॥

पहिले गौका घी आधपाव लेकर गरमकरै फिर उसमें एक
तोला मोम डालकर पिघलावै पीछे कवेला १ तोले राल सफेद
१ तोले, रतनजोत १ तोले, इन तीनों को भी पीसकर उसमें
मिलादे फिर थोड़ासा औटावै फिर ठंडा करके एक फाया
घाव के अनुसार बनाकर उसपर इस मरहमको लगाकर घाव
पर रक्खे और जो कोईकहै कि यह जहरबाद है तो उसरों

कपडे से लिपटी हुई होती है तो वह गोली निकल जाती है और कपडा रहजाता है और जिस ओर को गोली निकल जाती है उस ओर का घाव चौडा हो जाता है उचित है कि घावको चीरकर वा पकाकर पहिले कपडे को निकाल लेवे और कपड़े रहजाने की यह पहिचान है कि घावमें से पतली और स्याह पीव निकला करती है पहिले घाव को शुद्ध करले क्योंकि जब घाव शुद्ध होजायगा और जला हुआ मांस निकल जाता है तो घाव शीघ्र अच्छा होजाता है और धीरज से उसकी चिकित्सा करे घबराहट को काम में न लावै ।

यदि किसी की छाती से पेडूतक गोली लगी हो तो उस की भी चिकित्सा इसी प्रकार से करनी चाहिये जैसी कि ऊपर वर्णन की गई है ।

यदि किसी के अंडकोषों में वा जंघासे पिंडली तक कहीं गोली लगी हो तो चिकित्सा के समय देखे कि गोली निकलगई वा नहीं, निकलगई हो तो उत्तम है और जो रहगई हो तो गोली को निकालकर घावको देखे कि हड्डी तो नहीं टूटी यदि हड्डी टूटगई होतो छोटे टुकड़ों को निकाल डाले और बड़े टुकड़ों को वहांही जमादे और उसपर सुर्खे [illegible] भरदे और स्टिकिन एक अंग्रेजी दवा है उसका फाया लगादेवे और खूब कसकर बांधे और तीन दिनके पीछे खोलकर देखेकि हड्डी जमी वा नहीं जो जम गई हो तो उत्तम है नहीं तो उसको भी निकाल डाले अथवा [illegible] बना करे और [illegible]

में सफेदी और उसके आस पास स्याही तो नहीं हुई और घावमेंसे दुर्गंधि तो नहीं आती और पीव तो नहीं निकलता क्योंकि यह लक्षण बहुत बुरे होते हैं और गोली के हरएक घावमें वह दवाई लगावै जो सिरके घावमें वर्णन की है अथवा उस दवाई को लगावै जिसमें अंडेकी सफेदी है उसदवाईमें पुरानी रुईको भिगोकर घावपर रखना चाहिये और सम्पूर्ण शरीर में किसी मुकामपर गोली लगी हो उन सब जगह के घावोंका इलाज इन्हीं औषधियों से होतो है।

यदि किसीके विषकी बुझी तलवार, तीर, बरछा, कटार; फरसा, चक्र, आदि शस्त्र लगेहों तो उसकी यह परीक्षाहैकि घाव तो ऊपर बढ़ता जाता है,और मांस गलताजाताहै और दुर्गंध आती है और प्रतिदिन घावका रंग बुरा होता जाता है और वहां का मांस तथा रुधिर स्याह पडजाता है बस उचित है कि पहिले सब स्याह मांसको काट डाले जो रुधिर जारी होजाय तो रुधिर बंद करने वाली दवाई करै जो ऊपर वर्णन की है और दूसरे दिन गेरू नमक फिटकरी गुनगुनी करके बांधे और यह मरहम लगावैं।

ॐ मरहम की विधि ॐ

पहिले गौका घी आधपाव लेकर गरमकरै फिर उसमें एक तोला मोम डालकर पिघलावै पीछे कवेला १ तोले राल सफेद १ तोले, रतनजोत १ तोले, इन तीनों को भी पीसकर उसमें मिलादे फिर थोड़ासा औटावै फिर ठंडा करके एक फाया घाव के अनुसार बनाकर उसपर इस मरहमको लगाकर घाव पर रक्खे और जो कोईकहै कि यह जहरवाद है तो उत्तरदेवै

कि यह सत्य है परन्तु उसमें मैला मला पानी नि
और इस में लाली लिये हुए पानी निकलता है
कचलोहू कहतेहैं और जहरवाद घाव शीघ्र बढ़ता है
यह घाव देरमें बढता है और जहरवाद शीघ्र गलताहै
यह देरमें, जहरवाद के घाव में मनुष्य शीघ्र मरजाताहै
इसमें देरमें मरता है और जहरवाद के रोगी को
समय कल नहीं पड़ती और ऐसे घायलको जितनी
होती है उसे न्यूनाधिक नहीं हो सकती॥ उचित है कि
क्रिया बुद्धिमानी से करै और जो सूखजानेके पीछे कोई
हड्डी की फिर दीखपड़े तो फिर तजाव लगावै कि घाव
होजावे तब हड्डीको निकाल डालै।

❁ तेजाव की विधि ❁

लहसन का रस, कागजी नीबूका रस, चार चार
सुहागा चौकिया तूतिया सब्ज एक एक तोला, इन
को महीन पीसकर पहले दोनों अर्कोंमें मिलाकर चार
पर्यंत धूपमें रक्खे और एक बूंद घाव पर लगावै।
किसी मरहम का फाया रक्खे॥

❁ अथ हाड़ टूटने का यत्न ❁

जानना चाहिये कि हड्डियोंके बारह भेद हैं सो यथ
लिखने से तो ग्रंथ बहुत बढ़जाता है और कुछ मतलब
नहीं होताहै इस वास्ते बहुतसा बखेड़ा नहीं लिखा
तो जो मतलब की बात है सोई लिखते हैं॥

❁ अथ हाड़ टूटनेकी पहिचान ❁

न्यूनाधिक होजाय और उस जगह हाथ लगाना

ाहीं और वहां शरीर फड़के और शरीर में पीड़ा और शूल
ोय रात दिन कभी भी चैन नहीं पड़ै ये लक्षण होंय तबजा
नियै कि इस मनुष्य की किसी प्रकारसे हड्डी टूटी हैं।

जिस मनुष्यकी अग्नि मंद होजाय और कुपथ्य कियाकरै
वायुका शरीर होय और जिसमें ज्वर अतीसार आदि भी
होय ऐसे ऐसे लक्षणों वाला रोगी कष्टसे बचताहै॥ औरजिस
मनुष्यका मस्तक फटगयाहो कमर टूटगई होय और संधि
खुलजाय और जांघ पिसजाय ललाटका चूर्णहोजाय हृदय,
गुदा, कनपटी, माथा, फटजाय जिसरोगीके ये लक्षण होंय
वह असाध्य है और डाढ़को अच्छे प्रकार बांधे, पीछे कडा
बांधे, और वह बुरी तरह बँधजाय और उसमें चोट आजाय
मैथुनादिक करतारहे तो उस रोगीका टूटाहाडभी असाध्य
होजाता है॥ अब शरीरके स्थान २ के हाड़ोंमें चोट लगीहो
उनके लक्षण कहते हैं॥ कंठ, तालू, कनपटी, कंधा सिर पैर क-
पाल, नाक, आंख. इन स्थानोंमें किसी तरहकी चोट लगजावै
तो उस जगहका हाड नवजाय और पहुंचा. पीठ आदि के
सीधे हाडहैं सो टेढ़े होजांय; कपालको आदिले जो गोल
हाड़ हैं सो फटिजांय और दांत वगैरह जो छोटे हाड़ हैं सो
टूटजांय इन सब हाड़ों का यत्न लिखता हूं।

जो किसी मनुष्यके चोटसे वा अच्छे कारणसे डाड़ और
संधि टूट जावै तो चतुर जर्राह को चाहिये कि उसी समय
उस जगह चोटपर शीतल पानी डालै पीछे उसके औषधि-
यों का सेक करै।

अथवा पट्टी बांधे और उस जगह जो लेप करै सो शीतल

कि यह सत्य है परन्तु उसमें मैला मैला पानी निकलता है और इस में लाली लिये हुए पानी निकलता है जिसको कचलोहू कहतेहैं और जहरवाद घाव शीघ्र बढ़ता है और यह घाव देरमें बढता है और जहरवाद शीघ्र गलताहै और यह देरमें, जहरबाद के घाव में मनुष्य शीघ्र मरजाताहै और इससे देरमें मरता है और जहरबाद के रोगी को किसी समय कल नहीं पड़ती और ऐसे घायलको जितनी पीड़ा होती है उसे न्यूनाधिक नहीं हो सकती ॥ उचित है कि चिकित्सा बुद्धिमानी से करे और जो सूखजानेके पीछे कोई किर्च हड्डी की फिर दीखपड़े तो फिर तेजाब लगावे कि घाव चौड़ा होजावे तब हड्डीको निकाल डाले ।

तेजाब की विधि

लहसन का रस, कागजी नीबूका रस, चार चार तोले सुहागा चौकिया तूतिया सब्ज एक एक तोला, इन दोनों को महीन पीसकर पहले दोनों अर्कोंमें मिलाकर चारदिवस पर्यन्त धूपमें रक्खे और एक बूंद घाव पर लगावे ॥ फिर किसी मरहम का फाया रक्खे ॥

अथ हाड़ टूटने का यत्न

जानना चाहिये कि हड्डियोंके बारह भेद हैं सो यथा क्रम लिखने में तो ग्रंथ बहुत बढ़जाता है और कुछ मतलब हासिल नहीं होताहै इस वास्ते बहुतसा बखेड़ा नहीं लिखा केवल जो जो मतलब की बात है सोई लिखते हैं ॥

अथ हाड़ टूटनेकी पहिचान

[illegible] निर्बल होजाय और उस जगह हाथ लगानेसे

नहीं और वहां शरीर फड़के और शरीर में पीड़ा और शूल होय रात दिन कभी भी चैन नहीं पड़े ये लक्षण होंय तबजानिये कि इस मनुष्य की किसी प्रकारसे हड्डी टूटी हैं ।

जिस मनुष्यकी अग्नि मंद होजाय और कुपथ्य कियाकरै वायुका शरीर होय और जिसमें ज्वर अतीसार आदि भी होंय ऐसे ऐसे लक्षणों वाला रोगी कष्टसे बचताहै ॥ औरजिस मनुष्यका मस्तक फटगयाहो कमर टूटगई होय और संधि खुलजाय और जांघ पिसजाय ललाटका चूर्णहोजाय हृदय, गुदा, कनपटी, माथा, फटजाय जिसरोगीके ये लक्षण होंय वह असाध्य है और डाढ़को अच्छे प्रकार बांधे, पीछे कडा बांधे, और वह बुरी तरह बंधजाय और उसमें चोट आजाय मैथुनादिक करतारहे तो उस रोगीका टूटाहाडभी असाध्य होजाता है ॥ अब शरीरके स्थान २ के हाड़ोंमें चोट लगीहो उनके लक्षण कहते हैं ॥ कंठ, तालू, कनपटी, कंधा सिर पैर कपाल, नाक, आंख. इन स्थानोंमें किसी तरहकी चोट लगजावे तो उस जगहका हाड नवजाय और पहुंचा. पीठ आदि के सीधे हाडहैं सो टेढ़े होजांय; कपालको आदिले जो गोल हाड़ हैं सो फटिजांय और दांत वगैरह जो छोटे हाड़ हैं सो टूटजांय इन सब हाड़ों का यत्न लिखता हूं ।

जो किसी मनुष्यके चोटसे वा अन्य कारणसे डाड़ और संधि टूट जावे तो चतुर जर्राह को चाहिये कि उसी समय उस जगह चोटपर शीतल पानी डाले पीछे उसके औषधियों का सेक करै ।

अथवा पट्टी बांधे और उस जगह जो लेप करै सो शीतल

इलाज करे और बुद्धिमान जर्राहको चाहिये कि उस मुकाम पर जो पट्टी बांधे तो ढीली न बांधे और बहुत कड़ीभी न बांधे अच्छी तरह साधारण बांधे क्योंकि जो पट्टी ढीली बँधेगी तो हाड़ जमैगा नहीं और बहुत कड़ा बांधने से शरीर की खालमें सूजन होजावेगी और पीड़ा होगी और चमड़ी पकजायगी इसी कारण पट्टी साधारण बांधना अच्छा होता है बस जिस मनुष्यके चोट लगीहो उसके यह लेप लगावे।

❀ लेपकी विधि ❀

मेदा लकड़ी; आंवले, आंबाहलदी, पंवार के बीज, साबुन पुरानी ईंट ये सब बराबर लेके महीन पीसकर और इसमेंथोड़ा काले तिलोंका तेल मिलाकर आगपर रखकर गरम २ लेपकरे

अथवा--मुगास, गेरू, खतमीके बीज; उरद, एलुआ, ये सब दवा एक एक तोले लेकर और हल्दी छः माशे सोया छः माशे, लोबान छः माशे, इन सबको पीसकर लेप करे ॥२॥

अथवा--गेरू ६ माशे, झाऊ के पत्ता नौ माशे, गुलाब के पत्ता नौ माशे; बर्गद के पत्ता नौ माशे इनको महीन पीसकर लेप करने से लाठी आदिकी चोट, गिरपड़ने की चोट और पत्थर आदिके कुचल जानेकी चोटको आराम होता है ॥३॥

अथवा--हल्दी, हीमकायके पत्ते, गेरू, ये तीनो दवा एक२ तोले, पिली सरसों दो तोले इनको महीन पीसकर लेप करने से सब प्रकार की सूजन दूर होती है ।४॥

अथवा—काले तिल, आंबाहल्दी, हालोंके बीज, येसब बराबर लेकर थोड़ा अलसी का तेल मिलाके लेप करने से सब प्रकार की चोट अच्छी होती है ।

अथवा—मटर का चून, चनाका चून, छे डाली अलसी के
बीज ये सब दवा नौ नौ माशे ले, लाल बूरा छे माशे, का-
ली मिरच तीन माशे, इन सबको पीसकर थोड़े सिरके में
मिलाकर लेप करै।

अथवा—गेरू एक तोले, सुपारी एक तोले, सफेद चन्दन
एक तोले, रसोत छः माशे, मुर्दासंग छः माशे, एलुआ छः
माशे, इन सबको हरी मकोय के रसमें पीसकर लगावै तो
सब प्रकार की चोट जाय।

अथवा—एलुआ तीन माशे, खतमी के बीज छः माशे, ब-
नफशाके पत्ते छः माशे, दोनों चन्दन बारह माशे, भठवास
छः माशे, नाखूना छः माशे, इन सबका चूरण करके मुर्गी
के अण्डे की सफेदी में मिलाके गुनगुना करके लगावै।

अथवा—खिले काले तिल, खिली सरसों, गेरू एक एक
तोले, संभालू के पत्ते डेढ तोला, मकोय के पत्ते डेढ़ तोले
इन सबको पानी में महीन पीसकर गरम गरम लेप करै तो
सब प्रकार की चोट अच्छी होजाती है।

❀ अथवा ❀

बारह सींगेके सींगकी भस्म तीन माशे, लोबान तीन माशे
भटवांस का चून दो माशे, नौसादर छः माशे बाकला का
चून दो माशे, बबूल का गोंद छः माशे, कड़वे बादाम की
मिंगी एक तोला, इन सबको पानी में पीसकर लगावे तो
सब प्रकार की चोट दूर होजाती है।

❀ अथवा ❀

कड़वे बादाम की मींगी, पुरानी हड्डी एक २ तोले सीप

की भस्म, समुद्र फेन, पीली फिटकरी छः छः माशे, सब को पानी में पीसकर लगावै तो सब प्रकार की चोट फायदा होता है।

❀ अथ टूटी हुई हड्डी का यत्न ❀

इस हड्डी टूट जाने की चिकित्सा इस रीतिसे करे जैसा कि पट्टी वगैरह पहले लिख आये हैं सो करै और चोटकी जगह गीली प्याज लगावै तो टूटा हुआ हाड़ अच्छा होताहै

❀ अथवा ❀

मजीठ, महुआ, इन दोनों को ठण्डे पानी में पीसकर टूटे हुये हाड़ पर लेप करे तो अच्छा होय।

❀ अथवा ❀

बेर, पीपल की लाख, गेंहू काहू वृक्ष वक्कल इन सबको महीन पीस घृत में मिलाय १॥ तोले नित्य खाकर ऊपर से दूध पीवै तो टूटा हुआ हाड़ अच्छा होजाता है।

❀ अथवा ❀

लाख, काहूका वक्कल, असगंध, खरैटी, गूगल ये स[illegible] बराबर ले इन सबको कूट पीसकर एक जीव कर १॥ डेढ़ [illegible] दूध के साथ नित्य खायतो टूटा हाड़ अच्छा होजायगा

❀ अथवा ❀

गेहूं को ठीकरे में धरकर अधजले करले पीछे इन्हें महीन [illegible] तीन तोले लेकर उसमें छः तोला शहत मिलाकर सात [illegible] वक्त नित्य चाटे तो टूटे हाड़ निश्चय अच्छे होंय।

❀ अथवा ❀

[illegible] आमला [illegible]

पानी में महीन पीस उस जगह लेपकरै और इसमें घृतभी मि-
लावैतो टूटा हुआ हाड़ और टूटी संधी ये सब अच्छे होजातेहैं।

❀ अथवा ❀

मनुष्य के मांसकी चोखी मिमाई अनुमान माफिकले और
शहत मिलाकर उसे चटावै तो टूटा हाड़ अच्छा होय।

❀ अथवा ❀

चोट वाले मनुष्य को मांसका शोरवा, दूध, घृत पुष्टाई
की औषधि देना अच्छाहै और चोटवाले मनुष्य को इतनी
चीजों से परहेज करना चाहिये सो लिखते हैं।
नमक, कड़वी वस्तु, खार, खटाई, मैथुन, धूप में वैठना
रूखे अन्नका खाना इन चीजों से परहेज़ जरूर करना चाहिये
बालक और तरुण पुरुष के लगी हुई चोट जल्दी अच्छी
होजाती है और वृद्ध मनुष्य रोगी मनुष्य तथा क्षीण मनुष्य
की चोट जल्दी अच्छी नहीं होती।

अथवा—लाख १॥ तोले लेकर महीन पीस गौके दूध के
साथ पंद्रह दिन पीवै तो टूटा हाड अच्छा होजाताहै।

अथवा--पीली कौडियों का चूनादो तथा तीन रत्ती औटाये
हुए दूध में पिये तो टूटा हाड़ जुड जाता है।

अथवा—वेरका वक्कल, त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल
इन सबको बराबर ले और इन सबकी बराबर गूगल डाल
सबको एक जांव कर एक एक तोले नित्य १८ दिन तक
दूध के साथ ले तो शरीर वज्र के समान हो जायगा और
शरीर की सब वेदना जाती रहेगी।

अथवा—वेरका वक्कल १ तोले महीन पीस शहत

मिलाय एक महीने तक चाटै तो शरीर की सब प्रकार की चोट और टूटी हड्डी अच्छी होजायगी और शरीर बज्र के समान होजायगा ।

और जो किसी मनुष्य के मुगदर आदि किसी तरह की चोट लगी होय उसके वास्ते यह दवा बहुत फायदा करतीहै।

नुसखा

मेथी, मेदा लकड़ी, सोंठ, आंवला, इन सबको महीन पीस गो मूत्र में मिलाय जहां चोट लगी होय वहां लेप करै तो चोट अच्छी होय ॥ और जो किसी मनुष्य को पशु ने मारा हो तथा किसी ऊंचे मकान से गिरा हो तथा भीत आदि के नीचे दबजाय और इस कारण से घायल होगया हो तो उस पर यह लेप लगाना चाहिये ॥

लेपकी विधि

पुराना खोपड़ा, आंबाहल्दी, मेदालकड़ी, कालेतिल, सफेद मोम, ये सब दवा एक २ तोले पीसकर चोट पर लेप करै और जो उसपर घाव आगया होतो पहिले कहे हुए मरहमों का फाया बनाकर लगावे ॥

अथवा-प्याज एक तोले, गेहूंकी मेदा २ तोले, प्रथम प्याज को छील उसकी मींगी निकाल कर तेल में छोंकले; फिर उस में मेदा को डाल थोड़ा पानी मिलाकर लपरी बनावे और चोट को सेके फिर इसी को बांधे तो चोट अच्छी होय ॥

और जाड़े के दिनों में शीतकाल में घी बासन में जम जाता है उसके निकालनेसे हाथके नखों में घी की फांस लगजाती है और हाथ पकजाता है तो उसकी चिकित्सा यह है कि

पहले हाथको आग पर सेके फिर यह दवा लगावैः-

❀ नुसखा ❀

अजवायन खुरासानी, भैंसा गूगर, बिलायती साबुन, सैंधा नमक, गुड़ ये सब बराबर ले पानी में महीन पीस, जब मरहम के सदृश होजावै तब उस घावपर लगावै और इससे आराम न होतो यह मरहम लगावै।

❀ नुसखा ❀

साबुन, गुड़, गेंहू की मैदा एक २ तोले पानी में पीस इनका फाया बनाकर लगावै, और इसके ऊपर एक पान गरम कर के बांधे और सेके और जो घाव अच्छा हो और पानी निकलना बंद न होता हो तो नीचे लिखा तेजाब लगाकर घाव को चौडा करै।

❀ नुसखा तेजाब ❀

गंधक दो तोले, नीलाथोथा दो तोले, फिटकरी सफेद दो तोले; नौसादर दो तोले, इन सबको महीन पीसकर आध-पाव दही में मिलाकर एक हांडी में भरकर चोयेके सदृश तेजाब खेंचे और एक बूंद घावपर लगावै तो घाव गहराहो जायगा पीछे इसपर वही मरहम लगावै जो तेजाबके नुसखे से पहले लिखा है॥

यहां तक सब घावों का इलाज तो लिखा जा चुका है परंतु अब दो चार नुसखे मरहम के यहां इकट्ठे लिखे जाते हैं ये मरहम सब प्रकार के घावों का फायदा करती है॥

❀ मरहम १ ❀

राल एक पैसे भर; सफेदमोम दो पैसे भर, मुर्दासंग एक पै

भर, इन सबको महीन पीसकर रक्खे प्रथम गौका घृत ३: पैसेभर लेकर गरमकरै फिर उसमें मोमडाले जब मोम पिघल जाय तब सब दवाइयोंको मिलावै फिर इसको कांसी की थाली में डालकर १०८ बार पानी में धौवे पीछे इसको घाव पर लगावै तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय इसको सफेद मरहम कहते हैं ॥

मरहम २

शोधा हुआ पारा १ तोले, आंवलामार गंधक एक तोले; मुर्दासिंग दो तोले, कबेला चारतोले, नीलाथोथा ४ माशे गौका घृत पावभर और नीमके पत्तों का रस अनुमान माफि डाल कर इन सबको मिलाकर दो दिन तक खूब पीसे जब मरहम के सदृश होजाय तब घावपर लगावै तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ॥

मरहम ३

सफेद मोम; मस्तंगी, गोंद, मैंढल; नीलाथोथा, सुहागा [illegible]. सिंदूर.कबेला मुरदासंग.गुगल,कालीमिर्च. सोन गेरू [illegible], [illegible], सफेदा, सिंगरफ,शोधी गंधक, ये सब दवा [illegible], घृत और मोम को छोड़कर सब दवाओंको न्यारी महीन पीसकर रक्खे प्रथम घृत को गरमकर उसमें मोम पिघलावे फिर सब औषधियों को मिलाय खरल में गेर दोदिन तक खूब घोटे जब एक जीव होजाय तब धर रक्खे और घाव पर लगावे ये मरहम चोट के घाव, शस्त्रादिक के घाव, फोड़े [illegible] के घाव, और सब प्रकारके घावोंको फायदा करता है ॥

❀ मरहम ४ ❀

नीलाथोथा, मुरदासंग, सफेदा, खैरसार, सिंगरफ, मोम, केसर; गौका घृत ये सब बराबर ले फिर घृतको गरमकर, नीचे उतार, इसमें पहिले; नीलाथोथा पीसकर डाले, पीछे उसी समय उसमें मोम डालकर पिघलायके फिर इसमें सब औषधि महीन पीसकर डाले इन सबको एकजीव कर कांसे की थालीमें डालै, और उसमें ज्यादापानी डालकर एक दिनभर हथेली से रगड़े फिर इसको घावोंपर लगावै तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ॥

❀ मरहम ५ ❀

सिंगरफ तीन पैसेभर, सफेदमोम, तीन पैसे भर, नीमके पत्ते की टिकिया तीन पैसे भर; मुर्दासंग १ पैसे भर प्रथम घृत को औटाय उसमें नीमकी टिकिया पकाकर उन टिकियों को जलाकर फेंकदे फिर उस घृतमें मोमको पिघलावै फिर सब औषधियों को महीन पीसकर मिलावै जब मरहम के सदृश होजावै तब लगावै तो घावमात्र अच्छे होंय ॥

❀ मरहम ६ ❀

जिस मनुष्य के हाथपावों में बिवाई फटीहो उसके वास्ते ये मरहम अच्छा है ॥

राल एक पैसे भर, कत्था १ पैसेभर, चमेलीका तेल चार पैसे भर, कालीमिर्च १ पैसेभर, गौका घृत दोपैसे भर, इन सबको महीन पीसकर लोहेके करछले में मरहम बनावै पीछे इसको लगावै तो हाथपांवों की बिवाई अच्छी होंय ।

❀ मरहम ७ ❀

नीमके पत्तोंका रस एकसेर ले और गौका घृत ले प्रथम घृतको लोहे के बरतन में गरमकर उसमें नीम के पत्तों का रस मिलावै जब ये दोनों खूब गरम होजांय उसमें राल चार पैसे भर डालकर पिघलावै जब वह पत्तों का रस जल जाय और गाढ़ा होजाय तब कत्था एक पैसे भर, नीलाथोथा १ पैसेभर, मुरदासंग एक पैसे भर इन सबको महीन पीसकर उसमें डाल एक जीव कर, पीछे कपड़े में लगाय घाव के ऊपर लगावै तो घाव निश्चय अच्छा होय।

❀ मरहम ८ ❀

रांगकी भस्म छः माशे, सफेदमोम एक तोले, गुलरोगन दो तोले, इन सबको पीसकर गुलरोगनमें मरहम बनावै और घाव पर लगावै तो घावको बहुत जल्दी सुखा देती है।

❀ मरहम ९ ❀

जिस घाव में पानी निकला करता है उसके लिये यह मरहम लगाना अच्छा है:—

गूगल चार माशे, रसौत १ माशे, इन दोनों को पानी में खूब घोटै पीछे चार माशे, पीलामोम मिलाके घोटके मरहम बनावै और घावपर लगावै तो घाव से पानी निकलना बंद होय

❀ मरहम १० ❀

[illegible] पाव भर, गूगल पांच माशे, इन दोनों को चार तोले सरसों के तेलमें घोटकर एक तोले पीला मोम मिलाके आग पर धरै, और [illegible] जरावन्द तवील, [illegible] पांच पांच माशे चूर्न करके मिलावै

और जिस किसी फोड़े को शीघ्र पकाया चाहे वहां इसी मरहम में गुलखतमी और उसके पत्ते दो दो तोले लेकर महीन पीसकर मिलावे और गुनगुना करके फोड़े पर लगावे तो फोडे को बहुत जल्दी पकाकर फोड देगा ।

❀ मरहम ११ ❀

मीठा तेल, और कूएका पानी पांच पांच तोले मिलाकर कसकुट के पात्र में हाथ से खूब घोटे कि मही के तुल्य होजावे पीछे फिटकरी, लीलाथोथा; लाल कत्था. सफेद राल, सवा सवा तोले महीन पीसकर उसमें मिलावै और हथेली से खूब रगडे जब मरहम के समान होजाय तो चीनी के बर्तन में रख देवै और जब इस मरहम को काममें लावे तब नमक की पोटली से घावको सेककर यह मरहम लगावे बन्दूक की गोली के घावको नासूर के घावको और बुरे २ वादी आदि के घावों को अच्छा करता है ।

❀ मरहम १२ ❀

आध पाव कडवे तेलमें पांच तोले पीलामोम पिघलाके उसमें एक तोले विराजा पिलाके पीछे दो तोले सफेद राल फिटकरी भुनी छः माशे, मस्तगी छः माशे इनका भी चूरन करके मिलावे और खूब घोटके मरहम के सदृश बनाकर घावों पर लगावै तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ।

❀ अण्डकोषों के छिटक जाने का यत्न ❀

जानना चाहिये कि फतक रोग अण्डकोषों के बढ़ जाने को कहते हैं और यह रोग अंडकोषों में तीन प्रकार से होता है एकतो यही कि किसी प्रकार चोट लग जाने से

भीतर फोता वढ़ जाताहै उसकी चिकित्सा में बहुत से और वफारे काम आते हैं और यह रोग इस औषधि बहुत शीघ्र आराम होजाता हैः—

❀ नुसखा ❀

हरी सोंफ, सूखीमकोय, खुरासानी अजमायन, फुल, मूरिद के बीज; गेरू ये सब दवा एक २ तोले ले सबको पानीमें पीसकर रक्खे और इसके पहिले फोतों पर सोये के सागका वफारा देकर यह लेप जो बना रक्खा है लगावे और फिर ऊपरसे वही साग बांधे जिसका बफारा दिया गया है इस पर पानी न लगने दे ।

एक कारण इस रोग के होने का यह है कि पहिले किसी की प्रकृति में तरी और सरदी की विशेषता होती है। इस से प्रत्येक जोड़ में बादी उत्पन्न होजाती है और पेटके सब अवयवों को बादी भरपुर कर भीतर से फोते को वढा देती है तो अज्ञान लोगोंसे उसकी चिकित्सा को पूछते फिरते हैं। और किसी उत्तम जर्राह से नहीं पूछते कि वह फस्द या जुल्लाब बतलावे या कोई लेप तथा वफारा बतावै बहुत से मूर्ख लोग उसको तमाखू के पत्ते तथा टेसू के फूल बतला देते हैं उन दवाइयों के करने से रोग और भी बढ़जाता है इस लिये उचित है कि हकीम या जर्राह रोगी की प्रकृति के अनुसार इलाज करे और पहिले फस्द खुलवावै अथवा जुल्लाब देवे और यह लेप करैः—

❀ नुसखा ❀

नाखूना, सूखी मकोय, कछुए के अण्डे की जर्दी ४ नग,

हरी सौंफ मूसेकी मैंगनी एक तोले, इन सबको पानी में
पीस कर गरम करके लगावे और जो जर्राह की राय हो
तो पहिले बफारा देवे जिसकी यह दवा है:—

नुसखा ।

सायेके बीज, सायेके पत्ते, चमेलीके पत्ते इमलीके पत्ते हरी
मकोय, पित्त पापड़ा, इनको दोदो तोले लेकर पानी में औ-
टाकर बफारा देवै, इसका फोक बांधे जो कुछ आराम दीख
पडेतो यही करता रहे और जो इससे आराम न हो तो यह
बफारा देवै:—

❀ नुसखा ❀

संभालू के पत्ते; सूखे महूवे; दो दो तोला इन दोनोंको जल
में औटाकर बफारा देवै, और ऊपरसे इसीका फोक बांध देवै
तीसरा कारण इस रोगका यह है कि बहुतसे मनुष्य जल
पीकर दौड़ते हैं और यह नहीं जानते कि इसमें क्या हानि
होगी यह काम बहुतही बुरा है और इसके सिवाय एक बात
यह है कि किसी मनुष्य की प्रकृति में स्तूबत अर्थात् तरी
अधिक होता है और ज्वरकी विशेषतामें कोई मनुष्य पानी
रुककर पीता है और कोई अधिक जल पीता है इस बहुत
जल पीनेसे दो वा तीन रोग उत्पन्न होतेहैं एकतो यह कि
नले चढजाते हैं और दूसरा यहकि पोतों में पानी उत
आता है तीसरा यहकि तिल्ली चढ़जाती है ऐसा करने
कभी २ फोते चढ़जाते हैं इसकी चिकित्सा हकीमोंने बहु
पुस्तकों में लिखी है और हमारे मित्र डाक्टर साहबने
की चिकित्सा इस प्रकारसे लिखीहै कि पहिले इसमें न

देवे और उसका सब पानी निकाल कर घावमें कोई ऐसी औषधि लगावें कि घाव बहता रहै और सात आठ दिनके अनन्तर अच्छा होने का मरहम लगावे और यह दवाई खिलावे क्योंकि भीतरसे पानीका विकार दूर होवे तो घाव सूखकर जल्दी अच्छा होजाता है और फिर कभी रोग उभर ने नहीं पाता और वह खाने की दवाई यह है ।

❀ नुसखा ❀

कुदरूगोंद, बंसलोचन लीला, जहर मोहरा, खताई, केशर, रीठा, मुलहठी, ये सब दवा एक २ तोले, अलसी छःमाशे ख- तमीके बीज छः माशे, इन सबको पीसकर चार माशे सवेरे खिलावे और ऊपर से एक तोला शहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य पिलावे ।

यह रोग इस कारण से भी होता है कि किसी मनुष्यके सोजाक होता है इससे उसकी इन्द्री में पिचकारी लगानी पड़ती है तो फोतों में पानी उतर आता है और वह पानी फोतों के भीतर तेजाब के समान मांसको काटता है जब वह मनुष्य सीधा सोता है तो पानी पेडूकी ओर रुकता है तो इससे भीतर का मांस कटजाने से आंतें उतर आती हैं फिर यह रोग असाध्य होजाता ॥

और यह रोग इस कारण से भी होता है कि कोई मनु- ष्य भोजन करके और जल पीकर यत्न करे या किसी से लड़े अथवा दीवाल पर चढ़े और कूदपड़े इनके सि- वाय और भी निदान कारण हैं कि जिनसे आंतें उतर आती हैं और कि [illegible] गर्मी भी होती है फिर मनुष्य के

चलने फिरनेसे कुछ दिनों के पीछे वह आंत फोतामे उतर आती है जब वह मनुष्य सोता है तो वही आंतें पेट में चली जाती हैं और उठते बैठते तथा लेटते समय उसका शब्द होती है उस रोगकी चिकित्सा यह है कि एक लंगोट वा अंग्रेजी फीता जिसका नाम ट्रस है, और जिसके एक तथा दोनों सिरोंपर घुंडी होती है बांधा करें. अथवा वे उपाय करें जो पानी के कारण फोता के प्रकरण में वर्णन कर आये है उस से बहुत लाभ होगा ।

❀ सफेद दाग का यत्न ❀

जिस मनुष्य के शरीर में फोडा तथा शस्त्रादिक के घाव हुए हों और वे मरहम आदि के लगाने से अच्छे हो गये हों फिर उन घावोंके निशान सफेद होगये हों तो उसके यह औषधि लगानी चाहिये।

❀ नुसखा ❀

मैनसिल, मजीठ, लाख, दोनों हल्दी ये सब दवा बराबर ले महीन पीस घृत और शहद मिलाय दाग के ऊपर लेप करे तो घावका चिह्न मिटकर शरीर की त्वचा के समान होजाय

❀ छीप और झांई का यत्न ❀

जो किसी मनुष्य के मुख छाती या शरीर पर किसी जगह सफेदी लिये दाग होतो बहुतसे मनुष्य उसकोबनरफ़ अथवा छीप कहते हैं उसका यत्न यह है ।

❀ नुसखा ❀

सफेद सनाय. ककरोंदा की जड़, मूली के बीज, चौलिया सुहागा कच्चा, इन सबको जलमें पीसकर लेपकरे और जो उससे आराम न हो तो यह दवा करे ।

देवे और उसका सब पानी निकाल कर घावमें कोई ऐसी औषधि लगावे कि घाव बहता रहै और सात आठ दिनके अनन्तर अच्छा होने का मरहम लगावे और यह दवाई खिलावे क्योंकि भीतरसे पानीका विकार दूर होवे तो घाव सूखकर जल्दी अच्छा होजाता है और फिर कभी रोग उभर ने नहीं पाता और वह खानेकी दवाई यह है ।

❀ नुसखा ❀

कुंदरूगोंद, बंसलोचन लीला, जहर मोहरा, खताई, केशर, रीठा, मुलहठी, ये सब दवा एक २ तोले, अलसी छःमाशे [illegible] के बीज छः माशे, इन सबको पीसकर चार माशे सवेरे खिलावे और ऊपर से एक तोला शहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य पिलावे ।

यह रोग इस कारण से भी होता है कि किसी मनुष्यके सोजाक होता है इससे उसकी इन्द्री में पिचकारी लगानी पड़ती है तो फोतों में पानी उतर आता है और वह पानी फोतों के भीतर तेजाब के समान मांसको काटता है जब वह मनुष्य सीधा सोता है तो पानी पेड़ूकी ओर रुकता है [illegible] कटजाने से आंतें उतर आती हैं तब यह रोग असाध्य होजाता ॥

और यह रोग इस कारण से भी होता है कि कोई मनु- [illegible] और [illegible] पीकर [illegible] करे या किसी से [illegible] पर चढ़े और कूदपड़े इनके [illegible] और [illegible] कारण है कि जिनसे आंतें [illegible] भी होती है फिर मनुष्य [illegible]

चलने फिरनेसे कुछ दिनों के पीछे वह आंत फोताम उतर
आती है जब वह मनुष्य सोता है तो वही आंतें पेट में चली
जाती हैं और उठते बैठते तथा लेटते समय उसका शब्द
होती है उस रोगकी चिकित्सा यह है कि एक लंगोट वा
अंग्रेजी फीता जिसका नाम ट्रस है और जिसके एक तथा
दोनों सिरोंपर घुंडी होती है बांधा करें अथवा वे उपाय करें
जो पानी के कारण फोता के प्रकरण में वर्णन कर आये हैं
उस से बहुत लाभ होगा ।

❀ सफेद दाग का यत्न ❀

जिस मनुष्य के शरीर में फोडा तथा शस्त्रादिक के घाव
हुए हों और वे मरहम आदि के लगाने से अच्छे हो गये
हों फिर उन घावोंके निशान सफेद होगये हों तो उसके यह
औषधि लगानी चाहिये ।

❀ नुसखा ❀

मैंनसिल, मजीठ, लाख, दोनों हल्दी ये सब दवा बराबर
ले महीन पीस घृत और शहद मिलाय दाग के ऊपर लेप
करे तो घावका चिह्न मिटकर शरीर की त्वचा के समान होजाय

❀ छीप और झांई का यत्न ❀

जो किसी मनुष्यके मुख छाती या शरीर पर किसी जगह
सफेदी लिये दाग होतो बहुतसे मनुष्य उसकोबनरफ अथवा
छीप कहते हैं उसका यत्न यह है ।

❀ नुसखा ❀

सफेद सनाय, करोंदा की जड़, मूलीके बीज, चौकिया
सुहागा कच्चा, इन सबको जलमें पीसकर लेप करे और जो
उससे आराम न हो तो यह दवा करे ।

❀ नुसखा ❀

मूलीके बीजों को पानीमें पानीमें पीसकर लगावै और धूपमें बैठे इसी प्रकार सात दिन करै ।

❀ सूचना ❀

विदित होकि इस पुस्तकमें मैंने फोड़ा फुन्सी शस्त्रादिक के घाव आदि अनेक रोगोंके यत्न यथा क्रमसे लिखे हैं परन्तु आंख बनाने की विधि और हड्डी जोड़ने की विधि और और नस्तर के उस घावको जो चार अंगुल गहरा हो और उस घावको जो सवेरे हुआ और सायंकाल को अच्छा हो गया और गोलीके लगने की वहविधि कि जिससे घाव बीगा न जावै और गोली निकल आवै ये इलाज मैंने इस पुस्तक में इस वास्ते नहीं लिखे कि ये काम बिना उस्ताद से सीखे नहीं आते क्योंकि ये काम बहुत कठिन है परन्तु इस पुस्तक में हरएक प्रकार के फोड़ों का इलाज लिखा है इस वास्ते मुझको निश्चय है कि इस पुस्तकको हरएक गृहस्थी गरीब तथा अमीर अपने २ घरमें रक्खेंगे क्योंकि इससे बहुत लाभ होगा और कदाचित इसमेंवेरोग जिनकोहम लिख चुके हैं सो लिख देते और कोई मनुष्य उनको ठीक देखे बिना समझे इलाज करता और उस रोगी को हानि होती तो उस पापका भागी मुझको भी होना पड़ता क्योंकि ये नेत्रादिक के स्थान बड़े कोमल होते हैं और उस विचार से यह भी बात प्रत्यक्ष है कि इस सब शरीर में सुन्दर होता है इस कारण हरएक मनुष्य को नेत्रका इलाज करना मुनासिब नहीं है और नेत्र रोग का इलाज

चतुर डाक्टर तथा जर्राह को ही करना उचितहै। तो भी
कुछ वर्णन इसका अन्य भाग में लिखेंगे जिससे मनुष्य
सावधान रहकर रोगों से बचे रहें।

❀ फस्द का वर्णन ❀

अब फस्दका वर्णन किया जाता है मनुष्यों को उचित है
कि निराहार होकर फस्द खुलवावे अब फस्द खोलने की
तारीखों के गुणागुण लिखते हैं; दूसरी तारीख को फस्द
खुलवानेसे मुखका पीलापन दूरहोता है ॥२॥
तीसरी तारीख को फस्द खुलवानेसे मुखपर पीलापन छा
जाता है ॥ ३ ॥
चौथी तारीखको फस्दसे शरीर के दाग धब्बेदूर होजातेहैं॥४॥
पांचमी तारीख को फस्द खुलवानेसे मनुष्य प्रसन्नरहताहै।५।
छटी तारीखको मुखकी जोति तेज होती है ॥ ६ ॥
सांतवी तारीख को शरीर मोटा होता है ॥ ७ ॥
आठवीं तारीखको शरीरमे निर्बलता उत्पन्न होती है ॥८॥
नवीं तारीख को शरीर में खुजली होजाती है ॥ ९ ॥
दशवीं तारीख में बल होता है ॥ १० ॥
ग्यारहवीं तारीख में कंपन वायु दूर होती है ॥ ११ ॥
बारहवीं तारीख को फस्द खुलवाना निषेध है ॥ १२ ॥
तेरहवीं तारीख को शरीर में पीड़ा उत्पन्न होती है ॥ १३ ॥
चौदहवीं तारीखको नींद नष्ट हो जाती है ॥ १४ ॥
पन्द्रहवी तारीखको बीमारी नहीं होती ॥ १५ ॥
सोलहवी को बाल सफेद नहीं होता ॥ १६ ॥
... अप्रसन्न नहीं होता ॥ १७ ॥

शुक्रवार को फस्द खुलवाना भी जनून रोग को उत्पन्न करता है ॥

❀ फस्द के नाम ❀

और जिन नसोंकी फस्द खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों के नाम लिखते हैं । कीफाल १, वासलीक २, अक्हल ३, हवलुल जरा ४, असीलम ५, साफन ६, अर्कुन्निसा ७, ये सात हैं ॥

प्रगटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्द खुलवाते वा जुल्लाव लेतेहैं तो उनको अभ्यास वेसाही पड़जाता है और यह अभ्यास अच्छा नहीं और फस्द का न खुलवाना उत्तम है, क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन हैं और रुधिर भी तीन प्रकार का होता है ॥ जो फस्द खुलवाने की आवश्यकता होतो शीतकाल में मध्याह्न के समय खुलवावै कि ऋतु में रुधिर चक्कर में होता है फिर ठहर जाता है और कोई २ हकीम यों भी कहते हैं कि रुधिर जमजाता है ॥ सो बात झूठ है क्योंकि जो मनुष्य के शरीर में रुधिर जमजावै तो मनुष्य जी नहीं सक्ता किन्तु भीतर गरमी होती है और रुधिर निकलने में यह परीक्षा नहीं होती कि यह रुधिर अच्छा है वा बुरा और उस समय में फस्द खुलवाने से मनुष्य दुर्बल होजाता है क्यों कि बुरे रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है और ग्रीष्म काल में रुधिर पृथक् २ होता है इस ऋतु में संध्याके समय फस्द खुलवाना उचित है और सदों [illegible] खुलवाने से रुधिर कम होजाता है किन्तु सुराकों [illegible] अधिक होती है जिन मनुष्यों को फस्दका अभ्यास पड़जाता

ठा र्वी को हृदय बलवान नहीं होता ॥ १८ ॥
उन्नीसवीं को मस्तक प्रबल होता है ॥ १९ ॥
बीसवीं को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ॥ २० ॥
इक्कीसवीं को प्रसन्नता प्राप्त होती है ॥ २१ ॥
बाईसवीं को कंठ पीडा और दंत पीडा दूर होती है ॥ २२ ॥
तेईसवीं को निर्बलता अधिक होती है ॥ २३ ॥
चौबीसवीं को शोकित नहीं होता है ॥ २४ ॥
पच्चीसवीं को खफकान रोग दूर होता है ॥ २५ ॥
छब्बीसवीं को गुर्देकी तथा पसली की पीडा दूर होती है २६
सत्ताईसवीं को बवासीर जाती है ॥ २७ ॥
अट्ठाईसवीं को सब प्रकार की पीडा नष्ट होती है ॥ २८ ॥
उनतीसवीं को प्रत्येक रोगको आराम होता है ॥ २९ ॥
तीसवीं तारीख को फस्द खुलवाने से मनको भ्रम और [illegible] नहीं होता ॥ ३० ॥ तीसों तारीख में फस्द खुलवाने का शुभा शुभ फल कहा गया है ये तारीख मुसलमानी महीनों की जाननी चाहिये ।

[illegible] वारों के अनुसार फस्द खुलवाने का फल ॐ

[illegible]वार को फस्द खुलवाना जनून आदि रोगोंको दूर करता है, रविवार को फस्द खुलवाना सब प्रकार के रोगों को दूर करता है ।

सोमवारको फस्द खुलवाना रुधिर विकारको शांत करता है
बुधवार को निषेध यह है ॥

बृहस्पतिवार को फस्द खुलवाना खफकान रोगको उत्पन्न
[illegible]

शुक्रवार को फस्द खुलवाना भी जनून रोग को उत्पन्न
करता है ॥

॥ फस्द के नाम ॥

और जिन नसोंकी फस्द खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों
के नाम लिखते हैं ।
कीफाल १, बासलीक २, अक्हल ३, हबलुल जरा ४, असी-
लम ५, साफन ६, अर्कुन्निसा ७, ये सात हैं ॥

प्रगटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्द खुलवाते वा जुल्लाब
लेतेहैं तो उनको अभ्यास वैसाही पड़जाता है और यह अ-
भ्यास अच्छा नहीं और फस्द का न खुलवाना उत्तम है,
क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन हैं और रुधिर भी तीन
प्रकार का होता है ॥ जो फस्द खुलवाने की आवश्यकता
होतो शीतकाल में मध्याह्न के समय खुलवावै कि ऋतु में
रुधिर चक्कर में होता है फिर ठहर जाता है और कोई २ हु-
कीम यों भी कहते हैं कि रुधिर जमजाता है ॥ सो बात झूठ
है क्योंकि जो मनुष्य के शरीर में रुधिर जमजावै तो मनुष्य
जी नहीं सक्ता किन्तु भीतर गरमी होती है और रुधिर नि-
कलने में यह परीक्षा नहीं होती कि यह रुधिर अच्छा है
वा बुरा और उस समय में फस्द खुलवाने से मनुष्य दुर्बल
होजाता है क्यों कि बुरे रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी
निकलता है और ग्रीष्म काल में रुधिर पृथक् २ होता है इस
ऋतु में संध्याके समय फस्द खुलवाना उचित है और वर्षा
खुलवाने से रुधिर कम होजाता है किन्तु सुदाकी
अधिक होती है जिन मनुष्यों को फस्दका अभ्यास पड़जाय

और फिर फस्द न खुलवावें तो उनको एक न एक रोग सताता रहता है और वर्षाकाल में रुधिर मौत दिल हो जाता है उस ऋतु में फस्द खुलवाना योग्य नहीं और जो हकीमकी सम्मति होतो खुलवा लेवे और जिन दिनों में रुधिर कम होता है तब खुश्की के कारण से कईरोग होजाते हैं और पीड़ाभी हरएक प्रकारकी होतीहै और जब फस्द खुलवाने की आवश्यकता होतो उस वक्त दिन तारीख ऋतु और समय का कुछ विचार नहीं किया जाता आवश्यकता के समय फस्द खुलवाने में कोई हानि नहीं है ॥

❀ इति प्रथमभाग समाप्तम् ❀

श्रीजगदीश्वरायनमः ।

बृहत जर्राहीप्रकाश

दूसरा भाग

आतिशक की चिकित्सा ।

(१) उपदंश की उत्पत्ति ।

वैद्य हकीम तथा डाक्टरों का यह मत है कि उपदंश जनित विषको छोडकर ऐसा और कोई विकराल विष संसार में नहींहै जोकि प्राणियों के अंग से उत्पन्न होकर शरीर का सर्वनाश करदे यह विष रुधिर में प्रवेश करके शरीर की नस नस में घुसजाता है और नाना प्रकार के दोष उत्पन्न करके रोगीको नितांत निकम्मा बना देता है ।

डाक्टरों ने ऐसे मुरदोंको जब चीरकर देखा है तो कोई अंग उनका ठीक नहीं पाया गया उपदंश का विष मवाद के लगजाने से शरीर में पहुँच जाता है यद्यपि कई प्रकार से ऐसा होसकताहै परन्तु मुख्यतः उपदंश दूषित स्त्रीके प्रसंग सेही होताहै अन्यान्य कारणों में कुछ कारण ये हैं (१) उपदंश रोगी के पात्र में जलपीना (२) ऐसे रोगीको चुम्बन करना ३ ऐसे रोगीके वस्त्रोंपर शयन करना, अथवा उनको पहरना, बालक को ऐसी स्त्रीका दूध पिलाना: (४)

उपदंश वाले बच्चेके मवाद से दूसरे बच्चे के मवादसे दूसरे बच्चोंको टीका लगाने से अथवा उपदंश वाले माता पिता से उत्पन्न होनेसे बालक को यही रोग होसकता है (५) उपदंश को मवाद जिस वस्त्र से पोंछा गयाहो उस वस्त्रको यदि कोई पुरुष या स्त्री अपने अंग से लगा लेवे तो यह रोग होसकता है ।

(२] उपदंश के नाम ।

इस देशमें इसको गर्मी बादफरंग अथवा आतिशक कह कर पुकारते हैं आतिश फारसी जबानमें आगका नाम है इस का नाम आतशक इसकारण से हुआ कि इसके विषसे शरीरमें एक प्रकारकी अग्नि लगजातीहै और जलकर सड़ जाता है अंग्रेजी में इसको सिफलिस कहते हैं ।

[उपदंशवती स्त्री की परीक्षा ।

यदि किसी स्त्रीकी परीक्षा करनी हो कि इसको उपदंश रोग है वा नहीं तो [१] उसके अंगसे उसीकी हथेलीको रि गड़ कर उसकी गंधको सूंघे यदि मछली की सी दुर्गंध हो तो रोगिणी जानें [२] यदि उसके गुह्यस्थल से पानी बहता हो [३] उसके नीचे के वस्त्र से सड़ी हुई गंध आती हो [४] गुह्यस्थल के होट मोटे हों [५] प्रसंग के समय मूत्रेन्द्रिय को गर्मी अधिक मालूम हो। [६] एक छोटा वस्त्र [illegible] के रस तथा और किसी खट्टी चीज के रसमें भिगोकर [illegible] गुह्यस्थल में रक्खे यदि कोई घाव होगा तो उसको [illegible] होगी ।

(४) उपदंश के दो प्रकार

एक प्रकार का वह उपदंश है जिसका घाव मुत्रेन्द्री पर होजाता है इसको जर्राहीमें साफ्टशंकर कहते हैं दूसरी प्रकार के उपदंश को हार्डशंकर कहते हैं इसमें प्रथम छोटे २ विकार उत्पन्न होते हैं जब रुधिर में विष फैल जाता है तब वड़े बड़े उपद्रव खड़े होकर रोग असाध्य अथवा दुसाध्य होजाताहै यह बहुत बुरा होताहै ।

(५) उपदंश के लक्षण

(२) मुत्रेन्द्री पर चोट लगजाने से वा स्त्री द्वारा नख विद्ध होने वा दांत लगनेसे वा धोनेसे अथवा अत्यन्त स्त्री संसर्ग करने से अथवा गरम जल धोने से भी यहरोग हो जाताहै पेडू गुह्येन्द्रिय वा अंडकोश पर एक पीली फुंसी पैदा होजातीहै उसमें खुजली के साथ जलन होती है, ज्यों ज्यों खुजाया जाता है त्यों त्यों घाव बढ़ता चला जाताहै रोगी लज्जाके कारण रोगको छिपाताहै और रोगदिन दूना रात चौगना वढ़ता चला जाता है, मूर्ख लोगों के कहने से अहितकारी चीजें लगा देताहै, जब घाव बहुत बढ़जाताहै तब इधर उधर टक्कर खाने लगताहै कोई अनाड़ी हुक्केमें पीनेकी सर्व नाशक औषधि देदेताहै उससे मुंह आजाताहै वा वमन अथवा दस्त होने लगते हैं, ऐसी चिकित्सा से रोग को यदि कुछ दिनों के लिये आराम भी होजाताहै पर रोग की जड़ नहीं जाती है ।

(६) रोगकी उत्पत्ति में आयुर्वेदिक मत ।

आयुर्वेदिक विज्ञानियों ने यह रोग पांच प्रकारका लिखाहै (१) वातज (२) पित्तज (३) कफज (४) सन्निपातज (५) रक्तज

(१) वातज उपदंश के लक्षण ।

वात से उत्पन्न होने वाले रोग में मूत्रेन्द्रिय के अग्र भागमें मणि के ऊपर वा मणिका वेष्टन करनेवाले चर्म के अग्रभाग में वा नीचे को अनेक प्रकारकी छोटी छोटी फुंसियां पैदा होजाती हैं, और इन्द्री में कंपन होता है ।

(२ पित्तज उपदंश के लक्षण ।

पित्त के उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में इन्द्री के अग्र· भाग के पूर्वोक्त स्थान में क्रूरतायुक्त और पीले रंगवाली फुं· सियां पैदा होजाती हैं, इन फुंसियों में जलन होने लगती है ऐसे उपदंश को पित्तज उपदंश कहते हैं ॥

(३) कफज उपदंश के लक्षण ।

कफ से उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में इन्द्रीके अग्रभाग के पूर्वोक्त स्थान में जो फुंसियां पैदा होजाती है उन में से गाढ़ा गाढ़ा मवाद निकलने लगता है, मणिस्थान पर वरम आजाताहै इस रोग में पेशाब के साथ वीर्य भी आने लगता है, इन लक्षणोंसे युक्त रोगको कफज उपदंश कहते हैं ।

(४) सन्निपातज उपदंश के लक्षण ।

सन्निपातज अर्थात् कफवात पित्तसे उत्पन्न होने वाले उपदंश में इन्द्रीके अग्रभाग के चमड़े के नीचे मांसके पिंड [illegible] होजाते हैं, इसमें कफज वातज और पित्तज तीनों प्रकार के उपदंशों के कहे हुए लक्षण मिश्रित होते हैं; इस प्रकार के उपदंशको त्रिदोषज वा सान्निपातज कहतेहैं ।

(५) [illegible] उपदंश के लक्षण ।

जो उपदंश [illegible] से होताहै उस में मणि के अग्रभाग

ढकने वाले चर्मके नीचे अथवा ऊपर मांसके रंग अथवा काले रंग की फुन्सी पैदा हो जाती है इनमें से रुधिर बहने लगता है तथा पित्तज उपदंशके जो जो लक्षण कहे गये हैं वे भी सब इसमें होते हैं इन लक्षणोंसे युक्त रोगको रक्तज उपदंश कहते हैं ॥

❀ असाध्य उपदंश के लक्षण ❀

जिस उपदंश में संपूर्ण मूत्रेन्द्री को कीड़ा खा जाते हैं केवल अंडकोष शेष रहजाते हैं वह किसी प्रकारसे अच्छा नहीं होता है इस लिये उसकी चिकित्सा करना फलीभूत नहीं होता है।

❀ ७ मृत्यु लक्षण ❀

जो मनुष्य उपदंश रोगके होतेही चिकित्सा न करके स्त्री प्रसंग करता रहता है तो कुछ दिनमें उसकी इन्द्री में सूजन और जलन होने लगती है अग्रभाग के घूंघटके चमड़े के नीचे जो फुन्सी होतीहैं वे पककर घाव बन जाती हैं। इस घाव में कीड़े पड़कर लिंगनाल को खाते रहते हैं और धीरे धीरे रोगी की मृत्यु निकट आजाती है ॥

❀ ८ लिंगवर्ती के लक्षण ❀

अंकुर की तरह कुछ ऊंचा ऊपर ऊपर और गिलगिला मांस का जाल लिंग नालमें उत्पन्न होकर धीरे २ मुर्गेकी चोटी के समान होकर अंडकोषके भीतर वाली रगमें पहुंच जाता है इन लक्षणोंसे युक्त रोगको लिंगवर्ती या लिंगार्श कहते हैं

❀ उपदंशकी चिकित्सा ❀

(१) रोगीके बलके अनुसार जुल्लाब अथवा वमन दो

आदि खाकर कूएका जल पीता रहै इससे अनेक प्रकारके उपदंश जाते रहते हैं ।

(८) उपदंश में पसीने देकर इन्द्री की बीचवाली शिरा का वेधन करके जोंक द्वारा रुधिर निकाल डालना विशेष उपयोगी है इन सब क्रियाओं द्वारा दोषों का हलकापन होनेमें सूजन और वेदना कम होजाती है पक जाने पर इन्द्री का नाश हो जाता है. इसलिये उन उपायों को करना चाहिये जिससे लिंग पकने न पावै ।

[९] सूखे हुए अनारका छिलका अथवा मनुष्यकी हड्डी का चूरा उपदंश के घावपर लगानेसे बहुत जल्दी उपदंशके घाव अच्छे होजाते हैं ।

[१०] चिरायता, नीमके पत्ते, त्रिफला, पर्वल, चमेली के पत्ते, कचनार के बीज खैर और शाल वृक्ष की छाल इन में से हर एक को एक एक सेर लेकर ६४ सेर पानी में औटावै, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले । ऊपर लिखी हुई सब दवाओंको चार चार तोले लेकर पीसकर लुगदी करले फिर ऊपर लिखे क्वाथ में यह लुगदी और घी चारसेर डालकर यथोक्त रीति से पाक करै । इस घी का दोषानुसार सेवन करनेसे उपदंश रोगको बहुत शीघ्र आराम होजाता

[११] समान भाग त्रिफला को सहत के साथ पकाकर लेप करने से उपदंश को विशेष गुणकारी होता है

[१२] सिरस, आम और सहत इन तीनोंमें से किसी एक के साथ रसौत मिलाकर इन्द्री पर लेप करनेसे उपदंश रोग तथा अन्यान्य लिंग रोगभी जाते रहते हैं ।

[१२] पारा दो रत्ती, अफीम बारह रत्ती इन दोनों को लोहे के पात्र में तुलसी के रसके साथ नीमके घोटे से घोट कर दो रत्ती सिंगरफ मिलाकर फिर तुलसी का रस डालकर घोटे पीछे जावित्री, जायफल, खुरासानी अजवायन और अकरकरा प्रत्येक बत्तीस रत्ती, इन सबमे दूना खैरसार मिलाकर फिर तुलसीके रसमें घोटकर चनेकी बराबर गोलियां बना लेवे इनमें से दो दो गोली प्रतिदिन सायंकाल के समय सेवन करे इससे उपदंशादि अनेक प्रकारके घाव वाले रोग दूर होजाते हैं। यह एक प्रसिद्ध औषधि है।

❀ उपदंश रोग पर पथ्य ❀

वमनकारक द्रव्यों का आहार वा पान द्वारा सेवन; विरेचक औषधियोंका आहार वा पान द्वारा सेवन, शिश्नमें सिरावेधन, जोंक लगाना परिछेदन, प्रलेप, जौ शालि धान्य, जंगलदेशज पशुपक्षिओं का मांस, मूंग का यूष और घृत, ये सब द्रव्य उपदंश रोगमें विशेष हितकर जानने चाहिये। पुनर्नवा, मेहसना, परवल, कच्ची मूली, सब प्रकारके तिक्त [illegible] द्रव्य, मधु, कूप का जल, अनेक प्रकारका तेल ये सब द्रव्य उपदंश को [illegible] करने वाले हैं इस लिये इन को विशेष पथ्य रूप समझना चाहिये।

❀ उपदंश पर कुपथ्य ❀

दिन में सोना मूत्रके वेग को रोकना, भारी तथा खट्टे पदार्थों का भोजन पान, स्त्री संग, गुड़, कसरत, कुस्ती, [illegible], ये सब द्रव्य उपदंश रोगको बढ़ाने वाले हैं इस लिये इन को सर्वथा त्याग कर देना चाहिये।

❀ यूनानी मत से उपदंश चिकित्सा ❀

❀ जुल्लाब की गोली ❀

जमालगोटेकी मिंगा, चौकिया सुहागा, मुनक्का; इन सब को समान भाग लेकर महीन पीस एक एक माशे की गोली यां बनावै परन्तु इस गोलीके खाने से पहिले नीचे लिखी हुई दवा पिलाना चाहियेः—

❀ नुसखा मुंजिज ❀

गुलाब के फूल तीन माशे; मुनक्का सात नग; सौंफ छः माशे, सूखी मकोय छः माशे; सनाय मक्क दो माशे, इन सब को पावभर जलमें औटावें जब एक उफान आजाय तब उतार कर छानले फिर इसमें एक तोले गुलकंद मिलाकर पिलावे पश्चात् खिचड़ी, भोजन करावे फिर चौथे दिन ऊपर लिखी हुई गोली के दो टुकड़े करके खिलावे ऊपर से गरम जल पिलावे और जब प्यास लगे तब गरमही जल पिलावे और सायंकाल के साथ घृत डालकर खिचड़ी दही के संग भोजन करावे फिर तीन दिन तक नीचे लिखी हुई दवा पिलावै।

❀ ठंडाई का नुसखा ❀

बिहीदाना दो माशे, रेशे खतमी ४ माशे, मिश्री एक तोले इन सबका लुआब निकाल कर उसमें मिश्री मिलावे, पहिले छःमासे ईसबगोलको फांक कर ऊपर से उस लुआब को पीवे इसी तरह तीन दिन तक करता रहे तदनंतर नीचे लिखी गोली देना उचित है॥

❀ मिलाये की गोली ❀

खुरासानी अजवायन, देशी अजवायन, अकरकरा सुन...

छोटी इलायची नो ७ माशे मिलाये सात माशे, काले तिल दो तोले पारा छः माशे, पुरानागुड एक तोले इन सब को मिलाकर तीन दिन खूब घोटै और माशे माशे भर की गोली बनाकर सात दिन एक गोली सेवन करावै और नीचे की मरहम घाव पर लगावे ॥

घाव हो जाय और उसको उस्तरे का घाव समझ कर औ-
षधियाँ की जाय जर्राहको चाहिये कि प्रथम रोगीके घाव
को देखे कि किनारे उस घावके मोटे हैं और घावके भी
तर हाने हैं वा नहीं और घाव कितना चौड़ाहै और रोगी
की प्रकृतिको देखे जो वह विरेचन अर्थात् जुलावके योग्य
हो तो जुलाव देवे नहीं तो नीचे लिखी हुई औषधि देवै

॥ गोली ॥

नीलाथोथा ढाई माशे, कालीहर्ड २॥ माशे, सफेद कत्था
२ तोले, सुपारी ७ माशे इन सबको पीस कर दोसेर नीबू
के रसमें खरल कर फिर जंगली बेर के प्रणाम गोली बनावे
और दोनों समय एक एक गोली खिलावे खट्टी और बादी
वस्तुओं से परेज करे ॥

॥ दूसरा नुसखा ॥

अजवायन खुराशानी सात माशे, काली मिरच सात माशे;
कालेतिल छः माशे, जमाल गोटा तीन माशे; पुराना गुड़
१॥ तोले, इन सबको तीन दिन तक घोटकर जंगली बेर के
बराबर गोलियाँ बनावे और एक गोली दही की मलाई में
लपेट कर खिलादे और मूंग की दाल और मीठा कद्दू से
परहेज करे इस औषधि के खाने से एक दो दस्त हुआ करें
गे और जो वमनभी होजायतो कुछ डर नहीहै क्योंकि ये रोग
बिना मवाद निकले नहीं दूर होसक्ता प्रायः देखा है कि इस
रोग में सिर से पांव तक घाव होजाते हैं इसलिये उचित है
कि प्रति दिन मरहम लगाया जावे जो एक दिन भी न लगा
या जावेगा तो खुरण्ड जम जावेगा और जहां यह रोगी

बैठना है कीच होजाता है और सफेद सा पानी निकलता है अथवा सुर्खी और जरदी लिये दुर्गंध युक्त सवाद आता है, हाथ पांवों की अंगुलियों में भी घाव होजाते हैं इन सब शरीर के घावों के वास्ते यह औषधि करना चाहिये।

❀ मरहम ❀

गाय का मासन आध पाव, नीलाथोथा सफेद छः माशे मुर्दासंग छः माशे, इन दोनों दवाओं को पीसकर घृत में मिलाकर घावों पर लगावे और खानेको यह दवा देवे:—

❀ गोली ❀

छोटी इलायची; सफेद कत्था, तुलसी के हरे पत्ते एक २ तोले मुर्दासन छः माशे, पुराना गुड़ १॥ तोले, इन सबको कूट पीसकर गोलियां बनावे और नित्य सवेरे एक गोली खिलावे खटाई और वादी से परहेज करे और किसी वस्तु से परहेज नहीं है और यह रोग शीघ्र अच्छा नहीं होता इसको सात दिन खिलाकर देखे जो कुछ आराम हो तो इसी दवा को खिलाता रहे और जो इस से आराम न होतो यह गोली खिलावे॥

❀ अन्य गोली ❀

खियारीन कालीमिरच, काबली हर्ड, सूखे आमले, रसकपूर [illegible] निर्मली, गुल बनफशा, सफेद कत्था ये दवा चार २ माशे के इन सबको कूट पीसकर रोगन गुल में खरल करे फिर [illegible] [illegible] बनाकर गोली बनावे, और एक २ गोली [illegible] के [illegible] प्रति दिन प्रातःकाल और सायंकाल [illegible] खिलावे नमक की दाल और लाल मिरच से [illegible]

हेज करे इस दवाईसे सब शरीर अच्छा हो जायगा परन्तु अंगुली अच्छी न होगी जो यह औषधि प्रकृति के अनुसार होजाय तो अंगुली भी सीधी होजायगी बहुधा देखने में आया है कि इस रोग वाले, मनुष्य बहुत भले चंगे देखे परन्तु किसी न किसी जगह शरीर में शेष रहही जाताहै बहुत से उपद्रव उत्पन्न होतेहैं एक यह कि मनुष्य कोढ़ी हो जाते हैं दूसरे यह सब शरीर पर सफेद दाग होजातेहैं तीसरे नाकगलकर गिरजाती है चौथेगठिया होजातीहै एक कारण यहहै कि यह रोग महागरमहै ठंडी दवाइयोंसे अच्छानहींहोता

इसमें एक डाक्टर की रायहै कि यह रोग कफ से होता है क्योंकि प्रत्यक्ष है कि रोगीके शरीर में छोटी २ फुंसियां रतूबत दार जर्दी लिये होती हैं बहुत से मनुष्यों का यह रोग औषधियों के सेवन से जाता रहा और दोचार वर्षके पीछे शरीर के निर्बल होजाने पर फिर होगया और घाव भी फिर हरे होगये जब दवाई करी तो फिर जाता रहा इस के वास्ते यह दवाई बहुत उत्तम है ॥

अन्य गोली

भुना नीलाथोथा, मुरदासन, सफेदा काशगरी । सफेद कत्था, ये सब चार चार माशे ले इन सबको नीबूके रसमें खरल करके लोहे की कढाई में डालकर नीबूके सोटे से घोटे और चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय एक २ गोली खिलावे खटाई और वादीकी चीजों से परहेज करा- ना चाहिये और जो इससे भी आराम नहो तो ऐसी औ- षध देवे कि जिससे थोड़ासा मुंह आजावे जिससे सब शरीर

के जोड़ों की पीडा दूर होजावे और इससे आराम नहो तो अधिक मुँह आने की औषधि दे और नीचे लिखी औषधियों से घावको बफारा देवे:—

❀ नुसखा बफारे का ❀

नरमल की जड़, रामसर, सोये के बीज, खुरासानी अजवायन, माजून; नरमा के पत्ते, शहतूत के पत्ते, इन सब को बराबर ले पानी में औटाकर घावों को बफारादे और रात को तेलका मर्दन करै अथवा भेड़का दूध और गौका दूध चार चार तोले; सुरंजान कड़वा तीन माशे, रोगनगुल आधपाव इन सबको मिलाकर गरम कर मर्दन करे।

❀ दूसरा बफारा ❀

जो पुरुष की इन्द्री घावों के जोरसे अथवा पट्टी बांधने से सूजजाय तो उसपर त्रिफला छः माशे पानीमें औटाकर इन्द्री को बफारा दे और इसी तरह दिन भर तीन दफे बफारा दे तो एक ही दिनमें सब सूजन दूर होकर पहिले की तुल्य हो जाता है। जो मुख आजाय तो उसको अच्छा करने के लिये यह दवा करे।

❀ नुसखा कुल्ली का ❀

कचनार की छाल, महुए की छाल, गोंदनी की छाल एक छटांक, चमेली के पत्ते एक तोले; सफेद कत्था एक माशे इन सबको पानी में औटाके कुल्ला करे॥

❀ दूसरा प्रयोग ❀

चमेली के पत्ते छटांक भर, कचनार की छाल छटांक भर, इन दोनों को पानीमें औटाकर दोनों वक्त कुल्ले करे।

॥ तीसरा प्रयोग ॥

अकरकरा, माजूफल सिंगरफ । सुहागा कच्चा ये चारों वा पांच पांच माशे ले इन सबको पानीमें मिलाकर चार ‍इस्से करे फिर रातभर एक पहरके पीछे चिलम में रख ‍र तमाखू की तरह पीवै और रातभर जागता रहै फिर ‍वेरे ही ठंडे पानी से स्नान कर और खाने को मुंगका शो ‍वा और गेंहू की रोटी या मूंगकी दाल रोटी खिलाना ‍ाहिये भोजन कराके रोगी को सुलादे इस औषधिसे गर्मी ‍धिक मालूम होती है और दस्त वमन भी होते हैं परन्तु ‍कही बार में घाव तक सख जाते हैं ॥

❀ चौथा प्रयोग ❀

सिंगरफ, माजूफल, अकरकरा; नागौरी असगंध काली ‍मूसली, सफेद मुसली छोटे गोखरू इन सबका चूर्ण करके ‍जंगली बेरके कोयले पर डाल कर सब देह को धूनीदे इसी ‍तरह सातदिन करनेसे यह रोग जड़से जाता रहता है ।

❀ पांचवा प्रयोग ❀

भुना हुआ नीला थोथा, बड़ी हर्डका बक्कल, छोटी हर्ड ‍ये सबदवा एक एक भाग, पीली कौडी चारभाग इन सबको ‍पीस छानकर नीबूके रसमें तीनदिन घोटे फिर इनकी चनेकी ‍बराबर गोली बनावै फिर एक एक गोली नित्य खाय इस ‍औषधि में किसी चीजका परहेज नहीं है ॥

❀ छठा प्रयोग ❀

रसकपूर, चोवचीनी । बावची ये तीनों छःछः माशे, तिन्-‍रस! गुड दोतोले इन सबको दहीके तोड़ में खरल करे और

क जोड़ों की पीडा दूर होजावे और इससे आराम न हो तो अधिक मुँह आने की औषधि दे और नीचे लिखी औषधों से घाव को बफारा देवेः—

❀ नुसखा बफारे का ❀

नरनल की जड़, रामसर, सोये के बीज, खुरासानी अजवायन, मालन; नरमा के पत्ते, शहतूत के पत्ते, इन सब को बराबर ले पानी में औटाकर घावों को बफारादे और रात को तेल का मर्दन करे अथवा भेड़का दूध और गौका दूध चार चार तोले; सुरंजान कड़वा तीन माशे, रोगनगुल आध पाव इन सबको मिलाकर गरम कर मर्दन करे ।

❀ दूसरा बफारा ❀

जो पुरुष की इन्द्री घावों के जोरसे अथवा पट्टी बांधने से सूजजाय तो उसपर त्रिफला छः माशे पानीमें औटाकर इन्द्री को बफारा दे और इसी तरह दिन भर तीन दफे बफारा दे तो एक ही दिनमें सब सूजन दूर होकर पहिले की तुल्य हो जाय । जो मुंह आजाय तो उसको अच्छा करने की दवा करे ।

❀ नुसखा कुल्ली का ❀

कचनार की छाल, महुए की छाल, गोंदनी की छाल एक छटांक, चमेली के पत्ते एक तोले, सफेद कत्था एक माशे इन सबको पानी में औटाके कुल्ला करे ॥

❀ दूसरा प्रयोग ❀

बबूल के [illegible] छटांक [illegible], कचनार की छाल छटांक [illegible], इन दोनों को पानीमें औटाकर दोनों वक्त कुल्ले करे ।

तीसरा प्रयोग ॥

अकरकरा, माजूफल सिंगरफ । सुहागा कच्चा ये चारों दवा पांच पांच माशे ले इन सबको पानीमें मिलाकर चार हिस्से करे फिर रातभर एक पहरके पीछे चिलम में रख कर तमाखू की तरह पीवे और रातभर जागता रहै फिर सवेरे ही ठंडे पानी से स्नान कर और खाने को मुंगका शोरवा और गेंहू की रोटी या मूंगकी दाल रोटी खिलाना चाहिये भोजन कराके रोगी को सुलादे इस औषधिसे गर्मी अधिक मालूम होती है और दस्त वमन भी होते हैं परन्तु एकही बार में घाव तक सख जाते हैं ॥

❀ चौथा प्रयोग ❀

सिंगरफ, माजूफल, अकरकरा; नागौरी असगंध काली मूसली, सफेद मुसली छोटे गोखरू इन सबका चूर्ण करके जंगली वेरके कोयले पर डाल कर सब देह को धूनीदे इसी तरह सातदिन करनेसे यह रोग जड़से जाता रहता है ।

❀ पांचवा प्रयोग ❀

भुना हुआ नीला थोथा, वडी हर्डका वक्कल, छोटी हर्ड ये सबदवा एक एक भाग, पीली कौडी चारभाग इन सबको पीस छानकर नीबूके रसमें तीनदिन घोटे फिर इसकी चनेकी बराबर गोली बनावे फिर एक एक गोली नित्य खाय इस औषधि में किसी चीजका परहेज नहीं है ॥

❀ छटा प्रयोग ❀

रसकपूर, चोबचीनी । बावची ये तीनों छः छः माशे, तिवरसा गुड दोतोले इन सबको दहीके तोड़ में खरल करे और

झाड़ी बेरके बराबर गोला बनाकर रोगी को सुबह शाम एक गोली दही के संग लपेट कर खिलावे और खाने को मूंग की दाल रोटी देवे ॥

❀ सातवाँ प्रयोग ❀

कत्था सफेद, सगुल फार, इलायची के बीज, खड़िया ये सब समान भाग लेकर गुलाब जल में पीसकर ज्वार के बराबर गोली बनावे और एक गोली नित्य बारह दिन तक खाय और जो अजीर्ण होय तो एक दिन बाचमें देकर खाय और मूंग की दाल गेहूं की रोटी खाय परन्तु घी का अधिक सेवन करे।

❀ उपदंश के दर्द का इलाज ❀

जो उपदंश वाले की अस्थि संधियों में दरद होता हो तो पारा, खुरासानी अजवायन, बिलाव की मिंगी, अजमोद असगंध ये सब दवा तीन तीन माशे, गुड़ २८ माशे सब को कूट पीसकर झाड़ी बेरके बराबर गोली बनाकर एक एक गोली दोनों समय खाय और इस गोली को पानी से निगल जाय दांत न लगने दे; खाने को लाल मिरच खटाई आदि लगने वाली वस्तु न खाय।

❀ अन्य प्रयोग ❀

[illegible] अजवायन, काली मूसली ये दवा छः माशे [illegible] [illegible] माशे, गुड़ चार तोला इन सबको कूट पीसकर [illegible] गोली बनावे और एक नित्य दही के साथ खाय तो [illegible] दिन में [illegible] जाय और [illegible] चावल खाने [illegible] [illegible] में बहुत शीघ्र आराम होजाता

लकड़ी का कोयला पिसा हुआ साढ़ेतीन माशे,
ी खांड साडेतीन माशे, इन दोनोंको मिलाकर चौ-
ी में सानकर सात दिन सेवन करने से सातही
दंशको आराम होजाताहै इस दवापर मांस पथ्यहै

ॐ अन्य प्रयोग ॐ

ड़की छाल, तूतिया, पीली कौड़ी की राख ये सब
ार नींबूका रस डालकर कढाई में सोलह पहर तक
इसकी काली मिरच के बराबर गोली बनावै और
नित्य १५ दिन खाय और थोड़ी सी गोली घि-
ाज पर लगाय घावों पर लगावै और जो मुख
ी कचनार के काढे से कुल्ला करै ।

ॐ अन्य प्रयोग ॐ

के हरे पत्ते एक तोले, तूतिया हरा १४ माशे इनको
ानेकी बराबर गोली बनाकर एक गोली गरम पा-
नित्य खाय मूंगकी दालकी खिचड़ी बिना घी डा-
इस दवा पर उचित है ।

ॐ अन्य प्रयोग ॐ

की छाल दो छटांक, इन्द्रायनकी जड़ दो छटांक
फली दो छटांक, छोटी कटाई जड़ पत्ते समेत, दो
ुराना गुड़ दो छटांक इन सबको तीनसेर पानी में
े जब चौथाई जल रहै तब छानकर बोतल में भर
इसमेंसे मात्रानुसार सात दिन पीवै तो अवश्य आ-
इसमें परहेज कुछ नहीं है ॥

अन्य प्रयोग

सिरसकी छाल, बबूलकी छाल, नीमकी छाल, प्रत्येक सवा सेर इन सबको सात गुने पानी में काढ़ा करै जब सवा सेर जल बाकी रहजाय, तब छानकर शीशी में भरले फिर इस में से दो छटांक रोज पीवै और खानेको चनेकी रोटी खाय तो पुरानी आतिशक भी जाती रहती है ॥

अन्य प्रयोग

सिंगरफ़, अकरकरा; नीमका गोंद, माजूफल, सुहागा प्रत्येक ३ माशे इन को पीस सात पुड़िया बनाले एक पुड़िया चिलम में रख बेरीकी आग से पिये तो आराम होय और इस में वमन होयतो कुछ डर नहीं, दिनभर में तीन बार पीवै और इसके गुलको पीसकर घावों पर बुरके, खाने को मोहन भोग मीठा खाय और जो मुँह आजाय तो चमेली के पत्तों का काढ़ा करके कुल्ली करावे ॥

अन्य प्रयोग

सिंगरफ़ दो माशे, अफ़ीम दो माशे, पारा दो माशे, अकरकरा पांचमाशे, भिलाय सात माशे; पुराना गुड़ पांच माशे पहिले पारा और सिंगरफ़ को अदरक के रसमें दो दिन खरल करै फिर सब दवा बारीक पीसकर उसमें मिलावै, और फिर [illegible] टोपी दूर करके उन सब दवाओं के साथ घोट डाले फिर बेर के बराबर गोली बनावे और सात दिन एक गोली [illegible] खाय और गुड़ छककर तेल लाल मिरच खटाई [illegible] का सेवन न करे ।

यदि ऊपर लिखे हुए किसी उपाय से रोगी अच्छा न हो

उसे असाध्य समझना चाहिये ॥

फुंसियोंके दूर करनेकी दवा ।

इस रोगमें सब शरीरमें छोटी२ फुंसिया शीतला के स
दृश होजातीहैं उनके वास्ते यह दवा करनी चाहिये सिंगरफ
तीन माशे, रसकपूर छः माशे, अकरकरा एक तोला, कत्था
एकतोला, छोटी इलायची एक तोला, इन सबको पान के
रसमें मिलाकर चनेके बराबर गोलिया बनावे, और सवेरेही
एक गोली नित्य खाया करै और चनेकी रोटी घी और
दही भोजन करै, इक्कीस दिनके सेवन करने से सब रोग
निश्चय जाता रहेगा ॥

दूसरी दवा ।

रसकपूर, सिंगरफ, लौंग; सुहागा, सब एक एक तोला लेकर
इन सबको महीन पीसकर सात पुडिया बनावै, फिर सवेरे
ही एक पुडिया दही की मलाई में लपेटकर खिलावे दूध
चांवल भोजन करावै और सब चीजों का परहेज है ॥

❀ विरेचन की औषधि ❀

जो किसी मनुष्यके शरीरमें काले वा नीले दाग पडगये
हों तो पहिले तीन दिन खिचड़ी खिलाकर फिर यह जुल्लाब
देना चाहिये । काला दाना नौ माशे. आधा भुना और आ-
धा कच्चा कूटकर बराबरकी शक्कर मिलाकर तीन पुडिया
बनावे और सवेरेही गरम जलके संग खिलावे और प्यास
लगे जब गरम पानी पिलावे ।

यदि कण्ठ का काक जिसे कौआ कहतेहैं बैठ गया होय तो
यह विरेचन देवे, पिस्तेकी मिंगी, बादामकी मिंगी, चिर-

गोजे की मिंगी, पुरानी दाख; जमाल गोटा की मिंगी इन सबको बराबर ले जल में पीस कर जंगली बेर के बराबर गोली बनावे और गोली देने से पहिले तीन दिन तक अ. रहरकी दाल ओर चावलों की खिचडी खिलावे फिर चौथे दिन दो दो गोली मलाई में लपेट कर खिलादे और ऊपर गरम जल पिलावे फिर दूसरे दिन यह औषधि पिलावे बीदाना दो माशे रेशा खतमी छः माशे ईसब गोल छः माशे मिश्री एक तोला इन सबको रात में भिगोदे और फिर प्रातः काल मल छान कर पिलावे ।

ॐ विरेचन के पीछे की गोली ॐ

मुर्दासंग एक तोला; गेरू डेढ तोले, सात वर्ष का पुराना गुड़ इन सबको पीस कर जंगली बेरके बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई में लपेट कर सवेरे ही खाय खटाई और बादी से परहेज करे ।

ॐ सिंगरफ के उपद्रवों का उपाय ॐ

आतशक वाले रोगी को यदि किसी ने सिंगरफ बहुत खिलाया होय [illegible] उसका शरीर बिगड़ गया होयतो यह दवा [illegible], कुटकी एक तोला; आमकी गिजरी दो [illegible], जमाल गोटा तीन तोला, सबको महीन पीस छानकर पुराने गुड़ में मिलाकर बारह पहर कूटे फिर [illegible] बनाकर गोली बनाकर खिलावे और ऊपर से मधु [illegible] पिलावे जो दस्त होजाय तो उत्तम है नहीं तो पहिले तीन दिन यह [illegible] पिलावे ॥

ॐ मुञ्जन का नुसखा ॐ

[illegible] और मजीठ प्रत्येक एक तोले, मुनक्का १५

नग, खतमी एक तोले, खब्बाजी के बीज १ तोला, गुल कन्द दो तोला, इन औषधियों को रात को जल में भिगोदे सवेरे ही औटा कर पिलावै और खिचड़ी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाब देवे ।

❀ जुलाब का नुसखा ❀

गुलाब के फूल दो तोले, खतमी के बीज एक तोले गारीकून छः माशे; सफेद निसोत छः माशे, अरण्ड के बीज ३ तोले एलुआ एक तोले, सोंठ६ माशे, करतमके बीज दो तोले शकमुनियां छः माशे. सूखे आमले एक तोले, सनाय मक्की दोतोले, बिमफाजय एक तोले, काबली हरड एक तोले इन सबको पीस छान कर पानी के साथ घोट कर जंगली बेर के समान गोली बनावे इन में एक गोली सुबह के वक्त खिलावै फिरदोपहर पीछे मूंगका घाट पिलावै और सायकाल को मूंगकी दाल की खिचड़ी खिलावै इसी प्रकार से तीन जुलाब देवै जो इसी जुलाब के देने से आराम होजाय तो उत्तम है नहीं तो नीचे लिखा अर्क तैयार करके पिलावे ।

❀ अर्क मुसफ्फी खून ❀

सोंफ, सूखी मकोय; काबली हरड, छोटी, हरड सनाय मक्कई, बर्यारा बायविडंग, पित पापड़ा, चिरायता, सिरफोंका, जीरा, ब्रह्म दण्डी, नकछिकनी ये सब पाव पाव सेर पुरानी सुपारी. सूखे आमले. बकायनके बीज, बबूल की फली । मुंडी. कचनार की छाल ये सब आध आध सेर अमल तासकी फली का छिलका. मेंहदी के पत्ते, लाल

चन्दन. झाऊ के पत्ते ये सब पाव पाव सेर इनसब को कुट करके नदी के जलमें बारह पहर तक भिगोवे फिर इस का आसव खींचे फिर पांच तोले अर्क में एक तोले शहत मिलाकर पीवे चालीस दिवस सेवन करनेसे चार बरस का बिगड़ा हुआ शरीर भी अच्छा हो जायगा ।

❀ स्त्री का इलाज ❀

जो किसी स्त्रीको यहरोग होकर जाता रहाहो और उसे गर्भ रहगयाहो और उस कालमें रोग फिर उखड़ आवे और ऐसी चिकित्सा करनीहो कि गर्भ भी न गिरने पावे और रोग भी जाता रहै तो इस औषधिको देना चाहिये मुर्दासंग. गेरू और चने एक एक. तोले. जस्त दोतोले इनको महीन पीसकर बारह वरष के पुराने गुड़में गोली बनावै और एक गोली मलाई में लपेट कर नित्य खिलावे तो सात दिन में रोग जाता रहेगा और जो इस गोली से पूरा आराम नहोतो यह औषधि करनी चाहिये ॥

❀ दूसरा उपाय ❀

कथाके पत्ते दसतोले । सिंगरफ तीनमाशे इन दोनोंको महीन पीसकर तीन माशेकी गोली बनावे फिर एकगोली चिलम में रख कर मिट्टी के हुक्के को ताजा करके पिलावे फिर दूसरे दिन हुक्के को ताजा न कर पहिले दिनका पानी रहने दे केवल नेचेको ही भिगोले इसी तरह सात दिन करने से रोग जाता रहेगा इस पर परहेज कुछ नहीं है। बालक पैदा होने के पीछे ये सब उपाय काम में

लाने चाहिये जो उपदंश रोगियों के लिये लिखे गये हैं
बालकभी पेटमें से उपदंस रोग युक्त आया होतो वह भी
अपनी माता के दूधपीने से अच्छा हो जायगा क्यों कि
जो ओषधि उसकी माताको दी जायगी उसका असरदूध
के द्वारा बालक को भी प्राप्त होगा और जो दैवयोगसे पूरा
आराम न होतो यह ओषधि करे ॥

❀ बालक के उपदंश का उपाय ❀

कटेरी दो माशे, वायविड़ंग दो माशे । दाख तीन माशे
इनतीनों को पीस कर आध सेर जलमें औटावें जब दो
तोले रहिजाय तब किसी काच के बरतन में रख
छोड़े और इसमें एक रत्ती लेकर गा के दूध में मिला
कर पिलावे ॥

❀ डाक्टरों की सम्मति ❀

डाक्टरों की सम्मति है कि उपदेश दो प्रकार का होता
है एक पैत्रिक, दूसरा शाररिक ।
यह रोग प्रथम व्यभिचारिणी स्त्रियों के हुआ करता है
फिर उस स्त्रीके साथ संगम करने से एक महीने के भीतर
ही पुरुषकी मूत्रन्द्रिय पर एक समान लाल फुन्सीपैदाहो
जाती है फिर यह फुन्सी धीरे धीरे बड़ी होकर बीच में से
फट जाती है और उस मे एक छोटा सा घाव हो जाता
है, इस घाव के किनारे कठोर होते हैं, फिर धीरे धीरे इस
घाव में से पीव बहने लगता है । इस दशा में रोगी स्वस्थ
रहता है । यह इस रोगकी प्रथमावस्था है ॥

फिर छः सप्ताह से १२ सप्ताह के बीच में हाथ आदि स्थानों में तांबे के रंग के घाव दिखलाई देने लगते हैं। ये व्रण अनेक प्रकार के होते हैं और कोई कोई भ्रम से इसे अनन्त रोग भी बतला देते हैं । कभी कभी दादकी तरह भी हो जाते हैं । बगल कपोलकोण. गुदा और पांव की अंगुलियों में गोल गोल दाग पैदा हो जाते हैं, कभी नखों में भी पीड़ा होने लगती है इस कालमें थोडा वा बहुत ज्वर हो जाता है यह ज्वर अथवा एक ज्वर सर्दी लगकरभी होता है। इस समय मुख, ओष्ठ, जिह्वा और गले के भीतर घाव हो जाता है, नेत्रों में भी भयानक रोग होजाते हैं, कानों में दर्द होने लगता है यह इस रोगकी द्वितीय अवस्था है ॥

तीन चार वर्ष में या इससे भी अधिक काल में पेशी अस्थि और चर्म भी भेदको प्राप्त हो जाते हैं । यह शारीरिक उपदंश की अवस्था है ॥

पैत्रिक में संतान अपने माता पिता के संसर्ग से इस रोग की अधिकारी हो जाती है ॥

पैत्रिक रोग में शारीरिक उपदंश के और सब लक्षण तो दिखाई देते हैं परन्तु इन्द्री पर घाव नहीं होता है ।

गर्भ समयमें इस रोगके होने से बालक के हाथ पांवों में [illegible] प्रकार का विकार होजाता है, अथवा दुबला पतला [illegible] होजाता है, [illegible] बालकके ऊपर नीचेके [illegible] और [illegible] गड्ढा व [illegible] और [illegible] दर्द हुएजाते हैं ॥

इस रोगीको आराम होने पर भी लगातार दो वर्षोंतक औषधादि सेवन कराना चाहिये नहीं तो रोग बढ़जाता है

उपदंशक पर डाक्टरों व हकीमों के मुजर्रिब नुसखे

पारा ।

यह पहले दर्जेमें अधिक लाभकारी होता है इसको तीन प्रकार से सेवन किया जाता है एकतो धूनी देना दूसरे मालिश करना तीसरे खाने को देना ।

प्रथम धूनी की क्रिया

रोगीको नंगा करके कुरसी पर बिठावें और रोगी को कुरसी समेत कम्मल से ढकदें केवल रोगी का चहरा खुला रक्खें और कुरसीके नीचे एक बड़ीईंट खूब गर्म करके रक्खें और उसपर पारे का कुश्ता जो कैलोमिल कहलाताहै और अंग्रेजी दवा फरोशोंके पास मिलताहै ५ रत्ती छिड़कें आग गरमी से पाराउडकर रोगीके अंग में लगजायगा पाव घंटे तक रोगी को उसी अवस्था में बैठा रहनेदें फिर उठालें यही क्रिया प्रत्येक दिन संध्याके समय करना उचित है इसके करनेसे मसूडे फूल जांयगे और उपदंशके चिह्न दूर होजांयगे धुनी बहुत सावधानी से देनी चाहिये ।

❀ दूसरी मालिश की क्रिया ❀

पारे का मरहम जिसको विल्यू आयंट मेंट कहकर पुकारते हैं हररोज जानुपर और बगलों में भीतर की ओर मलें और जबतक इसका असर जाहर नहो रोगीको कपड़ा न बदलने दे और जो मनुष्य मालिश करे वह हाथों में चमड़े के दस्ताने पहनले ।

❀ तीसरा भीतरी सेवन ❀

पारा अथवा उसका कोई मुराकिब प्रथम ॥। रत्ती या रत्ती या ½ ग्रेन से अधिक नहीं देना चाहिये जब तक उसका प्रभाव न लक्ष हो तो रात को ५ रत्ती देना चाहिये।

[१] संखिया

संखिया हमेशह कुछ खाने के पीछे दियाजाता है पेटमें देना हानि कारक होता है इसको मात्रा नाम मात्र को दी जाती है इसका सेवन बिना किसी डाक्टर या चिकित्सक की रायके हरगिज़ न करना चाहिये इसी कारण से अधिक वृतांत इसका लिखना उचित नहीं समझागया।

[२] आयोडाइड आफ पुटाशियम

यह औषधि दूसरे और तीसरे दर्जे में गुण करती है। आयोडाइड पुटाशियम ४ रत्ती, टिंक्चर ओपियम दस बूंद, डाउकर मोरस्यूशन २ बूंद, इनक्यूनन निनशन १ औन्स टिंक्चर अरनशयाई १२ ड्राप, खुराक २० तोला।

नुसखा चोबचीनी।

चोबचीनी, गुलाबकेफूल, बिसफायज, मि...यमली मो स्त्रिक दो तोला मिसरी मान छटांक सबऔषधियों को जुदा जुदा पीसकर मिसरी का किवाम करके उसमें मिला दे खुराक १ तोले गिजा मूंग भात खिचड़ी।

सूज़ाक का वर्णन।

इसरोगको अंगरेजोंने गानोरीया अरबी में कर्दमना

चोल कहतेहैं यह एक वरम होना है जो गुह्येन्द्रिके भीतरी
परदे पर होजाता है आर उसमेंसे एक रतूबत पीपके समान
निकलती रहतीहै और मूत्र के त्याग करने में जलन होती
है यह रोग पुरुषों को भी होता है और स्त्रियोंको भी होता
है बहुधा यह रोग दूसरे इस रोगके रोगीकी छूत पड़ने से
होता है परन्तु अन्यान्य कारणों से भी होजाया करता है,
वे अन्य कारण यहहैं:—

१ सूजाक के मादे की छूने से जो बहुधा स्त्री के प्रसंग
के समय लगजाता है।

२ तीव्र मार्द का रुधिर भी इन्द्री में घाव करके सुजाक
पैदा कर देता है अर्थात् रज का रुधिर अथवा गर्भाशय
का प्रमेह।

(३) नालीमें तीव्र वस्तु के लगनेसेभी सुजाक के लक्षण
प्रकट हो सक्ते हैं जैसे तीव्र वस्तु की पिचकारी, सलाई का
प्रयोग करना अनबुझे चूने पर पेशाब करना इत्यादि

(४) गर्म और तेज चीज़का भोजन करना जैसे बैंगन
लालमिर्च; मदिरा इत्यादि।

(५) कभी२ धूप में घोड़ेकी सवारी पर बहुत दूर तक
जाने से की सुजाक के चिह्न लक्षित होते हैं।

(६) चोट लगने से भी कभी२ यहरोग उत्पन्न होता है

(७) कभी२ स्वप्न दोषसे होता है।

(८) स्त्री प्रसंगकी अधिकता बहुधा इस रोग की का
रण होजातीहै।

रोग के लक्षण

पहिले दरजे में मूत्रेन्द्रिय के मुख पर किंचित मात्र सुरख

खुजली ओर गुदगुदी सी मालूम होती है और कुछ पी.
जो बेरंग और लसदार होती है आने लगती है होते
यह पीप पीले रंग की ओर गाढ़ा होने लगता है और
समय छिद्र पर सूजन भी नज़र आती है अब तक पेशा
जलन नहीं होती परन्तु कुछ गर्म और थोड़ी चिंगारी
लग पड़ती है ।

दूसरे दरजे में पहिली सब बातें अधिक होजाती हैं
बढ़ जाता है सुपारी अरुण वर्ण होजाती है चर्म कभी
जाती है उसका पीछे हटाना कठिन होजाता है मवाद कुछ ग
और हरापन लिये हुये पीपकी सूरतमें जारी होजाता है न
में दर्द होने लगता है मूत्र के समय अधिक जलन होती
और पेशाब थोड़ा २ और कष्ट से आता है रात्रि के समय
अधिक पीड़ा होती है ऐसे लक्षण एक सप्ताह से लेकर तीन
सप्ताह तक रहते हैं, रोगी की अवस्था के अनुसार इसकी मु
द्दत जानना चाहिये उपरान्त तीसरा दरजा शुरू होता है।

तीसरे दरजे में धीरे २ सूजन घटने लगती है पहिले की
अपेक्षा मवाद कुछ कम आने लगता है पेशाब के जलन में
भी कमी होजाती है स्पर्श करने में दर्द नहीं होता निदान
समस्त लक्षणों की कमी का नाम तीसरा दरजा है इस अ
वस्था में मानो मवाद बिल्कुल बन्द होजाता है अथवा था
नों के समान होजाता है । यद्यपि इस दरजे में पीड़ा में
कमी होजाती है परन्तु ऐसी अवस्था अधिक काल तक
रहती है इस अवस्था में थोड़ी भी बद परहेजी होने से रोग
उभर आता है और चौथे दरजे का आरम्भ होजाता है चौथे

दरजे में कोई ऐसा लक्षण नहीं होता जिसमें अधिक पीड़ा हो परन्तु पानीसा जारी रहताहै प्रातःकाल जब रोगी बिस्तर से उठता है तो इन्द्री का मुख रुका हुआ सा प्रतीत होताहै जो पेशाब करने से खुल जाता है हाथ से यदि छिद्रको दबाया जाय तो थोडासा मवाद भी कभी २ निकलता है यह मवाद लसदार स्वच्छ और बेरंग होता है और कभी गाढ़ा भी होता है स्त्री के प्रसंग और मदिराके पान करने अथवा किसी और कारण से फिर भी वर्म पैदा होसकता है रोगबढ़ जाता है और उसकी अवधिमें अधिकता होजातीहै

❀ सुजाक जनित अन्यान्यरोग ❀

(१) रुधिर का जारी होना

(२) फोड़े और गिल्टियों में वर्म पैदा होना

(३) त्वचा का पीछे की ओर न हटना

(४) छिद्र का रुक जाना

(५) अण्ड कोष में सूजन पैदा होजाना

(६) गठिया रोग का उत्पन्न होना

(७) यदि सुजाकका मवाद किसी कारणसे आंखमें लग जावेतो नेत्र रोग उत्पन्न होने से कभी २ रोगी अंधा होजताहै

❀ सुजाक रोग का निदान ❀

जो कुछ लक्षण वर्णन किये गये अर्थात् प्रसंगके अनन्तर पेशाब में जलन होना इन्द्री का मुख रक्त वर्ण होना और सूजना, पीप का आना सुजाक के विशेष चिह्न हैं यद्यपि मशाने के घाव और पत्थरी रोग में भी पेशाब में जलन

और पीप आसक्ती है परन्तु इन्द्री का मुंह नहीं सूजता न सुर्ख होता है।

❀ स्त्रियों का सुज़ाक ❀

स्त्रियों के सुज़ाक तीन प्रकार के अंग रोग युक्त होते हैं।
(१) बाहरी अंग जैसे बड़े और छोटे लबवो बढ़ा हुआमांस
[२] मूत्रेन्द्रिय ।
(३)गर्भाशय में छुत से जब सुज़ाक होता है तो उस में बाहरी अंग और मूत्रेन्द्रिय रोग ग्रस्त होतेहैं और वास्तव में स्त्रियों का सुजाक यह है जो संभोग करने से होता है और कभी २ बाहरीअंग में वर्म मेला रखने के कारण से होजाताहै त्वचा पीछे न हटसके तो ऐसी दशामें यह निदान करना चाहिये कि.पीप उपदंश के घाव से आतीहै अथवा सुज़ाक है उस समय त्वचा को टटोले यदि सख्त मालूम हो तो उपदंश का घाव समझना चाहिये और दरजोंकी पहचान यों करते हैं पहले दरजे में खालिस पीप नहीं आती पेशाब की जलन भी अधिक नहीं होती केवल चिनक होती है और दरजे में यह लक्षण अधिकता से होते हैं तीसरे दरजे में [illegible] घटने लगते हैं चौथे दरजे में वर्म बिलकुल नहीं होता [illegible] पतली पीप जारी रहती है।

❀ सुजाक की चिकित्सा ❀

इस रोग का पहिले दरजे में यह इलाज करना चाहिये [illegible] ठंडा जुलाब देंदें और ऐसी औषधि [illegible] सेवन करें जिन से मूत्र अधिक आवे; [illegible] और [illegible] है।

खीरा ककड़ी के बीज की मिंगी मग्ज कद्दू, कुल्फा
ासनी, जीरासफेद, खरबूजे की मिंगी, अलसी, बिहदान
असपगोल, शोराकल्मी, जवाखार, कनूचा, बाइकारबोनट
आफ पुटास, ईथर, दूधकी लस्सी,

इस दरजेमें कब्ज करने वाली औषधि न खानी चाहिये
घोडे की सवारी और स्त्री प्रसंग से परहेज़ करना चाहिये,
और मांस, चाय, काफी, मदिरा, शीरीनी अर्थात् मिठाई
से भी परहेज करना चाहिये—हलकी और ठंढी चीज जैसेकि
दूध भात, या मूंगकी दाल भात हरी तरकारी; जब का पानी
आहार के वास्ते देनाचाहिये-नमक मिरच कमदेना चाहिये।

दूसरे दरजे में रोगी को लिंगोट बांधना चाहिये और
अधिक परिश्रम और चलने फिरने से बचना चाहिये
और हलका और नर्म भोजन देना चाहिये और जब रोग
घटना आरम्भ होतो ऐसी औषधि देना चाहिये जो प्रमेह
रोग में दी जाती है जैसी कुपेबा, चन्दन का तेल, कबाब
चीनी, फिटकरी, इत्यादि ॥

नुसखा

कबाब चीनी २ तोला, शक्कर सफेद ७ माशे, गोंदकाबुलाब
५ तोले, दारचीनी १५ तोले सबको मिलाकर दिन ३ तक
ढाई २ तोले दे।

तीसरे दरजेमें आहारका साधन पूर्ण रीतिसे करनाचाहिये
तमाकूका अधिक पीना हानि कारक है जो औषधि दूसरे
दरजे में दीजाती हैं उनको अधिक मात्रामें इसदरजे में भी
देना चाहिये और पिचकारी दिनमें कई बार लगानी चाहिये

खीरा ककड़ी के बीज की मिंगी मग्ज कद्दू, कुल्फा कासनी, जीरासफेद, खरमूजे की मिंगी, अलसी, विहदान असपगोल, शोराकल्मी, जवाखार, कनूचा, बाइकारबोनट आफ पुटास, ईथर, दूधकी लस्सी,

इस दरजेमें कब्ज करने वाली औषधि न खानी चाहिये घोडे की सवारी और स्त्री प्रसंग से परहेज़ करना चाहिये, और मांस, चाय, काफी, मदिरा, शीरीनी अर्थात् मिठाई से भी परहेज करना चाहिये—हलकी और ठंढी चीज जैसेकि दूध भात, या मूंगकी दाल भात हरी तरकारी; जब का पानी आहार के वास्ते देनाचाहिये-नमक मिरच कमदेना चाहिये।

दूसरे दरजे में रोगी को लिंगोट बांधना चाहिये और अधिक परिश्रम और चलने फिरने से बचना चाहिये और हलका और नर्म भोजन देना चाहिये और जब रोग घटना आरम्भ होतो ऐसी औषधि देना चाहिये जो प्रमेह रोग में दी जाती है जैसी कुपेवा, चन्दन का तेल, कबाब चीनी, फिटकरी, इत्यादि ॥

॥ नुसखा ॥

कवाव चीनी २ तोला, शक्कर सफेद ७ माशे, गोंदकागुलाब ५ तोले, दारचीनी १५ तोले सबको मिलाकर दिन ३ तक ढाई २ तोले दे।

तीसरे दरजेमें आहारका साधन पूर्ण रीतिसे करनाचाहिये तमाकूका अधिक पीना हानि कारक है जो औषधि दूसरे दरजे में दीजाती है उनको अधिक मात्रामें इसदरजे में भी देना चाहिये और पिचकारी दिनमें कई बार लगानी चाहिये

खीरा ककड़ी के बीज की मिंगी मग्ज कद्दू, कुल्फा, कासनी, जीरासफेद, खरमुजे की मिंगी, अलसी, विहदान, अस्पगोल, शोराकल्मी, जवाखार, कनूचा, बाइकारबोनट आफ पुटास, ईथर, दूधकी लस्सी,

इस दरजेमें कब्ज करने वाली औषधि न खानी चाहिये घोड़े की सवारी और स्त्री प्रसंग से परहेज़ करना चाहिये, और मांस, चाय, काफी, मदिरा, शीरीनी अर्थात् मिठाई से भी परहेज करना चाहिये—हलकी और ठंढी चीज जैसेकि दूध भात, या मूंगकी दाल भात हरी तरकारी; जब का पानी आहार के वास्ते देनाचाहिये-नमक मिरच कमदेना चाहिये।

दूसरे दरजे में रोगी को लिंगोट बांधना चाहिये और अधिक परिश्रम और चलने फिरने से बचना चाहिये और हलका और नर्म भोजन देना चाहिये और जब रोग घटना आरम्भ होतो ऐसी औषधि देना चाहिये जो प्रमेह रोग में दी जाती है जैसी क़ुपेवा, चन्दन का तेल, कबाब चीनी, फिटकरी, इत्यादि ॥

❀ नुसखा ❀

कबाब चीनी २ तोला, शक्कर सफेद ७ माशे, गोंदकागुलाब ५ तोले, दारचीनी १५ तोले सबको मिलाकर दिन २ तक ढाई २ तोले दे।

तीसरे दरजेमें आहारका साधन पूर्ण रीतिसे करनाचाहिये तमाकूका अधिक पीना हानि कारक है जो औषधि दूसरे दरजे में दीजाती हैं उनको अधिक मात्रामें इसदरजे में भी देना चाहिये और पिचकारी दिनमें कई बार लगानी चाहिये

चौथे दरजे में इस रोगका आना भयंकर होताहै यह दरजा तबही देखना पड़ता है जबकि चिकित्सामें गड़बड़ होती है या बदपरहेज़ी से रुधिरमें विकार उत्पन्न होजाताहै इस दरजेमें डाक्टर लोग टिंचर स्टील इत्यादि बल कारक औषधियों का सेवनकराते हैं और पोर्ट वाइन एक प्रकारकी अंग्रेजी हलकी बलकारक मदिराभी बड़ी सावधानी से सेवन कराते हैं सलाई और पिचकारीभी इस अवस्थामें अधिक गुणकरती है।

❀ स्त्रियों के सुज़ाक की चिकित्सा ❀

जो औषधि पुरुषों को दीजाती है प्रायः वही स्त्रियों को भी देना चाहिये—स्त्रियों को पिचकारी और कपड़े के टुकड़े औषधि में तर करके रखना अधिक गुण कारी होता है अंग्रेजी चिकित्सा में पिचकारी की औषधि यह है।

[१] शुगर आफ लेड १६ ग्रेन पानी ८ छटांक।

(२) नाइट्रेट आफ सिल्वर ८ ग्रेन पानी ८ छटांक।

[३] फिटकरी ८ ग्रेन सल्फेट आफ जिंक ४ ग्रेन गुनगुना पानी २ औंस।

यदि पेशाब में मवाद आता होतो टिंचर स्टील देना चाहिये॥

सबेरेही उसका लुआब उठाकर छानकर एक तोला कच्ची
खांड़ मिलाकर पीवे इस में खटाई और लाल मिर्च का खाना
वर्जित है ॥

❀ दूसरी दवा ❀

खारपाठे के दो तोले गूदे में एक तोला भुना हुआ शोरा
मिलाकर प्रति दिन प्रातःकाल खाय तो तीन दिन के खाने
से पुरानी सुजाक भी जाती रहती है यह दवा सब तरह की
सुज़ाक को फायदा करती है परन्तु खाने में लालमिर्च नमक
और उडदकी दाल से बचना चाहिये ।

❀ तीसरी दवा ❀

त्रिफला डेढ़ तोले लेकर रातको सेर भर पानी में जौकुट
कर भिगोदे फिर दूसरे दिन प्रातःकाल छान कर इस में
नीलाथोथा तीन माशे महीन पीसकर मिलावै फिर इसकी
तीन दिन तक दिन में तीन तीन बार पिचकारी लगावै तो
बहुत जल्दी फायदा होगा ।

❀ अथवा ❀

काहूकेबीज, गोखरूके बीज, खीराके बीज प्रत्येक एक तोले
सोंफ छः माशे इन सबको पानीमें पीस दो सेर जलमें छानले
और जब प्यास लगे इमेही पीवे इस तरह सात दिन सेवन
करे तो सुजाक आदि सब लिंगेन्द्रिय जन्य रोग जाते रहते
हैं नमक मिर्च खटाई का परहेज़ करे ॥

❀ रुग्न स्त्री प्रसंगोत्पन्न सुजाक की दवा ❀

सिरस के बीज, बिनोले की मिंगी, बकायन के बीज की
मिंगी हरएक एक एक तोले लेकर बारीक पीसे और बर

सवेरेही उसका लुआब उठाकर छानकर एक तोला कच्ची खांड़ मिलाकर पीवै इस में खटाई और लाल मिर्च का खाना वर्जित है ॥

❀ दूसरी दवा ❀

ग्वारपाठे के दो तोले गूदे में एक तोला भुना हुआ शोरा मिलाकर प्रति दिन प्रातःकाल खाय तो तीन दिन के खाने से पुरानी सुजाक भी जाती रहती है यह दवा सब तरह की सुज़ाक को फ़ायदा करती है परन्तु खाने में लालमिर्च नमक और उडदकी दाल से बचना चाहिये ।

❀ तीसरी दवा ❀

त्रिफला डेढ़ तोले लेकर रातको सेर भर पानी में जौकुट कर भिगोदे फिर दूसरे दिन प्रातःकाल छान कर इस में नीलाथोथा तीन माशे महीन पीसकर मिलावै फिर इसकी तीन दिन तक दिन में तीन तीन बार पिचकारी लगावै तो बहुत जल्दी फ़ायदा होगा ।

❀ अथवा ❀

काहूकेबीज, गोखरूके बीज, खीराके बीज प्रत्येक एक तोले सौंफ छः माशे इन सबको पानीमें पीस दो सेर जलमें छानले और जब प्यास लगे इसेही पीवे इस तरह सात दिन सेवन करे तो सुजाक आदि सब लिंगेन्द्रिय जन्य रोग जाते रहते हैं नमक मिर्च खटाई का परहेज़ करे ॥

❀ स्त्री प्रसंगोत्पन्न सुजाक की दवा ❀

सिरस के बीज, बिनौले की मिंगी, चकायन के बीज की मिंगी हरएक एक एक तोले लेकर बारीक पीसे और चर-

दूध पीवैतोदिनभर मूत्रआवैगाऔर जब प्यासलगै तबलस्मी पीवे और सायंकाल के समय धोवा मूंगकी दाल और चांवल भोजन करै और दूसरे दिन यह दवा खाने को देवै।

❀ दूसरी दवा ❀

गोखरू, खीराके बीज, मुंडी, ये दवा छः छः माशे लेकर रात्रिके समय पानीमें भिगोदे फिर प्रातःकाल मल छानकर पीवै और दही भातका भोजन करै और जो इस दवा से आराम न होय तो फिर ये दवा देवै।

❀ तीसरी दवा ❀

कतीरा, गेरू, सेलखड़ी, शीतलचीनी; ये सब दवा छः छः माशे ले और मिश्री सफेद दो तोले ले इन सबको कूटछान कर छः माशे की मात्रा गौके पावभर दूध के संग खायतो फायदा बहुत जल्दी होगा।

❀ रजस्वला से उत्पन्न सुजाक की दवा ❀

गोंद के दूध में मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोली बनावे और एक गोली नित्य प्रातःसमय खाकर ऊपर से गौका दूध पावभर पीना चाहिये और बादी वस्तुओं से परहेज करना चाहिये।

अन्य दवा

यदि पीब की रंगत सुरखी लिये होय तो यह औषधि दे इसबगोल, दालचीनी, गुलाब के फूल, सफ़ेद मुसली असगंध नागोरी, सेलखड़ी ये दवा छः छः माशे इन सबको महीन पीस कर एक तोले की मात्रा पावभर गौ के दूध के साथ खाय और खटाई वातकारक द्रव्य और लाल मिरच इनका परहेज करे इक्कीस दिन तक इस दवा का सेवन करे तो यह रोग अवश्य जाता रहेगा ॥

पिचकारी की विधि

सीपसोख्ता, पीली कोड़ी विलायती नील ये सब दो दो तोले ले, इनको महीन पीसकर इसमें से दो माशे आब सर्द में मिलाकर खूब हिलावे। फिर इन्द्री के छिद्र में यथा विधि पिचकारी देवे।

अन्य दवा

[illegible] एक तोला [illegible] मस्याने एक तोले, इन दोनों को [illegible] इसमें बगविर का चूरा मिलाकर चारमाशे तथा [illegible] के साथ में पावभर गौका दूध पीवे।

दूध पीवैतोदिनभर मूत्रआवैगाऔर जब प्यासलगे तबलस्मी पीवे और सायंकाल के समय घोवा मूंगकी दाल और चांवल भोजन करै और दूसरे दिन यह दवा खाने को देवै।

❀ दूसरी दवा ❀

गोखरू, खीराके बीज, मुंडी, ये दवा छः छः माशे लेकर रात्रिके समय पानीमें भिगोदे फिर प्रातःकाल मल छानकर पीवै और दही भातका भोजन करै और जो इस दवा से आराम न होय तो फिर ये दवा देवै।

❀ तीसरी दवा ❀

कतीरा, गेरू, सेलखर्डी, शीतलचीनी; ये सब दवा छः छः माशे ले और मिश्री सफेद दो तोले ले इन सबको कूटछान कर छः माशे की मात्रा गौके पावभर दूध के संग खायतो फायदा बहुत जल्दी होगा।

❀ रजस्वला से उत्पन्न सुजाक की दवा ❀

और रजस्वला स्त्री के प्रसंग से भी कभी सुजाक होजाताहै, उसकी चिकित्सा यह है।

बिहीदाना तीन माशे, लेकर रातको जलमें भिगोवे फिर प्रातःकाल उसका लुआब निकालकर उसमें सवासेर दूध मिलाकर फिर सेलखड़ी और ईसब गोलकी भुसी छः छः माशे लेकर पहिले फांके फिर ऊपर उस लुआब को पीले और खानेको मूंगकी दाल रोटी दे

बालंगू के बीज, बीहदाना, खीराककड़ी के बीज, कुलफा के बीज, कासनी के बीज, हरी सौंफ, सफेद मिश्री ये सब छः छः माशे ले सबको पीस छानकर चार माशे नित्य प्रात

और इसके ऊपर गौको दूध पावै और जो इस औषधिसे आराम न होय तो यह औषधि देनी चाहिये ॥

दूसरी दवा

गौके बछडे का सींग, पुरानी रुईमें लपेटकर बत्ती बनावै और कोरे दीपकमें रखकर उसमें अंडी का तेल भरदेवै फिर उसे जलावे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टी का पात्र रखकर काजल पाडै फिर उस काजल को दोनों वक्त आंख में लगाया करै खटाई और बादी से परहेज़ करै ।

नव प्रकारकी सुज़ाक की दवा ।

ककडी के बीज, खीरे के बीज सफेद ककडी के बीजोंकी मिंगी, खरबूजेके बीजोंकी मिंगी ये सब पन्द्रह पन्द्रह माशे और छोटी इलायची, बबूल का गोंद, कतीरा ये छः माशे ले गोली बनावै फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिन तक सेवन करै तो नव प्रकार की सुजाक जाय ।

* अथवा *

सफेद राल को पीसकर उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर नौ माशे नित्य खाय तो सुज़ाक जाय और पीवका निकलना बन्द होय ।

* अथवा *

ढाक की कोंपल, सूखे ढाक का गोंद, ढाककी छाल, ढाक के फूल, इन सबको कूट छानकर बराबर की खांड मिलाकर इसमें से पौने चार माशे कच्चे दूध के साथ खायतो सब प्रकारके सुज़ाक का हितहै ।

* नुसखा *

काई सरोवर की ६ माशे, शोरा कलमी ६ माशे, फालसे की जड़का वक्कल ६ माशे, तीनों को चूर्ण रूप में प्रत्येक दिन प्रातःकाल ४ माशे, गायके दूधके साथ पांचदिन तक खाना चाहिये ॥

* नुसखा *

कबाबचीनी २ माशे, शोरा कलमी ढाई रत्ती, कच्ची फिटकरी ढाई रत्ती, गोंद बबूल २ माशे, इनसबको पीसकर एक पुडिया बनावै ऐसीही तीन पुडिया दिनमें तीन बार गायके दूध की लस्सी के साथ खावे ।

* नुसखा पिचकारी *

बकरी का दूध ८ छटांक, रसौत २ माशे, दोनों को मिला कर पिचकारी लेवे । बहुत अज़माई हुई है ॥

* दूसरा नुसखा पिचकारी का *

गेरू २ तोला, गुलाब की कली २ तोला नीलाथोथा, हरा

और इसके ऊपर गौको दूध पीवै और जो इस औषधिसे आराम न होय तो यह औषधि दैनी चाहिये ॥

❀ दूसरी दवा ❀

गौके बछडे का सींग, पुरानी रुईमें लपेटकर बत्ती बनावे और कोरे दीपकमें रखकर उसमें अंडी का तेल भरदेवै फिर उसे जलादे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टी का पात्र रखकर काजल पाडै फिर उस काजल को दोनों वक्त आंख में लगाया करै खटाई और बादी से परहेज़ करै ।

सब प्रकारकी सुज़ाक की दवा ।

कुलफे के बीज,पोस्त के बीज सफेद ककडी के बीजोंकी मिंगी, तरबूजके बीजोंकी मिंगी ये सब पन्द्रह पन्द्रह माशे और छोटी गोखरू,बबूल का गोंद,कतीराये छःमाशे लैं गोली बनाले फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिन तक सेवन करै तो सब प्रकार की सुजाक जाय ।

पीपाबांसे के छोटे पेडको जलाकर उसकी राख में कतीराका पानी मिलाकर चनेके बराबर गोली बनाले. और गुलमेग को रातको भिगोदे सबेरेही मलकर छानले फिर पहिले उस गोली को खाकर ऊपर से इस रसको पीवे तो सब प्रकार की सुज़ाक जाती रहती है ॥

❀ अथवा ❀

हल्दी और आमले दोनों बराबर ले चूर्ण करै इसकी बराबर खांड मिलाकर एक तोला नित्य पानी के साथ फांके तो आठ दिनमें सुज़ाक जाय ।

*** अथवा ***

सफेद रालको पीसकर उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर नौ माशे नित्य खाय तो सुज़ाक जाय और पीवका निकलना बन्दहोय ।

*** अथवा ***

ढाक की कोंपल,सूखे ढाक का गोंद,ढाककी छाल, ढाक के फूल,इन सबको कूट छानकर बराबर की खांड मिलाकर इसमें से पौने चार माशे कच्चे दूध के साथ खायतो सब प्रकारके सुज़ाक का हितहै ।

*** नुसखा ***

काई सरोवर की ६ माशे,शोरा कलमी ६ माशे, फालसे की जड़का वक्कल ६ माशे, तीनों को चूर्ण रूप में प्रत्येक दिन प्रातःकाल ४ माशे, गायके दूधके साथ पांचदिन तक खाना चाहिये ॥

*** नुसखा ***

कबाबचीनी २ माशे,शोरा कलमी ढाई रत्ती, कच्ची फिटकरी ढाई रत्ती, गोंद बबूल २ माशे, इनसबको पीसकर एक पुडिया बनावै ऐसीही तीन पुडिया दिनमें तीन बार गाय के दूध की लस्सी के साथ खावे ।

*** नुसखा पिचकारी ***

बकरी का दुध ८ छटांक, रसोत २ माशे,दोनों को मिला कर पिचकारी लेवे । बहुत अजमाई हुई है ॥

*** दूसरा नुसखा पिचकारी का ***

गेरू २तोला,गुलाब का कली २ तोला नीलाथोथा, दूरा

२ माशा, कच्ची फिटकरी १ तोला, मेंहका पानी एक सेर सब दवइयों को पानी में पीसकर सियाही सोख कागज में छान लेवै और पिचकारी लगावै अति गुणकारी ।

❀ सुज़ाक के लिये तैल ❀

देशी अजवायन पावभर लेकर उसको कूटकर मिंगी निकाले और उसमें घी मिलाकर बोतल के यन्त्र से तेल निकाले खुराक तीन बूंद सफेद शक्कर के साथ प्रातः काल और सन्ध्या के समय खाना चाहिये खटाई और बादी चीजों से परहेज करना चाहिये ।

❀ सुज़ाक पर इन्द्री जुलाव ❀

फिटकरी १॥ तोला, रूलखड़ी २तोला, कबाब चीनी १ तोला, कलमी शोरा६माशे,गेरू,६माशे रेवंद चीनी६माशे,सब दवाइयोंको खूब बारीक पीसकर रक्खे प्रातः काल तीन पाव गाय के दूधमें दो सेर पानी मिलावे और एक तोला औषधि फांक कर वह पानी मिला हुआ दूध पी जावे तदोपरान्त कलमी शोरा एक तोला,एक बरतन में डालकर पानी भर देवे और जब पेशाब की आवश्यकता हो तो इन्द्री को उस पानी में छोड़कर पेशाब करै और पेशाब रोकर कर करै इसी रीति से निरन्तर पेशाब करना चाहिये:—

❀ नुसखा ❀

[illegible] के पेड़की कच्ची छाल खूब धोकर और सुखा कर २तोला खूब महीन पीसे और उसमें २ तोले मिश्री मिलाकर रक्खे सन्ध्या के समय एक मिट्टी के पात्र में बनियां ३ माशे, मिट्टी की रेह ३ माशे, लोनियां साग

१ तोला; ४ छटांक पानी भर के ओस में रखदे प्रातः काल
उस पानीको नितारकर उसमें शर्बत बजूरी सर्द १ तोला
मिलाकर पहिले ऊपर लिखा हुआ लाखका चूर्ण फांककर
ऊपर से शर्बत मिली हुई औषधि पीजावै एक सप्ताह इसी
प्रकार इस औषधि का सेवन करै खटाई बादी तथा लाल
मिर्च से परहेज़ करै ।

❋ नुसखा फोते के वर्मका ❋

सुज़ाक के कारण जो वर्म फोतोंमें होजाताहै उसका यह
उपाय है साग सोये पालक का लेकर उस को कूट ले और
गर्म करके सन्ध्या तथा प्रातःकाल गर्म २ बांधे वर्म कम
हो जायगा और दर्द जाता रहेगा ।

❋ नुसखा ❋

मँहदी के पत्ते, आंवले, सफेद जीरा, धनियां, गोखरू, यह
सब औषधि एक २ तोले लेकर जौकुट कर फिरे इसमें से
एक २ तोले रातको पानीमें भिगोदें । प्रातःकाल मल छान
लें और तीन माशे कतीरा पीसकर पीछे इसमें खांड मि-
लाकर सात दिन पीने से सुज़ाक जाता रहता है ।
शंखा हुलीका काढा करके पीनेसे भी सुज़ाक जातारहताहै
कुलंगा के बीज ९ माशे लेकर आध सेर दूधमें भिगो के
रातको ओसमें धरदे फिर प्रातः काल छानकर उसमें थोडी
खांड मिलाकर पिये परन्तु कुलंग के बीजों को पीसकर
भिगोवे तो सब प्रकार का सुज़ाक जाता रहता है ।
बबूलकी कोंपल, गोखरू एक२ तोला लेकर उसका क्वा

निकाल कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे तो सब प्रकार का सुज़ाक जाता रहता है—

जिरयान अर्थात् प्रमेह।

इस रोगको अरबी में सैलानेमनी कहते हैं यह रोग इन कारणों से होता है। (१) वीर्य्य की अधिकता होना (२) वीर्य्य में कोई विकार उत्पन्न होजाना (३) घुंघटका अधिक बड़ा होना अथवा उसमें मलका जमना (४) मूत्र अथवा मूत्रेन्द्रियका रुग्न होना (५) अन्यान्य रोग अर्थात् कब्ज और गुदा अथवा मस्तिष्क इत्यादि अवयओं में कोई विकार होना (६) वीर्य्य सम्बन्धी अवयओंको ढीला पड़ जाना (७) मूत्रेन्द्रिय की स्तंभन शक्तिका न्यून होजाना।

इस रोगमें मनुष्य जब पेशाब करने को बैठता है तो थोड़ा ज़ोर करने से अथवा बिना ज़ोर किये भी वीर्य्य की कई एक बिन्दु अलग अथवा मूत्र में मिली हुई प्रथम अथवा मूत्र करनेके उपरान्त बाहर निकल आती हैं और मल विसर्जन करने के समय मुख्यतः कब्जकी अवस्था में वीर्य्य निकल जाता है और जब रोग की अधिकता होतीहै तो शौच जाने के समय सदा निकलता रहताहै वीर्य्य कभी तो पतला और अधिक बिना जलन के बाहर निकलता है और कभी थोड़ा और जलन के साथ निकलता है—जिस समय ऐसा रोगी स्त्री के प्रसंग की इच्छा करता है या तो इन्द्रियमें दृढ़ता नहीं होती और यदि कुछ होती है तो क्षणमात्र में वीर्य्य स्खलित होजाता है इसके सिवाय शृंगार रसकी

किसी वस्तुका ध्यान मात्र करने से ही वीर्य्यपात होजाता है—शनैः २ रोगी नितान्त बलहीन और अशक्त होजाता है, वैद्योंने प्रमेह रोग का निदान और उसकी चिकित्सा का [illegible]गरन इस भांति किया है—

❀ वैद्यक मतसे प्रमेह ❀

अधिक काल तक बैठने, तथा सोने और नवीन जल पान करने और भेड़ बकरा का मांस, गुड़, अधिक मिठाई, व[illegible] हुत दही, तथा कफ कारी वस्तुओं के भोजन अधिक श्रम तथा अधिक स्त्री प्रसंग करने घाम में रहने उष्ण भोजन करने मदिरा के पान करने तिक्त वस्तु के खाने इत्यादि से यह रोग उत्पन्न होता है।

❀ प्रमेह के पूर्व रूप ❀

दांत तालू जीभ में मल अधिक हो हाथ पांव में दाह हो देह चिकनी हो प्यास अधिक लगे और मुँह मीठा रहे यदि ये लक्षण हों तो प्रमेह रोग के उत्पन्न होने की संभावना है इस अवस्था में मूत्र बहुत ठंडा, पतला, और मैला आने लगता है प्रमेह रोग के २० भेद हैं।

❀ कफादि प्रमेह का वर्णन ❀

उपरोक्त २० प्रमेह में कफसे होने वाले १० प्रकार के पित्त से होने वाले ६ प्रकार के, और वात से होने वाले [illegible] प्रकार के प्रमेह होते हैं।

इक्षुमेह, सुरा मेह, पिष्ट मेह, लाला मेह, सान्द्र मेह, उ[illegible] क मेह, सिकता मेह, शनैर्मेह, शुक्र मेह, शीत मेह [illegible] प्रकार के प्रमेह कफकी अधिकता से होने [illegible]

मेह, नील मेह, हरिद्र मेह, मंजिष्ठ मेह, और रक्त मेह ये छः प्रकार के प्रमेह पित्त की अधिकता से होते हैं वसामेह, मज्जा मेह, क्षौद्र मेह और हास्ति मेह; ये चार प्रकार के प्रमेह वात की अधिकता से होते हैं।

❀ इक्षुमेह के लक्षण ❀

इक्षुमेह नाम वाले प्रमेह रोग में रोगी का पेशाब ईख के रस के समान अत्यन्त मीठे रस से युक्त होता है।

❀ सुरा मेह के लक्षण ❀

इस रोग में मद्य की गंध के समान उस गंधवाला पेशाब होता है इस पेशाब का ऊपर का भाग पतला और नीचे का भाग गाढ़ा होता है।

❀ पिष्टमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब पानी में घुली पिट्ठी के समान होता है. पेशाब सादा होता है जिस समय रोगी पेशाब करता है उस समय सब देह के रोमांच खड़े होजाते हैं।

❀ लालामेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब की धार के साथ ऐसे सूत से निकलते हैं जैसे मकड़ी का जाला होता है। अथवा जैसे बालक के मुख से राल टपकती है वैसीही राल टपकती है इसी को लालामेह कहते हैं।

❀ सान्द्रमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब बासी रहने से बहुत गाढ़ा होता है इसी को सान्द्रमेह कहते हैं।

❀ उदकमेह के लक्षण ❀

उदकमेह में पेशाब सादा और साधारण रंग से युक्त होता

है पेशाब में किसी प्रकारकी गंध नहीं आती है, जलके समान शब्द करता हुआ पेशाब निकलता है।

❀ सिकतामेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब को रोकने की सामर्थ जाती रहती है, पानी का रंग मैला होता है और उसके साथ बालू रेत के से कण निकलतेहैं, इन चिह्नों से युक्त पेशाब होने से उसे सिकतामेह कहते हैं।

❀ शनैर्मेह के लक्षण ❀

जो पेशाब थोडा होता है और धीरे धीरे निकलता है ऐसे रोगको शनैर्मेह कहतेहैं।

❀ शुक्रमेह के लक्षण ❀

ऐसे रोगी का पेशाब वीर्य के समान होताहै अथवा वीर्य से मिला रहता है। वीर्यसा मालूम होने के कारण इस रोग को शुक्रमेह कहते हैं।

❀ शीतमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब अत्यन्त मधुर रस युक्त और अत्यन्त ठंडा होताहै ऐसा पेशाब होने से इस रोगको शीतमेह कहते हैं

❀ क्षारमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब गंध वर्ण, रस और स्पर्श में सर्वथा क्षारजल के समान होता है इन लक्षणों से युक्त होने पर इसे क्षारमेह कहते हैं।

❀ नीलमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब में नीली झलक मारती है, नीलकांति युक्त होने ही से इस रोगको नीलमेह कहते हैं।

❀ श्याम मेह के लक्षण ❀

जो पेशाब काली के समान काला होता है उसे श्याम मेह कहते हैं ।

❀ हरिद्रा मेह के लक्षण ❀

जो पेशाब हल्दी के रंग के समान होता है और जिस में पेशाब करते समय जलन बहुत होती है, इन लक्षणों से युक्त रोग को हरिद्र मेह कहते हैं ॥

❀ मंजिठा मेह के लक्षण ❀

जिस रोग में पेशाब मजीठ रंग के समान लाल होता है और कच्चे मांस के समान गंध युक्त धातु निकलती है इसी को मंजिष्ठा मेह कहते हैं ।

❀ रक्तमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब लाल रंग का होता है गरम होता है बल से निकलता है इसीको रक्तमेह कहते हैं ।

और उस में कच्चे मांस की सी गंध आने लगती है । इसी को रक्त मेह कहते हैं ।

❀ वसामेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब चर्बी के रंग के सदृश होता है, इस में चर्बी मिली होती है और पेशाब अधिक निकलता है ॥

❀ मज्जा मेह के लक्षण ❀

जिस रोग में मज्जा [illegible] के समान अथवा मज्जा से मिला हुआ पेशाब बार बार होता है, उसे मज्जामेह कहते हैं ।

❀ क्षारमेह के लक्षण ❀

इसीकादूसरा नाम मधुमेह है। इसमें रूक्षगुणयुक्त पेशाव होताहै और मूत्र कषायरस युक्त अथवा मिष्टरस युक्त निकलता है इसी को मधुमेह वा क्षारमेह कहते हैं।

❀ हस्तिमेह के लक्षण ❀

जो मनुष्य मतवाले हाथी के मूत्र के समान झागदार पेशाव करता है और उसमें ललाईभी हो और वार वार अधिक परिमाण में पेशाव करै। इसको हस्तिमेह कहते हैं॥

❀ साध्य मेहके पूर्व लक्षण ❀

मधुमेह रोगी का पेशाव जिस समय निर्मलहो रंगमें साधारणता हो अथवाकटुतिक्त किसी रससे युक्त हो उस समय मधुमेही निरोग हो जाता है॥

(कफादि जन्य प्रमेह साध्यासाध्य)

कफ से उत्पन्न १० प्रमेह साध्य हैं अर्थात् साधारण यत्न से दूर हो जाते हैं और पित्त के ६ प्रमेह यत्न करनेसे दबे रहते और वायु के ४ प्रमेह असाध्य हैं और शरीरके विनाश करने वाले हैं

❀ असाध्य प्रमेह का वर्णन ❀

पूर्वोक्त अजीर्ण आदि तथा अन्यान्य अशुभ उपद्रवों से युक्त होने पर अधिकतर धातु और मूत्र का स्राव होने से तथा प्रमेह रोग बहुत दिनका हो जाने से यह रोग असाध्य होता है। जब प्रमेह बहुत दिनका हो जाता है और उसकी किसी प्रकारकी चिकित्सा नहीं की जाती है तो समय पाकर यह रोग मधुमेहमें परिणत हो जाता है मधुमेह

नास, मुनक्का, दाख इनका काढ़ा लाल प्रमेह को नशे
(७) दूब, शेवाल क्षुद्रमोथा, करंजा, कसेरु का काढा
अथवा अर्जुन चन्दन का काढा पीने से शुक्र प्रमेह दूर हो
ता है (८) पाढा गोखरू का काढा शीत मेह को नाशै
(९) नीमका काढ़ा इक्षु मेहको नाशै (१०) शंभल का
काढ़ा सुरा प्रमेहको दूर करे है ॥

❀ पित्त प्रमेह पर काढे ❀

(१) लोध, अर्जुन, वाला, पतंग का काढ़ा ॥ (२) नीम
वाला, हरड, आमला का काढा (३) आमला; अर्जुन, नी-
म, कूड़ाका काढ़ा (४) काला कमल, जीरा, हल्दी, अर्जुन
का काढा ॥ इन चारों काढों में शहद मिलाकर पीने से पित्त
के ६ प्रमेह नाश होवें ॥

❀ पित्त मेहोंपर ६ काढे ❀

(१) वाला; लोध; अमर कंद: चन्दन का काढा (२) वा
ला, नागरमोथा, अमला हरड़ का काढा (३) परवल नीम
आमला गिलोय का काढा (४) नागरमोथा, हरड़, पुष्कर
मूल का काढा (५) लोध, वाला, दारुहल्दी, धौके फूल का
काढा (६) शुंठि, कमल अर्जुन मोंफ का काढा ये छहों
काढे मांजिष्ठ प्रमेह; हारिद्र प्रमेह, नील प्रमेह, क्षारप्रमेह श्याम
प्रमेह, रक्त प्रमेह, इन सबको नाश करते हैं ॥

❀ अन्य औषधियां ❀

(१) कपिला, मत्तपर्णी, अर्जुन, बहेड़ा, रोहित, कूड़ाके फूलों
को दही में पीस शहद मिलाकर पीनेसे कफपित्त प्रमेहनाश होवे
(२) हरड़, कायफल, नागरमोथा, लोध, लालचन्दन वाल

इनके काढ़ेमें शहद व हल्दी का चूर्ण मिलाकर पीने से कफ नाल प्रमेह नाश होवे ।

(२) वायविडंग दारुहल्दी, हल्दी, खैर, चाला, सुपारी, का काढा प्रातःकाल पीने से पित्त वात प्रमेह दूर हो ।

(३) त्रिफला, देवदारू, दारुहल्दी गंडूभी, नागरमोथा के काढामें हल्दी शहद मिलाकर पीनेसे सब प्रमेह नाश होता है

(५) केशुके फूलों के काढा में मिश्री मिलाकर पीने से २० प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं ॥

(६) आमला के काढा में हल्दी शहद मिलाकर पीने से व बड़के अंकुरों के काढ़ा में शहद मिलाकर पीने से व पाषाण भेद के काढा में शहद मिलाकर पीने से प्रमेह दूर होता है

(७) वायविडंग, हल्दी, मुलहठी, शुंठि, गोखरू के काढ़ा में शहद मिलाकर पीने से भयंकर प्रमेह भी नाश होजाता है

(८) कुड़ा की छाल, आमनी की छाल, नागरमोथा, मिलवा इनका काढा सब प्रमेहों में गुणकारी है ।

काढा

अर्जुन, नागरमोथा, त्रिफला इनका एक तोला आमलाका रस शहदमें मिलाकर खाने से सब प्रमेहों का नाश करता है ।

गुडूची व धात्री रसयोग

गिलोयके रसमें शहद मिलाकर पीने से प्रमेह शान्त होता है

अंकोल्यादि योग

अंकोल की छाल, अशगंध, हल्दी के चूर्ण को शहदके साथ चाटने से २० प्रकारके प्रमेह निःसन्देह दूर हों ।

एलादि चूर्ण

छोटी इलायची, शिलाजीत, पिप्पली, पाषाणभेद इनके चूर्ण को

चावलों के मांड के साथखानेसे प्रमेहरोग नाशकोप्राप्तहोताहै

❀ कर्कट्यादि चूर्ण ❀

ककड़ीका बीज, त्रिफला, सेंधानमक, ये समान भाग ले चूर्ण बना गरम पानीसे सेवन करैतो मूत्ररोधका नाश करे।

❀ गुगल ❀

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, गूगल ये समान भाग ले गोखरू के काढामें गोली बना देश काल के विचार से सेवन करै तो प्रमेहादि रोगोंपर अति लाभदायक है।

❀ गोक्षुरादि गूगल ❀

गोखरू ११२ तोले का छःगुना पानीमें काढ़ा बना आधा रहने पर उतार डाले पीछे शोधा गुगल २८ तोले मिलाय फिर पकावे गुड़ के पाक समान होनेपर त्रिकुटा, त्रिफला नागरमोथा इनका २८ तोले चूर्ण मिलावे फिर इस की गोली झड बेरी के समान बनाके खाने से प्रमेह मूत्रकृच्छ, प्रदर, मूत्रा घात, वात रक्त, वात रोग, शुक्र दोष ; पथरी आदि का नाश होता है।

❀ चन्द्रकलावटी ❀

इलायची, कपुर; शिलाजीत, आमला, जायफल, गोखरू शाल्मल; पारा; बंगलोह, भस्म ये समान भाग ले गिलोय शंभल के काढ़ा में भावना दे इसे दो माशे रोज शहद में मिलाकर चाटनेसे सब प्रमेह का नाश होता है।

❀ हरिद्र तेल ❀

हल्दी का काढ़ा २५६ तोला दूध १२८ तोला कूट असगंध, लहसन, हल्दी, पिपली इनका काढ़ा तिलोंका तेल ६४

तोला मिला तक्को सिद्धकर और कणाराके बनौला की मिंगी अंकोलके जड़ की छाल और फूल. केतकी के बीज. हरडें इनको चौगुने पानीमें पका चतुर्गांश काढ़ा बना उपरोक्त में मिला और केलकी रस मिला फिर पकाय पीछे १ तोला रोज खाने से २० प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं।

ॐ सुपारी पाक ॐ

नाग केशर, नागर मोथा, चन्दन, त्रिकुटा, आमला, नि-गञा, कोकिलाक्ष लज्जावंती, दालचीनी, इलायची, तमाल पत्र, जीरा स्याह, जीरा सफेद, सिंघाड़ा, वंश लोचन, जा-वित्री, लौंग, धनियां, बहुला एक एक तोला, सुपारी ३२ तोला इनको चूर्ण कर १६ तोला दूध में पकाय पीछे गोघृत १६ तोले, मिश्री २०० तोले, आमला १६ तोले, सतावर १६ तोले इनका चूर्ण मिला मन्द मन्द अग्नी पर पकाय चिक-ने बरतन में भर छोड़ इसमें से प्रातःकाल पाचन शक्ति के अनुसार खाने से प्रमेह, जीर्ण ज्वर अम्ल पित्त, रक्त विकार, बवासीर, मन्दाग्नि आदि रोग नाश होते हैं और वीर्य को पुष्ट कर देता है यह प्रयोग स्त्रियों के प्रदर को भी नाश करके संतान का देने वाला है।

रस सिंदूर, अभ्रक भस्म, सीसा भस्म, वंग भस्म, लोह भस्म
ये सब तीन ३ माशे मिलाय मन्दाग्नि से पचावै फिर पा
चन शक्ति अनुसार सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह, जीर्ण
ज्वर, गुल्म, पित्त रोग, वात रोग आदि का नाश करै तथा
वीर्य अग्नि और कांतिको बढ़ाता है।

❀ द्राक्ष पाक ❀

दाख ६४ तोला, दूध ६४ तोला, मिश्री ६४ तोला इन को
मिलाकर पकावै पीछे दालचीनी, इलायची, तमालपत्र नाग
केशर, त्रिकुटा, कस्तूरी, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, केशर
जावित्री, जायफल, कपूर, चांदी भस्म, कुस्तुंग वरी चंदन
ये सब दो २ तोले ले चूर्ण करें पूर्वोक्त में मिला के नित्त
प्रातःकाल दो तोलके सेवनसे शरीरको चिकना करै और
वीर्य को बढ़ावै तथा प्रमेह, पित्तरोग, मूत्र घात, विड्बंध
मूत्र कृच्छ, रक्त पीड़ा, नेत्र पीड़ा, हृदय, पैरें, हाथ तलवा
आदि के दाह को नाश करके मनुष्य को सुखदेता है।

❀ अभ्रक योग ❀

चन्द्रिका रहित अभ्रक भस्म, त्रिफला, हल्दी इनके चूर्णमें
शहद मिलाकर चाटने से शीघ्र सब प्रमेह नष्ट होते हैं।

❀ नाग भस्म योग ❀

शोधा शीशा भस्म २ रत्ती भरमें आमला का चूर्ण, हल्दी
शहद मिलाकर खाने से सब प्रमेह नष्ट होते हैं।

❀ गंधक योग ❀

शुद्ध गंधक को गुड़ के साथ एक तोला खाकर ऊपर से
दूध पीने से २० प्रकारके प्रमेह दूर होते हैं।

❀ शिला जीत योग ❀

शिला जीत का दूध मिश्री में मिलाकर प्रातःकाल पीने से सब प्रमेह २१ दिन में दूर हों।

❀ स्वर्ण माक्षिका भस्म योग ❀

सोनामाखी की भस्म शहद में मिलाकर चाटने से सब प्रमेह दूर होते हैं अथवा सोने माखी की भस्म गिलोय के सत में मिलाकर खाने से पित्त प्रमेह जाता रहता है।

बहु मूत्र मेह निदान।

शरीर दुर्बल होजाय, पसीना आवै, और अंगमें गंध आवै हाथ पैर पांव नेत्र कान आदिमें दाह होय, अंग शिथिल रहै और अरुचि हो, पिडिका उपजे, कंठ तालु, होठ सूख जाय और दाह रहै शरीरका रंग श्वेत हो पीला मूत्र हो तथा मूत्र पर मक्खी आदि देर तक बैठे ये बहु मूत्र प्रमेहके लक्षणहैं।

❀ बहु मूत्रका दूसरा प्रकार ❀

पसीना आवै, अंग में गन्ध हो और अंग शिथिल होजाय और शय्या आसन शयन इनकी इच्छा बनी रहै हृदय, नेत्र, कानमें दाह रहै शीतल पदार्थकी इच्छा बनीरहै कंठ तालु सूख जाय मूत्र मीठा और हाथ पैरों में दाह रहै, और मूत्रके ऊपर मक्खी बैठे वायुसे दोष क्षयहो व कफ से प्रमेह उपजे व वात प्रमेह उपजे, वातके प्रमेह असाध्य, पित्त के कष्ट साध्य, कफ के साध्य हैं।

❀ चिकित्सा ❀

[illegible], [illegible] नागर मोथा, पाढ़ा इनके काढ़े में शहद मिलाकर पीनेसे बहु मूत्र प्रमेह दूर होता है।

देव दार्व्य रिष्ट

देवदारू २०० तोला; वांसा ८० तोला, मजीठ, इन्द्रजव जमाल गोटा की जड़, तगर, हल्दी, दारु हल्दी रास्ना वायविडिंग नागरमोथा सिरस, खैर, शंभल, ये चालीस२ तोलेले और अजमोद, कूडाकीछाल. सफेद चन्दन गिलोय कुटकी. चीता ये बत्तीस२ तोले ले इन्हें ८ द्रोण पानी में पका अष्टमांस शेप रहने पर शीतल कर धव के फूल ६४ तोले शहद १२०० तोले शुंठि, मिरच, पीपल ८ तोला दालचीनी, इलायची; तमालपत्र ये १६ तोला माल कांगनी १६ तोला नाग केसर ८ तोला, सबको चूर्णकर उपरोक्त काढ़े में मिलाय चिकने बरतनमें एक मास तक रक्खें पुनः इनके पीने से दारुण प्रमेह, वात रोग, बवासीर संग्रहणी मूत्र कृच्छ, कुष्टादि का नाश होताहै।

❀ लोध्रासव ❀

लोध, कचूर, पुष्कर मूल, इलायची. मुर्वा. वायाविडंग त्रिफला. अजवायन. चावकांगनी. सुपारी गडूंभा. चिरायता कुटकी, निसोत, तगर, चीता, पीपला मूल. कूट अतीस पाढा काकड़ा सिंगी, नागकेशर, इन्द्र , नख, तमालपत्र मिरच भद्रमोथा. इन सबको एक २ तोला ले सबको एक द्रोण पानीमें पकाय चतुरांश रहने पर बराबर शहत मिलाय चिकने बरतनमें रख छोड़े १५ दिनके उपरान्त ६ तोले नित्त पीने से कफ, पित्त प्रमेह पांडु. बवासीर. संग्रहणी अरुचि. क्षिलास कुष्ट तथा अन्य कुष्ट सबको शीघ्र नष्ट करता है।

❀ आनन्द भैरव रस ❀

सिंगरफ ये नग मीठा तेलिया. मिर्च. पीपल. सुहागा.

✿ पथ्य ✿

पहिले लंघन वमन, विरेचन प्रोद्वर्तन शमन दीपन इन
का सेवन कराय पीछे नीवार, धान्य, कांगनी, यव, बांस,
का फल कोदो, सामाज्वरि, कुरु विन्द, मटर. गेहूं, धान,
कलम धान पुरानी कुलथी मुंग अरहर चना इनका यूष व रस
तिल खील शहद मठा चिरोटा कबूतर शशा तीतर लवा वाघ
हिरण आदि जंगली जीवों का मांस सहोजना परवर क-
रेला ककेड़ा ताड़फल कटेली का फूल गूलर लहसुन, नवीन
केला, पालकका शाक, गोखरू, मुपवर्णी, आकके पत्ते, गि-
लोय, त्रिफला, कैथ जामुन, कसेरू, कमल, तथा नील
कमल की जड़, व बीज खजूर नारियल, तथा ताड़ वृक्ष का
मस्तक त्रिफला. भिलावा; कत्था इन्द्रयव, चर्परे तथा क-
पाय ये रस हाथी घोड़ा की सवारी बहुत फिरना, सूर्यका
तेज, कसरत ये प्रमेह में पथ्य हैं।

✿ अपथ्य ✿

मूत्र का वेग, धूंआ, पीना, स्वेदन, रक्तमोक्ष, सदा बैठना
दिन में सोना; नवीन अन्न, स्त्री संग. कांजी. रांधा नोनका
जल, तेल गुड; तूंबी की मींगी. विरुद्ध भोजन. कोयला,
ईप, बुरा जल. मीठे. खट्टे. और खारी रस अभिष्यंदी ये
सब वस्तु प्रमेह में अपथ्य हैं।

✿ प्रमेह रोग पर परीक्षित प्रयोग ✿

(१) मूत्रेन्द्रिय के छिद्र में कपूर रखने से पेशाब होकर
दर्द कम होजाता है।

(२) पके हुये पेठेका जल आधपाव. जवाखार दो आ-

ना भर. विशुद्ध चीनी दो आना भर. इन सबको मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग में पेशाब होकर रोगी की वेदना कम होजाती है।

(३) मिसरी के पाव भर शर्बत में एक छटांक कमला नीबू का रस मिलावे और इस में से धीरे धीरे पान करावे तो पेशाबों के होने से रोगी की वेदना कम होजाती है।

(४) विशुद्ध चीनी में आरने उपलों की राख का पावभर जल मिलाकर पीने से रोगी रोगमुक्त होजाता है।

(५) आमले का गूदा आधे तोला. बकरी का दूध छटांक भर इन दोनों को मिलकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है।

(६) जवाखार और विशुद्ध चीनी प्रत्येक दो आना भर मिलाकर शहद के साथ तीन चार दिन तक सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र दूर होकर धारा गति से पेशाब होने लगता है।

(७) गोखरू के बीज. असगंध. गिलोय आमला और [illegible] एक २ आना भर लेकर चूर्ण बनाकर शहद के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग जाता रहता है।

(८) मूंगेकी भस्म एक रत्ती लेकर शहद के साथ मिलाकर सेवन करने से कफजन्य मूत्रकृच्छ्र रोगदूर होजाताहै।

(९) [illegible] की दो तोले छाल लेकर आध भर जल में औटावे. जब चौथाई शेष रहै तब उतार कर छानले. फिर इसमें [illegible] सोरा छः रत्ती मिलाकर इस जलको दोबार पीवै. इससे पेशाब साफ होकर मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है।

(१०) [illegible] भस्म दो रत्ती शहद में मिलाकर चाट-

नेसे मूत्रकृच्छ्र का कष्ट जाता रहता है। पेशाब साफ होजाता है. और रोगी बलिष्ठ होता चला आता है।

(११) पंचतृण में से हरएक को दो आने भर लेकरजौ कुट करके आधसेर जलमें औटाकर चौथाई शेष रहने पर उतारले. ठंडा होने पर छानकर इसमें चार चार आना भर शहत और चीनी मिलाकर पान करै। इससे मूत्रकृच्छ्र का पेशाब साफ होजाता है। और किसी तरह की वेदना हो रही हो तो उसके भी शीघ्र शांत होनेकी संभावना है।

(१२) कालेगन्नेकीजड़. कुशाकी जड़. भूमिकूष्मांड. औरसौंफ प्रत्येक आधा तोला लेकर आध सेर जलमें औटावै. जब चौथाई शेष रहे तब उतार ले. औरठंडा होने पर छानकर इस क्वाथ को पीवै इससे प्रमेह से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है॥

(१३) एक तोले कटेरीके रस में तीन माशे शहतमिला कर पीनेमे भी प्रमेह से पैदा हुए मूत्रकृच्छ्र में आराम होने की विशेष संभावना है।

(१४) गोखरू के एक छटांक क्वाथ में जवाखार दोवा तीन रत्ती मिलाकर पीनेसे निश्चयही पेशाब साफहो जाता है और सुजाक का दर्दभी कम हो जाता है॥

(१५) गोखरू और कटेरी प्रत्येक एक तोला लेकरआध सेर जलमें औटावै. चौथाईसेर रहनेपर उतार कर छानले. ठंडी होने पर इसमें बताशा डालकर पान करावै इनसे रु॰ जनित सुजाक जाता रहता है।

[१६] पंचतृण की जड़ सब मिलाकर दो तोला, चकली

का दूध एक छटांक, जल एक सेर इन सबको मिला कर औटावे जब दूध शेष रहजाय तब उतार कर छानले, इसके पीनेसे इन्द्री के छिद्र में होकर रुधिर आता हो वा रुधिरका पेशाब होता हो तो शीघ्र आराम होजाता है।

(१७) आधा तोला बीदाना अनार के रसके साथमोती की भस्म चार रत्ती मिलाकर सेवन करनेसे निश्चयही पेशाब कम हो जाते हैं और दरद भी घट जाता है।

(१८) बड़ी इलायची के बीजों का चूर्ण दो आना भर सोंठ चूर्ण दो आनाभर इनको एक छटांक अनारके रस में मिलाकर सेवन करनेसे निश्चयही पेशाब कमहो जातेहैं और इस प्रकार बहुमूत्र रोगमें इसदवासे विशेष उपकार होताहै।

(१९) शुद्ध कीहुई बंगभस्म दो रत्ती, मधुतीनमाशे, इनको मिलाकर चाटने से बहुमूत्र रोगमें पेशाब कम होहीजाते हैं।

(२०) दो तोले आमलेके रसमें शहद मिलाकर दिन में दोतीनबार सेवन करनेसे बहुमूत्ररोगमें पेशाब कमहोजाता है

सुजाक से उत्पन्न प्रमेह का वर्णन

सुजाक से उत्पन्न हुए प्रमेह का यह लक्षण है कि मूत्रनाली के छिद्र में होकर पीव निकला करता है इसरोगपर यह दूसरा उत्तम चिकित्सा है:—

खरबूजेकी मिंगी तीन तोले, खीरे के बीजों की मिंगी डेढ तोले, कद्दू के बीजोंकी मिंगी, अजवायन खुरासानी, [illegible] तोला, इसबंद के बीज, कुल्फे के बीज, मेंहदी का सत [illegible] की मिंगी, कतीरा, मुलहटीका सत पोस्तके दाने गल

अजमोद ये सब दवा सात सात माशेले महीनपीसकर छान ले फिर बीहदाना सातमाशेलेकर उसका लुआब निकालकर उस पिसीहुई दवामें मिला कर जंगली बेरके बराबर गोली बनावै और गोखरू तथा सूखाधनियां छःछः माशे कूटकरपाव सेर जलमें रातको भिगोदे और प्रातकाल इस गोली को खा कर ऊपरसे इस नितरेहुए जलको पीवै परन्तु गोली को दांत न लगावै साबतही निगलजावे तो प्रमेह जायइसदवापर खटाई तथा लाल मिरचों से परहेज करना चाहिये ॥

❀ दूसरा उपाय ❀

अलसी पावसेर; वंशलोचन चार तोले. ईसबगोल. सेल खडी । इन सबको महीन पीसकर बराबरकी खांडमिलाकर एक हथेलीभर नित्य सवेरेही खाकर ऊपरसे पावभर गौका दूध पीवे तो प्रमेह जाय परन्तु गुड़. खटाई तेल इसपर कुपथ्यहै

❀ अन्य प्रमेह ❀

प्रमेह में वीर्य्य बहुत पतला होकर बहा करताहै और यह प्रमेह तीन प्रकार से होता है एक तो यह कि सर्दी पाकर वीर्य्य पानीके समान होकर बहा करता है इस प्रमेह वाले को यह दवा देनी चाहिये ।

❀ पतले वीर्य्य का उपाय ❀

बर्गदकी डाढी पावसेर लेकर इसको बर्गदही के पावभर दूध में भिगोकर छायामें सुखाले और बबूलका गोंद. साल व मिसरी. सकाकुल ये सब दो दो तोले और मूसली सफेद और मूसली स्याह यह दोनों पांच २ तोले ले कूट छानकर बराबर की कच्ची खांड मिलाकर इसमें से एक तोले नि-

त्र मवरेहां खाकर ऊपरसे पावभर गौका दूध पीवे और ख-ट्टी तथा वातल वस्तुओंका सेवन न करे तो सात दिनमेंनि-श्चय आराम होजाता है ॥

दूसरी प्रकारका प्रमेह

दूसरा प्रमेह यहहै कि गर्मी पाकर वीर्य पिघलकर पीला-पन लिये हुए बहता है इस रोगवालेको यह दवा उचित है:—

गर्मीके कारण पतले वीर्यका उपाय।

बबूलकी कच्चीफली, सेमरके कच्चे फूल, ढाककी कोंपल, नया पैदा हुआ कच्चा छोटा आम, मुंडी, कच्चे अंजीर, अनारकी मुदमुदी कली, आंवला कच्चा, ये सब औषधि एक एक तोले ले इनसबको महीन पीसकर सबसे आधी कच्ची खांड मिलाकर एक तोले प्रतिदिन प्रातःकाल गौके दूधके संग सेवन करने से प्रमेह जाता रहता है।

तीसरी प्रकारका प्रमेह

तीसरे वात पित्त के विकार से प्रमेह हो जाता है इसके लिये यह दवा दे।

उक्त प्रमेहकी दवा

उर्द का आटा आधसेर, इमलीके बीजोंका चूर्ण आधसेर, मुलहटी तीन तोले इन सबको पीस छानकर इसमें तीनपाव कच्ची खांड मिलाकर इसमेंसे पांच तोले नित्य प्रातःकाल के समय खाकर गौका दूध पावभर पीवे तो सात दिन में प्रमेह जाता रहता है। और कभी कभी रुधिर विकार सेभी प्रमेह हो जाता है इसमें सावधानीकरके फस्द खोले और इन्द्रि-य [illegible] देखकर यह औषधि देना चाहिये ॥

ॐ रक्तज प्रमेहकी चिकित्सा ॐ

भुने चने का चून पावसेर, शीतलचीनी एक तोले; सफेद जीरा छःमाशे, शकरतीगाल छः माशे इन सबको कूटछानकर इसमें तीन तोले कच्ची खांड मिलाकर सवेरेही चार तोले फांके ऊपरसे गौका पावभर दूध पीवै और यथोचित परहेज करै (बिंदकुशाद की चिकित्सा) जब आदमी के सुजाक पैदा होताहै उसवक्त बहुतसे मनुष्य औषधियोंकी बत्ती बनाकर जननेंद्रिय के छिद्र में चला देते हैं इस लिये लिंग का छिद्र चौड़ा होजाता है इसको बिन्द कुशाद कहते हैं इसरोगवाले मनुष्य को यह औषधि देनी चाहिये:—

गौका घृत दो तोले, रसकपूर, सफेदा, काशगरी, सेलखड़ी ये दवा एक एक माशे, नीलाथोथा एक रत्ती, पहिले घृतको खूब धोवै फिर सब औषधियोंको पीस छानकर घृतमें मिलाकर मरहम बनाले और रुईकी महीन बत्तीपर इस मरहम को लपेटकर लिंगके छिद्रमें रक्खे तो आराम होय।

ॐ उपदंश के मेहका वर्णन ॐ

जो आतशक के कारण से प्रमेह होतो उसकी यह परीक्षा है कि इन्द्रीके मुखपर एक छोटासा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए रहताहै क्योंकि एकतो प्रकृति की गर्मी दूसरे आतशक की गर्मी तीसरे उन दवाइयों की गर्मी जो आतशक में दीनी गईं इनने दोषोंके मिलने से यह प्रमेहरोग होताहै इसके वास्ते यह दवा देनी चाहिये:—

ॐ दवा ॐ

अकरकरा, सुपारीके फूल, मूसली सफेद, मोकला, मी[illegible]

इन्द्रजौ, गोखरूबड़े, गिलोयसत, कौंचकेबीज, उटंगनकेबीज अजवायनके बीज, अजमोद, शीतलचीनी; कुलीजन, शोरंजा नमीठा, बड़ी इलायचीके बीज; दम्मुल अखवेन. ये सब दवा एक एक तोले ले सबको कूटछानकर सात तोले बूरामिला-कर एकतोले नित्य प्रातसमय खाय ऊपरसे पावभरगौका दूध पीवेतो ग्यारह दिनमें प्रमेहको निश्चय जड़मूलसे नाशकरदेती है

और जो वीर्य स्याही लिये हुए बहताहो उसके वास्ते ऐसी दवादेनी चाहिये जो प्रमेह और आतशकको गुणदायकहो ।

नुसखा प्रमेह

अकरकरा गुजराती, हुलहुलके बीज, गोखरू छोटे, गोखरू बड़े, सुपारी के फूल, स्याह मूसली, सफेद मूसली, सेमरका मूसला, मोटे इन्द्रजौ, गिलोयसत, लिसोड़े, कौंचकेबीज, उटंगनकेबीज तालमखाने, शीतलचीनी, मीठा सुरंजान ये सब दवा एक २ तोले, तज चिरौंजी का सत पठानी लोध ये तो नौ माशे इन सबको कूट छानकर सब से आधा बूरा मिलाकर एक तोले नित्य गौके दूधके संग प्रातःसमय खाय तो प्रमेह नाश और खटाई आदि से परहेज करै ॥

[illegible] प्रमेह कामवित्ते और खटाई तथा गरम आहारके अ-[illegible]धिकसे उत्पन्न होताहै उसकेवास्ते ये दवा देनीयोग्य है।

दवा

[illegible] पांच तोले, कतीरा स्याह पांच तोले, सबको [illegible] बूरा मिलाकर एकतोले पावभर गौ[illegible] [illegible] खाय तो प्रमेह जाता रहताहै ।

❀ अन्य औषधि ❀

कुदरू गोंद पन्द्रह तोले लेकर पीस छानकर इसमें दश
तोले कच्ची खांड मिलाकर नित्य सवेरेही एक तोले गौके
दूध के संग खाय तो यह प्रमेह रोग जाता रहता है।

❀ वीर्य के पतलेपनकी दवा ❀

मूसली सफेद, खरबूजे की गिरी, पांच पांच तोले, पेठा आ-
धसेर; घीग्वार का गूदा आधपाव, कबाबचीनी छःमाशे, इन
सबको पीसकर एक सेर कंदकी चासनी करके इसमें सबदवा
मिलाकर माजून बनाले इसमें से एक तोले नित्य सेवन कर
नेसे वीर्य पैदा होता है और गाढ़ाभी होजाता है।

❀ तथा ❀

एक सेर गाजरोंको छीलकर घीमें भूनले फिर आधसेर कंद
मिलाकर हलुआ बनाले इसमें से पांच तोले प्रतिदिन सेवन
करने से वीर्य गाढा होताहै और ताकतभी अधिक बढतीहै।

❀ तथा ❀

पावभर छुहारे गौके दूधमें पकाकर पीसले और पावसेर
गोहुंका निशास्ता और पावसेर चनेका बेसन इनको भूनले
फिर तीनपाव खांड और आधसेर घी डालकर सबका हलु-
आ बनावे फिर इसमें बदाम पावसेर, पिस्ता पावभर, चिल-
गोजा पावभर, अखरोट की गिरी आधपाव, सबको बारीक
करके हलुआ में मिलादे फिर इसमें से चार तोले प्रतिदिन
सेवनकरैतोवीर्यगाढा होजाता है और शक्तिभी बहुत बढजातीहै

❀ तथा ❀

मीठे आमका रस तीनसेर, खांड सफेद एक सेर गौका घी

इन्द्री प्रबल होजाती है बिगड़ा हुआ वीर्य सुधर जाता है।
इस दवा के सेवन काल में खटाई वर्जित है।

॥ तथा ॥

सालबमिश्री पांच तोले, शकाकुल मिश्री तीन तोले,
अकरकरा, कुलीजन, समंदर सोख, भिलाये की मिंगी,
असगंध एक २ तोला पीपल मस्तंगी हालम के बीज, जाय
फल, सोंठ दोनों बहमन, दोनों तोदरी छः छः माशे, छि
ले हुए सफेद तिल, कौंचके बीजों की मिंगी, गाजर के
बीज एक माशे जावत्री केशर तीन तीन माशे सबको बरा
बर सफेद कन्द लेऔर तिगुने शहत में सब मिलाकर माजून
बनावे फिर छः माशे नित खाय तो वीर्य गाढा होजाता है।

॥ तथा ॥

रेगमाही, इन्द्रजौ, सफेद, पोस्तके दाने, नरकचूर सफेद
चन्दन नारियलकी गिरी, बदामकी मिंगी, अखरोटकी मिं-
गी, मुनक्का, काले तिल छिले हुए ये सब दवा दो २ तोले
प्याज के बीज, सलजम के बीज, कौंचके बीजकी मिंगी,
हालमके बीज, माई, असबंदके बीज, गाजर, मस्तंगी नागर
मोथा, अगर, तेजपात, बिजौरे का छिलका, चीता, सोयाके
बीज, मूलीके बीज, दोनों तोदरी, दोनों मूसली ये सब दवा
एक २ तोले सिलाजीत, अकरकरा, लौंग, जावित्री जायफलका
ली मिर्च दालचीनी सब दवा नौ२माशे शहत और सफेद बूरा
सबसे दूना लेकर पाक बनावे फिर इसमें से एक तोले नित्य
सेवन करे इस माजून के समान इन्द्री को बलवान करने और
वीर्यको गाढ़ा करने में दूसरी कोई दवा नहीं है।

❋ तथा ❋

सिंगाड़ा सूखा हुआ, ढाक का गोंद मस्तंगी रुमी, दाल चीनी, सेभल की मूसला मूसली काली, ताल मखाना, मौलसिरीकी छाल, छोटी इलायचीका दाना, वंसलोचन, गोखरू सालबमिश्री हरएक का एक २ तोले भर लेकर महीन पीसे और सबके बराबर मिश्री डालके एक तोला नित्त प्रातःकाल गऊके दूधके साथ पीनी चाहिये, खटाई. लालमिर्च, वा बादी वस्तुओंसे बचना योग्य है इससे प्रमेहका नाश होता है ।

असगंध गोल तीन तोले, ताल मखाना तीन तोला दोनों को बरगद के दूध में तर करे और गुठली रहित ४० छुआरों में भरदे तदोपरांत भेड़ के दूधमें छुआरों को उबाले और शक्कर मिलाकर रख छोड़े नित्त प्रति एक छुहारा खाया करे रोग पर अति गुणकारी है ॥

नपुंसकता रोग निदान और चिकित्सा ।

❋ नपुंसकता होने का कारण ❋

नपुंसकता के अनेक कारण होते है उन में से कुछ ऐसे है कि जो शरीर की बनावट के दोष से सम्बन्ध रखते हैं और कुछ ऐसे हैं जो बाह्य कारणों तथा रोगों से पैदा होते हैं उनकी व्याख्या यह है ।

❋ जो शरीर की बनावटके दोषसे सम्बन्ध रखते हैं ❋

(१) मूत्रेन्द्रिय का अति लघु होना, उस में छिद्र होना अथवा छिद्र का ठीक बीच में न होकर ऊपर नीचे होना, अथवा ऐसा छिद्र होना जिससे निरन्तर मूत्र बहता रहे ।

(२) मूत्रेन्द्रियका अण्डकोश की त्वचा के साथ अत्यः

मान्य रीति से जुड़ा हुआ होना अथवा उस में गुप्त रहना अथवा मूत्रेन्द्रिय का प्रमाण से अधिक दीर्घ होना ।

(३) मूत्रेन्द्रिय का एक न होकर दो होना ।

(४) मूत्रेन्द्रिय का जन्म से टेढ़ा होना ।

(५) सुपारी के ऊपर की त्वचा का जन्म से बंद अथवा रुका हुआ होना ।

(६) अण्डकोषों का जन्म काल से ही अधिक छोटा, होना अथवा गुप्त होना. अथवा एक अण्ड छोटा एक बड़ा होना अथवा दोनों का नितांत अभाव होना, अथवा उन के अधिक बढ़ जाने से उत्पादक शक्ति का नष्ट होजाना ।

(७) वीर्य में स्वाभाविक उत्पादक शक्ति का न होना और जन्म काल से ही नपुंसक होना ।

❀ जो वाह्य कारणें तथा रोगों से सम्बन्ध रखते हैं ❀

(८) उपदंश इत्यादि कोई भयानक रोग होने के कारण अथवा कोई घाव होजाने से मूत्रेन्द्रिय का कटकर गिरजाना या बिगड़ जाना ।

(९) सुजाक के उपरांत जो प्रमेहादि रोग उतपन्न होते हैं उनका अधिक काल तक विद्यमान रहना ।

(१०) उपदंश का विष समस्त शरीर में प्रवेश होजाने से रग, पट्ठों, हड्डियों इत्यादि का विकृत होजाना ।

(११) अधिक प्रसंग, हस्त क्रिया विपरीत क्रिया इत्यादि से वीर्य्य का न्यून होजाना, अथवा वीर्य्य की आकृति में विषमता होजाना ।

(१२) अधिक पढ़ने मास्तिष्क सम्बन्धी अधिक परिश्रम,

मस्तिष्क में चोट लगजाने इत्यादि कारणों से अंडकोषों में रुधिर की न्युनता होकर वीर्य्य की उत्पत्ति में ह्रास होना।

(१३) कमर में अधिक चोट लगना, चूतड़ केबल गिरना पक्षाघात रोग से अर्ध अथवा समस्त अंगको अशक्त हो जाना, दारुण अजीर्ण रोग, अथवा हृदय, मस्तिष्क यकृत आदि श्रेष्ठ अवयवों का दोष युक्त होजाना।

* साधारण विवरण *

जो २ कारण ऊपर लिखगये हैं उनमें से नम्बर एकसे सात तक के कारणों को चिकित्साके लिये असाध्य जानना चाहिये शेष कारण चिकित्साके योग्य है और उनकी चिकित्सा का उपाय यह है कि जो कारण उपस्थित हुआ है उस के निवारण और शरीर के पुष्ट और निरोग करने का प्रयत्न करना चाहिये और बल वर्धक औषधियां तथा भोजन का सेवन करना चाहिये इस स्थान पर हम वह उत्तमोत्तम प्रयोग वर्णन करेंगे जो अनेक विद्वान तथा अनुभवी डाक्टरों हकीमों और वैद्यों के वारम्बार के परीक्षा किये हैं और अवश्य फल दायक विदित होंगे।

(१) ❀ नुसखा सेक का ❀

हाथी दांत का चूर्ण मछली के दांत का चूर्ण एक २ तोला लौंग ८ माशे, गुजराती जायफल नग २ नरगिसकी जड़ नग १ इनको महीन पीसकर दो पोटली कपड़े की बनावें और आध पाव दूध भेडका लेकर पेड़ू और जंघा को उन पोटलियों से सेकना आरम्भ करके मूत्रेन्द्रिय को सेके तत्पश्चात बंगला पान आगपर सेककर उस पर बांध दे जल का स्पर्श न होने दे इस प्रयोग के संग खानेकी औषधि भी है जिस का नुसखा यह है।

(२) ❀ नुसखा माजून का पुष्टता के लिये ❀

मग्ज चिलगोजा, पोस्त के बीज, कुलीजन, स्याह मूसली लौंग, सालम मिश्री, जावित्री, भौंफली, ताल मखाना, बीज बन्द, सितावर, ब्रह्मदंडी, तज यह सब औषधि चार चार

मस्तिष्क में चोट लगजाने इत्यादि कारणों से अंडकोषों में रुधिर की न्यूनता होकर वीर्य की उत्पत्ति में ह्रास होना।

(१३) कमर में अधिक चोट लगना, चूतड़ के बल गिरना पक्षाघात रोग से अर्ध अथवा समस्त अंगको अशक्त हो जाना, दारुण अजीर्ण रोग, अथवा हृदय, मस्तिष्क यकृत आदि श्रेष्ठ अवयवों का दोष युक्त होजाना।

(१४) अनुमान से अधिक शरीर का मोटा होजाना।

(१५) मादक द्रव्य अफ़यून, चर्स, भंग, गाँजा, कपूर, काफ़ी, आयोडाइड अफ पुटासियम वा ब्रोमाइड पुटासियम इत्यादि वस्तुओं का अधिक काल तक सेवन करते रहना।

(१६) वायु की अधिकता से शक्ति का कम होजाना।

(१७) आहार की विषमता से बल का असीम घटजाना।

(१८) भय और चिन्तासे नपुंसकताकी भ्रान्ति होजाना।

(१९) शारीरिक दुर्बलता से शक्ति का अभाव होकर तेज हीन हो जाना।

(२०) दीर्घ कालतक एकाकी रहने ब्रह्मचर्यादि व्रत करने [illegible] क्षीण हो जानेके कारण असमर्थता होजाना।

(२१) वीर्य की न्यूनता वा विकारसे शक्तिहीन हो जाना।

(२२) अधिक स्वप्न दोषसे बलका नष्ट होजाना।

(२३) [illegible] अथवा इच्छानुसार पुरुषार्थ न होनेसे [illegible] का [illegible] होना।

(२४) [illegible] अधिकता से बल वीर्य का क्षय होजाना

* साधारण विवरण *

जो २ कारण ऊपर लिखगये हैं उनमें से नम्बर एकसे सात तक के कारणो को चिकित्साके लिये असाध्य जानना चाहिये शेष कारण चिकित्सा के योग्य है और उनकी चिकित्सा का उपाय यह है कि जो कारण उपस्थित हुआ है उस के निवारण और शरीर के पुष्ट और निरोग करने का प्रयत्न करना चाहिये और बल वर्धक औषधियों तथा भोजन का सेवन करना चाहिये इस स्थान पर हम वह उत्तमोत्तम प्रयोग वर्णन करेंगे जो अनेक विद्वान तथा अनुभवी डाक्टरों हकीमों और वैद्यों के बारम्बार के परीक्षा किये हैं और अवश्य फल दायक विदित होंगे।

(१) ❀ नुसखा सेक का ❀

हाथी दांत का चूर्ण मछली के दांत का चूर्ण एक २ तोला लौंग ८ माशे, गुजराती जायफल नग २ नरगिसकी जड़ नग १ इनको महीन पीसकर दो पोटली कपड़े की बनावें और आध पाव दूध भेडका लेकर पेडू और जंघा को उन पोटलियों से सेकना आरम्भ करके मूत्रेन्द्रिय को सेके तत्पश्चात बंगला पान आगपर सेककर उस पर बांध दे जल का स्पर्श न होने दे इस प्रयोग के संग खानेकी औषधि भी है जिस का नुसखा यह है।

(२) ❀ नुसखा माजून का पुष्टता के लिये ❀

मग्ज चिलगोजा, पोस्त के बीज, कुलीजन, स्याह मूसली ...ांग, सालम मिश्री, जावित्री, भोंफली, ताल मखाना, बीज ...न्द, मितावर, ब्रह्मदंडी, तज यह सब औषधि चार चार

मस्तिष्क में चोट लगजाने इत्यादि कारणों से अंडकोषों में रुधिर की न्यूनता होकर वीर्य्य की उत्पत्ति में ह्रास होना।

(१३) कमर में अधिक चोट लगना, चूतड़ केबल गिरना पक्षाघात रोग से अर्ध अथवा समस्त अंगको अशक्त हो जाना, दारुण अजीर्ण रोग, अथवा हृदय, मस्तष्क यकृत आदि श्रेष्ठ अवयवों का दोष युक्त होजाना।

(१४) अनुमान से अधिक शरीर का मोटा होजाना।

(१५) मादक द्रव्य अफ़यून, चर्स, भंग, गाँजा, कपूर, काफ़ी [illegible] आयोडाइड अफ़ पुटासियम वा ब्रोमाइड पुटासियम आदि वस्तुओं का अधिक काल तक सेवन करते रहना।

(१६) वायु की अधिकता से शक्ति का कम होजाना।

(१७) आहार की विषमता से बल का अतीव घटजाना।

(१८) भय और चिन्तासे नपुंसकताकी भ्रान्ति होजाना

(१९) शारीरिक दुर्बलता से शक्ति का अभाव होकर [illegible] हो जाना।

(२०) दीर्घ कालतक [illegible] रहने [illegible] व्रत करने [illegible] हो जानेके कारण असमर्थता होजाना।

(२१) [illegible] की न्यूनता वा [illegible]

[illegible]

[illegible] नष्ट होजाना।

[illegible]

[illegible]

❋ साधारण विवरण ❋

जो २ कारण ऊपर लिखगये हैं उनमें से नम्बर एकसे सात तक के कारणो को चिकित्साके लिये असाध्य जानना चाहिये शेष कारण चिकित्सा के योग्य है और उनकी चिकित्सा का उपाय यह है कि जो कारण उपस्थित हुआ है उस के निवारण और शरीर के पुष्ट और निरोग करने का प्रयत्न करना चाहिये और बल वर्धक औषधियो तथा भोजन का सेवन करना चाहिये इस स्थान पर हम वह उत्तमोत्तम प्रयोग वर्णन करेंगे जो अनेक विद्वान तथा अनुभवी डाक्टरों हकीमों और वैद्यों के वारम्बार के परीक्षा किये हैं और अवश्य फल दायक विदित होंगे।

(१) ❋ नुसखा सेक का ❋

हाथी दांत का चूर्ण मछली के दांत का चूर्ण एक २ तोला लौंग ८ माशे, गुजराती जायफल नग २ नरगिसकी जड़ नग १ इनको महीन पीसकर दो पोटली कपड़े की बनावें और आध पाव दूध भेडका लेकर पेड़ू और जंघा को उन पोटलियों से सेकना आरम्भ करके मूत्रेन्द्रिय को सेके तत्पश्चात बंगला पान आगपर सेककर उस पर बांध दे जल का स्पर्श न होने दे इस प्रयोग के संग खानेकी औषधि भी है जिस का नुसखा यह है।

(२) ❋ नुसखा माजून का पुष्टता के लिये ❋

मगज चिलगोजा, पोस्त के बीज, कुलीजन, स्याह मूसली लौंग, सालम मिश्री, जावित्री, मौफली, ताल मखाना, बीज चन्द्र, सितावर, मस्तदंडी, तज यह सब औषधि चार चा

(४) ❀ नुसखा चूर्ण वीर्य्यकी पुष्टता के लिये ❀

मूसली स्याह, असगन्ध नागौरी, धावेके फूल, भुने चने,
सोंठ, गाजर के बीज, उटंगन के बीज, पिस्ता के फूल; ताल
मखाना, इमलीका बीज भुना हुआ, इन सबको एक एक
तोला बारीक करके बराबर बजन चूर्ण मिलाकर एक एक
तोला हर रोज प्रातःकाल पावभरया डेढ पाव गायके दूध के
साथ खाय और जो परहेज खाने पीने इत्यादि का ऊपर
लिखा है वह सब यथा तथ्य करता रहै इस औषधि का से-
वन २१ दिन तक निरन्तर करना चाहिये परमेश्वरकी कृपा
से वीर्य्य पुष्ट होगा और प्रमेह भी जाता रहेगा।

(५) ❀ नसों के मारे जानेकी पट्टी ❀

संखिया. जमाल गोटा, तिल, आकका दूध ये चारों औ-
षधि एक एक माशा लेकर सबको महीन पीसकर जलमें लु-
बदी बना ले इसको इन्द्री के ऊपर लेप करे और बंगला पान
गर्म करके बांधदे इस औषधि से छाला पड़ जाता है इस
लिये अधिक देर तक न बांधकर खोल डाले छाले को काट
कर गायका धुला हुआ घी उस पर लगादे आरोग्य होने पर
नसें ठीक होजाती हैं।

(६) ❀ पुष्ट कारक रोगन ❀

बीर बहूटी १ तोला, अकर करहा बिलायती १ तोला, सू-
खे हुये और साफ किये हुए केंचुए २ तोला. सुना बीडे के
नख डेढ तोला, कुलींजन १ तोला, चिरमिटी सफेद १ तोल
माल कंगनी २ तोला दारचीनी ६ माशे, धतुरा के बीज
माशे; बिनौले की मिंगी ६ माशे, हीरा हींग ३ माशे, इन

(११) गोखरू के बीज, तालमखाने, कौंच के बीज, ... सगंध; मितावर, खरैटी, मुलहटी, इन सबको समान भाग लेकर चूर्णकरले; इन सबके समान गौकेघीमें इनको भूनले फिर सब चूर्णसे आठगुना गौका दूध तथा दुगनी साफची नी का रस करके चासनी करले, इसमें उस चूर्ण को मिला बेर बराबर गोली बनावे प्रथमएक फिरदो फिरतीन गोली शक्ति अनुसार ठंडे जलके साथ सेवन करावे। इस औषधि के सेवनकरने से बलभी बढ़ताहै और नपुंसकता दूर होजातीहै

(१२) सोंठ १६ तोले लेकर सेमर की जड़ के रस में तीन भावना देवै। फिर मोचरस काचूर्ण सोलह तोले, शोधी गंधक ३२ तोले; मिलाकर खूब पीसकर चूर्ण बनावे। फिर घी और शहत के साथ छः छः माशेकी गोलियां बनावे। इनमें से प्रतिदिन प्रातःकाल के समय एक गोली सेवन करे। औषधि सेवन के पीछे गौका ४ छटांक दूध पीलिया करे। इससे शरीर पुष्ट होजाताहै और ध्वज भंगजाता रहताहै

(१३) दही चार सेर, साफ चीनी एक सेर, शहत चार तोला, गौका घी पावसेर, सोंठकाचूर्ण तीन माशे, बड़ीइलाय चीका चूर्ण तीनमाशे, कालीमिरच काचूर्णएक तोला लौंगका चूर्ण एकतोलाइनसब दवाओंको आपसमें अच्छीतरह मिलाले और एकसाफ मोटे कपड़ेमेंइसे छानकर रखले फिर एक मिट्टी का घड़ाले उसमें कस्तूरी चन्दन और अगरकी धूनीदे और कपूर की गंधसे सुवासित करै। फिर इस पात्र में उक्त दवा को भरकर अच्छीतरह ढकदे। इसको रसाल कहते हैं। इस हाशक्ति अनुसारसेवनकरनेसेशरीर बलिष्ठ औरकामोद्दीपन

ोटकर गोली बनाले और शराबदुआतशांमें घिसके सुपारी को बचाकरसम्पूर्ण इन्द्रीपरलगावे औ।गऊारसे बंगलापान बांधे

(१८) अन्य लेप ।

सफेद कनेरका छिलका आधपाव, सफेद चिरमिटी आध पाव, कड़वा कूट २ तोले जमालगोटा२तोले, इन सबका चूर्ण कर१ सेर गौके दूधमें मिलाकर पकावे। फिर इसकादही जमाव फिर प्रातःकाल ४. सेर पानी मिलाकर इसको रईसे बिलोकर माखन निकाल और इसके मठेको पृथ्वीमें गाढ देना चाहिये क्योंकि विषके समान है और माखनको तायकर रखले फिर इसमेंसे इन्द्रीपर लेपकरै सुपारी छोड़कर लेप करना चाहिये ऊपरसे पान बांधे और एक रत्ती के प्रमाण पानपर लगाकर खाय तो चालीस दिनमें पुष्ट होजायगा ॥

यदि किसी मनुष्यने बालकपन में अयोग्य कर्म कराया होय और इन्द्रीका मर्दन कराया हो और इसी कारण से नपुंसक हुआ हो तो उसकी चिकित्सा कठिनता से होसक्ती है इसमें नुसखा नम्बर एकसे सेवन करना और नुसखा नम्बर २ माजूनका सेवनकरना चाहियेअथवा इसमाजूनको सेवनकरे

(१९) माजून पुष्ट ।

गेहूंका मैदा ५ तोला, बेसन ५ तोले पहिले इनको ५ तोले घीमें भूनले पीछे बादामकी मिंगी पिस्ताकी मिंगी चिल-गोजेकी मिंगी, नारियल की गिरी, सूखानी छःमाशे, सालब मिश्री ३ तोले, लाल बहमन, सफेद बहमन तीन २ माशे, मकखुम छःमाशे, अम्बर अशहब, कलमी दालचीनी प्रत्येक तीन माशे. इन सबको कूट पीसकर बेसन ना मैदामें मि-

घोटकर गोली बनाले और शराबदुआतशामें घिसके सुपारी को बचाकरसम्पूर्ण इन्द्रीपरलगावे औ ?ऊपरसे बंगलापान बांधे

(१८) अन्य लेप ।

सफेद कनेरका छिलका आधपाव, सफेद चिरमिटी आधपाव, कड़वा कूट २ तोले जमालगोटा२तोले, इन सबका चूर्ण कर१ २सेर गौके दूधमे मिलाकर पकावे। फिर इसकादही जमावे फिर प्रातःकाल ४ सेर पानी मिलाकर इसको रईसे बिलोकर माखन निकाल और इसके मठेको पृथ्वीमें गाढ देना चाहिये क्योंकि विषके समान है और माखनको तायकर रखले फिर इसमेंसे इन्द्रीपर लेपकरे सुपारी छोड़कर लेप करना चाहिये ऊपरसे पान बांधे और एक रत्ती के प्रमाण पानपर लगाकर खाय तो चालीस दिनमें पुष्ट होजायगा ॥

यदि किसी मनुष्यने बालकपन में अयोग्य कर्म कराया होय और इन्द्रीका मर्दन कराया हो और इसी कारण से नपुंसक हुआ हो तो उसकी चिकित्सा कठिनता से होसक्तीहै इसमें नुसखा नम्बर एकसे सेक करना और नुसखा नम्बर २ माजूनका सेवनकरना चाहियेअथवा इसमाजूनको सेवनकरै

(१९) माजून पुष्ट ।

लावे और दस तोले मिश्री तथा पांच तोले शहद इनकोदस तोले गुलाब जलमें चाशनी करके उसमें सब दवा मिलाकर माजून बनाले फिर इसमें से दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और खटाई और बादीकी चीज़ोंसे परहेज करे ।

(२०) अन्य माजून ।

ग्वारपाठे का रस १० तोले, मुंगका आटा १० तोले. इन दोनों को पृथक २ घृतमें भूने फिर छोटे बड़े गोखरू, पिस्ता. [illegible], बादामकी मिंगी, ये सब दवा दो२ तोले कूट छान कर मिलावे. और [illegible] कंदकी चाशनी में इनको मिलाकर माजून बनाले और इसमेंसे दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और [illegible] पर यह दवा खावे ॥

खूब रगडे, जब मरहमके सदृश होजाय तो रातको गरम कर के जननेन्द्रिय पर लेप करै और पान गरम करके बांध देवै इस पर पानी न लगने दे।

(२३) तिलाकी अन्य विधि।

धतूरेकी जड़का छिलका.सफेद कनेरकी जड़का छिलका आककी जड़की छाल अकरकरा गुजराती.वीर बहुट्टी गौका दूध यह सब एकएक तोले लेकर पीसे और दो तोले तिलक तेलमें पकावै जब औषधि जलजाय तब तेलको छानले फिर इन्द्रीपर मर्दन करै ऊपर बंगलापान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे। यह बहुत वारका परिचितहै॥

नपुंमक होनेका अन्य कारण।

नपुंमक होनेका एक यहभी कारण होताहै कि कोईकोई मनुष्य स्त्रीको बिठाके खडे होजाते हैं और कोई विपरीति रतिमें प्रवृत होतेहैं इस प्रकार के संयोग से भी नपुंसकता होजाती है इसका यत्न यहहैः—

(२४) पुष्ट तेल।

सफेद कनेरकी जड़ का छिलका दो माशे मालकांगनी दो माशे.कौंचके बीज. सफेद प्याजके बीज. अकरकरा. अस वंद यह सब चौदह चौदहमाशे. इन सबको जौकुट करके दस तोले तिलके तेलमें मिलाकर औटावे जब दवाई जलनेलगे तब छानकर रखछोडे फिर इसमें थोड़ासा रात्रि के समय इन्द्रीपर मलकर ऊपर पान गरम करके बांधे और माजून नं०२ का सेवन करे ४० दिनतक यह औषधि सेवन करे।

(२५) सेककी अन्य औषधि।

वीर बहुट्टी.सूखे केंचूए, नागौरी असगंध, हल्दी, आमा-

हल्दी, भुन चन ये सब छः छः माशे ले इन सबको महीन
.ानकर रागनगुलमें, चिकना करदो पोटली बनावै और कि
नी पात्रको आग पर रखकर उसपर पोटली गरम कर जांघ
पेट और उपस्थको खुब सेके और फिर पोटलीकी दवा इन्द्री
ार बांधदे ।

मिंगी, यह सब दवा पावसर, इन सबको कूट कर उसमें मि-
लाकर हलुआ बना रक्ख फिर इसमें से एक छटांक वा अ-
धिक जितना पचा सकै प्रति दिन सेवन करने से नपुंसकता
जाती रहती है।

जानना चाहिये कि अत्यन्त स्त्री संभोग वा वेश्यागमन
से जो नपुंसकता हो जाती है उस के लिये नीचे लिखी हुई
दवा देनी चाहिये।

२८ ❀ माजून ❀

कुलीजन दो तोले. सोंठ दो तोले. जायफल. रूमामस्तगी
दालचीनी, लौंग, नागरमोथा, अगर यह सब दवा एक २
तोले इन सबको पीस छानकर तिगुने बूरेकी चाशनीमें मि-
लाकर माजून बनाले फिर इसमें से छः माशे प्रतिदिन सेवन
करने से शक्ति अधिक होगी यदि वीर्य के पतला पड़ जाने
के कारणसे कामोद्दीपन न होता हो तो उसको यह दवादे।

२९ ❀ वीर्य को गाढा करनेवाली दवा ❀

तालमखाने आधसेर ईसबगोल आधपाव इनको बरगदके
दूध में भिगोकर छायामें सुखाले फिर चालीस छुहारों की
गुठली निकाल कर उसमें ऊपर लिखी दवा भरकर गौ के
सेर भर दूध में ओटावै जब खाय के सदृश गाढा हो जाय
तब उतार कर किसी घी के पात्रमें रख छोड़े फिर एक छु-
हारा नित्य ४० दिन तक खाय पुष्ट पदार्थोंको भोजनकरे।

३० ❀ लेप की अन्य औषधि ❀

दक्षिणी अकरकरा, लौंग. कूठदार, बीरबहुटी, निर्विसी।
सूखे केंचुए। सब एक २ तोलेले इन सबको पीसकर मीठेतेल

में मिलाकर मिट्टीकी हांड़ी में भरकर उसका मुँह बंद कर चूल्हे में गढ़ा खोदकर उसमें इस हांड़ी को दाबकर ऊपरसे सात दिनतक बराबर रात दिन आग जलावे फिर आठवें दिन निकाले। और इसमें से एक बुंद इन्द्री पर मलकर ऊपरसे पान गरम करकेबांधे और पानी न लगने दे।

से नंगला पान बांध दे एक सप्ताह इसी प्रकार करते रहे प्रसंग से बचै तो निर्बलता दूर हो ।

३४ ❀ अन्य तिला ❀

कबाब चीनी, दालचीनी कूट, अकरकरहा, सफेद कनेर की जड़ का छिलका, चौदह चौदह माशे लेकर कूटे और सेर भर पानी में एक दिन और एक रात भिगोकर उसको इस कदर जोश दे कि चौथाई पानी बाकी रहजाय तब उस को मलकर छानले उस जल को उससे आधे तिलके तेल में मिलाकर आग पर उस जलको जला दे जब तेल बाकी रहजाय और जल जलजाय तो उतारकर शीशी में रखले वादी के कारण यदि इन्द्री में शिथिलता प्रतीत हो तो सुपारी छोड़कर उसको इन्द्री पर मलना चाहिये ।

३५ ❀ अन्य तिला ❀

चार नग नरगिस की जड को, एक रातदिन दूधमें भिगोकर रक्खें फिर अकर करहा मुनक्का, दाल चीनी नौ नौ माशे कस्तूरी ३ माशे शराब २ तोला सबको पीसकर मिलाकर रक्खें और इन्द्री पर लेप करते रहें बलको बढ़ातीहै और एकाकी रहनेके कारणजो सुस्ती होतीहै उसे दूरकरतीहै।

❀ (३६) इन्द्री सूख गई हो उसकी औषधि ❀

गौका घी १ पैसा भर, स्वेत कनेर की जडकी छाल १० टंक, लौंग २ टंक; माल कांगनी ५ टंक, कूठ ५ टंक अकर करहा ५ टंक, सफेद चिरमटी ५ टंक, कुचिला ५ टंक, कनक बीज ५ टंक, पीपल ५ टंक जायफल ५ टंक, अफीम १ टंक कटेरे के बीज १५ टंक, सुमली के बीज ५ टंक, सबको पी

में मिलाय कर रक्खे सातवें दिवस शीशीमें भर पाताल य-न्त्रमें चुआवे फिर ४ रत्तीनित्य खाय खटाईका परहेज करे इस के सेवन से इन्द्रीमें उत्तेजना होतीहै तथा काम उत्पन्न होताहै

(२७) इन्द्री के टेढापन जाने की औषधि ।

सिंघी टकीमांगी और बकरे की चरबी मिलाकर लेप करे तो टेढापन जाय और पुष्ट होय ।

१४ दिन इन्द्री पर लेप करे तो नपुंसकता दूर हो।

(४२) नपुंसकता पर खाने की औषधि।

असगंध, जावित्री, जाय फल, लौंग, दालचीनी, ये सब समभाग ले तिल एक पाव शहद एक पाव ले गोली बांध २१ दिन खावे तो नपुंसकता का नाश हो।

(४३) नपुंसकता पर अन्य औषधि।

अकरकरहा पैसा भर, अफीम अधेला भर, दोनों मूसली पैसाभर कुलीजन पैसा भर, मोंफली पैसा भर, असगंध धेला भर, खांड पैसा भर, सबको कूटकर कपड छान करके खांड के संग एक पैसा भर की गोली बनावे और १४ दिन रात में खाय तो नपुंसकता दूर हो।

(४४) ❀ नपुंसकता पर तिला ❀

कपड़ा वाफते का पाव गज़ आकके दूध में भिगो सुखा के थूहर के दूध में भिगावे पांच पैसा भर घी उस पर लपेट संबुल फार जर्द पीस उस पर लेप कर बत्ती बनावे लोहेके गज़ पर लपेट उसका तेल निकाले यह तेल पान पर लगा कर इन्द्री पर बांधे तो नामर्दी दूर हो।

(४५) ❀ टूटी नसों के लिये लेप ❀

इन्द्रयव, चिरमिटी, सफेद कनेर की छाल, मालकागनी धतूरे के बीज, बच खुरासनी कटाई के बीज गज पीपल इन सब को बराबर ले कूट पीसकर सिंह की चर्बी में मिलाकर इन्द्री पर लेप करे तो टूटी हुई नस जुड़ जावें।

(४६) हस्त क्रिया आदि द्वारा नपुंसकता

❀ होने पर औषधि ❀

देशी गोखरू का चुर्ण ५ टंक शहद ५ टंक बकरी के दुध के साथ २ मास सेवन करे तो नपुंसकता दुरहो बल बढ़े।

❀ वाजी करण ❀

वाजीकरण औषधों के सेवन से मनुष्य का पुरुषत्वस्थिर और दृढ़ रहता है वाजीकरण मनुष्य को विषयी किंवा विलासप्रिय बनाने लिये नहीं किन्तु पुरुष को पुरुषार्थी बनाने वाली औषधि है भगवान अत्रिने कहा है।

वाजीकरण मन्विच्छेत् पुरुषो नित्यमात्मवान्।
तदायत्तौ हि धर्मार्थौ प्रीतिश्च यश एव च॥
[illegible] पतनं [illegible] [illegible]।

धियों का सेवन करना वाजीकरण का मुख्य अंग है इस
के व्यतिरिक्त भगवान आत्रेय का यह भी मत है कि सब
से उत्तम वाजीकरण स्वयं स्त्री ही है पुरुष कैसा भी नि-
रोगी और बलवान क्यों न हो किन्तु यदि स्त्री बलहीन
और रोगणी होगी तो पुरुष का बल और बाजीकरण सब
व्यर्थ जायगा भगवान आत्रेय कहते हैं कि, अत्यन्त रूपवती,
तरुणी, सुशिक्षिता, स्त्री सबसे उत्तम वाजीकरण है। अच्छे
गुण युक्त स्त्री हो और पुरुष भी निरोगहोय तो उसको बाजी
करण औषधियों के सेवन करने की आवश्य कता न होगी
इस लिये स्त्री समस्त शुभगुण युक्त, रूपवती, गुणवती,
तथा प्रेमोत्पादक वाली अपने पति को प्रसन्न करने वाली हो-
नी चाहिये पुरुषकी जिस स्त्रीके ऊपर सच्ची और दृढ प्रीति
होती है और जो पतिके स्त्री अनकूल होती है वह पुरुष के
लिये बाजीकरण रूप है पुरुष को चाहिये कि अन्यान्य दुष्ट
चरित्रा व्यभिचरिणी वेश्या आदि कुत्सित स्त्रियोंसे कदा
पि संसर्ग न रक्खे जिन से बल वीर्यका नाश और अनेक
रोगोंके होने की सम्भावना है। अब कुछवे प्रयोग लिखे जाते
हैं जिनसे शरीरमे अतुलित शक्ति उत्पन्न हो जाती हौ वैद्यक
ग्रंथो में वाजीकरण का अर्थ यह कि वाज घोडेको कहते हैं
जिन उपायोंसे पुरुषको बल और अमोघ शक्ति घोडे के
सदृश रतिकी सामर्थ्य होती है और जिन औषधियोंके सेवन
से रमणियोंका प्रेम पात्रवन जाता है उन्हीं को बाजीकरण
कहते हैं पुरुष युवा अवस्था में निरंतर बाजी करण प्र[illegible]
का सेवन करता रहता है उसकी शक्तिको वृद्धा अवस्था [illegible]

(२) आम्नक पाक ।

पक्के मीठे आमका रस १६ सेर, उसमें मिश्री ४ सेर डाले और इसमें घृत १ सेर डाल और इसे मिट्टीके पात्रमें पकाय गाढाकर चाशनी करे और चांदी के बरतन में धरै तथा चीनी के पात्रमें और इसमें निम्न लिखित औषधियां डाले सोंठ ४ तोला, मिरच ४ तोला, चित्रक एक तोला, धनियां २ तोला; जीरा सफेद एकतोला, पत्रज एक तोला, दालचीनी १ तोला; नागकेसर १ तोला, केसर १ तोला छोटी इलायची १ तोला, लौंग ६ माशे, जायफल १ तोला, कस्तूरी ४ माशे, भीमसैनी कपुर १ तोला; शहद १ पाव, पीछेइनसबको मिला-कर अमृतवानमें भर रक्खे फिर इसमेंसे १ तोला नित्यखाय तो दुर्बलता दूर हो तेज बढे और संग्रणी क्षयी, स्वासरोग अरुचि, अम्लपित्त, रक्तपित्त, पांडु आदि रोग दूरहों ।

(३) चन्दनादि तेल ।

रक्त चन्दन, पतंग अगर, देवदारू, चीढ पद्माक, कपुर, कस्तूरी केसर, जायफल, जावित्री, लवंग, दोनों इलालची, तज, कं-कोल, पत्रज, नागकेसर, नेत्रवाला, खस, छड़, दारुहल्दी, मुर्वा, कचूर, नागरमोथा, सम्हालू, बान मूगल, लाखनख, राल, धवई के फूल, कुसम के फूल, पीपलामूल, मजीठ, तगर, मोम, ये सब औषधि चार चार माशे ले और इनका मधुरी आंचमें का[illegible] ढाकरे फिर इनका चौथाई भाग रक्खे फिरइसमें मीठ तेल पावभर डाले फिर मधुरी आंच से गलावे जब क्वाथ[illegible] जल जाय तेल मात्र शेष रहजाय तो, छानकर पात्रमें [illegible]

में २ दिन खरल करै पीछे मिश्री और भांग बराबर मिलाय
१ रत्ती खाय ऊपर से दूध पीवे तो अत्यंत स्तंभकहे।

(८) स्तंभक औषधि।

पोस्त आधसेर, माजूफल आधसेर, १ मन पानीमें औ-
टावे जब सेरभर शेष रहे तो उतारके नीचे लिखी औषधि
कपड़छानकर मिलावै, जायफल, लौंग, तज, एक एक तोला
बिलारीकन्द ४ तोला, सेवरके बीज ८ छटांक, नागकेसर १
तोला, सोंठ ८ छटांक, गौके दस सेर दूधमें औटावे जब औ-
टतेर तीनसेर रहजाय तब पुराना गुड़ ८ छटांक खांड ८
छटांक डालके औटावे जब गाढ़ा होजाय तब उतार आं-
वले के समान गोली बनाय इनको प्रातःकाल तथा संध्या
समय एक एक तोला खाय तो १४ दिनमें वीर्य्य सम्बन्धी
समस्त रोग दूर होंय।

(९) अन्य औषधि।

कौंच के बीज और जड़को कूट पीसकर ४ माशे दूधके
साथ मिश्री मिलाके दोनों समय कुछ दिनतक सेवन करै
तो बलवीर्य्य अधिक हो।

(१०) अन्य औषधि।

उर्दका चून, यव का चून, गोखरू के बीज शतावरि इनको
बराबर ले दूधमें मांडकर घृतमें बड़ा बनावे सन्ध्या सम[य]
१ खायऊपरसेदूधमिश्रीपीवेतोबूढेको युवाअवस्था का सुख

(११) अन्य औषधि।

किवांच की जड़, तिल, असगन्ध, बिदारीकन्द, साठी चा-
ल, इन सबको बराबर ले पीस एकसेर दूधमें पकावै

भीमसैनी कपूर, अभ्रक, इन सबके बराबर अफीम ले महीन पीस मूंग समान गोली बनाय एक वा दो गोली खाय तो वीर्य अधिक हो और स्तंभन शक्ति प्रबल हो।

(१८) अन्य औषधि।

विदारीकन्द का चूर्ण कर उस चूर्ण में गीले विदारीकन्द के रसकी २१ पुट देदे सुखाता जाय फिर उसमें मिश्री शहद और घृत मिलाय नित्य खाय अथवा चार माशे ले इस के ऊपर मधुर दूध पीवै तो अति बल और बन्धेज हो।

(१९) अन्य औषधि।

आवले का चूर्ण कर फिर इस चूर्ण में गीले आवले के रस की २१ पुट दे सुखा ले फिर इस चूर्ण को नित्य दो टंक खाय तो अति बल बढ़े तथा वीर्य पुष्ट हो।

(२०) माजून खूल अंजान।

शतावरि, ताल मखाना, मूसली सफेद, मूसली सिहाय, सत गिलोय, असगंध नागौरी, ढाक का गोंद, संहजनाका गोंद, मोचरस, समुन्दर सोख, रूमी मस्तगी, बहमन सफेद सालम मिश्री, शकाकुल मिश्री, छोटी इलायची, एक एक तोला कूट पीसकर सबके बराबर सफेद चीनी मिलाकर आध सेर शहत के साथ माजून बनावै प्रातः काल वा सायंकाल छै छै माशे गायके दूध के साथ खावै यह माजून कमज़ोरी और प्रमेह के लिये अत्यन्त लाभ दायक है।

(२१) * अन्य औषधि *

सिंगरफ, कपूर, लौंग, अफीम, उटंगन के बीज, इन को महीन पीसकर कागजी नीबूके रसमें घोट कर मूंगके बराबर

गोली बनाले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पावभर गौ का दूध पीकर रमण करने से स्तंभन होता है ।

(२२) ॐ अन्य औषधि ॐ

पोस्तके डोरे एक तोले पानीमें भिगोदे जब भीगजाय तब उसके निथरे जलमें गेंहुका आटा मांढ कर उसका एक गोला बनाकर गरम चूल्हेमें दबादे जब सिककर लाल हो जावेना । निकाल कर कूटले फिर थोड़ा घी बूरा मिलाकर मलीदा बनाले जब एक पहर दिन बाकी रहे तब उसे खाय अ[illegible] [illegible]कारक है ।

की बोंडी दो नग, इनसबको पीस छानकर पोस्त की बोंडी के रसमें बेरके बराबर गोली बांधे फिर एक गोली खाकर एक घंटे पीछे प्रसंग करने से स्तंभन होता है।

(२७) अन्य प्रयोग।

ककरोंदाकी जड़;और कंघी, इनदोनों को बराबर जलमें पीसे इस का इन्द्री पर लेप करके संगम करने से अत्यंत आनन्द प्राप्त होता है।

(२८) वाजीकरणका अन्य प्रयोग।

सर, ईख,कुश;काश,विदारी,और वीरण (खस) इनकी जड़.कदेलीकी जड़,जीवक,ऋषभक,खरैटी,मेदा,महामेदा, काकोली,क्षीरकाकोली,मुद्गपर्णी;माषपर्णी,सितावरअसगंध अतिबला,कौंच,सोंठ, भूम्यामलक,दुग्धिका,जीवंती,ऋद्धि, रास्ना,गोखरू,मुलहटी औरशालपर्णी,प्रत्येकतीनपल,उरद एक आढक,इन सबको दो द्रोण जलमें पकावे एक आढक शेष रहने पर उतार ले, इस क्वाथमें एक आढक घी,विदारीकन्दका रस एक आढक,आमले का रस एक आढक,ईख का रस,एक आढक दूध चार आढक,तथा भूम्यामलक,कौंच,काकोली,क्षीरकाकोली मुलहटी,काकोडुम्बर पीपल,दाख; भूमिकूष्माण्ड, खिजूर महुआ, सितावर, इनको पीसकर छानकर सब एकप्रस्थ मिला देवे और पाकविधानोक्त रीति से पकावे पाक होजाने पर घीको छानकर उसमें शर्करा एक प्रस्थ, बंसलोचन एक प्रस्थ,पीपल एक कुडव, कालीमिर्च एक पल, दालचीनी इलायची,और नागकेसर प्रत्येक आधा पल और शहद दो कुडव इनको मिलादेवे इस चूर्णमें

लाकर चाटै ऊपरसे दुधका अनुपान करै, उस मनुष्य का बल कभी नष्ट नहीं होता है।

(३४) अन्य प्रयोग।

काकडासिंगी के कल्क को दुधमें मिलाकर पान करै और शर्करा घृत और दुधके साथ अन्नका भोजन करै, इससे मैथुनकी अत्यन्त सामर्थ बढ़ जाती है।

(३५) पुष्ट चूर्ण।

दक्षिणी मूसली एक तोला, सरवाली १तोला, पाषानभेद १तोला, उटंगन के बीज १ तोला, तालमखाना १ तोला, बीजबंद १तोला, राल सफेद १ तोला-शकर सफेद १ तोला सब औषधियोंको चूर्ण करके शकर के साथ मिलाकर ९ माशे नित्य गायके दूधके साथ सेवन करै वीर्य्यको गाढ़ा करता है प्रमेह को दूर करता है पुष्टहै।

(३६) स्तंभक चूर्ण।

सूखा सिंघाड़ा ३ माशे, माजून २ माशे, तालमखाना ४ माशे, सालब मिश्री २ माशे, बबूल का गोंद ६ माशे, मस्तगी ३ माशे, मिश्री इन सबके बराबर इनको कूट छानकर मिश्री पीसकर मिलावै मात्रा इसकी ६माशे से ७माशे तक है यह चूर्ण वीर्य्य उत्पन्न करताहै और स्तंभक है।

गठिया का वर्णन।

प्रकट हो कि जो दर्द (पीडा) शरीर के जोड़ों में होता उसको गठिया कहतेहैं यह रोग उपदंश और सुजाकसे अथवा ज्वर के अन्त में जब शरीर दुर्बल हो जाता है अ हवा लग जातीहै उत्पन्न होता है अथवा मवाद में ह

लाकर चाटै ऊपरसे दूधका अनुपान करे, उस मनुष्य का बल कभी नष्ट नहीं होता है।

(३४) अन्य प्रयोग।

काकडासिंगी के कल्क को दूधमें मिलाकर पान करे और शर्करा घृत और दूधके साथ अन्नका भोजन करै, इससे मैथुनकी अत्यन्त सामर्थ बढ़ जाती है।

(३५) पुष्ट चूर्ण।

दक्षिणी मूसली एक तोला, सरवाली १तोला, पाषानभेद १तोला, उटंगन के बीज १ तोला, तालमखाना १ तोला, बीजबंद १तोला, राल सफेद १ तोला-शकर सफेद १ तोला सब औषधियोंको चूर्ण करके शकर के साथ मिलाकर ९ माशे नित्य गायके दूधके साथ सेवन करे वीर्यको गाढ़ा करता है प्रमेह को दूर करता है पुष्टहै।

(३६) स्तंभक चूर्ण।

सूखा सिंघाड़ा ३ माशे, माजून २ माशे, तालमखाना ३ माशे, सालब मिश्री २ माशे, बबुल का गोंद ६ माशे, मस्तगी ३ माशे, मिश्री इन सबके बराबर इनको कूट छानकर मिश्री पीसकर मिलावै मात्रा इसकी ९माशे से ७माशे तक है यह चूर्ण वीर्य्य उत्पन्न करताहै और स्तंभक है।

गठिया का वर्णन।

प्रकट हो कि जो दर्द (पीडा) शरीर के जोड़ों में होता उसको गठिया कहतेहैं यह रोग उपदंश और सुजाकसे अथवा ज्वर के अन्त में जब शरीर दुर्बल हो जाता है अथवा हवा लग जातीहै उत्पन्न होता है अथवा मवाद में [illegible]

होता है अथवा उस मांस में होता है जो जोड़ोंके ओरपास है इनमें एक प्रकार की सूजन हो जाती है और इस सूजन का यह प्रभाव है कि न पकती है न पीव पड़ता है और प्र-बाद वाली गठिया से जोड़ोंमें निर्बलता आजाती है जिस में आमाशय की पाचन शक्ति निर्बल हो जाती है उपदंश रोग में पारा तथा शिंगरफ आदिके खानेसे और शरीरको धूनी देनेसे और सुज़ाक में ठंडी दवाओं के प्रयोग से ग-ठिया उत्पन्न हो जातीहै जोड़ोंके दर्दका प्रधान कारण प्र-कृतिका दूषित होना और रीह का पैदाहो जानाहै यह रोग कभी कफसे उत्पन्न होताहै और कभी वादीसे उत्पन्नहोताहै

दो दो तोले,और सोये के बीज, खुरासानी अजवायन,सुरं-
जान कड़वा,गेहू,सेंधा,नमक,ये छः छः माशे इन सब को
पीस छानकर जोड़ों पर मालिश करै परहेजसे रहे ।

* गठिया पर वफारा *

बेद अंजीर के पत्ते, खुरासानी अजवायन,सोयेके बीज,
टेसू के फूल,वायविडंग,ये सब दवा एक एक तोले सेंधा न-
मक,खारी नमक ये दोनों छः छः माशे इन सबको पानीमें
औटा कर वफारादे और जो जोड़ों पर सूजनभी हो तो
बफारे के पीछे से यह औषधि उनपर मलना चाहिये ।

* गठिया पर मालिश *

भूनी हुई मूंग का चून, छोटी माई,बड़ी माई दो दो तोले,
काला जीरा, भांग सोंठ,कायफल,अजवायन देशी,ये सब
एक एक तोले इन सबको महीन पीसकर जोड़ोंपर मले॥

* गठिया का अन्य कारण *

दो चार वर्ष पहिले कोई मनुष्य मकानकी छत वृक्ष
पहाड़ आदि ऊंची जगहसे नीचे गिरपड़ाहो और समय पा
कर सर्दीसे वा पूर्वी वायुके लगनेसे चोटकी जगह फिरदर्द
होने लग जाताहै और रोग बढ़कर गठिया होजाता है ।

* उक्त रोग की दवा *

अरंडका एक बीज नित्य प्रति खिलाकर नीचे लि
तेल की मालिश करै ।

* तेल की विधि *

मालकांगनी दो तोले,कायफल,मायफल,सोंठ,जाय
अकरकरा,गुजराती, लौंग,आंबाहल्दी, समुन्दर[illegible]

अंत्र वृद्धि, शिरोग्रह, पार्श्वसूल, गठिया तथा समस्त बात-रोग दूर हों ।

योग राज गूगल ।

सोंठ, पीपरि, चव्य, पीपलामूल, चित्रक, भुनी हींग, अज-मोदा, सरसों, दोनों जीरे, सम्हालू, इन्द्रयव, पाढ़, बायबिडिंग गज पीपरि, कुटकी, अतीस, भारंगी, खुरासानी बच, मरूआ ये सब औषधि चार चार मासे और सब औषधों से दूना गूगल ले फिर इन सब औषधों को एक रसकर चार चार मासे की गोली बनावे और घृतके चिकने पात्र में रख छोड़े इनमें से एक गोली खाना, सांठीकी जड़, सोंठि गिलोय आरण्डकी जड़, इनका काढ़ा करके योगराज गूगलका सेवन करै तो सब बातरोग जांय ।

…गर मोथा, खुरासानी बच, देव दारू, इन्द्र यव, जवाखार पांचों नमक, नीलाथोथा, कायफल पाढ़, भारंगी, नौसादर, गन्धक, पुष्कर मूल, शिलाजीत, हरताल, ये सब औषधि धेले धेले भर और सिंगी मुहरा १ टके भर ले इन सबका महीन पीसकर तेलमें डालै तेल और इसका मर्दन करै तो सब वातरोग दूर हो और कुक्षि, भृकुटी, पीठ जांघ और सन्धिकी सूजन और गृध्रसी रोग, सिरका रोग हड़ फूटन व्रणशूल गण्डमाला इन सब रोगोंको यह विषगर्भ तेल दूर करता है।

❀ लहसन कल्प ❀

लहसन का रस १ टकाभर, उसमें बराबरका तेल मिला अनुपानसे उवानगक डालकर पीवैतो वायुके समस्तरोग दूर हों।

❀ लक्ष्मी विलास महागन्ध तेल ❀

मजीठ देवदारू चीड़ कटेली वच तेज पत्रज शोधी गन्धक, कचूर हड़की छाल, बहेड़े की छाल आमला नागर मोथा ये सब एक २ टंक भर ले पीस औटाय रस काढ़ ले फिर इस रसमें १ सेर तेल डालकर मधुरी आंच पर पकावे जब रस जलकर तेलमात्र रहजाय तब इस तेलमें बालछड़ मुर्दा मेहल चम्पेकी जड़ तेज पीपला मूल नेत्र बाला काला नमक लोहबान बेर यव असगन्ध नख छड़ ये सब दो दो टके भर और इलायची लौंग सफेद चन्दन जायफल कस्तूरी कंकोल नागकेसर ये सब एक एक पैसे भर तथा कस्तूरी २ टंक लेकर सबको महीन पीसे तेलमें मधुरी आंचसे पकावै जब सब औषधी और रस जलकर तेल मात्र रह जाय तब इसमें दो टंक कपूर पीसकर डाले फिर इसको

नागर मोथा, खुरासानी बच, देव दारू, इन्द्र यव, जवाखार पांचों नमक, नीलाथोथा, कायफल पाढ़, भारंगी, नौसादर, गन्धक, पुष्कर मूल, शिलाजीत, हरताल, ये सब औषधि धेले धेल भर और सिंगी मुहरा १ टके भर ले इन सबका महीन पीसकर तेलमें डालै तेल और इसका मर्दन करै तो सब वातरोग दूर हो और कुक्षि, भृकुटी, पीठ जांघ और सन्धिकी सूजन और गृध्रसी रोग, सिरका रोग हड़ फूटन व्रणशूल गण्डमाला इन सब रोगोंको यह विषगर्भ तेल दूर करता है।

❀ लहसन कल्प ❀

लहसन का रस १ टकाभर, उसमें बराबरका तेल मिला अनुमानसे सैंधानमक डालकर पीवेतो वायुके समस्तरोग दूर हों।

❀ लक्ष्मी विलास महागन्ध तेल ❀

मजीठ देवदारू चीड़ कटेली वच तेज पत्रज शोधी गन्धक, कचूर हड़की छाल, बहेड़े की छाल आमला नागर मोथा ये सब एक २ टंक भर ले पीस औटाय रस काढ ले फिर इस रसमें १ सेर तेल डालकर मधुरी आंच पर पकावै जब रस जलकर तेलमात्र रहजाय तब इन तेलमें बालछड़ कुलीजन चम्पककी जड़ तेज पीपला मूल नेत्र बाला काला नमक लोहबान देर यव असगन्ध नख छड़ ये सब दो दो टके भर और इलायची लवंग सफेद चन्दन जायफल कोकली कंकोल नागकेसर ये सब एक एक पैसे भर तगर कस्तूरी २ टंक लेकर इनको महीन पीस तेलमें अछुरी आंचमें पकावे जब सब औषधि और रस जलकर तेलमात्र रहे आय तब इसमें दो टंक कपूर पीसकर डाले फिर इसको

नागकेसर २ टंक सोंठ,काली मिरच, पीपरि, पीपला मूल,सों- धी सिंगी मुहरा क्षार, पारा ये सब दश दश टंक शोधी गंध क ५ टंक पहिले पारे और गंधककी कजली करै फिर उसमें ये सब ओषधि डाले फिर इन सब ओषधियोंमें पुराना ३ वर्षका गुड़ ५० टंकेभर मिलाके एक रस करै फिर घृत में इसकी बेरके प्रमाण गोली बनावे उन्हें घीके पात्र में रक्खे १ वा २ अथवा ३ गोली क्रमशः बढ़ाता हुआ नियम पूर्वक दो मास तक खायतो कफ तथा पित्तके सब रोग जांय ४ मासे तक सेवन करने पर वायु रोगका नाश हो, एक वर्ष लों सेवन करने पर समस्त रोगका क्षयहो दो वर्ष तक खाय तो वृद्धता दूर होकर तरुण होजाय और तीन वर्षतक सेवन करनेपर अयुर्बल बढ़े तथा शरीर निरोग हो ।

❀ वातारि रस ❀

पारा १ भाग, शोधा गन्धक २ भाग, त्रिफला ३ भाग चि- त्रक ४ भाग, शोधी गूगल ५ भाग इन सबका अरण्ड के तेल में एक दिन खरल कर फिर इसमें हिंग्वष्टक चूर्ण डाले और एक दिन खरल करै फिर इसकी गोली २॥ टंक प्रमाण बांधे फिर लवंग, सोंठ, अरण्ड की जड के काढ़े में एक मास तक ब्रह्मचर्य्य पूर्वक सेवन करे तो सब प्रकारकी वात जाय और साधारण वाततो सात दिनमें ही दूर हो ।

❀ समीर पन्नग रस ❀

शोधी गन्धक, शोधा सिंगी मुहरा, सोंठ, काली मिरच पीपल छोटी; पारा ये सब बराबर ले फिर पारे और गन्धक की कजली करै और कजलीमें ये सब औषधि डाले और

भांगरे के रसको सात पुट दे फिर इसको १ रत्ती प्रमाण बांधे एक गोली अदरकके रस के साथ ले तो संग्रहणी आदि कफ पित्त रोग दूर हों।

※ समीर गज केशरी रस ※

नवीन चोखी अफीम, कुचला, काली मिरच, ये सब सम भाग ले सर्वोंको पीसकर १ रत्ती प्रमाण गोली पानके रस बनावे १ गोली सवेरे खाकर ऊपर से पान चबावे तो ८ प्रकार की वात और सूजन जाय तथा विसूचिका अ रोगी दूर हों ॥

❀ राक्षस रस ❀

शोधी गंधक, शोधा पारा, ये दोनों बराबर ले कजलीकरे फिर इसमें दूधिया के रसकी १ पुट दे फिर तुलसी के रस की १ पुट दे फिर बावची के रसकी एक पुट दे, फिर मोर शिखा के रसकी एक पुट दे फिर मुलहटी के रसकी १ पुटदे फिर वाराही कंदकी एक पुट दे फिर बहुफली के रसकी एक पुट दे. इसका रस सुखाय पारे और गन्धककी कजलीको मुरगी के ७२ अण्डोंमें भरै फिर अंडोंको कपरोटी कर सुखा ले फिर इन अंडों को गजपुट में पकावै इसी प्रकार तीन बॉर करे फिर इसमें से १ रत्ती खाय तौ सब प्रकारकी बात जाय और क्षुदा बहुत बढ़े ।

❀ बंगेश्वर रस ❀

शोधा पारा, शोधी गंधक, इनको कजली करै और दोनों से आधी शोधी हरताल डालै और इनकी बराबर रांग डाले फिर इनको आक के दूध में सात दिन खरल करें फिर मु- खाय आतशी शीशीमें कपड़ोती कर उसमें भरदे फिर शी- शीको बालुका यंत्र में १२ पहर पकावै फिर शीतल करके निकाल उसमें से आधा रत्ती के अनुमान पानमें खाय तौ सब प्रकारकी बात, उन्माद, क्षीणता मन्दाग्नि, कोढ़ व्रण विषम ज्वर ये सब दूर हों ।

❀ हरिताल गुटिका ❀

शोधी हरताल, शोधी गन्धक, शुद्ध पारा शिंगरफ, सुहागा सोंठ, मिरच, पीपल, ये पांच बराबर ले पारे और गन्धक की कजली करे ये सब औषधि मिलाय फिर अदरख के रस

पीनेसे दर्द वहुत जल्दी जाता रहैगा यह दस्तावर भी है।

※ अन्य प्रयोग ※

सूरंजान, सोंफ, सोंफकी जड़का छिलका अजमोद अनी, सून येसब दवा पांच पांच माशे हंसराज, गावजवां और वि ली लोटन चार चार माशे, गुलाबके फूल सात माशे बड़ी हर्ड छःमाशे, सनाय मक्की सातमाशे, गुलकंद डेढतोले इन सबको औटाकर फिर छानकर इसमें १ तोले तुरंजवीन पीसकर मिलाकर पीवे तो दस्त होंगे इस दवा के करनेसे दर्द वहुत जल्दी दूर हो जाता है।

※ कूल्हेके दर्दका इलाज ※

रूमी मस्तगी अनीसून पांच पांच माशे. सोंठ, अजखर की जड तीन तीन माशे,मजीठ चीता अजमोद मेथी चार२ माशे मुनक्का १९ दाने इन सबको औटाकर उसमें एक एक तोले अंडीका तेल मिलाकर प्रातःकाल पीवै इसके पीने से दस्त होंगे।

※ सब प्रकारके वातज की चिकित्सा ※

महुआ तीन भाग, खानेका तमाकू १ भाग इन दोनों को पीसकर गरम करके जहां शरीरमें दर्द होता हो वहां बांधदे यह दर्द गांठया का नहीं होता है इसको साधारण बादी दर्द जानना चाहिये।

※ साधारण दर्द का इलाज ※

जो छाती, पीठ; हाथ पांव आदि में साधारण बादी का दर्द होतो यह काम करै कि बनफ्साका तेल, ५ पांच तोले आगपर धरे उसमें सफेद मोम दो तोले [illegible]

करा वा रेत पैदा होजाती है। वायुके कारण इस शर्कराके टुकड़े टुकड़े होजाते हैं और मूत्रके संग थोड़ी थोड़ी बाहर निकलती रहती है और प्रायः वही मूत्रमार्गमें रुककर अनेक प्रकारके भयंकर रोगोंको उत्पन्न करती है। जब पथरी रोगके साथ शर्करा और रेत होतीहै तब शरीर बड़ा अस्वस्थ और ढीला होजाता है देह दुर्बल और पेडूमें शूल की सी वेदना होती है। प्यास की अधिकता होतीहै जी फिरता हैं और आहार में अरुची होती है।

❀ वादी की पथरी के लक्षण ❀

वादी की पथरी में अत्यन्त दरदके कारण रोगी दांतोंको पीसता और कांपने लगता है। दर्द के कारण इन्द्री और नाभिको मलता हुआ हायहाय करके डकराताहै अधोवायु के साथ मूत्र निकल जाताहै और बूंदबूंद करके टपकताहै।

❀ पित्तकी अश्मरीके लक्षण ❀

पित्तज पथरी रोगमें पेड़ू में जलन होती है, हाथ लगाने से इन्द्री गरम मालूम होतीहै, इस पथरीका आकार भिलावे की गुठली के समान होता है।

❀ कफकी पथरी के लक्षण ❀

कफकी पथरीमें पेड़ू ठंडा और भारी होता है और इसमें सुई चुभने की सी वेदना होती है।

❀ बालकोंके पथरीके लक्षण ❀

बालकोंके ऊपर लिखे हुए तीनों दोषोंसे ही पथरी हो जाया करतीहै बालकों का पेड़ू छोटा होता है, बालकों की पथरी औजार से पकड़कर निकाली जा सकती है।

ॐ वीर्य्यकी पथरी के लक्षण ॐ

वीर्य्य से पथरी रोग प्रायः बड़ी उमर वाले आदमियों को हुआ करताहै, स्त्री संगम की इच्छा होने पर जब वीर्य्य अपने स्थानको छोड़ देताहै, और स्त्रीसंग होने नहीं पाता अथवा किसी यत्न से वीर्य्य रोक लिया जाताहै तब वायु वीर्य्यको चारों ओरसे खींचकर इन्द्री और अंडकोषोंके बीच में इकट्ठा करके सुखा देती है। इसीको वीर्य्यकी पथरी कहते हैं इसके होनेसे पेडू में सुई चुभाने जैसी वेदना मूत्रका [illegible] होना, और अंडकोषों में सूजन यह उपद्रव होताहै

❀ पित्तकी पथरीका उपाय ❀

कुश, काश, खर गुंठतृण, इत्कट, मोरट, पाखानभेद, दाभ, विदारीकंद, बाराहीकंद, चौलाई की जड़, गोखरू, श्योनाक, पाठा, रक्तचंदन, कुरंटक, और सोंठ इनके काढ़ेमें खीरा, ककडी, कसुम, नीलाथोथा, इन सबके बीज, मुलहटी और शिलाजीतका कल्क डालकर घी पकावै, इस घीके सेवनसे पित्तकी पथरी खंड खंड होकर निकल जाती है।

❀ पित्तकी पथरी पर अन्य औषधि ❀

पाषाण भेदके काढ़ा में शिलाजीत मिश्री मिलाकर पीनेसे पित्त की पथरी दूर हो।

❀ कफ की पथरीका उपाय ❀

जवाखार तीन माशे, नारियल का फूल तीन माशे, इन दोनों को जलके साथ पीस कर सेवन करनेसे एक सप्ताह में उत्कट पथरी रोग जाता रहता है।

❀ दूसरी औषधि ❀

सहजना की छाल, वरना की छाल के काढ़े में जवाखार मिलाकर पीने से कफ की पथरी दूर होती है।

❀ पथरी रोगकी सामान्य चिकित्सा ❀

सोंठ, अरनी, पाषाण भेद, कूट गोखरू, अरण्डकी छाल किरमालीकी गिरी ये सब भागले जम कूटकर ५ टंक का काढ़ा कर उसमें भुनी हींग १ रत्ती जवाखार, सेंधा नमक एक एक माशा ये तीनों डाल पथरी वाला पीवे तो पथरी, मूत्र कृच्छ्र कोष्ठकी बात उपदंश तथा बवासीर दूर हो।
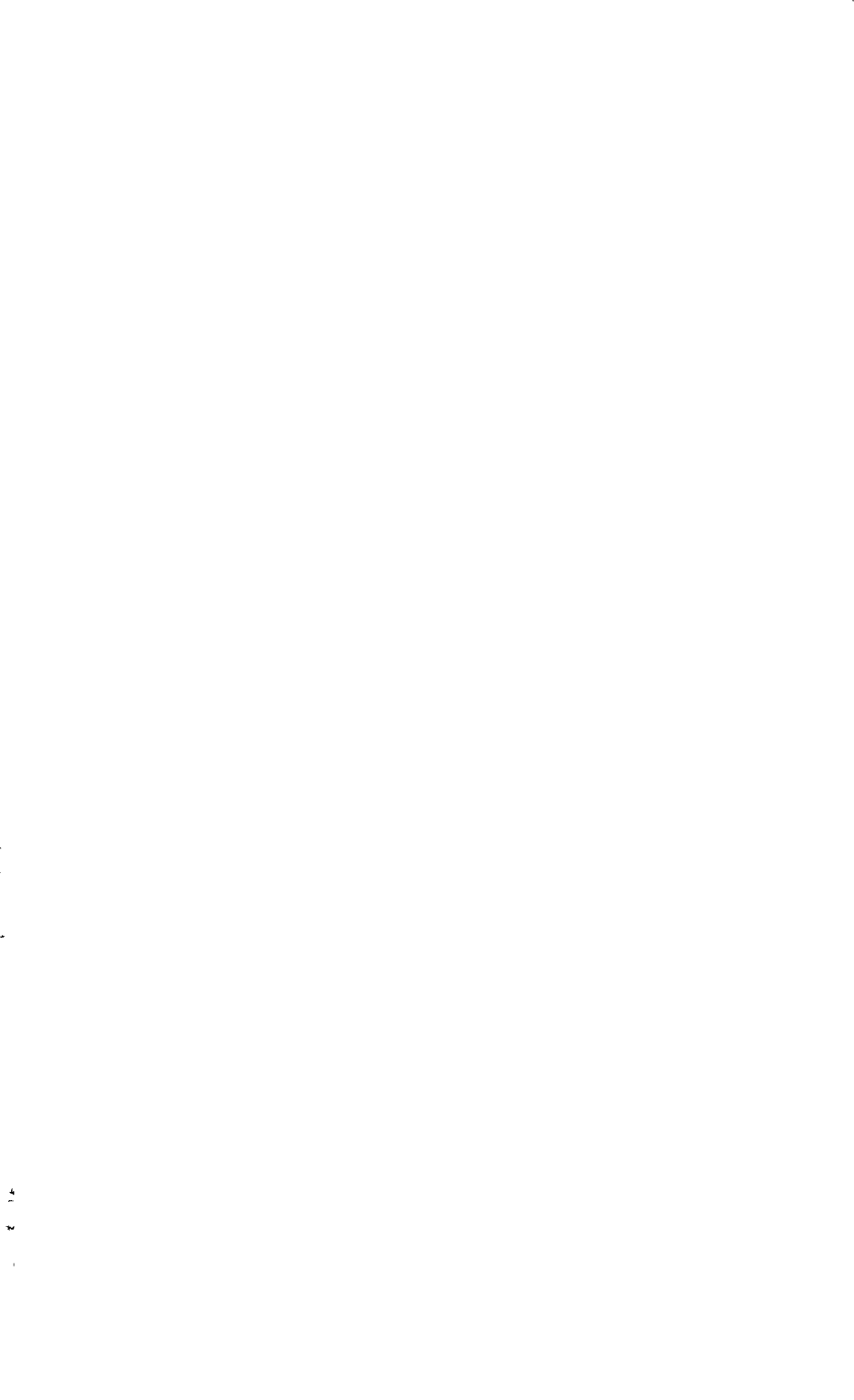
❀ अन्य औषधि ❀

हल्दीका चूर्ण ५ टंक, गुड १० टंक इनको १ माशा कांजी में डाल पीवे तो पथरी जाय।

❀ अन्य औषधि ❀

काला नोंन, दूध, तिलेठीकी राख, सबको मदिरामें मिल। २ दिन पीवे तो पथरी जाय।

❀ अन्य औषधि ❀

तिलेठी की राख २। टंक, शहद पांच टंक दूध में मिला १५ दिन पीये तो निश्चय पथरी निकल पड़े।

❀ अन्य औषधि ❀

एरंड काकड़ीकी जड २ टंक, रातको भिगो रक्खे सवेरे उस पानीको पीवै तो सात दिनमें पथरी इन्द्री द्वारा झड़पड़े।

❀ अन्य औषधि ❀

कुलत्थ, सेंधानमक, वायविडंग, सार मिश्री, सोंटी, जवाखार, पेठेका रस, तिलका खार, बेठक्के बीज, गोखरू, इनसब का काढा कर इससे गौका घी पकाय १ टंक भर नित्य खाय तो पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात, शुक्रबन्ध आदिरोग जांय

❀ पथरी पर कुपथ्य ❀

मूत्र और शुक्र के वेगको रोकना खटाई का सेवन अफरा करनेवाले भोजन पान, रूखा गुणवाले खाने पीने के पदार्थ पेटको भारी करने वाले आहार विरुद्ध द्रव्य जैसे दूध और मछली मिलाकर खाना आदि २ को पथरी रोगमें सर्वथा त्याग देना चाहिये।

❀ ववासीर का पूर्वरूप ❀

खाया हुआ भोजन पूर्ण रूपसे परि पक्क नहो और आं
। में मल रुका रहे, बद्ध कोष्ट आर मन्दाग्नि हो, शरीर
।श हो जाय, पेटमें अफरा हो अंग में पीडा हो, ये लक्षण
।ो तो ववासीर का रोग जानना चाहिये।

ववासीर, अतिसार, संग्रहणी ये रोग प्राय, आपसमें स-
म्बन्ध रखते हैं, और जठराग्नि को मन्द करते हैं इस लिये
इन रोगों में विशेष कर अग्नि को रक्षा करना उचित है,इस
रोगमें औषधि मुख्य है और सूजा हुआ कठिन मस्सा हो
तो उसे श्रेष्ठ जर्राह द्वारा कटवाना भी किसी २ अवस्था
में हित होता है अथवा जौंक लगवा कर रुधिर निकलवा-
या जाता है।

जो वायुका अनुलोमन और अग्निका दीपन करे ऐसेपान
और औषधि ववासीर रोग में गुण दायक हैं वायुकी ववा
सीर में स्नेह व स्वदेन हित है और पित्त का ववासीर में
रेचन हितहै कफकी ववासीर में वमन हित है और मिले
हुये दोषोंकी बवासीर मे संग्रहणी की चिकित्सा हित है
और रक्त की ववासीर में कई वार पतला दस्त होता होतो
वातातीसार का उपाय करे, गाढ़ा दस्त आनेपर उदावर्त्त
की चिकित्सा करे, और रक्त बहने पर पित्त नाशक औ
षधियों का सेवन करावे और दस्त न आने पर कब्ज के
दूर होने का उपाय करे।

❀ वात ववासीर के लक्षण ❀

जिसके गुदाके मस्से चिमचिमी, और ललाई लिये [illegible]

सबसे दूना गुड़ मिलाय १ टकेभर गोली बनाएक नित्य खाय तो बातकी बवासीर निश्चय जाय ।

❀ अन्य औषधि ❀

बन्दाल के पत्तों को औटाय इसके पानीसे आबदस्त लेवे तो बवासीर के मस्से दूरहों अथवा बन्दाल के डोंढो का धूनी दे या सेंधा नमक और बन्दाल के टोढो को कांजी में पीस लेप करे तो मस्से जावें ।

❀ अन्य प्रयोग ❀

नीव तथा कनेर के पत्ते, गुण. कडवी तूंबी की जड- इन सबको कांजी के पानीमें पीस मस्सोंपर लेपकरे तो मस्से दूर हों

❀ अन्य प्रयोग ❀

हल्दी, कडवी तोरईकी जड़, आक के पत्ते सहजने की जड़ इन सबको कांजी के पानी में महीन पीस लेप करे तो मस्से जावें ।

❀ अन्य औषधि ❀

अरंड की जड़, मुलहठी, रास्ना, अजवायन, महुआइन सबको कांजी मे पीस लेप करे अथवा इनसे सेक करे तो मस्से की पीडा जाय और मस्से झड़ पड़ें ।

❀ अन्य प्रयोग ❀

हीरा कसीस, सैंधा लवण, पीपरि, सोंठि, कूट, पाषाण. भेद, कनेर की जड, वायविडंग, दारुगुणी, चित्रक, हरिताल रास्नानाशी की जड़ इन सबको बराबर ले महीन पीस इन का तिगुना तेल ले थूहड़ और आक के दूध और गोमूत्र तीनो तेल से चौगुने ले इन सबको इकट्ठा करके पकावै जब

जल जाय और तेल मात्र शेष रहजाय तब उतार कर छान कर उस तेलका मर्दनकरे तो मस्से दूर हों बवासीरको आरामहो

॥ अन्य प्रयोग ॥

पकाया जमीकन्द १६ भाग, चित्रक और सोंठि आठ आठ भाग कालीमिरच ४ भाग, त्रिफला २ भाग, पीपलामुल, शो- भाञ्जिना शतावरि आठ आठ भाग विधारा १६ भाग, भंग ८ भाग, इलायची ४ भाग वायविडंग ८ भाग इन सबको भ- हीन पीस सब ओषधियों से दूना गुड़ मिलाके ६ माशे की गोली बनावे २० दिन तक १ गोली नियमसे सेवन करे तो ब- वासीर, हिचकी, श्वास, कास, राजरोग, प्रमेह, क्षिया, दूरहों।

और कटि, जंघा, और गुदा में पीड़ा होय, शरीर दुर्बल हो जाय तो रुधिरकी ववासीरमें वायुका भी मेल जानिये और जिसका मल चिकना भारी ठंडा होय और मस्सों में से रुधिर की धार मोटी तथा गर्म निकले और गुदामें कफ साही लगा रहे तो रुधिर की ववासीर कफ संयुक्त जानिये ।

❀ ववासीर के रुधिर स्तंभ की औषधि ❀

वड़के पत्ते; और सूखे आमले चार चार पैसे भर लेके पावभर गौके मक्खन को लोहकी कढाही में खूब तप्त करे फिर इन दोंनो वस्तुओं को घीमें डाले जब ये तीनों जल जांय तब उतार ठंडाकर चीनीके पात्रमें भर रक्खे फिर इन सबको खरलमें डाल महीन पीस एक रस करै पीछे ववासीर वाले रोगी को यह औषधि ९ माशे प्रति दिन प्रातःकाले २१ दिवस तक दे और गर्म वस्तु, बाजरा, करैला, मिरच पेड़ा अचार, बैंगन, उर्द आदि न खाय तो ववासीर का खून थम जाय ।

❀ रुधिर रुकने की अन्य विधी ❀

निबोली की मिंगी, एलुआ इन दोनों को बराबर ले पानी से महीन पीस १ रत्ती की गोली रसौतके पानीमें ११ दिवस प्रात काल सेवन करने से ववासीर का रुधिर निस्त्रय थम जाय ।

❀ ववासीर के मस्से दूर करने की औषधि ❀

रसौत, चीनिया कपूर निबोली की मिंगी इन तीनों को पानी में महीन पीस लेप करे तो मस्से दूर हों ।

क मस्से से रुधिर नहीं निकले और शरीर का रंग पीला
और चिकना हो तो कफकी ववासीर जानिये ।

॥ कफकी ववासीर का यत्न ॥

एक टके भर उदर का काढ़ा २१ दिन ले तो कफकी ब-
वासीर जाय ।

॥ अन्य यत्न ॥

हल्दी में शहद के दूधकी ७ पुट दे के मस्सों पर लेप करै
तो मस्से दूर हों ।
विदितहो कि जो औषधि ऊपर लिखीहैं वे भी इसमें हितहैं

॥ सन्निपात की ववासीर का लक्षण ॥

वात, पित्त, कफके मिले हुए लक्षण इसका भी जानना
चाहिये—

॥ सन्निपात की ववासीर का यत्न ॥

अदरक २ टंक, काली मिरच १ टंक, पीपरि ४ छटांक,
नाग केसर पीपला मूल, चित्रक, इलायची, अजमोद, जीरा
सफेद ये सब एक एक टंक लेकर महीन पीस ३० टके भर
गुड़में मिला दो टंक की गोली बना प्रातःकाल एक गोली
खाय और पथ्य से रहैतो सन्निपातकी ववासीर दूर होतीहै।

॥ अन्य औषधि ॥

त्रिफला, सोंठ, काली मिरच, पीपरि, तज, पत्रज, इलायची
चव, भुनी हींग, सज्जी, जवाखार, दारुहल्दी, चव्य, कुटकी,
इन्द्रयव, सोंफ, पांचों नोन, पीपला मूल, बेलकी गिरी
अजमोद इन सबको बराबर ले महीन पीस गरम जल से
२ टंक प्रति दिन सेवन करैतो सन्निपात की ववासीर दूरहो ।

❀ अन्य औषधि ❀

बड़ी हड़ की छाल, पुराना गुड़ दो दो टंक दोनों को मि-लाय जलसे प्रति दिन ले और ऊपर से गो के मठा का सेवन करै तो बवासीर जाय ।

❀ मस्सों की चिकित्सा ❀

खाने का चुना, सज्जी सुहागा, नीला थोथा, इन सब को बराबर ले नीबू के रसमे तीन दिन तक भिगोवे फिर मस्से पर लगाने से मस्से दूर होते हैं ।

❀ अन्य औषधि ❀

[illegible] की गोली को गौ मूत्र में घिसे और १० दिन तक बवासीर पर लगावे तो मस्से जाते रहें ।

❀ अन्य औषधि ❀

[illegible] [illegible] [illegible] काली मिर्च दो दो टंक भंग आधा [illegible] पीसकर पीवे तो बवासीर दूर हो ।

❀ इति दूसरा भाग समाप्तम् ❀
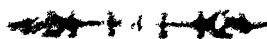
॥ श्रीगणेशायनमः ॥

बृहत् जर्राहीप्रकाश

❋ तीसरा भाग ❋

॥ नेत्र रोगों का वर्णन ॥

वैद्यक शास्त्र के मत से नेत्र रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और
चिकित्सा का वर्णन करके यूनानी औरड़ाक्टरी चिकित्सा
का विवरण भी इस स्थान पर किया जायगा ।

❀ आयुर्वेदोक्त नेत्र रोग चिकित्सा ❀

❀ नेत्र रोग का कारण ❀

नेत्र मंडल दो ढाई अंगुल प्रमाण है. नेत्र मंडल में ७२
रोग मुख्य हैं. धूपादिसे गर्मी पहुंचने के पश्चात् शीतलजल
के तात्कालिक संयोगसे दूरकी वस्तु अधिक गौर से देख
ने से, दिन के सोने से, रज अथवा किसी वस्तु के पड़ जा
ने से. धुंआ के लगने से. वमन का वेग रोकने से. अधिक
वमन करने से. बहुत उष्ण वस्तु के भोजन से अधो वायु.
मलमूत्र अधिक रोकने से, ऋतु के परि वर्तन से अधिक
मैथुन से अश्रु के अवरोध से. अति सूक्ष्म वस्तु के अधिक
देखने से. नेत्रों में पीड़ा होती है ।

चतुर्थ पटल में हुए रोगका लक्षण

चौथे पटल में जो रोग उत्पन्न होता है उसे तिमिर लिंग
नाशक कहते हैं नेत्रोंकी तेजोमई पुतली नीली कांचके स·
मान होती है और चन्द्रमा, सूर्य्य, नक्षत्र, बिजुली इत्यादि
ऐसी वस्तुएं भी अच्छी तरह दिखाई नहीं इस दोष को
नजला और मोतिया बिंदभी कहते हैं।

❀ मोतिया बिंदका लक्षण ❀

मोतिया बिन्द रोग छः प्रकार का है, (१) वायुका, (२)
पित्तका, (३) कफ का, (४) सन्निपातका, (५) रुधिरका
(६) परिम्लायनका (नोट) रुधिर से मूर्छितकफ होजाता
है उसको परिम्लायिन कहते हैं।

❀ १ वायुके मोतिया बिन्दका लक्षण ❀

सम्पूर्ण वस्तु घूमती हुई, मलीन, और अरुणतायुक्तप्रतीतहो।

❀ २ पित्तके मोतिया बिन्दका लक्षण ❀

सूर्य्य, चद्रमा, नक्षत्र अग्नि, इन्द्र धनुष बिजली येसब
चीजें घूमतीहुई नजर आवें और सबवस्तु नीलीसी दिखाई दें

❀ कफके मोतिया बिन्दका लक्षण ❀

सबवस्तुचिकनी और श्वेत दिखाईदें और नेत्रमेंजल भरारहै

❀ ४ सन्निपातकेमोतियाबिन्दका लक्षण ❀

सन्निपात के मोतियाबिन्दमें ऊपर लिखे हुए समस्त ल·
क्षण के व्यतिरिक्त नाना प्रकारकी आकृति दिखाई देती है
और चारों ओर तेजही तेज प्रतीत होताहैसबही वस्तुएं
तेजोमई जान पड़ती हैं।

❀ ५ रुधिरके मोतिया विन्दका लक्षण ❀

लाल, श्वेत, हरी काली और पीली सबवस्तु दिखाईदेवें।

❀ ६ परिम्लायिन के मोतिया विन्दका लक्षण ❀

दशों दिशा पीली ही दीखें मानों स्वर्णमई हैं वृक्ष आदि सब मानों जलते हुई दिखाई दें।

❀ मोतिया विन्द का स्वरूप ❀

वायु को आदि ले छः प्रकारके मोतिया विन्दकहेहैं जो नेत्र मंडल के स्वरूप से जाने जाते हैं (१) वायु का नेत्र मंडल अरुण चंचल और कठोर होता है (२) पित्तका

❀ नेत्रके रोगोंका विभाग ❀

नेत्रके कृष्ण भागमें चार रोग हैं।
(१) सव्रणशुक्र, (२) अव्रणशुक्र, (३) अक्षिपकात्यय,
(४) अजका जात,

(१) सव्रण शुक्रका साध्य लक्षण।

नेत्रकी काली पुतलीके ऊपर दोष उत्पन्न होकर तारा
ढक जाता है और उसमें सुईका सा चबका चलने लगता
है और गर्म २ आंसू बहते रहतेहैं।

❀ सव्रण शुक्र का कष्ट साध्य तथा असाध्य लक्षण ❀

जब नेत्र में चबका न चले और अधिक आंसू न आवें,
और पीड़ा कम हो तो रोग को कठिन साध्य अथवा अ-
साध्य जानना चाहिये।

❀ अव्रण शुक्रका साध्य लक्षण ❀

काली पुतली के तारेपर शुक्र की बूंद आई हो और
वह बूंद हिलती चलती रहे और शंखचन्द्रमा, कुन्द पुष्प,
के समान हो तो साध्य है।

❀ अव्रण शुक्रका कष्ट साध्य तथा असाध्य लक्षण ❀

जिसके नेत्रका मांस यथावत न रहे और शुक्रकी बूंद आ-
ड़ी तिरछी प्रतीत हो भदरंगी हो,चारों ओरसे लाल हो औ
र अधिक दिनों का होजाय तो कष्ट साध्य है और यदि
नेत्रों मे आंसू गरम गिरें नेत्रमें फुंसियां होजांय, और शुक्र
का बूंद पुतलियोंके ऊपर मूंगके दाने के समान उभरी हुई
हो और उसका रंग तीतरके पंख के समान हो तो रोग को
असाध्य जानना चाहिये।

(५) शुक्ति नामका लक्षण ।

नेत्रके शुक्ल भागमें मांस का एक बिंदु श्यामरंगका पैदा होजाता है उसे शुक्ति नाम रोग कहते हैं ॥

(६) अर्जुन का लक्षण ।

नेत्रके शुक्ल भाग में शशा के रुधिरके समान एक बूंद पड़ जातीहै उसे अर्जुन कहते हैं ।

(७) पिष्टकका लक्षण ।

नेत्रके शुक्ल भागमें वायु कफके कोपसे पिसे आटेके समान मांस ऊंचा होय उसे पिष्टक रोग कहते हैं ।

(८) शिरा जालका लक्षण ।

नेत्रके श्वेत भागमें नसों के समूह कठिन और पीले होजांय तो शिराजाल रोगहै ।

(९) शिरा पीडिका का लक्षण ।

नेत्र के सफेद भागमें नसोंसे ढकी सफेद फुंसियांहों उसे शिरा पीडिका रोग कहते हैं ।

(१०) बलास ग्रथित का लक्षण ।

नेत्र के सफेद भागमें कांसीकी भांति स्वेत अथवा कमल समान लाल रंगके कठोर चिह्नहों उसे बलासग्रथितरोगकहतेहैं

नेत्रकी सन्धिमें जो नवरोग होतेहैं उनके नाम ये हैं (१) भूपाल (२) उपनाह (३) पैत्तिक स्राव (४) कफस्राव (५) सन्निपात स्राव (६) रक्तस्राव (७) पर्वणीस्राव (८) अजल (९) जन्तु ग्रन्थि ॥

(१) नेत्रके बीच पुतलीके समीप कोये के अन्त में जो सन्धिहै वह पीड़ा कर और पककरै सूज जाय तथा उसमें

कीचड़ राध के समान गाढा बहुत आवै तो उसे पूयालस नाम नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं।

(२) नेत्रकी दृष्टिकी सन्धिमें बड़ी गांठ हो और वह पके नहीं उसमें खाज आवे उसे उपनाह नाम नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं॥

(४) आंख में पीड़ा अधिक हो और रोमांच तथा खुजली हो तथा नेत्र फड़के हों और सिरमें अग्नि जलै और जिसके नेत्रकी सन्धिमें अनुमान हल्दी के समान पीले अधिक आवें उसे पैत्तिक थान नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं।

कफका अभिष्यन्द (४) रक्तका अभिष्यन्द (५) वायुका अ-
धिमंथ (६) पित्तका अधिमंथ (७) कफका अधिमंथ (८) रक्त
का अधिमंथ (९) सशोथ पाक (१०) अशोथ पाक (११)
हताधिमंथ (१२) वात पर्याय (१३) शुष्काक्षि पाक (१४)
अन्यतो वात (१५) अम्लाध्युषित (१६) शिरोत्पात (१७) शि-
रोहर्ष (१८) नेत्रोंकी श्यामता (१९) नेत्रोंकी निरामता, ।

(१) यदि आंखों में पीडा बहुत हो और रोमांच हों
आंखों में खुजली आवै नेत्र कड़े हों, मस्तक जलै अश्रु सी-
तल पड़ें तो उसे वाताभिष्यन्द नेत्र का रोग कहते हैं ।

(२) यदि नेत्रमें दाह अधिक हो और आंखें पकजावें
तथा नेत्रोंको शीतलता भावै और नेत्रोंसे धुवां निकले, गर्म
आंसू गिरें और नेत्र पीले होजांय तो पित्त का अभिष्यन्द
रोग कहते हैं ।

(३) आंखोंको गरमी सुहावै तथा नेत्र भारी सूजन युक्त
हों और खुजली उठै कीचड़ बहुत आवै तो उसे कफके
अभिष्यन्द नेत्रका रोग कहते हैं ।

(४) नेत्रकेकोये लाल हों और जिससे तांबे के रंग का
आंसू गिरे और नेत्रों में दाह हो, शीतलता सुहाये गर्म आं-
सू गिरे उसे रक्ताभिष्यन्द नेत्र का रोग कहते हैं ।

(५) दुखती आंखों में कुछ पथ्य करे उससे शूल अधिक
बढ़ जाय, आधासिर नीच होजाय आंसू शीतल गिरें मस्तक
में दाह हो तो वायु का अधिमंथ नेत्रका रोग जानिये ।

(६) आंखें दुखनेपर गर्म वस्तु या खटाई आदिक सेवन
से आंखों में बहुत दर्द उठै दाह हो पकजांय तथा शीतलता

(१६) आलस पाड़ा हो अथवा न हो, जिसकी आंखों की नसें चारों ओरसें तांबे समान लाल होजावें उसे शिरोत्पात सबल वायु नेत्र रोग कहते हैं ।

(१७) यदि अज्ञानतासे सबल वायू का यत्न न किया गया तो आंखोंमें बहुत आंसु वार वार बहता रहे और उसे नेत्रों से किसी भांति से दिखाई न दे तो उसे शिरोहर्ष नेत्र रोग कहते हैं ।

❀ रोगी आंखों की पहिचान ❀

(१८) नेत्रमें बहुत पीड़ाहो और ललाई रहै, खुजली तथा शूलहो तो इसे जानिये कि नेत्रोंमेंरोगहै गया नहीं ।

❀ निरोगी आंखों की पहिचान ❀

(१९) नेत्रों में कुछ भी पीड़ा नहीं रहे और कुछभी खाज वा सूजन न हो, आंसू आदि न गिरें नेत्रों का वर्ण अच्छा हो और सूक्ष्म वस्तुभी यथावत् दिखाई देवै ऐसी आंखों का रोग रहित जानना चाहिये ।

❀ नेत्रके समस्त रोगोंकी चिकित्सा ❀

विदित हो कि नेत्रके रोगीको लंघन, लेप, स्वेद कर्म सिर के नसकी फस्त जुलाब आदि हित है-आंखोंके दुखने के पश्चात् तीन दिन तक अंजनादिका लगाना वर्जितहै क्यों कि तीन दिन तक नेत्र अच्छे रहते हैं और चौथे दिन पक जातेहैं तब नेत्रमें कोई औषधि लगानी चाहिये ।

❀ लेप ❀

हल्दी लाल, सैंधा लवण, गेरू रसौत, इन को समान भाग,

(१६) आंखम पीड़ा हो अथवा न हो, जिनकी आंखों की नसें चारों ओरसें तांबे समान लाल होजावें उसे शिरोत्पात सबल वायु-नेत्र रोग कहते हैं।

(१७) यदि अज्ञानतासे सबल वायू का यत्न न किया गया तो आंखोंमें बहुत आंसू बार बार बहता रहे और उसे नेत्रों से किसी भांति से दिखाई न दे तो उसे शिरोहर्ष नेत्र रोग कहते हैं।

❀ रोगी आंखों की पहिचान ❀

(१८) नेत्रमें बहुत पीड़ाहो और ललाई रहे, खुजली तथा शूलहो तो इसे जानिये कि नेत्रोंमेंरोगहै गया नहीं।

❀ निरोगी आंखों की पहिचान ❀

(१९) नेत्रों में कुछ भी पीड़ा नहीं रहे और कुछभी खाज वा सूजन न हो, आंसू आदि न गिरें नेत्रों का वर्ण अच्छा हो और सूक्ष्म वस्तुभी यथावत् दिखाई देवै ऐसी आंखों का रोग रहित जानना चाहिये।

❀ नेत्रके समस्त रोगोंकी चिकित्सा ❀

विदित हो कि नेत्रके रोगीको लंघन, लेप, स्वेद कर्म सिर के नसकी फस्त जुलाब आदि हित हैं-आंखोंके दुखने के पश्चात् तीन दिन तक अंजनादिका लगाना वर्जितहै क्योंकि तीन दिन तक नेत्र अच्छे रहते हैं और चौथे दिन पक जातेहैं तब नेत्रमें कोई औषधि लगानी चाहिये।

❀ लेप ❀

हड़की छाल, सेंधा लवण, गेरू रसौत, इन को समान भाग

चकरी के दूधमें पकावै फिर इस दूध से आंखों के ऊपर तरेड़ा देतो गर्मी तथा रक्त दोष से आंख दुखती हों तो वह अच्छी हों

❀ अन्य प्रयोग ❀

त्रिफला, लोध, मुलहटी, मिश्री, नागर मोथा इन्हें ठंडे पानीसे महीन पीस नेत्रोंके ऊपर तरेड़ा देतो रुधिर दोष से दूखती आंख अच्छी हों।

❀ अन्य प्रयोग ❀

अमली के पत्तोंको कूटकर अफीम और लौंग जवकुट हुई और आग पर फुलाई हुई फिटकरी इन सबको पोटली बना कर आंखों में फेरेतो नेत्र अच्छे हों ॥

❀ अन्य औषधि ❀

स्त्री के दूधकी ८ बूंद डाले तो गर्मी से दूखती आंख अच्छी हों

❀ अन्य प्रयोग ❀

यदि वायू से आंखों में चबके चलें और अन्य किसी यत्न से अच्छी नहीं तो रोगीके लिलाट की नस का रुधिर थोडासा निकलवादे अथवा भौंहके ऊपर दागदेतो नेत्रों की पीडा शांत हो

❀ अन्य प्रयोग ❀

आंवले को पानी से पीस उसकी टिकिया बांधे अथवा बकायन के पत्तों की टिकिया बांधे तो गर्मी से उठे रुलों को अच्छा करै।

❀ अन्य प्रयोग ❀

त्रिफला, लोध, इन्हें कांजी के पानी में पीस घी में तले फिर इसकी टिकिया बांधे तो गर्मी तथा कफ से हुआ नेत्र शूल दूर हो।

❀ अन्य अंजन ❀

चीनिया कपूर को वड़ के दूध में २ माशे तक अंजन करे तो फूली अच्छी हो ।

* अन्य अंजन *

रसौत, राल. चमेली के फूल, मैंनसिल, समुद्र फेन, सेंधा नमक, गेरू, कालीमिरच ये सब बराबर ले महीन पीस शहद में अंजन करेतो नेत्रोंकी खाज वाफणी जाती रहे ।

❀ अन्य अंजन ❀

गिलोय का रस २॥ टके शहद १ माशे सैंधानमक १ माशे इन सबको इकट्ठाकर महीन पीस अंजन करैतो मोतियाविन्द और तिमिर धुन्ध आदिको दूर करे ॥

❀ अन्य अंजन ❀

सांठीकी जडको शहद के साथ अंजन करने से नेत्रों से पानी जाना बन्द हो ।

* अन्य अंजन *

साठी की जड़ को घी के साथ रगड़ कर अंजन करने से फूली अच्छी हो ॥

❀ अन्य अंजन ❀

बबूल के पत्तोंका काढा कर रस निकाले फिर इसको और गाढा कर फिर इसमें शहद मिलाय अंजन करेतो नेत्र से पानी जाना बन्द हो ।

❀ अन्य अंजन ❀

निर्मली के फल को शहद में घिस थोड़ा कपूर मिलाय अंजन करेतो आंख निर्मल हो ।

❀ अन्य अंजन ❀

चीनिया कपूर को वड़ के दूध में २ माशे तक अंजन करै तो फूला अच्छी हो ।

❀ अन्य अंजन ❀

रसौत, राल, चमेली के फूल, मैंनसिल, समुद्र फेन, सेंधा नमक, गेरू, कालीमिरच ये सब बराबर ले महीन पीस शहद में अंजन करेतो नेत्रोंकी खाज वाफणी जाती रहे ।

❀ अन्य अंजन ❀

गिलोय का रस २॥ टके शहद १ माशे सैंधानमक १ माशे इन सबको इकट्ठाकर महीन पीस अंजन करैतो मोतियाबिन्द और तिमिर धुन्ध आदिको दूर करे ॥

❀ अन्य अंजन ❀

सांठीकी जड़को शहद के साथ अंजन करने से नेत्रों से पानी जाना बन्द हो ।

❀ अन्य अंजन ❀

साठीकी जड़ को घी के साथ रगड़ कर अंजन करने से फूली अच्छी हो ॥

❀ अन्य अंजन ❀

बबूल के पत्तोंका काढा कर रस निकाले फिर इसको और गाढा कर फिर इसमें शहद मिलाय अंजन करेतो नेत्र से पानी जाना बन्द हो ।

❀ अन्य अंजन ❀

निर्मली के [illegible] को शहद में घिस थोड़ा कपूर मिलाय अंजन करेतो

अंजन करै सो तिमिर, नेत्र, मांस वृद्धि, पटल, कींच रतौंधी फूला आदि दूरहों ।

चन्द्र प्रभा गुटिका

हल्दी, नीमके, पत्ते, पीपल, मिर्च, वायविडिंग, नागरमोथा दरहकी छाल सब बराबर ले महीन पीस बकरीके मूत्रमें २ दिन खरल कर गोली बना छाया में सुखावे और इसे गो मूत्रमें घिस अंजन करै तो तिमिर दूरहों जलसे घिस अंजन करैतो नेत्रकी कीच दूरहो शहदमें घिस अंजन करै तो पटल दूरहो स्त्रीके दूधमें घिस अंजन करैतो फूला दूरहो ।

त्रिफलादि घृत

त्रिफला का रस १ सेर, जल भांगरे का रस १ सेर, अडूसे का रस १ सेर, शतावरिका रस १ सेर, बकरी का दूध १ सेर गिलोय का रस एक सेर; आंवले का रस १ सेर, कमल गट्टे, मुलहटी, त्रिफला, पीपला, दाख, मिश्री, कटेली, इनसब का रस आध आध सेर ले इन सब में गौका घृत दो सेर डाले मधुरी आंचसे पकावे जबसब जलकर केवल घी मात्र रहजाय तो घृतको उतारके चिकने बरतन में रख छोड़े यह घृत दो टंक भर नित्य खानेसे नेत्र के तिमिर कीच सबल बायु आदि रोग दूर होवें ।

मोतियाबिन्दकी चिकित्सा में नोट

कच्चे मोतिया बिन्द का जाला शलाकासे नहीं उतारना चाहिये पक्के का जाला शलाका से उतारना चाहिये ।

पक्के मोतिया बिन्दु का लक्षण

नेत्र के तिल के ऊपर दही या मट्ठे के समान बूंद आजाय

रिष्ट भोजन करने न दे इस प्रकारसे ५ दिन करै पीछे थोड़ा घी डाले पतला हलका अन्न का हरीरा खिलावै इस भांति रक्खे नेत्रपर अधिक बल आने वाली कोई वारीक चीज न देखने दें ऐसा करने से मोतिया बिन्दु रोग दूर होताहै ।

यूनानी मतसे नेत्र रोग की चिकित्सा ।

आंखोंमें सात परदे होतेहैं जिनके नाम नीचे लिखेजातेहैं (१) मुलतहिमा, (२) करनिया, (३), इनबिया, (४), इनकबतियां, (५) शबवियां, (६) मसाबियां, (७) सलबियां ।

❀ मुलत हिमा के रोग ❀

यह परदा उन अज़लों से मिला हुआहै जो आंखके ढेले को हिलाते हैं यह करनियां परदेको छोड़कर आंख के सब भागों को घेरे हुए है, इस परदे में ९ प्रधान रोग हैं — यथा [१] रमद [२] तरफ़ [३] जफ़रा [४] सबल [५] इन्त-फ़ाख [६] जसा [७] हुक्का [८] दुका [९] तूसा ।

रमद का वर्णन

मुलताहिमा परदे पर जब सूजन आ जाती है तब उसे रमद अथवा रमद हकीकी कहते हैं रमद कभी उस ललाई को भी बोलते हैं जो आंख में धूल गिरने धूआं लगने या सूरज की गरमीके कारण होजाया करतीहै परन्तु इसमें सू-जन नहीं होती रमद पांच प्रकारका होता है यथाः— (१) रक्तज (२) पित्तज (३) कफज (४) वातज (५) रीहसे उत्पन्न

❀ रक्तज रमद के लक्षण ❀

आंखके इस रोगमें सूजन, ललाई और खिचावट होतीहै

मैल अधिक आता है रगोंको मवाद से भरना कनपटियों में दर्द और धमक तथा रुधिर की अधिकता ये रक्त जरमद के चिन्ह हैं —

रक्तज रमदकी चिकित्सा

हो वपूरकी वत्ती और अफीम आंख पर लगाने ।

❀ कफ़ज रमन का वर्णन ❀

कफज रमदमें आंख बहुत फूल जाती है, वोझ अधिक मालूम देता है, गीड़ आंसू बहुत निकलते हैं, दोनों पलक आपसमें चिपट जाते हैं परन्तु लाली कमहोती है।

❀कफज रमद की चिकित्सा ❀

मलके दूर करने और रोकने के लिये एलुआ, रसौत, अ-काकिया और केसर गुलावमें पीसकर माथे पलक की पीठ पर लेप करे पकाने और निकालनेके लिये धुली हुई मेथीका लुआव और अलसीका लुआव आंखों में डाले, और दो तीन दिन पीछे ज़रूर अवियज़ आंखों में लगावे ।

❀मेथी को धोने की रीति ❀

मेथी को मीठे पानीमें डालकर दो पहर तक रक्खी रहने दे फिर उस पानी को निकाल कर मेथी से वीस गुना पानी डालकर औटावै, जब पानी आधा रह जाय तब लुआव बन जाता है।

❀ ज़रूर अवियज़ के बनाने की रीति ❀

अज़रूत को पीसकर गधा वा लड़की वाला स्त्रियों के दूध में सानकर झाऊ की लकड़ियों पर रख कर ऐसे चूल्हेमें रख दे जो ठंडा होने को हो। जब अज़रूत सूख जाय इस का चौथाई नशास्ता मिलाकर वारीक पीसले और थोड़ी मिश्री भी डाल लेवे ॥

❀वातज रमद का लक्षण ❀

इस रोगमें आंखोंमें खुश्कीपन, भारीपन और रोगोंमें का

बालकोंकी आंखका इलाज

जो किसी बालककी आंख दुखनी आगई होतो नीमकी पत्तियोंका रस बांई आंख दुखती होतो दाहिने कानमें और दाहिनी आंख दुखती होतो बांये कानमें टपकावें ॥

[illegible] का लुआब और धनिये के पत्तों का रस [illegible] में मिलाकर छानले, इसे आंखों में टपकाना हितकारक है॥

उपाय

[illegible] इमली के बीजों को पानीमें भिगो मसल कर छानले फिर उसमें तीन रत्ती अफीम और पांच रत्ती फिटकरी डाल कर किसी लोहे के पात्रमें भरकर आग में पकावें । जब गाढा होजाय, तब इसको शीशीमें धरकर पतला पतला लेप आंखों पर करे । यदि इमली के बीज न मिलें तो [illegible] रसही से काममें लाना चाहिये ॥

उपाय

छालको बकरीके दूध और जल में पकावै। पकने पर छान आंखोंमें टपकावे, इस से दरद दूर होता है।

❀ उपाय ❀

मजीठ, हलदी, लाख, किसमिस, दोनों प्रकारकी मुलहटी और कमलके काढ़ेमें चीनी मिला ठंडा करले इसको आंखोंमें टपकाने से रक्त पित्त के कारण जो आंख दुखनी आई हों तो आराम होजाता है।

❀ उपाय ❀

कसेरू और मुलहटीको पीसकर पतले कपड़े में रख कर पोटली बना लेवै इसे फिर वर्षा के जलमें भिगो भिगो कर आंखा में निचोड़ेतो आंखोंकी गर्मी शान्त हो।

❀ उपाय ❀

सफेद कमल, मुलहटी, हलदी पीसकर पोटली बना लेवे इसे स्त्री वा बकरी के दूधमें बूरा डाल भिगो भिगोकर आंखोंमें निचोड़नेसे दाह, वेदना ललाई और आंसुओंका गिरना बंद होजाता है।

❀ उपाय ❀

सफेद लोध और मुलहटी को घी में भूनकर महीन पीसकर पोटली बना लेवे। इस पोटली को स्त्री के दूध में भिगो भिगोकर आंखोंमें टपकावे तो पित्त रक्त और चोट से उत्पन्न हुए नेत्र के रोग दूर होते हैं।

❀ उपाय ❀

सोंठ, त्रिफला, नीम, अडूसा, लोध, सबका काढ़ा कर

❀ उपाय ❀

अनारकी पत्तियों को पीस टिकिया बनाके सोते समय आंखों पर बांधनेसे बगलगंध दूर हो ।

❀ उपाय ❀

नागर मोथा, मुलहटी, आमला, मकोय, खस, नीलकमल के बीज, प्रत्येक तीन माशे, मिश्री दो तोले इन सबको कूट छानकर इस में से सात माशे प्रतिदिन सेवन करनेसे आंख छाती और पेट की जलन जाती रहती है ।

❀ उपाय ❀

धुली हुई मेथीके लुआब में थोड़ेसे कतीरा मिलाके आंख में टपकाने से शूल नाश होता है ।

❀ उपाय ❀

छिली हुई मुलहटीको कुछ कूट थोड़े पानीमें पीसके उसमें रुई भिगो नेत्रों पर रखने से नेत्रोंकी ललाई जाती रहतीहै

❀ प्रयोग ❀

लोध दो भाग बड़ी हरड़का बक्कल आधा भाग इनदोनों को अनारके पत्तोंके रसके साथ पीस रुई भिगोकर आंखों पर तीन दिन तक लगानेसे सब प्रकारका दर्द जाता रहताहै

❀ प्रयोग ❀

बीस मुंडी निगलजानेसे एक बरस तक और चालीस मुंडी निगलजाने से दो बरस तक आंख दुखनी नहीं आतीहै ।

❀ प्रयोग ❀

जो आंख दुखनी न आईहो और गरमीके कारण खुजली चलतीहो तो त्रिफलाको कूटकर रातके समय पानीमें भिगो

दे और प्रातःकाल उस पानीको छानकर आंखोंपर छींटेमारे।

❀ प्रयोग ❀

सहजने के पत्तों का रस तांबे के पात्र में रखकर तांबे के मूसले से रिगड़े। फिर इसमें घी की धूनीदे आंखमें लगावे तिससे सूजन,दर्द.आंसू और वेदना दूर हो जाते हैं।

❀ प्रयोग ❀

कांसीके पात्रमें तिलके जलके साथ मिट्टीके ठीकरेको पि-सकर उसमें भने हुए नीम के पत्तोंकी धूनी देकर आंखमें लगाने से दर्द, शूल,आंसू और ललाई जाती रहतीहै।

❀ प्रयोग ❀

[illegible] पत्र, नेपला, तगर, लोद चूर्ण, रसौत, चमेलीके फूल की कली, शंख, अफीम और सेंधा नमक इन सबको गौ मूत्र में पीसकर तांबेके पात्र पर लेपकर सात दिन तक रहने दो सात दिन पीछे इस औषधको तांबेके पात्रसे खुरच कर फिर गोमूत्र में पीसकर गोली बनावे। इन गोलियों को छाया में सुखा कर के दूध में घिसकर लगावे तो इससे दर्द, आंसू [illegible], सूजन और खुजली जाती रहती है।

❀ प्रयोग ❀

निकम्मी भाफ के परिमाणु आमाशय से उठकर दिमाग की तरफ चढ़ें, तव रातमें दिखाई देना बंद होजाताहै यदि भाफ के परमाणु दिमाग में ही पैदा होवेहैं तो रतौंध एकही दशा पर स्थित रहती है और जो आमाशय से चढ़कर जाते हैं, तो जो आमाशय हलका होगा तो रतौंध कम होगी और जो आमाशय भारी होगा तो रतौंध अधिक होगी । दूसरी बात यहहै कि आंखकी रतूबत और तरी रातकी ठंडी हवा के कारण गाढ़ी होकर देखनेकी शक्ति को ढक लेतीहै और सुर्य के प्रकाश से दिन की हवाके कारण वह रतबुत हल. की होकर दूर होजाती है और दृष्टि साफ हो जातीहै ।

❋ रतौंध का इलाज ❋

जो भाफके परमाणु और रतुवत इकट्ठे होकर दृष्टिम- मंडल को रोक लेतेहैं उनको साफ करनेके लिये काली मि- रच, नक छिकनी, जुन्दवेदस्तर और फलवा इनको पीसकर सुंघावै जिससे छींक आकर दिमाग साफ होजाय ।

❋ रतौंध पर वफारा ❋

सौंफ, सोया, बबुना, केसुन, दोना अरुआ, नम्माम और तुलसी इनको पानी में औटाकर इस पानी का आंखोंको वफारा देवै ।

❋ दूसरा वफार ❋

बकरी की कलेजी, सौंफ और पीपल, इन तीनों को हांडी म भरकर पानीके साथ औटावै और इस पानीका वफारादे

❀ तीसरा बफारा ❀

केवल बकरीकी कलौंजी को आगपर रखकर आंखोंको धूआं देना भी विशेष लाभदायक है।

भोजनके साथ हींग, पोदीना, राई, मातरा और अजवान का अधिक सेवन करना भी गुण कारक है।

❀ अन्य उपाय ❀

दही में काली मिरच घिसकर आंखों में आंजने से रतौंध जाती रहती है।

❀ अन्य उपाय ❀

कंजा, कमल, सोनागेरू और कमलकेसर इनको गोबर के रसमें पीसकर लम्बी सलाई बना लेवें, इसको आंखोंमें फेरनेसे रतौंध जाती रहतीहै।

❀ अन्य उपाय ❀

बकरी की कलेजी में पीपलों को रखकर आग पर ऐसी रीति से सेकें कि जलने न पावे। फिर उस पीपलको जल में घिसकर आंखोंमें लगावे. इससे रतौंध जाता रहता है।

❀ दिनौंध का वर्णन ❀

जिस रोग में दिन में दीखना बंद हो जाता है और रात में या बादल वाले दिन दिखाई देने लगता है उसे दिनौंध कहते हैं। इस रोगका यह कारण है कि गरमी के कारण

❀ दिनौंधका इलाज ❀

स्त्री का दूध, वनफसा का तेल, कद्दू का तेल नाकमें डा
ले। रीवास का पानी, नीलोफरका शर्बत, बनफशाका शर्बत,
उन्नाव का शर्बत पिलावै, शीतल जलमें डुबकी लगा पानी
के भीतर आंख खोलना हितकर है।

❀ आंखमें गिरी हुई वस्तु का वर्णन।

जब वायुसे उड़के धूल का कण, रेलका कोयला तिनुका
आदि कोई सूक्ष्म वस्तु आंख में गिर पड़े तो आंखमें कडका
होने लगताहै, अश्रुपात होताहै, खुजली चलतीहै, और पल
कोंके चलानेके साथ वह चीज़ भी इधर उधर घूमतीहै, इस
से बड़ी बेचैनी होती है।

❀ उक्त दशामें कर्तव्य ❀

यदि आंख में कोई वस्तु गिरपड़ी होतो उसे हाथोंसे न-
हीं मलना चाहिये क्योंकि जो आंख में कोई कठोर वा नो
कीली वस्तु जैसे कांच वा लोहेका टुकड़ा पड़ा हो और
हाथसे मली जायतो ऐसा होजाताहै कि वह चीज आंख
में घुसकर घाव पैदा करदेती है।

उक्त दशामें उपाय।

(१) आंखको गरम पानी से धोकर उसमें स्त्री का दूध
डालना उचित है (२) पलकको उलट कर देखे कि वह व-
स्तु आंखमें कहां पड़ीहै, यदि दिखाई देती हो तो धुनी हुई
रुई के फाये से, वा रूमाल के सिरेसे जैसे हो तैसे उस वस्तु
को उठा लेना चाहिये, इस पर न उठे तो रुईके फाये को
थोडी देर आंखमें रक्खा रहनेदे इस तरह करनेमें वह चीज़

उस रुई के फाये से चिपट जाती है तब उसे निकाल ले।

जो वह चीज बहुत भीतर घुसगई हो और इन उपायों से न निकल सके तो निशास्ता महीन पीसकर आंख में भरदे और थोड़ी देर तक बंदी रहने दे, थोड़ी देरमें वह चीज निशास्ते में लग जायगी तब उसे रुई के फाये से बाहर निकाल ले।

जब जौ वा गेहूं की बाल के ऊपर का तिनुका वा कांच का टुकड़ा वा और कोई ऐसी चीज आंख में गिर पड़ी हो तो उस यंत्र से खींच लेना चाहिये जो इसी काम के लिये बनाया जाता है ॥

निकालने के पीछे स्त्री का दूध वा अंडे की सफेदी आंखों में डाल देनी चाहिये ॥

चमेली की गोली।

चमेली के फूलों की डंडी में समान भाग मिश्री मिलाकर पीसके इसको नेत्रोंमें लगानेसे ज्योति बढ़ती है ॥

* अन्य प्रयोग *

[illegible] की [illegible] के चूर्ण को नीबू के रसमें घोट कर गोली बनाले, प्रातःकाल इस गोली को थूक में घिसकर आंखों लगाने से दृष्टि बढ़ती है।

हरी कारण से होताहै उसका इलाज होसकता है ।

जो कोएका मांस सब का सब या बहुत सा कट गया हो तो शियाफे जाफरान आंखमें लगावै तथा एलुआ, कुंदरू गोंद, आदि वे दवा जो मांस पैदाकरनेवालीहैं लगानाउचितहै।

शियाफे ज़ाफरान के बनाने की विधि।

केसर और बालछड सात सात माशे, पीपल साढ़े तीन माशे, सफेद मिरच नौ रत्ती, नौसादर पौने दो माशे, माजूफल साढ़े दस माशे, कपूर तीन रत्ती, इनको कूट छानकर गुलाब में गूंदकर सलाई बना लेवै ।

❀ ढलके का सुरमा ❀

नीलाथोथा और हरड़की छाल इन दोनोंको अलग अलग खरल करके समान भागले और इनको खट्टे अंगूर के अरक में भिगोकर सुखाले और पीसकर रखले ।

गरमीसे उत्पन्न ढलके का इलाज।

धुला हुआ शादनज नीलाथोथा और सोनामक्खी प्रत्येक साढ़े तीन माशे, मोती और मूंगेकी जड प्रत्येक पौने दो माशे शियाफ मामीसा और एलुआ प्रत्येक नौ रत्ती इनको कूट छानकर सुरमा बनाकर लगावै ।

ठंडे ढलके का इलाज।

काली मिरच नमकसंग हरएक साढ़े तीन माशे पीपल सात मासे, समुद्रफेन पौने दो मासे, और इन सब दवाओंसे तिगुना सुरमा डालकर सबको कूट छानकर अंजन बना लेवै।

आंखकी निर्बलताका उपाय।

पीली हरडकी गुठली की राख, नमकसंग और माजू इन

दो तरह से होता है, एक जन्मसे, दूसरा जन्म लेने के पीछे
जो जन्म से होता है उसका इलाज कुछ नहीं है।
जन्म लेनेके पीछे कंजेपन के सात कारण हैं,जो कंजापन
ठंडी प्रकृति से हुआ हो तो कड़वे बादामका तेल,वेद अंजी-
रका तेल नाकमें सूंघना चाहिये,तथा शादनज,पीपल और
पीली हरड़ आंख में लगावै,जो गरम प्रकृति हो तो काला
सुरमा तथा बंशलोचन आंख में लगाना गुण कारक है।
गुलरोगन नाकमें डालना बहुत गुण कारक है चाहे कंजा
पन ठंडी प्रकृति से हो,चाहे गरम से।
कंजेपन को दूर करने के लिये केसरका तेल आंखमें डा-
लना बहुतही गुणकारकहै चाहे कंजापन किसी कारणसे हो।
इन्द्रायण के ताजेफल के भीतर सलाई करके उस सला-
ईको आंखोंमें फेरने से कंजापन दूर हो जाता है इससे बि-
ल्लीकी सी आंखभी काली होजाती है।
जो रोग खुश्की से होताहै उसमें दिखलाई देना बिलकुल
बंद होजाता है इसमें जहांतक बने तरी पहुंचाने का उपाय
करना चाहिये।

❀ आंखके बाहर निकल आने का वर्णन ❀

इस रोग के तीन कारण हैं, एक तो यह है कि बादी के
मवाद के आंख में इकट्ठा होजाने से आंखका ढेला बाहर
को निकल पडता है,इसमें मवादको निकालने वाली दवाएं
काम में लावै,फिर शियाफ सिमाक लगावै।

❀ शियाफ सिमाक की विधि ❀

सिमाक को पानी में औटाकर छानले और इस छनेहुए

आकर करानियां परदे तथा रतूबत वैजिया के बीज में ठहर
जाती है यही छेद प्रकाश के आने जाने का मार्ग है। जब
इस छिद्र का जितना भाग उक्त रतूबत से बंद होजाता है,
उतनी ही आंख की दृष्टि नष्ट हो जाती है.और शेष खुले
हुए भाग से यथावत् दिखलाई देता है इस रोग के कारण
और लक्षण बहुत से हैं, पर वे सब विस्तार भयसे यहां नहीं
लिखे गये हैं।

*** वचकी माजून ***

वच, हींग, सोंठ और साफ इन चारोंको समान भाग लेकर कूट छान कर शुद्ध सहत में मिलाले,इसमें से प्रति दिन प्रातः काल चार माशे सेवन करे।

*** हब्बुज्जहबके बनानेकी विधि ***

एलुआ ३ तोला, तुर्बुद २ तोला,मस्तगी, गुलाबके फूल प्रत्येक नौ नौ माशे,केशर २ माशे,पीली हरड़ ७ तोला,सकमूनिया १ तोला इसकी मात्रा ९ माशे है, इसकी गोलियां बना लेना चाहिये।

*** अन्य उपाय ***

दोना मरुआ,कलौंजी और चमेली सूंघना,तथा दोना-मरुआ का तेल सिर पर लगाना लाभदायक है।

*** अन्य उपाय ***

ये सब दवा अलगर आंख में आंजने की हैं। (१) निंबोली शहत में पीसकर (२) प्याजका रस शहतमें मिलाकर (३) गांवकी मिंगी दो भाग अफीम एक भाग, इसको चिं[illegible] पीसकर (४) [illegible] शहत [illegible]कर (६) [illegible]
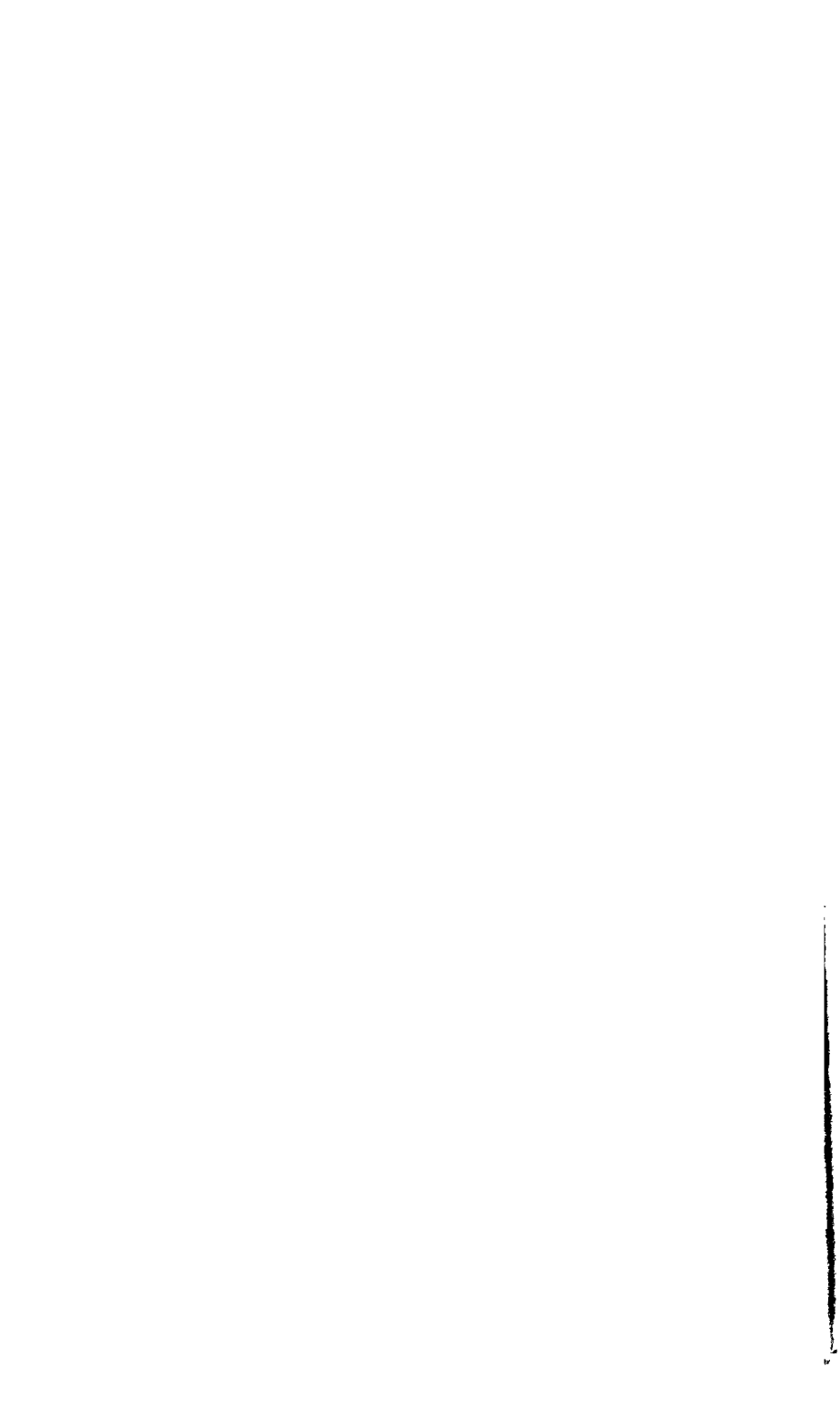
मवाद इकट्ठा हो जाताहै वह कभी नाककी तरफ फूट नि-
कलताहै औरकभी पलककी खालको फाडकर बाहर निकाल
आताहै,तथा पलकको दाबनेसे राध निकल पड़तीहै । एक
प्रकारका ऐसा नासूर होता है जिस में पीब बाहर नहीं
निकलती भीतरही भीतर दरद होता रहता है ।

❀ नासूरका इलाज ❀

घावके इलाजके अनुसार देह को मवादसे पाक करके
नासूर पर शियाफ गर्व लगाना चाहिये । इस दवाके लगाने
से पहिले घाव को रूईसे पोंछकर साफ करलेना चाहिये
और सड़े हुए मांस को अस्त्र से वा जंगारी मरहमसे काट
कर साफ कर दे । बिना काटे दवा लगानेसे कुछ न होगा
इससे आराम न हो तो नासूरकी जगह गरम लोहेसे दाग
कर मरहम असफदाज लगा देना चाहिये ।

❀ शियाफगर्वकी रीति ❀

एलुआ.कुन्दरूगोंद, अंजरूत, दम्मुल, अखवैन, अनारके
फूल.सुर्मा,फिटकरी, इन सबको एक एक तोला, जंगार ३
माशा इनको पीसकर गोली बना लेवे और अवश्यकताके
समय पानीमें घोलकर दो तीन बून्द आंखमें टपकावे ।
जब तक सूजन फूटी न हो तब तक मामीसा, केसर,मुर
एलुआ,जली हुई सीपी,इनमें से जो मिलजाय इसीको हरी
कासनी के पानी में मिलाकर लेप करे ।

❀ अन्य उपाय ❀

(१) उरदको चबाकर नासूर पर लगाना गुणकारक है।
(२) कुटी हुई मटर को शहत में मिलाकर लगाना(६)है।

कर कपडे में छानकर लगावे (७) सफेद कत्था और पकु
आ इनको पीसकर नासूर पर रक्खे (८) गिलोय और
हल्दी दोनोंको कूटकर मीठेतेलमें औटाकर कपडेमेंछानकर
नासपर लगावे (९) शहतको औटाकर समुद्रफेन मिलाकर
उसमें रूईकी बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे (१०) त्रिनी
हुई मसूर और अनारका छिलका दोनोंको समानभागपीस
कर लगावे (११) रसौत, गेरु, जवाहरड़ और पोस्तके डोरे
इनको पीसकर लगावे (१२) हीरा हींग को सिरकेमें घोट-
कर गुन गुना करके लगावे ।

❀ मरहम असफेदाज ❀

चारतोले रोगनगुल में एक तोले मोम पिघला कर इसमें
इतना सफेदा मिलावे कि मिलकर एकगोलासा बनजायाफिर
इसमेंअंडेकी सफेदी मिलादे । कभी कभी थोडासा कपूरभी
मिलादेते हैं । दूसरीविधि यहहै कि केवल सफेदा सफेदमोम
और रोगनगुल इन तीनोंकोही मिलाकर मरहमबनालेतेहैं

❀ नाखुनाका वर्णन ❀

यह रोग आंखके बडे कोएकी तरफ पैदा होता है, कभी
कभी छोटे कोएकी तरफ वा दोनों ओर से होताहै यहां तक
कि पुतलीको भी ढकलेता है । इस रोग पर शियाफ बीभज
शियाफ दीनारगू, ये दवायें काम में आती हैं ॥

❀ शियाफ बीभज के बनाने की रीति ❀

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ८ मासे, नांद्रीकाअेल
७ मासे, छबीला, कुन्दरगोंद, औरपीपल प्रत्येक २ मासे इ-

न्त निकाल देना चाहिये, यदि कोई कण आंख के परदे पर जमगया होतो आंख में कोकीन लोशन डालकरआंख को पथरा लें फिर किसी बारीक चिमटीसे सावधानी से इस कण को निकाललें यदि आंख में अनबुझा चूना गिर गया होतो तुरन्त आंख को साफ पानीसे पिचुकारी द्वारा धोकर शीतल जलकी गद्दी आंख पर रक्खें अथवाआंख धोने के पश्चात् चार बूंद ग्लीसरिन की आंख में डालदें, यदि लोहेका रेजा आंख में जापडा होतो चुम्बक पत्थर आंख के निकट लेजाय उस रेजे को खैंच लेगा यदि रूष्ण जल तथा अग्निसे नेत्र दग्ध होजायतो रोगन जैतूनऔर चूनेका पानी समभाग मिलाकर उसमें कपडे की गद्दीभिगो कर नेत्र पर रक्खें और उसे तर करते रहें ॥

(२) नेत्र पर चोट लगजाना

यदि चोटसे भौं वा पपोटेपर घाव हो गया होतो स्वच्छ सूत तथा रेशमके तार से सीकर बोरक लोशन से लिन्ट तर करके चोट पर रक्खें यदि जलन होतो कनपटी पर जोंक लगवावें यदि आंखका डेला फूट जाय तो तुरन्त किसी आंखके डाक्टर वा जर्राह से इलाज करावें ॥

(३) आंखका दुखना

रोगीकोरोशनीऔर गर्मीसे बचाकर अन्धेरे कमरेमेंरक्खे अथवानेत्रोंपर हरा या कालाकपडा रक्खेया आंखपरोडकगावे एक एक दोदो घन्टे पीछे नीम गर्म साफ पानी से या हल्के बोरक लोशन से पिचकारी की पिचकारी द्वारा पलक को खोलकर आंखको अच्छी तरह धोते रहें, मैला का

पलकों के किनारों पर थोडीसी वेजीलीन या बोरिक आ-
इन्ट मेन्ट लगा देना चाहिये।

विदित होकि आंखों को जितना साफ रक्खा जायगा उ-
तनाही जल्दी आराम होगा खाने को हलका और जल्द
पचने वाली वस्तु देनी चाहिये गरिष्ट ऊष्ण और वादी
पदार्थों के सेवनसे तथा खटाई और मिठाईसे परहेज करें।

(४) पीपदार, सोज़ाकी अथवा रोहे वाला नेत्ररोग ॥

इन रोगों में पलकों केभीतर छोटे२दाने पैदा हो जाते हैं
आंखकी झिल्ली खुरदरी हो जातीहै और ढीढ निकलती
रहती है यह रोग अधिक पीडित करता है यदि इलाज में
गफलत होजाती है तो धुन्ध होकर दृष्टि बिगड जाती है
इस रोग में स्वास्थ्य रक्षा के नियमोंका भली भांति प्रति
पादन करना चाहिये, और आहार विहार में अधिक साव
धानी रखनी चाहिये:—

प्रथम आंखों में ४ग्रेन प्रति औंसवाला कोकीन लोश
न डालकर और पलकोंको उलट कर (१) कापरसल्फा
स्ट या (२) पांच से बीस ग्रेन प्रति औंसवाला कास्टिक
लोशन पलकों को उलट कर ब्रुशसे लगायें और फिर
आंखों को शीतल जल अथवा बहुत कमज़ोर नमक के
जल से धो डालें और आरगाईरोल लोशन २० सैकडे
वाला सेवन करें।

(नोट) इनमेंसे जो औषधि सेवन करना हो वह प्रत्येक
दिवस सेवन न करें बरिक दूसरे वा तीसरे दिन करें। [illegible]

पलकों के किनारों पर थोडोसी बेजीलांन या बोरिक आ·
इन्ट मेन्ट लगा देना चाहिये।

विदित होकि आंखों को जितना साफ रक्खा जायगा उ-
तनाही जल्दी आराम होगा खाने को हलका और जल्द
पचने वाली वस्तु देनी चाहिये गरिष्ट ऊष्ण और बादी
पदार्थों के सेवनसे तथा खटाई और मिठाईसे परहेज करें।

(४) पीपदार, सोज़ाकी अथवा रोहे वाला नेत्ररोग ॥

इन रोगों में पलकों केभीतर छोटे२दाने पैदा हो जाते हैं
आंखकी झिल्ली खुरदरी हो जातीहै और ढीढ निकलती
रहती है यह रोग अधिक पीडित करता है यदि इलाज में
गफलत होजाती है तो धुन्ध होकर दृष्टि बिगड़ जाती है
इस रोग में स्वास्थ्य रक्षा के नियमोंका भली भांति प्रति
पादन करना चाहिये, और आहार विहार में अधिक साव
धानी रखनी चाहियेः—

प्रथम आंखों में ४ग्रेन प्रति औंसवाला कोकीन लोश
न डालकर और पलकोंको उलट कर (१) कापरसल्फा
स्ट या (२) पांच से बीस ग्रेन प्रति औंसवाला कास्टिक
लोशन पलकों को उलट कर बुर्शसे लगायें और फिर
आंखों को शीतल जल अथवा बहुत कमज़ोर नमक के
जल से धो डालें और आरगाई रोल लोशन २० से हद
वाला सेवन करें।

(नोट) इसमेंसे जो औषधि सेवन करना हो वह प्रत्येक
दिवस सेवन न करें बल्कि दूसरे या तीसरे दिन करें।

चिकित्सा है कि जिस स्थानपर गुहेरी निकलनेकी सम्भावना हो वहांसे पलकोंके एक दो बाल उखाडदे अथवा ठंडे पानी की गद्दी वहां रक्खे वा बर्फ लगावे या २० ग्रीन वाला कास्टक लोशन लगावे यदि फुंसी निकल आवे तो ऊष्ण जलसे या पोस्त के जोशांदे से सेके या पुलटिस बांधे यदि पीप पडजाय तो चीरकर साफ करें और बोरिक लोशनसे खूब धोकर जिंक आइंटमेन्ट जो वैजलीन में बनाया गयाहो लगावें यदि बारबार गुहेरी निकले तो रोगीको एक वा दो जुलाब देने चाहिये पीछे कैलसियम सलफाइड की आधे ग्रीन की गोली दिनमें ३ बार दें और अच्छा भोजन हवा खोरी और नित्यके स्नान से शरीरको शुद्ध रक्खें तब यह रोग दूर होजायगा।

वैद्यक मतसे दांतों के रोगों का वर्णन।

दांतों में निम्न लिखित रोग हुआ करतेहैं:-(१) दालन (२) कृमिदन्तक (३) भंजनक (४) दन्त हर्ष (५) (६) कपालिका (७) श्यावदन्त (८) कराल और (९) हनुमोक्ष इनके लक्षण इस प्रकार हैं।

(१) दालन।

इसरोग में दांतके टूटने के समान पीड़ा होती है, यह रोग वायुके कोप से होताहै।

(२) कृमि दंतक

इसरोगमें दांतों में काले छिद्र होकर दाह होतीहै तथा उनमें से कुछ रुधिर निकलताहै और सूजन होतीहै और बिना कारणही वायुकी सी पीड़ा होती है।

दन्त रक्षक लाक्षादि तैल।

लाख का रस, तिल का तेल, गौका दूध, एक एक पाव, पा-
ठीन लोध, कायफल, मजीठ, कमलगट्टे, कमलकी केसर लाल
चन्दन, मुलहठी इन्हें एक एक टके भर, काढ़ा करे काढेमें
मधुरी आंचपर तेल पकावै जब सब जलकर तेल मात्र रह
जाय तो उतार के रखले इस तेलको घड़ी भर मुख में रक्खे
इससे दांत के समस्त रोग जाते हैं।

कृमि नाशक औषधि।

हींग को थोड़ा गर्म कर दांतों के बीच में भरे तो दांतों
से कृमि नाश हो

❀ अन्य औषधि ❀

काग लहरी, नील की जड, कड़वी तुंबी. इन्हें महीन पीस
दांतों पर मलै तो कृमि दूर हों।

❀ अन्य (मंजन) औषधि ❀

सांभर नमक, नरकचूर, सोंठि, अकरकरा, इन्हें महीन पीस
दांतों में मर्दन करै तो दांतों की खटाई दूरहो।

❀ अन्य मंजन ❀

पांचों नोंन, नीलाथोथा, सोंठि, मिर्च, पीपल, पीपलामूल,
हीरा कसीस, माजूफल, वायविडिंग, इन्हें बराबर ले महीन
पीस दांतों पर मर्दन करे तो दांतके समस्त रोग दूरहों।

❀ मिस्सी ❀

हीरा कसीस, माजूफल, लोहे का चूर्ण, सोना मक्खी, म-
जीठ, फुलाई फिटकरी, त्रिफला, इन्हें महीन पीस कजल सु-

वैदर्भ, (९) खालि वर्द्धन, (१०) आधिमांस, (११) पं-
चनाडी (१२) दन्त विद्रधि ।

❀ रोगों के लक्षण ❀

(१) अकस्मात मसूढे म बदबूदार और काला रुधिर
निकले और मसूढे नरम होजांय, पकने लग, इस प्रकार
कफ तथा रुधिर के दूषित होने से रोग उत्पन्न होता है उसे
शीतादिक कहते हैं ॥

(२) मसूढों में सूजन बहुत हो जांय उसे पुप्पुटरोग कहते
हैं यह कफ रुधिर के कोप से होता है ॥

(३) जिस मसूढे म राध मिश्रित रुधिर निकले दांत
हिलने लगें उसे दन्त वेष्टि कहते हैं।

(४) मसूढे में पीडा सहित सूजन हो कर गिरे और
खाज हो उसे सौषिर नामक रोग कहते हैं और यह कफ
वायु से होता है ॥

(५) दांत हिलने लगे और तालु बैठ जाय वा तालु में
छिद्र होजाय तो उसे महा सौषिर रोग कहते हैं और यह
सन्निपात के कोप से होता है ॥

(६) जिसमें दांतके मसूढे सूज जांय और रुधिर निकले यह
पित्त रुधिर और कफ से होता है इसे परिदर रोग कहते हैं।

(७) मसूढे में दाह होय तथा पक जांय दांत हिलने लगें
मसूढे के दबाने से रुधिर निकले और उसमें पीडा न हो
तथा मसूढे में दुर्गन्ध आवे यह पित्त रुधिर से होता है उसे
उपकुश रोग कहते हैं।

(८) चोट लगने अथवा रगड़ लग जाने से मसूढे में सू-

छाल इन्हें महीन पीस मसूढे पर मलना चाहिये ॥

(२) नागर मोथा, हरडकी छाल, सोंठ, मिर्च, पीपल बाय बिडिंग, नीम के पत्ते इन्हें महीन पीस गोमूत्रमें गोली छायामें सुखाय सोते समय मुँहमें रक्खे।

(३) नीलेफूल का कटसेला, धमासा, खैरसार, जामुन-कां छाल, आमकी छाल, मुलहटी कमल गट्टे इन्हें दोदो टके भर ले १६ सेर पानी में औटावै; चतुरांश रहने पर तेल वा बकरीका घी मधुरी आंच से पकावे जब जलके केवल घी वा तेल रहजाय तो उतार के रखले और दो घडी मुख में रक्खे तो दांत मजबूत हों ॥

(४,५)सौषिर और महा सौषिर रोगोंकी चिकित्सा।

(१) इस रोगमें मसूढे का रुधिर निकलना के लोध नागर मोथा- रसौत को महीन पीस शहद में मिलाके लेप कर पीछे दूधसे कुल्ली करे।

(६,७) परिदर और उपकुश रोगोंकी चिकित्सा

(१) प्रथम मसूढे का रुधिर निकलवाय फिर सोंठि. सरसों त्रिफला के काढा की कुल्ली करें।

❀ (८) वैदर्भ रोगकी चिकित्सा ❀

गूलर के पत्ते, नमक शहद, सोंठि, मिर्च, पीपल इन्हें औटाकर काढा बनावे और इस काढेसे कुल्ली करे फिर मसूढे पर नमक पीसकर लगावे।

(९) खालि, वर्द्धन अधिक [illegible] रोगकी चिकित्सा।

इसरोग में शहद [illegible] कुल्ली करे और तेल [illegible]

चिकित्सा।

जब दांतों में छिद्र होगया हो और पीड़ा अधिक हो दर्द के स्थान को ऊष्ण जल या कारबालिक लोशनसे धोकर पोंछ लिया जाय फिर निम्न लिखित औषधियोंमें से किसी एक औषधि का प्रयोग कियाजाय।

औषधि।

(१) कार बालिक एसिड १ ड्राम, रेक्टी फाइड स्पिरिट १ ड्राम, दोनों मिलकर रुई की फुरेरी उसमें डुबोकर उस फुरेरी को दांत में जहां छिद्रहो भर दें।

(२) क्लोरो फार्म में काफूर या मस्तगी को मिलाकर उसमें रुई तर करके दांतकी सन्धि में रक्खें तो तत्काल दर्द दूर होजाता है।

(३) टिंक्चर आयुडियन और टिंक्चर एको नाईट दोनों को समान भाग लेकर मिलाके लगाना चाहिये यह औषधि मसूड़ेको साफ करकेरुईकेद्वारा उसपर मलनाचाहिये

(४) रुईकी फुरेरीसे निम्न लिखित औषधि भी लगाई जाती है (१) ईथर (२) लौंगतेल (३) दारचीनी का तेल (४) किरसो जूट इत्यादि—

दांत का उखड़वाना।

यद्यपि दांतों के दर्द में और हिलने में दांत का उखड़वा देना एक मामुली बात होरही है परन्तु बहुतेरे डाक्टरों का यह मतहै कि जबतक औषधि के सेवन से रोगके दूर होने की आशाहो तबतक दांत हरगिज नहीं उखड़वाना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से कभी२ दांत टूट कर मुंह [illegible]

यूनानी मतसे दांतों की चिकित्सा।

से दर्द
यदि दांत पुगने हों और उन में छिद्र हो जाने
होता हो तो उसे साफ कर के उसमें काफूर और अफयून
समभाग मिलाकर भरदे या अकरकरहा या वाय विडिंग
कान्ली या भंगका बीज, या पियाजका बीज वारीक पीस
कर और ज़रासी रुई में लपटकर उसे गर्म पानी से भिगो
कर दांत के छिद्रमें भरदे या लौंगका तेल या दारु हल्दी
का तेल या अंजीर का दूध इत्यादि लगावे अगर एक या
कई दांतों में पट्ठों का दर्द हो तो गहूंकी भुसी, वाबूनाका
फूल और नमक एक पोटली में डालकर उसे तवे पर गर्म
करके उस से बाहर जबड़े पर सेक करे और अकर करहा
पोदीना, काली मिर्च, प्रत्येक एक २ माशे पीसकर दांतोंपर
मले वाबूना खतमी, मकोटा, अलसी, कोकनार हर एक तीन
तीन माशे आधसेर पानी में काढ़ाकर कुल्ली करे।

उस्त खद्दूस, गाव ज़बान, हंसराज, शाहतरा, अलसी, हर
एक ५ माशे, उन्नाव ७ माशे, सबको पावभर पानीमें औटा
इसमें दीनार का शर्बत मिलाकर पिलावे यदि ग्रंथि आदि
से दर्द हो तो उचित चिकित्सा करे।

दांतों के रोगोंका इलाज

जो दांतों की जड़में गरमी मालूम हो, और मुखमें टेढा
पानी भरने से रोगोंको चैन पड़े, तथा मसूड़े लाल हो जांय
और उनमें सूजन न हो तो सिरका गुलाब मुखमें रखना
चाहिये, यदि दर्द भी अधिकता हो तो सिरके और गुलाब

दांतोंके कीड़ों का इलाज

गंदना के बीज, खुरासानी अजवायन, और प्याज के बीज इनको महीन पीसकर मोम अथवा बकरी की चर्बी में मिलावें, फिर इसको आगपर रखकर इसके धूंएको एक नली द्वारा दांतोंपर पहुंचावे, इससे कीड़े मर कर गिर पड़ते हैं और दरद कम होजाता है।

दांतोंको रक्षाके दस नियम

(१) अजीर्णकारक भोजन, बहुत भोजन, दूध और मछली आदि विपरीत भोजन इत्यादि न करना (२) वमन कराने वाले द्रव्यों का अधिक सेवन न करना (३) सुपारी बादाम, अखरोट, आदि कठोर पदार्थों को दांतों से न चबाना (४) मिठाई आदि अन्य कठोर वस्तुओं का त्याग (५) दांतों को खट्टा करनेवाले पदार्थों का त्याग (६) गरमके पीछे ठंडी और ठंडीके पीछे अत्यन्त गरम वस्तुओं का सेवन न करना (७) दांतोंकी प्रकृतिके अनुसार हानि पहुंचाने वाले द्रव्योंका त्याग (८) भोजन करनेके पीछे दांतोंको खूब साफ करना (९) प्रतिदिन प्रातः काल पीलू जैतून आदि नरम और कड़वी लकड़ीकी दांतन करना और इतना अधिक दांतोंको न रिगड़ना कि जिससे मसूड़े छिल जांय वा दांतोंकी चमक जाती रहे (१०) सोते समय दांतों पर तेल लगाना, गरम प्रकृतिमें गुलरोगन और ठंडी प्रकृति में बकायन वा मस्तगीका तेल चुपड़ना

दांतोंकी खटाई दूर करने का उपाय

... और तुलसी चबाने से दांतोंकी

❀ दांतोंके कीड़ों का इलाज ❀

गंदना के बीज, खुरासानी अजवायन, और प्याज के
बीज इनको महीन पीसकर मोम अथवा बकरी की चर्बी
में मिलावे, फिर इसको आगपर रखकर इसके धूंएको एक
नली द्वारा दांतोंपर पहुंचावे, इससे कीड़े मर कर गिर पड़ते
हैं और दरद कम होजाता है ।

❀ दांतोंकी रक्षाके दस नियम ❀

(१) अजीर्णकारक भोजन, बहुत भोजन, दूध और
मछली आदि विपरीत भोजन इत्यादि न करना (२) वमन
कराने वाले द्रव्यों का अधिक सेवन न करना (३) सुपारी
बादाम, अखरोट, आदि कठोर पदार्थों को दांतों से न च-
बाना (४) मिठाई आदि अन्य कठोर वस्तुओं का त्याग
(५) दांतों को खट्टा करनेवाले पदार्थों का त्याग (६)
गरमके पीछे ठंडी और ठंडीके पीछे अत्यन्त गरम वस्तुओं
का सेवन न करना (७) दांतोंकी प्रकृतिके अनुसार हानि
पहुंचाने वाले द्रव्योंका त्याग (८) भोजन करनेके पीछे दां-
तोंको खूब साफ करना (९) प्रतिदिन प्रातः काल पीलू औ
तून आदि नरम और कड़वी लकड़ीकी दांतन करना और
इतना अधिक दांतोंको न रिगड़ना कि जिससे मसूड़े छिल
जांय वा दांतोंकी चमक जाती रहे (१०) सोते समय दांतों
पर तेल लगाना, गरम प्रकृतिमें गुलरोगन और ठंडी प्र
कृति में बकायन वा मस्तगीका तेल चुपड़ना

❀ दांतोंकी खटाई दूर करने का उपाय ❀

खुर्फाकी पत्ती, इमली और तुलसी चबाने से दांतोंकी

❀ दांतों के हिलने का उपाय ❀

जो दांत बुढ़ापे के कारण हिलने लग गया हो तो उसका इलाज कुछ नहीं हो सक्ता है । और जो युवावस्था में तरी के नष्ट होने से दांत हिलने लग जाते हैं तो तर और चिकनी चीज दांतों पर मलता रहे और गुलाब के फूल, वंसलोचन, मसूर, कस्तूरी, छोटी मांई, इनको महीन पीसकर दांतों की जड़ में बुरकना चाहिये ।

❀ बच्चोंके दांत निकालने का उपाय ❀

जिस बच्चे के दांत निकलने को हों तो मसूड़ों पर कुतिया का दूध मलने से दांत जल्दी निकल आते हैं जो दांत निकलते समय दर्द की अधिकता हो तो हरी मकोयको पानी और गुलरोगन गरम करके उसको उंगली पर लगाकर बालक के मसूड़ोंपर मले और जब दांत निकलने लगें तब फिर गर्दन, कानों की जड़ और नीचे के जाबड़ों पर चिकनाई लगाता रहे तथा तेल गुनगुना करके उसकी एक दो बूंद कानमें डाल दिया करे ।

❀ मसूड़ों की सूजन का उपाय ❀

जो मसूड़े सूजगये हों तो मसूर, सूखा धनिया अनार [illegible] लालचंदन सुपारी और सिमाक़ को पानीमें औटाकर इस पानीसे कुल्ले करावे, सूजन के कम होजाने पर जो सूजनका असर बाकी रहे तो बादामका तेल और गुलरोगन गरम पानी में मिलाकर इससे कुल्ले करे, जो पित्तके कारण से सूजन होती है तो अंगुलीके दबाने पर गढ़ा पड़ जाता है और अंगुली हटाने पर ज्योंकी त्यों होजाती है, इसमें हड़ को

यदिरोगी छोटा लड़का है या अति दुर्बल है तो फस्त नहीं खोलना चाहिये बल्कि पछने लगाकर रुधिर निलवादेना चाहिये; पित्तपापड़े आदिसे तबियत नरमकरना और हल्के पदार्थों का भोजन करना चाहिये, जब मवाद दूर होजावे तब हल्दी, कड़वा बादाम, अनारके फूल, रातीनज, जलाहुआ कागज, माजू अधीरा, के पत्ते, लीला सोसनकी जड़, अकाकिया, कमीला इन्हें सम भागले महीन पीस सिर्का या गुलरोगनमें मिला सिरपर लेप करना चाहिये अथवा हल्दी अनारकी छाल, मुर्दासन महँदी. इन्हें महीन पीस सिर्का या गुल रोगन में मिला लेप करै यह अति गुणकारी है।

सूखी गंजकी चिकित्सा।

सूखीगंजमें सिरके ऊपरसे सफेद झिल्ली उतरतीहै और इसका कारण वादी वाला दोषहै जो खारी तरीमें मिलकर खालमें आजाताहै इसकी चिकित्सा इसप्रकार करनी चाहिये वादीके निकालनेके लिये आकाश बेल, हड़, और पित्त पापड़े का काढ़ादें, और शरीरमें तरी पहुँचाने वाला भोजन करें तथा गर्म पानी अल्सी, खतमी के बीजका लुआब गंजपर डालना ओरमोमका तेल, मुर्गी और बतककी चर्बी लम्बी घीयाका तेल, मीठे बादाम का तेल, बनफ्शा का तेल, और नीलोफरके तेलसे उनको चिकना रखना चाहिये और यही तेल नाक और कानमें डालना चाहिये इनसे अधिक लाभ होताहै तथा फिटकरी, नमक, गूगल एक भाग गुरुर, महुआ, पारा, माजू, हल्दी, अरमन्द, मुर्दासन दो दो भाग सिर्के और गुलरोगन में मिला के अंजन कर सिरपर लेप करना गुणदायक है।

(९) परासके पत्ते पीसकर टिकिया बनाकर फडुवे तेल में जलाकर छानकर गंज पर मलै ।

(१०) धनियां को सिकेंमें पीसकर गंजपर लगावे ॥

(११) चुकन्दर के पत्ते पीसकर गंजपर लगाना लाभकारी है ।

(१२) कवेला, कत्था, गेरू, शोरा, नीलाथोथा, प्रत्येक १ भाग, मुर्दासिंग काली मिर्च, प्रत्येक २ भाग, मेंहदी का पत्ती ४ भाग, सरसों का तेल गर्म करके उसमें मिलाकर गंजपर लेपकरे इससे लड़कोंके गंज और उन फोड़े फुंसियों को जो लड़कों के सिरोंपर बहुधा होते रहते हैं यह लेप विशेष हितकारी है ।

कंठ माला रोग का वर्णन

कंठ माला कंठ अर्थात् गरदन में उत्पन्न होती है तथा कभी २ बगल में भी होजाती है अजीर्ण और भोजनके निकम्मे पाचनसे मवाद होजानेके कारण यहरोग होता है ।

कंठमाला की चिकित्सा

इस रोग में प्रथम वमन और दस्तोंको लाने वाली दवा दे जिस से गाढ़ा कफ निकल जाय और उत्तम तथा नरम भोजन करे । खाली पेट परिश्रम करना लड़ाई भारी भोजन, बहुत अथवा चिल्लाकर बोलना क्रोध करना त्याग देना चाहिये, और रोगीका सिरहाना ऊंचा रखना चाहिये यदि नरम पड़जाय तो अग्नि उत्पन्न करनेवाली औषधि का लेप करे तथा उसके पकाने तथा तोड़ने वाली औषधि का उपाय करे ।

(९) कतीरा ५ भाग अजवायन २ भाग कूट छान कर
नेये की पत्ती का रस निचोड कर खूब मिलाके लेपकरे।

दाद रोग का वर्णन।

खालके ऊपर एक प्रकारका खुर खुरापन उत्पन्न होजाता
है जिसमें दर्द तो नहीं किन्तु खाज होतीहै इसे दाद कहते
हैं यह कभी २ शरीरके प्रत्येक भागोंमें होजातीहै परन्तु बहुधा
पट्टी में अधिक उत्पन्न होतीहै इसका वर्ण लाल अथवा
काला होता है इस रोग के तीन दरजे होते हैं।

पहिला दरजा—रोगके आरम्भ ही को कहते हैं इसका
असर मांसमें नहीं होता।

दूसरा दरजा—इसमें रोगका प्रवाह कुछ मांसमें होजाता है

तीसरा दरजा—इसमें अच्छी तरह मांसमें रोगका असरहो
जाताहै तथा वह गाढ़ा होजाता है अतएव इस रोगकी चि-
कित्सा दरजेवार लिखतेहैं।

॥ प्रथम दरजेकी चिकित्सा ॥

पहिले दरजेका दाद हलके लेपोंसे नष्टहो जातेहैं जो नीचे
लिखे जाते हैं (१) हल्दी सिरका में घिसकर लगावे (२)
रसवत सिरका में घिसकर लगावे, (३) गंधकके तेलकी मालि-
श करै (४) [illegible] को [illegible] (५)
मुर्गी या [illegible] के [illegible] में मिलाकर लगावे

॥ दूसरे दरजे की चिकित्सा ॥

(१) [illegible] लगावे (२) [illegible] और [illegible]
[illegible] पानी में [illegible] लगावे (३) [illegible] भाग और बबूल
का गोंद सिरका में मिलाके [illegible]।

खुजली का वर्णन ।

यह रोग प्रथम बहुधा अंगुलियों में प्रतीत होता है पीछे
से शरीर के अन्य अंगों में भी फैल जाता है इस रोग के
उत्पन्न होने के अनेक कारणों में से रक्त का विकार ही इस
का प्रधान कारण माना गया है यह रोग दूसरे रोगीसे उड
कर भी लग जाता है और ऐसे रोगियोंके वस्त्रादिक स्पर्श
से भी उत्पन्न होजाता है इसी कारण से इसका अधिक ब-
चाव रखनेकी आवश्यकताहै इस रोग के वैद्योंने दोभेद माने
है एक को तर खुजली कहते हैं दूसरी को खुश्क ।

❀ तर खुजली का वर्णन ❀

जिस खुजली में पीले रंग की छोटी २ पानी से भरी हुई
फुंसिया होती हैं और उनमें खुजाने से पानी निकलता है
वह तर खुजली कहलाती है ।

❀ तर खुजली की चिकित्सा ❀

जोकि यह विकार रुधिर के दूषित होनेसे पैदा होता है
इसलिये इसमें वह उपाय करने चाहिये जो रक्त को शुद्ध करें
और यदि उचित जाने तो प्रथम रोगीकी फस्द खोलकर थो
डासा रुधिर निकलवा दे तथा जिस दोष से खुजली का हो
ना निश्चय किया गयाहो उसीके अनुसार दस्त लाने वा-
ली दवा दें जैसे पित्त अधिक होतो बड़ी हर्ड़ सनाय पित्त
पापड़ा अफ संग तीनका काढ़ा खुजली के मवाद को नि-
कालता है और हड़ तथा दन्फसा की गोली तथा अमल
तास का काढ़ा देना योग्य है और मुण्डी का देसारा मु-
रानी खुजली को उखाड़ता है इसकी विधि यह है ६-८ मासे

(२) शहतरा, चिरायता, सर्फोंका, कालीहड़, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, मुन्डी, मेंहदी के पत्ते हर एक ५ माशे उन्नाव ७ दाने भिगोकर मल छान कर पिलावे ।

(३) कावली हड़ का वक्कल बहेड़े का वक्कल, आंवला, काली हड़, सरफोंके की पत्ती, अफीम, हर एक ७ माशे शहतरे के पत्ते ३ तोले सबको कूट छानकर गाय के घी में मकरो कर त्रिगुण बूरा मिला कर नित दो तोला सेवन करे ।

(४) नीलाथोथा, सूखा तमाकू हर एक ३ माशे कबीला ७ माशे सफेद चांनी १४ माशे कड़वे तेल में मिलाकर ३ दिन लगावे ।

(५) पालक के बीज, गोस्त के दाने बराबर २ पानी में पीस कर बदन पर मलै और गर्म पानी से स्नान करे खुजली ३ दिन में जाय ।

(६) गेंद के पत्ते और सूखी धतूर की लकड़ी और पोस्त के डोडे बराबर लेकर जलावे और उसकी भस्म कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोडी देर धूप में बैठ गर्म पानी से स्नान करे ।

(७) कली थोथा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन करे ।

(८) मेंहदी, सुर्ख रोगन सिर्के मिलाकर मर्दन करे ।

औजार वर्ते जाते हैं उनका पुरा हाल वयान करना इस साधारण ग्रंथ में असंभव है। इस समय हमारी मेज पर कई एक कारखानों के केवल जर्राही अस्त्रों के विवरण की पुस्तकें मौजूद हैं, जिनमें से एक सामान्य ग्रंथकी पृष्ठसंख्या ८५८ है और जिसमें कही हजार चित्र उन औजारों के हैं जो डाक्टरों के इस्तैमाल में आते हैं अस्त्रों द्वारा चीर फाडका काम करना बिना पूर्ण अभ्यास और उचित शिक्षा पाने के सर्वथा अयोग्य है इस काम को वही कर सकता है जिसने किसी मेडिकैल कालेज में रह कर पढा और सीखा है या थोडा बहुत वह भी करलेता है जिसने किसी योग्य जर्राहसे कुछ शिक्षा प्राप्त की हो, अनाडी आदमी को जर्राही अस्त्रों के प्रयोग करने का साहस कदापि न करना चाहिये।

एसपिरेटर (Aspirator)
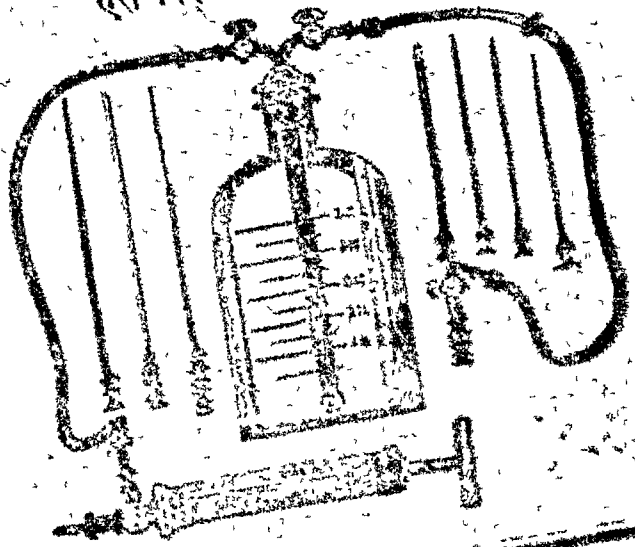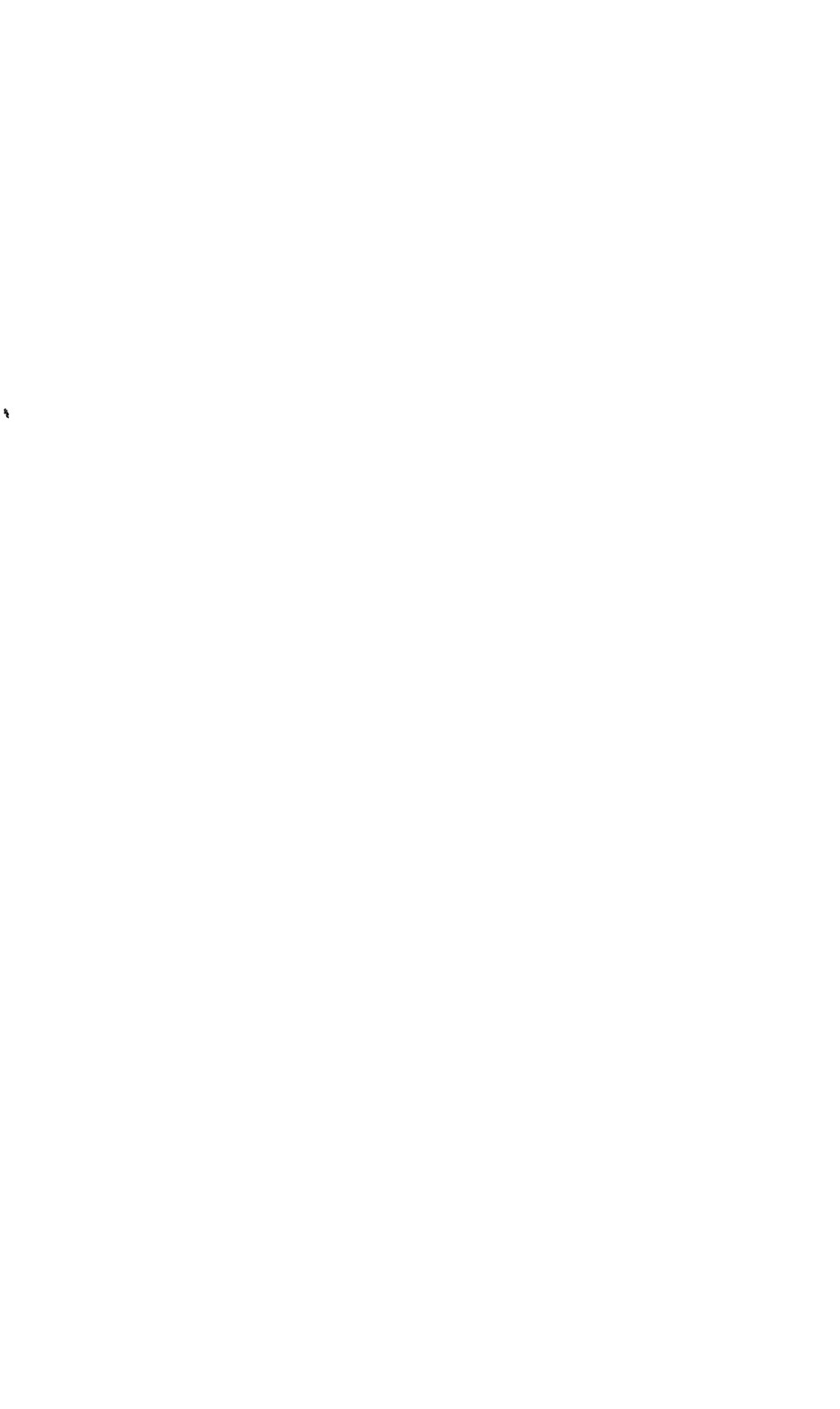
हुई है ये सलाई गिनती में बारह होती हैं और पोली हुआ
करता है-और इनके अंदर एक तार पड़ा रहता है ये
सलाइयां तीन धातुकी बनाई जाती हैं चांदी, जर्मन सिलवर
और गम इलासटिक- Silver, German Silver, Gum Elastic
इसमें जो टेढ़ा हिस्सा है उस हिस्से को पेशाव के सूराख
में धीरे धीरे पहुंचाते हैं यहां तक कि वह मसाने के अन्दर
चला जाता है फिर उस तारको जो उसमें पड़ा होता है
निकाल लेते हैं। जो पेशाव मसाने में रुका हुआ होता है
वह इस नली के सूराख में होकर नली से बाहर निकल
आता है। पेशाव के रुकने का कारण बहुधा यह होता है
कि सोज़ाकके रोग में पेशावकी नाली में अधिक मांस पैदा
होकर नालीको बंद करदेता है वह मांस के बढ़ने से जो
पेशाव रुकता है वह औषधियों के खिलानेसे नहीं निकल-
सकता उसमें इस यंत्रका प्रयोग करना अत्यन्त आवश्यक
है पेशाव निकल जाने के पश्चात् सलाई बाहर निकाल
लीजाती है इस के लगानेमें रोगी को कोई कष्ट नहीं होता।

हाइड्रोसीलट्रोकार और केन्यूला

(Hydrocele Trocar and canula)
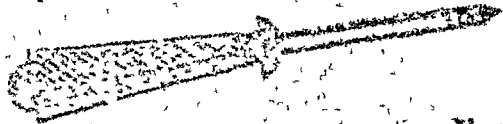
यह यंत्र लोहेका नोकदार होताहै और इसमें पीछे दस्ता
लगा होता है-नोकदार सिरपर एक नोलकी लगी होती है
जिस को कैन्यूला कहते हैं यह यंत्र फोतोंमें भरा हुआ पानी

यह एक यन्त्र का चित्र है जिसमें एक पिचकारी और सुइयां हैं, इस पिचकारी में औषधि की बूंदों के नाप के निशान बने हुए होते हैं इसमें औषधि भरली जाती है और दवा भरने के पीछे इसके सिरेपर सुई लगा लेते हैं उस सुई को जिस जगह पर लगाना हो खाल के नीचे चुभा देते हैं जितनी बूंद औषधि की पहुंचाना हो उतनी ही उसमें पहुंचाई जासकती हैं, फिर खाल को उंगली से दावकर सुई को बाहर निकाल लेते हैं, यह पिचकारी अनेक प्रकार के दर्दों में अनेक औषधियां पहुंचाने के काम में लाई जाती है सिरके दर्द, अर्कुल निसा, गठिया इत्यादि रीढके दर्दों में, वायसूल में दर्द, जिगर में, कूलंज आंतों के सब प्रकार के दर्दों में इस का उपयोग कियां जाता है और कभी कभी बहुत कष्ट की अवस्था में रोगी को नींद लाने और अचेत करने के लिये भी इस का प्रयोग किया जाता है।

टूथ फारसेप्स (Tooth Forceps)
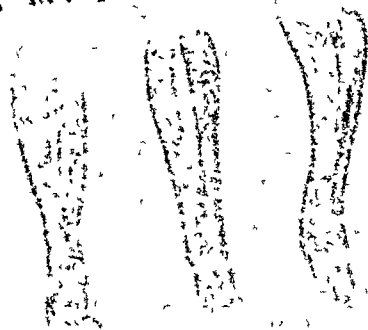
... आकृति के यंत्र द्वारा दांतों के उखाड़

यह एक चक्र का चित्र है जिसमें एक पिचकारी और सुइयां हैं, इस पिचकारी में औषधि की बूंदों के नाप के निशान बने हुए होते हैं इसमें औषधि भरली जाती है और दवा भरने के पीछे इसके सिरेपर सुई लगा लेते हैं उस सुई को जिस जगह पर लगाना हो खाल के नीचे चुभा देते हैं जितनी बूंद औषधि की पहुंचाना हो उतनी ही उसमें पहुंचाई जासकती हैं, फिर खाल को उंगली से दाबकर सुई को बाहर निकाल लेते हैं, यह पिचकारी अनेक प्रकार के दर्दों में अनेक औषधियां पहुचाने के काम में लाई जाती है सिरके दर्द, अर्कुल निसा, गठिया इत्यादि रीढके दर्दों में, बायसूल मे दर्द, जिगर में, कुलंज आंतों के सब प्रकार के दर्दों में इस का उपयोग कियां जाता है और कभी कभी बहुत कष्ट की अवस्था में रोगी को नींद लाने और अचेत करने के लिये भी इस का प्रयोग किया जाता है ।

टूथ फारसेप्स (Tooth Forceps)

यह मेढा सी की आकृति के यंत्र दाढ़ दांतों के उखाड़
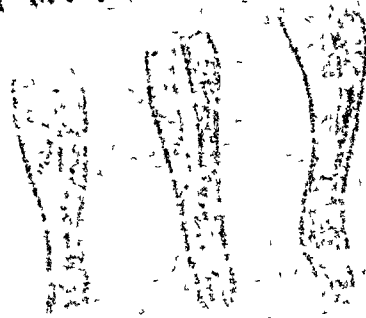
ऊपरदिय हुए ७ चित्र मिडवाइफरी फारसेप्स Midwifery Forcep के हैं ये यंत्र सब लोहे के होते हैं जब प्रसव काल में बच्चा पेट के भीतर अटक जाता है और नहीं निकलता है तो इस को योनि में डालकर बच्चे को इस यंत्र से पकड लेते हैं और खींचकर बाहर निकाल लेते हैं यह कार्य्य बड़ी सावधानी के साथ डाक्टर या लेडी डाक्टर द्वारा कराया जाना चाहिये अनाडी से कदापि न कराना चाहिये ।
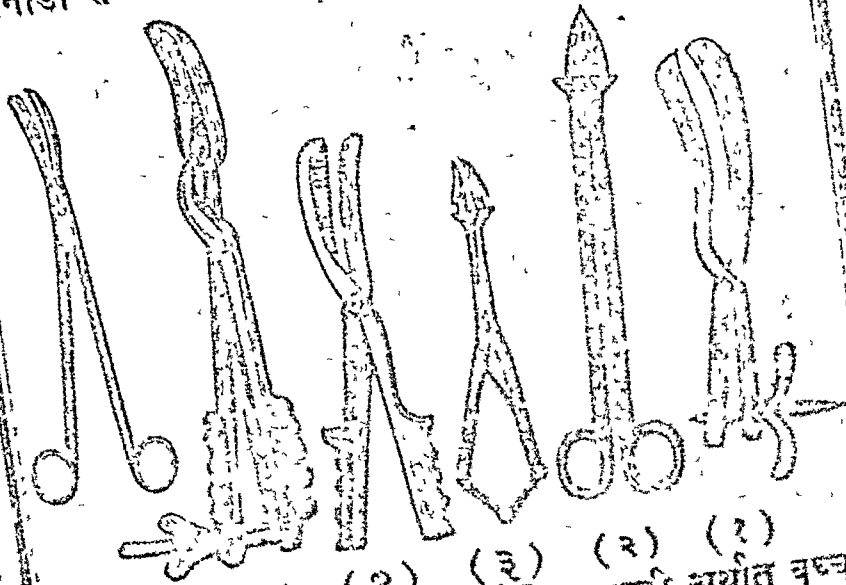
(६) (५) (४) (३) (२) (१)

ऊपर दिये हुए ६ चित्र भी मिडवाइफरी अर्थात् बच्चा जनाने के प्रयोग में वर्ते जाते हैं इनका भिन्न भिन्न अवस्था में अलग अलग प्रयोग होता है जिसका वृत्तान्त नीचे दिया जाता है ।

(१) यह यंत्र खोपड़ी पकड़ने का है जिसका नाम ([illegible]) के फेलो ट्राइब है ।

दांते हैं जो पथरी को तोड देते हैं। इन का नाम Lithotrite लिथो ट्राइट है।

(५) इस यन्त्र के द्वारा बचे हुए टुकड़े पथरी के निकाल लिये जाते हैं इस का नाम (Lithotomy Forceps) लिथोटोम फारसेप है।

इसके व्यतिरिक्त अनेक प्रकार के नश्तर और सलाई और पिचकारी इत्यादि अस्त्र डाक्टरों के इस्तेमाल में रहते हैं जिनका प्रयोग पूर्व काल में वैद्य लोग भी किया करते थे और जिनका श्री सुश्रुताचार्य ने अपने ग्रन्थ में सविस्तर वर्णन किया है आगे हम उसी आर्ष ग्रन्थ के मत से कुछ अस्त्र शस्त्रों का वर्णन करेंगे।

❋ वैद्यक मतानुसार यंत्रों का वर्णन ❋

यन्त्रों की कोई संख्या नहीं है और यन्त्रों से अधिक हाथ की सफाई को प्रधान माना गया है, यन्त्रों की आकृति और कार्य्य पृथक २ होते हैं बुद्धिमान वैद्य जांहे अथवा डाक्टर अपनी विचार शक्ति की सहायता से जैसा अस्त्र जहां उपयोगी जाने उससे काम ले और इन्हीं विचार के द्वारा नाना भांति के यन्त्र बनाये गये हैं और अद्यापि बनते चले जाते हैं, यन्त्रों के छै प्रकार कहे हैं। (१) स्वस्तिक यन्त्र, (२) संदंश यन्त्र (३) तालयन्त्र, (४) नाड़ी यन्त्र, (५) शलाका यन्त्र, (६) उप यन्त्र।

इनमें से स्वस्तिक यन्त्र के २४, संदंश यन्त्र के दो, ताल यन्त्र के दो, नाड़ी यन्त्र के २०, शलाका यन्त्र के २८ [illegible]

लोग स्वयं विचार कर सक्ते हैं, इन यंत्रों के दो टुकडे होते हैं जो एक दूसरे के साथ एक कील के द्वारा जिसकी घुण्डी मसूर के दाल की सदृश होती है मिलाये जाते हैं इन यन्त्रों से हड्डी और उसके टूटे हुए टुकडे और शल्य इत्यादि शरीर के भीतरसे निकाले जाते हैं और दांत उखाडे जातेहैं।

(२) संदंश यंत्रों के भेद और आकृति।
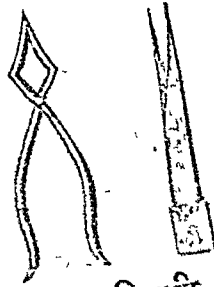
संदंश यन्त्र संडासी या चिमटी समझना चाहिये यह दो प्रकार के होते हैं एक सनिग्रह और दूसरा अनिग्रह, संडासी सनिग्रह है और चिमटी अनिग्रह, इनकी लंबाई प्रायः १६ अंगुल, ८ अंगुल तथा क्रमानुसार कम वेश होतीहै सनिग्रह के अग्र भागमें और अनिग्रहके पिछले सिरे पर कील या जोड होता है, इन से भी त्वचा शिरा, स्नायु, और मांसमें घुसे हुए शल्य इत्यादि निकाले जाते हैं, काम लेने के पश्चात् इनको खूब धोकर और पोंछ कर बक्सों में रखना चाहिये।

(२) ताल यन्त्रों के भेद और आकृति

एक ताल यन्त्र

द्विताल यन्त्र
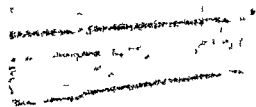
कर पत्र और शप शस्त्रों को भी उचित स्थान पर पकडना चाहिये टढा भौंतरा, टूटाहुआ, खरदरी धार वाला वहुत मोटा, वहुत छोटा, ऐसे शस्त्रों को काममें लेना वर्जित है।

शस्त्रों के नाम।

शस्त्र इक्कीस प्रकार के होते हैं जिनके नाम ये हैं:- (१) मंडलाग्र, (२) कर पत्र, (३) वृद्धि पत्र (४) नख शस्त्र, (५) मुद्रिका (६) उत्पल पत्रक, (७) अर्द्ध धार (८) सूची, (९) कुशपत्र, (१०) आटीमुख (११) शरीर मुख, (१२) अन्तर्मुख, (१३) त्रिकूर्चक, (१४) कुठारिका, (१५) व्रीहिमुख. (१६) आरा, (१७) वेतस पत्रक, (१८) वडिश. (१९) दन्तशंकु, (२०) एषणी (२१) कर्तरी

(१) मंडलाग्र शस्त्र।

यह शस्त्र काटने और चीरनेके काममें आता है और पोथकी शुंडका और वर्त्मरोगमें प्रायः वर्त्ता जाता है।

(२) करपत्र शस्त्र।

यह शस्त्र हड्डियोंके काटने और चीरनेके काममें आता है

(३) वृद्धिपत्र शस्त्र।

यह शस्त्र एक प्रकार [illegible] हुआ है अर्बो के सभा सभा

(८) सूची शस्त्राणि ।

यह कई प्रकार की सुइयांहैं जो जख्मों के सीने के काम में आतीहैं, मोटे मांस के सीने में तिकोनी सुई काममें आतीहैं हड्डी और जोडोंके निकटस्थ जख्मोंके सीनेकी सुई चन्द्राकार टेढ़ी होतीहैं इसीतरह मौके मौके के जख्मों में प्रथक प्रथक सुइयां काममें आती हैं।

(९) कुशपत्र शस्त्र ।
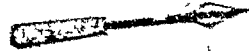
कुशपत्र शस्त्र स्राव के निमित्त काममें आताहै इसकी नोंक तेज और धारदार होती है।

(१०) आटीमुख शस्त्र ।
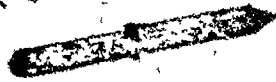
यह शस्त्र भी कुश पत्र के समान होता है परन्तु आकृति में भेद है काम इसका वही है जो कुश पत्र का है।

(११) शरारी मुख शस्त्र ।

मान पैनी होती है यह भेदन के काममें आती है।
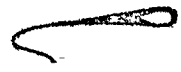
(१६) आरा शस्त्र।

यह शस्त्र हड्डियों के काटने के काम में आता है।

(१७) वेतसपत्रक शस्त्र।
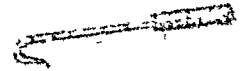
यह शस्त्र भी उत्पल पत्रक शस्त्र के समान लम्बे मुखका होता है और छेदन और भेदन के काममें आते हैं।

(१८) वडिस शस्त्र।
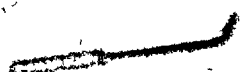
इसका मुख अंकुश के समान टेढ़ा होता है और कंई प्रकारके भीतरी व्रणोंके छेदन करने में इसका प्रयोग होता है।

(१९) दन्त कुश शस्त्र।

यह शस्त्र दन्तों के भीतरके शर्करा इत्यादि दूषित मलों के निकालने के काम में लाया जाता है।

(२०) एषणी शस्त्र।

नाड़ी व्रण की सूजन के भीतर की हालत देखने में इस शस्त्र का प्रयोग होता है यह शस्त्र [illegible] कोमल और [illegible]डोये के प्रकार का होता है।

(२१) कर्त्तरी शस्त्राणी।

ये अनेक प्रकार की कैंचियां हैं नख, मूत्र, नाभि, और [illegible] में इनका प्रयोग किया जाता है।

शस्त्रों का वर्णन।
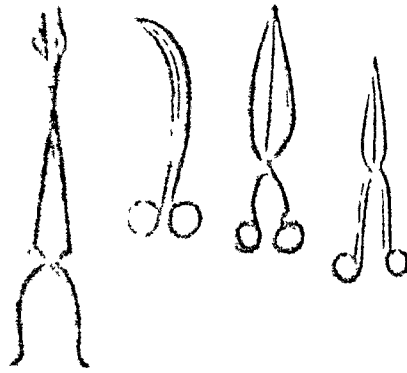
सूर में डालकर उस नालीके बीच नश्तर की नोंक रखकर नासूर चीरा जाता है।

(३) खमदार चाकू।

इसी चाकू से गहरे नासूर खोले जाते हैं नालीदार सलाई की नालीमें इस की नोंक रखकर चीरना शुरु करतेहैं।

(४) मोंटी छुरी।

यह छुरी मरहम या प्लास्टरको फैलानेके काम आती है।

(५) हुक।

यह लोहे के तार का टेढ़ा हुक होता है जब किसी रगसे खून निकलता हो तो इसके द्वारा रगको उठाकर पकड़ते हैं।

(मसूढ़े के नश्तर)

इससे मसूढ़े चीरे जाते हैं।

(७) फोड़े के नश्तर।

इसके दोनों तरफ तेज़ धार होती है इससे फोड़े चीरेजातेहैं।

(८) फस्द खोलने के नश्तर।

इनसे फस्द खोली जाती है और टीका लगाया जाता है।

(९) चिमटी

यह कमानीदार या बिना कमानी के दो तीन प्रकारकी होती है जख्म में से दूषित चीज़ों को पकड़कर निकालने और ड्रेसिंग को जख्म पर से उतारने के काम आती है।

(१०) टेढ़ी सुई।

जख्मों के सीने के काम में आती है।

(११) कैंची।

चमड़ा इत्यादि के कतरने के काम में आती है।

कि उसे ऐसे स्थान से बांधना शुरु किया जाय जहां से वह सरक न सके।

(४) पट्टी बांधते समय उस का रुख भीतर से बाहर की ओर और नीचे से ऊपर की ओर होना चाहिये।

(५) पट्टी बांधते समय उसके लपेट के बीच में कोई स्थान खाली न रहने देना चाहिये।

(६) जिस अंग पर पट्टी बांधनी हो अगर वह एक ढाल का हो तो उस पर पट्टी के सीधे पेच लगाते जाय किन्तु जहां पर अंग की मोटाई आदि में फरक हो वहां पर बलदार पेच लगाना चाहिये बल देने का नियम यह है कि जहां बल देना हो इस स्थान के ऊपरी मुंह पर अपना बायां अंगूठा रखकर दायें हाथ से पट्टी को उलटादें॥

(७) जोडों के स्थान पर अर्थात् घुटने या कुहनी के जोडे पर पट्टी बांधते समय इस प्रकार से लपेट ते हैं कि जोड के स्थान पर अंगरजी के आठ के अंक सदृश आकृति बनजाय इसको डाक्टर लोग फिगर आफ एट बैन्डेज कहते हैं।

(८) कन्धे और कुल्हे के जोड पर भी इसी प्रकार की पट्टी बांधते हैं।

(९) जब एक पट्टी बदली जाय तो जिस अंग पर वह बंधी हुई थी उसको गरम पानी और साबुन से खूब धोकर सुखा देना चाहिये।

(१०) जब सर पर पट्टी बांधनी हो तो बालों में कंघी कर लेनी चाहिये।

❀ बेहोशी की अवस्था में कर्त्तव्य ❀

बेहोश को तत्काल चित लिटाकर उसकी दोनों भुजा धड़ से मिलाकर और दोनों टांग सीधी करके एक दूसरे के साथ मिला देना चाहिये यदि उसका चहरा सुर्ख हो तो उसका सिर थोड़ा ऊंचा करदेना चाहिये जिससे सिर का खून नीचे को आवै यदि उसका मुख पीला मालूम हो तो उसका सिर उसके शरीर से थोड़ा नीचा कर देना चाहिये जिससे खून मस्तिष्क की ओर पहुंच जाय यदि वमन होने की सम्भावना हो तो उसके सिरको एक ओर घुमा देना चाहिये जिससे वमन होने वाली वस्तु हवाकी नाली में जाकर उसका दम बन्द न करदे जिससे मृत्यु होजाने का भय रहता है, उसकी गरदन, छाती और कमर के सब कपड़े ढीले करदेने चाहिये जिससे सांस लेने और रक्त के संचालन में किसी प्रकार की बाधा न हो, फिर बेहोश के सिर और अन्यान्य अंगों को खूब देखना चाहिये कि कहां कैसी चोट है और उपयोगी चिकित्सा करनी चाहिये।

❀ ज़ख्मों का इलाज ❀

जख्मों के इलाज के कई एक साधारण नियम हैं। (१) खून के प्रवाह को बन्द करना (२) जख्मों [illegible] करना (३) जख्म के कटे हुए छिलकों को बराबर [illegible] देना (४) जो मवाद मौजूद हो उसको निकाल कर [illegible] को मवाद निकलने की राह बना देना (५) [illegible] का

कर कंधेपर गिरह देकर बांधदे फिर स्टिकिंग प्लास्टर का
२ इंच चौड़ा टुकडा लेकर बाजू के गिर्द इसका एक लपेटा
दे लेकिन चिपकने वाली सितह बाहर की तरफ हो फिर
इस लपेटे को सींकर बाकी टुकड़ा पीठ पर से गुज़ार कर
दूसरी ओर के बाजू के पीछे से लाकर टूटी तरफ की क-
लाई को छातीपर रखकर उसपर प्लास्टर के सिरे को चि
पकादें फिर एक और उतना बड़ा टुकड़ा लेकर उस से
कलाई को स्थिर कर और तीसरा टुकडा कोहनी के नीचे
से लाकर चिपकादे ताकि कोहनी उठीरहे। इस हड्डी के
जुड़ने में ५ सप्ताह से अधिक समय लगता है।

टूटी बांह का इलाज।

बांहके लिये गद्दी और तीन तीन अँगुल चौडे स्प्लिन्ट
लेकर एकतो कंधेसे कोहनी के झुकाव तक, एक कंधेकेपीछे
से कोहनी के किनारे तक; एक बगल से कोहनी की भीतर
वाली नोक तक ओर एक कंधे से कोहनी की बाहर वाली
नोक तक बांधी जावे गद्दियां स्प्लिन्टसे दो इंच अधिक
लंबी होनी चाहिये जिससे उनको उलटकर स्प्लिन्टके कि-
नारेसे सींदिये जावें, लकडी का स्प्लिन्ट न मिले तो गत्ते
की नाली आदि काममें लाई जाती हैं॥

उंगलियों के टूटने का वर्णन।

जो उंगली टूटगई हो तो पतली लकडी का एक टुकड़ा
या कडा टुकडा कागज के गत्ते की उंगली के बराबर लेवे
और सीधी तरफ उंगली पर रखकर एक इंच चौड़ी पट्टी
से एक सिरेसे दूसरे सिरेतक बांधदेवे, हाथ एक महीने तक

(४) फिशर्ड फ्रैक्चर, हड्डी का चिरजाना ।

(५) कामी न्यूटैड फ्रैक्चर, हड्डीका टूटकर चूराहोजाना।

(६) मलटीपिल फ्रैक्चर, हड्डी का कई जगहसे टूटना ।

(७) इम्पैक्टैड फ्रैक्चर, हड्डी के टूटे टुकडे का दूसरी हड्डी में घुस जाना ।

(८) लांजी ट्यूडीनल फ्रैक्चर, हड्डी का लम्बाईमें टूटना ।

(९) स्पाइरल फ्रैक्चर; हड्डी का वल खा जाना ।

हड्डी टूटने के परिणाम

हड्डी के टूटने ने के २४ घंटे पीछे हलका ज्वर होजाता है हरारत १०० दर्जे तक रहतीहै यह बुखार २ या ३ दिन में उतर जाता है टूटी हड्डी का इम्तिहान बडी सावधानी से करना चाहिये ।

जोड़ उतरना

जिस तरफ का जोड़ उतरा हो उस तरफ की टांग छोटी होजाती है और जोड़का हिलना और काम देना रुक जाता है अंतमें जोड़ में सूजन होकर पीप पड़ जाता है–यदि जोड़ जल्दी न चढ़ाया जाय तो उसकी हटी हुई जगह में चरबी भरजाती है और दूसरी जगह पैवंद लग जाता है जोड़ चढ़ाने के दो तरीके हैं एक यह कि हड्डी को इस तरकीब से मिलाना कि जिस राह से वह हटी है उसी रा से अपने असली स्थान पर चढ़–दूसरे जब बीच में कोई वस्तु रुकी हुई हो तो उस को सावधानी से अलग कर हड्डी को चढ़ाया जाय ।

... पानी की बोतलें के जघों बगलों और तलुओं में गरम पानी की बोतलें गावें और उसे इसी प्रकार धैर्य्य बँधाते रहें।

❋ बावले कुत्ते का काटना ❋

जब पागल कुत्ता या और कोई पागल जानवर काट खाय तो काटे हुए स्थान से ऊपर टांग या बाजू को खूब जोर से बांधदें फिर तत्काल तेज़ छुरा से वहां दो तीन गहरे चीरे देकर और गरम पानी से धोकर घावों में परमैंगनेट आफ पुटास भरदें और फिर वहां पर गरम पानी अच्छी तरह से धोवें कि वह खूब धुलजाय और तत्पश्चात् घाव को सुखाकर नाइटरेट आफसिलवर या नाइटरेट आफ मरक्री या नाईट्रिक एसिड या कारबालिक एसिड या क्रोमक एसिड या दहकते हुए कोइले से या तेज गरम लोहे आदि से जलादें और तदनन्तर पोल्टिस और मरहम आदि उचित ओषधिओं का प्रयोग करें इसकी चिकित्सा पास्चर इनिस्टी स्यूच कसौली में अच्छी होती है।

❋ बिच्छु का डंक मारना ❋

पहिले सूई या किसी नोकदार चीज़ से बिच्छू का डंक निकाल कर उस पर इन चीजों में से कोइ चीज़ पानी में पीस कर लगादें।

लायकर अमोनिया, एपीकाकपौडर, डोरसपौडर, तमाकू, नमक, कपूर, अफीम, दिया सलाई का मसाला या तारपीन का तेल, मिट्टी का तेल, सिरका इत्यादि और स्पिट अमोनिया एरोमेटिक ३० बूंद या बरांडी तीन चार ड्राम पानी में मिलाकर पिलावें।

लाईकर फीराई परं पर क्लोराइड
और फिर यह औषधि पिलावें आधा
या टिंक्चर फीराई पर क्लोराइड (टिंक्चर स्टील) आधे ग्लास
औंस सोडियम कारबोनेट (या मामूली सोडा) आधे ग्लास
या पाव सवा पाव पानी पर अलग मिलाकर फिर उन दो
नों औषधियों को एक दूसरे में मिलाकर रोगी को पिलावें
और यदि आवश्यकता जानें तो यह औषधि दो तीन
वार पिलावें ।

❀ अफीम का विष ❀

इस विष से सिर में दर्द होताहै नींद आतीहै और धीरे
धीरे चेतन शक्ति जाती रहतीहै, आंखों की पुतलियां सुकड
कर बहुत छोटी होजातीहै अंधेरे उजाले का ज्ञान नहीं रहता
चहरा नीला या पीला पड़ जाताहै बदन ठंडा और पसीना
ठंडा आता है सांस की गति मंद पड़ जाती है और मुख
से अफीम की गंध आती है, नाडी मंदी चलती है ।

चिकित्सा-तुरंत स्टामक ट्यूब लगा कर उदर को
धो डालना चाहिये या डेढ तोला राई का चूर्ण पाव भर
गरम पानी में मिलाकर या ३० ग्रेन जिंक सल्फास अध
पाव गर्म पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये जिससे वमन
आजाय (बहुधा अफीम का असर होजाने पर वमनकी
औषधि निष्फल होजाती है और वमन नहीं होती) फिर
वार वार गरम चाय या कहवा पिलावें अफीम का विष
मारने के लिये पुटासियम पर मैंगनेट का बड़ा प्रभाव है
इसकी मात्रा ५ रत्ती है ॥

इति

और फिर यह औषधि पिलावें लाईकर फीराई पर प० क्लोराइड या टिंक्चर फीराई पर क्लोराइड (टिंक्चर स्टील) आध औंस सोडियम कारबोनेट (या मामुली सोडा) आधे ग्लास या पाव सवा पाव पानी पर अलग मिलाकर फिर उन दोनों औषधियों को एक दूसरे में मिलाकर रोगी को पिलावें और यदि आवश्यकता जानें तो यह औषधि दो तीन वार पिलावें ।

ॐ अफीम का विष ॐ

इस विष से सिर में दर्द होताहै नींद आतीहै और धीरे धीरे चेतन शक्ति जाती रहतीहै, आंखों की पुतलियां सुकड़ कर वहुत छोटी होजातीहै अंधेरे उजाले का ज्ञान नहीं रहता। चहरा नीला या पीला पड़ जाताहै बदन ठंडा और पसीना ठंडा आता है सांस की गति मंद पड़ जाती है और मुख से अफीम की गंध आती है, नाडी मंदी चलती है ।

चिकित्सा-तुरंत स्टामक ट्यूब लगा कर उदर को धो डालना चाहिये या डेढ तोला राई का चूर्ण पाव भर गरम पानी में मिलाकर या ३० ग्रेन जिंक सल्फास अध पाव गर्म पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये जिससे वमन आजाय (वहुधा अफीम का असर होजाने पर वमनकी औषधि निष्फल होजाती है और वमन नहीं होती) फिर वार वार गरम चाय या कहवा पिलावें अफीम का विष मारने के लिये पुटासियम पर मैंगनेट का बड़ा प्रभाव है इसकी मात्रा ५ रत्ती है ॥

इति

और फिर यह औषधि पिलावें लाईकर फीराई परं पर क्लोराइड या टिंकचर फीराई पर क्लोराइड (टिंकचर स्टील) आधा औंस सोडियम कारबोनेट (या मामूली सोडा) आधे ग्लास या पाव सवा पाव पानी पर अलग मिलाकर फिर उन दोनों औषधियों को एक दूसरे में मिलाकर रोगी को पिलावें और यदि आवश्यकता जानें तो यह औषधि दो तीन वार पिलावें ।

❀ अफीम का विष ❀

इस विष से सिर में दर्द होताहै नींद आतीहै और धीरे धीरे चेतन शक्ति जाती रहतीहै, आंखों की पुतलियां सुकड कर बहुत छोटी होजातीहै अंधेरे उजाले का ज्ञान नहीं रहता चहरा नीला या पीला पड़ जाताहै बदन ठंडा और पसीना ठंडा आता है सांस की गति मंद पड़ जाती है और मुख से अफीम की गंध आती है, नाडी मंदी चलती है ।

चिकित्सा-तुरंत स्टामक ट्यूब लगा कर उदर को धो डालना चाहिये या डेढ तोला राई का चूर्ण पाव भर गरम पानी में मिलाकर या ३० ग्रेन जिंक सल्फास आध पाव गर्म पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये जिससे वमन आजाय (बहुत अफीम का असर होजाने पर वमनकी औषधि निष्फल होजाती है और वमन नहीं होती) फिर वार वार गरम चाय या कहवा पिलावें अफीम का विष मारने के लिये पुटासियम पर मेंगनेट का बड़ा प्रभाव है इसकी मात्रा ५ ग्रेन की है ॥

इति

❀ रजका बंद अथवा कम होना ❀

यह रोग दो प्रकार का है एक वह जिसमें रजका पैदा
होना बन्द होजाता है दूसरा वह कि उसके प्रवाह में कोई
रुकावट होजाती है पहिली प्रकारकी बीमारी सदैव निर्बल
और नाजुक मिज़ाज स्त्रियों को हुआ करतीहै कारण उस
का यह होताहै कि उनके शरीरमें इतना रुधिर नहीं पैदा
होता जो उनके शरीर का पोषण करके रज को प्रवाहित
कर सके अर्थात् रज रक्त पैदा ही नहीं होता–दूसरे प्रकार
का रोग अर्थात् रजका रुक जाना यह कभी कभी बल-
वान स्त्रियों को होजाता है उसका कारण रुधिर की ऊ
ष्णता से मूत्रेन्द्रयमें जलन का पैदा होजाना है कभी क-
भी गर्भाशय में घाव होजाने से ऐसा रोग होता है कभी
सर्दी के लग जानेस हैज़ रुक जाताहै कभी अचानक दिल
को सदमा पहुंचने से यह रोग होजाता है कभी शोक और
दुख के कारण होता है ।

❀ चिकित्सा ❀

यदि स्त्री बलवान है तो उसको चलने फिरने का परि-
श्रम करना चाहिये और पुरुषके अधिक प्रसंगसे रोक देना
चाहिये यदि मल कठिनाई से और देरमें आता हो और
कब्ज रहता हो तो कब्ज दूर होनेकी औषधि देना चाहिये
जिस से दस्त साफ़ और खुलकर आने लगे और भोजन
नरम और हलका और कम खाना चाहिये–अगर और
मदिरा का सेवन करती है तो उन से परहेज़ करना

... और जो रक्त निकलता है वह कभी जमा हुआ और कभी टुकड़े टुकड़े जमे हुए निकलते हैं कभी ऐसा प्रतीत होती है कि गर्भ गिर गया है भूख जाती रहती है या कम होजाती है इसके इलाज में बड़ी सावधानी करनी चाहिये और किसी हुशियार लेडी डाक्टर से " स्पीकुयम, वेजाइनी यंत्र द्वारा जो मूत्रेन्द्रिय में डाला जाता है परीक्षा करनी चाहिये उससे यह मालूम होजायगा कि यह रोग घाव के कारण है या किसी गर्भाशय की बीमारी के कारण है उसी के अनुसार चिकित्सा कराना चाहिये यदि जन्मकाल से ही गर्भाशय का मुख संकुचित हो तो उस को यन्त्रद्वारा चौड़ा कराना चाहिये इस रोग में भी कमर तक गरम पानी में आध घण्टे से एक घण्टे तक बैठना हितकारी है एपीकेकवाना एक ग्रेन या आधी ग्रेन एक एक घण्टे के अन्तर से देना फायदेमन्द है कभी २ दश पन्द्रह बूंदें अफीम के अर्क की थोड़े गरम पानी के साथ मिलाकर उसकी पिचकारी गुदामें देना फायदा करती है।

❀ रजका रक्त अधिकता से आना ❀

यह रोग दो प्रकार का होता है एक यह कि जिसमें स्त्री का रक्त अधिकता से निकलता है दूसरा यह कि जिस में गर्भाशय से उत्तम और लाल रंगका रुधिर खारिज होता है इसके लक्षण यह हैं कि हर मास के अन्त में समय से अधिक रक्त आने लगता है और कई दिन तक आता रहता है कभी कभी पूरे महीने तक आता रहता है कभी एक दो तीन सप्ताह के पश्चात् आने लगता है कभी बूंद

से खून का आना बंद हो जाता है हींग ३ ग्रीन अफीम १ ग्रीन पानी २ ड्राम, यदि उपदंश का रोग हो तो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ।

❀ सफेद पानी का निकलना ❀

इस रोग में बहुधा स्त्रियां कष्ट सहन करती हैं कदाचित कोई स्त्री इस रोग से बची होगी यह रोग युवा सुकुमारियों को अधिक होता है प्रथम अवस्था में स्त्रियां इसकी चिकित्साकी परवाह नहीं करती परन्तु बढ कर यह रोग दुसाध्य होजाता है उस वक्त गरमी और जलन प्रतीत होने लगती है अधिक पुराना होजाने पर दर्द और जलन नहीं रहते परन्तु सफेदी बदस्तूर जारी रहती है स्त्री बहुत दुर्बल हो जाती है दिल धडकता है कमर और पीठमें दर्द होने लगता है तपेदिक और सिल का रोग होजाता है पाचन शक्ति नाम को भी नहीं रहती पानी कभी कभी कई रंग का बहता है कभी दो रंग होता है कभी दूध के तुल्य सफेद कभी पीला और कभी पीप के सदृश होता है दिन में कितने ही कपड़े तर होजाते हैं इस रोग के पैदा होने के कई एक कारण हैं बहुधा प्रसव के पश्चात् शुरू होता है सरदी में गर्म वस्त्रों का पूरे तौर पर न पहिनना जूते का न पहिनना रज का बारम्बार आना स्त्री पुरुष का अधिक काल तक एकत्र रहना इस रोग के पैदा होने का कारण है ।

❀ चिकित्सा ❀

प्रथम रोग का कारण निश्चय करें तत्पश्चात् वह कारण दूर करें जो यह रोग प्रबल होगया हो गर्मी जलन और

❀ खाने की औषधि ❀

समुन्दर सोख २ तोला छोटी और बड़ी माई २ तोला
पलंग तोड २ तोला धावे के फूल २ तोला कमरकस २ तोला
कच्ची खांड २ तोला सबको कूट छान कर चौदह पुडिया बनावें
और सुबह और शाम खाना खाने के एक घण्टा पीछे एक
एक पुडिया गाय के दूध के साथ खाना चाहिये।

❀ प्रसव काल का कष्ट दूर करने और सरलता से ❀
❀ पैदा होने के प्रयत्न ❀

नीचे लिखी हुई औषधि उस हालत में देनी चाहिये जब
कि बच्चा होने में बहुत देर होगई हो या पेट में मरजाने
की सम्भावना हो इसके प्रयोग से यदि बच्चा पेट में मर भी
गया हो तो शीघ्र निकल आवेगा।

(१) अजमोद को घोट कर उसमें से रस निकालें और
इस रस में सनके वस्त्र को तर करें और गर्भाशय के मुख
तक उस वस्त्र को पहुंचादें।

(२) उपरोक्त रस के पिलाने से भी वही लाभ होताहै।

(३)गन्दना के रसको गरम पानी में मिलाकर पिलाने
से भी फौरन लड़का बाहर आ जाता है।

(४) खजूर की गुठलियों को बारीक पीस कर मैदा
करें इस में से आधा ड्राम १ तोला अंगरेजी शराब के
साथ पिलादें।

(५) क्लोरल हाईड्रेट २० ग्रेन बच्चा होने से पहिले
घण्टे घण्टे के बाद देना चाहिये।

आ पैदा होने के कुछ घण्टे या कई दिन के पीछे हुआ
ता है यह बड़ा भयंकर है यदि इसका उपाय तुरन्त न
या जाय तो वह स्त्री की मृत्यु का कारण होजाता।

❀ रोग के कारण ❀

प्रसव के पीछे गर्भाशयका ठीक तौर पर न सिकुडना
ओर ढीला और फैला हुआ होना इस का एक कारण है
आंवलका जल्दी निकालनेके लिये हाथसे पकड़कर खींच
लेना दूसरा कारणहै तीसरा कारण आंवलका टुकड़ा गर्भा
शय के भीतर रहजाना है।

❀ अन्यान्य कारण यह हैं ❀

बच्चे का जल्द पैदा हो जाना और उस वक्त गर्भाशय
पर हाथ से दबाव न रखना जच्चा का जल्दी चलने फिर
ने लग जाना मल मूत्र के त्यागने के लिये जोर करना प्र-
सव कालमें गर्भाशय के भीतर घावका होजाना जच्चाका
अधिक गरम मकान में रहना और अधिक गरम वस्तुओं
का सेवन करना।

❀ रोग के चिह्न ❀

अधिक रुधिर निकल जाने से चहरा पीला और हाथ
पांव ठंडे होजातेहैं पसीना ठंडा आताहै नाडी बारीक और
तेज चलती है आंखों के सामने अंधेरा आजाता मूर्छा
आजाती है शरीर कांपने लगता है।

❀ चिकित्सा ❀

स्त्री को आराम से चार पाई पर चित्त लिटावें और कि-

दूध नहीं पिलाना चाहिये और उस पर यह मरहम लगा-
ना चाहिये। जिंक अक्साइड एक ड्राम या बिस्मिथ एक
ड्राम वैजेलीन एक औंस में मिलाकर मरहम बनावें।

❀ चेचक माता या शीतला ❀

यह एक प्रकार का ज्वर है इसके आदि में जाड़ा आता
है फिर अधिक ज्वर आजाता है और ज्वर के आने से ४८
घण्टे पीछे शरीर पर लाल लाल दाने निकल आते हैं इस
रोग की छूत किसी दूसरे रोगी के वस्त्रों के स्पर्श करने से
या हवा के द्वारा आरोग्य आदमी में असर कर जाती है यह
रोग बच्चों को अधिक होता है जिनको टीका नहीं लगा
होता है या अच्छा टीका नहीं लगता है उनको होजाता है
इस रोग का बढाव प्रायः १२ दिन तक रहता है तीसरे चौथे
दिन इन दानों में पानी भर जाता है पांचवें दिन प्रत्येक
दाने के चारों ओर सुर्खी झलकने लगती है छटे दिन नाक
मुंह कंठ और पपोटों के भीतर दाने निकल आते हैं आठवें
दिन दानों के भीतर का पानी गाढ़ा होकर पीप बन जाता
है और उनकी नोकें उभर आती है इस दिन फिर बड़े जोर
का ज्वर होजाता है १०४ और १०५ डिग्री की हरारत हो
जाती है दम लेने और निगलने में कष्ट होता है चहरा
और आंखें सूज जाती हैं रोगी बर्राने लगता है दसवें ग्यार
वें दिन दाने मुरझाने लगते हैं ग्यारवें दिन से चौदवें दिन
तक उनपर खुरंड बन जाते हैं इक्कीसवें दिन यह खुरंड उतर
जाते हैं और फिर खाल पर से छिलका सा उतर जाता है।

इस रोग से कभी २ और रोग भी पैदा होजाते हैं।

रोग भी रोग का प्रभाव कम करने के लिये और
तकलीफ घटने के लिये औषधियां देते हैं परन्तु उनका
प्रयोग बिना किसी उत्तम चिकित्सक के नहीं करना चाहिये ।

❀ मोती झरा ❀

यह भी छूत का रोग है इसमें पहिले हलका ज्वर होता है
और उसके २४ घण्टे पीछे पीठ और छातीपर सुर्ख सुर्ख
दाने निकल आते हैं ।

❀ रोग का कारण ❀

इस रोग की छूत का समय बचपन है दूध पीने वाले
प्रायः ४ वर्ष से कम उमर के बच्चे बहुधा इस रोगमें ग्रस्त
होते हैं चार वर्ष से लेकर १२ वर्ष तक की उमर के बच्चों
को यह रोग बहुत कम होता है १२ वर्ष से अधिक उमर
वालों को यह रोग कभी २ होताहै इस रोग की अवधि लग
भग १२ दिन की होती है पहिले साधारण ज्वर होता है
जिसके २४ घण्टे बाद गरदन, पीठ, और छाती पर कुछ
सुर्ख दाने निकल आते हैं जिनमें १२ से २४ घण्टे के अंदर
साफ पानी भर जाताहै तीसरे दिन दाने पककर पांचवें या
छटवें दिन सूख जातेहैं और सातवें आठवें दिन खुरंड झड़
कर वहां गुलाबी दाग रह जातेहैं यदि सब दाने एकही बार
निकल आवें तो रोग एक सप्ताह में ही दूर होजाताहै किन्तु
दाने प्रायः दूसरे तीसरे दिन चालिस कभी २ चौथे पांचवें
दिन तक भी निकलते रहते हैं इसलिये रोग के दूर होने
में अधिक देर लग जातीहै इस रोग के [illegible] किसी
रोग के होने की सम्भावना नहीं है ।

के नाक, मुख, और पसीने के जल में पाया जाता है यह
कीट सूक्ष्म दर्शी यंत्र द्वारा देखा गया है छूत का माद्दा
वस्त्रों, बरतनों, पुस्तकों, और चिट्ठियों इत्यादि के द्वारा
तनदुरुस्त मनुष्यों तक पहुंच सक्ता है यह रोग भी बहुधा
बच्चों को होता है।

❀ रोग के लक्षण ❀

छूत लगने के १० दिन पीछे रोग के चिह्न आरम्भ हो
जाते हैं प्रथम जाड़ेसे ज्वर, सिरमें दर्द जुकाम होजाता है उ-
बकाई और छींक आती हैं आवाज़ बैठ जाती है तीसरेसे
आठवें दिन तक पहिले चहरे पर फिर सब अंग पर दाने
पैदा करे जाते हैं ज्वर घट जाता है सातवें आठवें दिन दाने
मुरझा भुसीसी उड़ने लगती है दश दिनमें ज्वर जाता र-
हता है यदि और कोई रोग शामिल हुआ तो देर में जाता
है कभी २ यह रोग असाध्य होजाता है बदन पर सियाह
दाग पड़जाते हैं पेटमें दर्द और काले रंगके बदबूदार दस्त
आते हैं और रोगी मरजाता है।

❀ चिकित्सा ❀

इस रोग के दिनों में जुकाम के लक्षण प्रतीत होते हो
रोगी को अलग कमरेमें ठंडी हवा से बचाकर रक्खे बाहर
न निकलने दें अन्य निरोग बच्चों को उस के पास आने
जाने न दें प्यासमें ठंडा पानी या लेमुनेड दें ज्वरकी अधि-
कता में जब कि हरारत १०२ दरजे से अधिक हो हरारत
घटाने के लिये ठंडे पानी या गुनगुने पानीमें स्पंज या न-
रम कपड़ा भिगोकर निचोड़ कर उससे बदन को पोंछ दें.

❀ चिकित्सा ❀

रोगी को सरदीसे बचाये रक्खें और चार पांच दिन तक बिस्तर पर लिटायें रहैं उदर को मलसे स्वच्छ करने के लिये कुछ औषधि देकर कब्ज न होनेदें उदर इस औषधि से स्वच्छ होता है (१) मेगनेशिया सलफास ४ ड्राम टिंकचर सना २ ड्राम, पानी ४ औंस तक सब को मिलाकर प्रातः काल पिलावें—तत्पश्चात् (२) सिरप फेरी आयोडाई १ ड्राम, एक औंस पानी में मिलाकर सुबह श्याम देते रहें।

यदि रोग अंडकोष की ओर चला जाय तो कानके पीछे असल रोगके स्थान पर राई या प्लास्टर लगाकर सूजिश पैदा करें जिससे रोग अपने असल स्थानपर आजावे यदि वरम अधिक हो तो उस पर कई जौंके लगवाव नहीं तो टिंकचर आयोडियन दिन में तीन चार बार लगाया करें या उसे फलालैन से सेंक कर उस पर बेलाडाना ग्लीसरीन का लेप कर के ऊपर से गरम रुई रख कर बांधदें और यदि गांठों में पीप पड़जाय तो चीरा देकर उस की उचित चिकित्सा करें भोजन हलका जल्द पचने वाला जैसे बारलीवाटर, दूध, आरारोट साबूदाना आदि दें।

❀ ताऊन, प्लेग या महामारी ❀

यह एक प्रकार का छूत से लगने वाला तीव्र वबाई ज्वर है जिसमें अंगकी बगल और जांघ और कान के नीचे की गिलटियां सूज जाती और पकजाती है अथवा फोड़े नि-कल आते है इस रोग का कारण डाक्टर लोगों ने एक कीट ख़्याल किया है इस रोग के अनेक रूप हैं एक रोग [illegible]

❀ नुसखा ❀

पारक्लोराइड आफ़ मर्करी अर्थात् रस कपूर ४ ड्राम, हाइड्रो क्लोरिक एसिड अर्थात् नमक का तेजाब, एनी लिन बिलू अर्थात् नीला रंग ५ ग्रीन, पानी ३ गेलन, रस कपूर को पानी में मिलाकर पीछे तेजाब नमक का और रंग मिलावें यदि तेजाब नमक न मिले तो उसके स्थान में खाने का नमक आधी छटांक डाल दें और फिर काम में लावें यह दवा बवाई कीट के नाश करने के लिये बड़ी ही लाभदायक है।

❀ चिकित्सा ❀

जब कोई मनुष्य इस रोग में ग्रसित होजाय तो यह औषधि लाभदायक होगी।

(१) नुसखा

लाइकर एमोनिया एसीटेटम १ ड्राम, स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक २० बूंद स्पिरिट ईथर नाईटर २० बूंद, स्पिरिट क्लोरो फार्म ५ बूंद, टिंचर डैजी टेलस ५ बूंद, ब्रांडी २ ड्राम एकुआ कैमफर १ औंस, ऐसी एक खुराक हर छटे घंटे दें यह औषधि तेज ज्वर में बहुत हितकारक है।

(२) नुसखा

लाइकर हाईड्रार जीरा इास्क्लोराई डाई ३० बूंद, टिंचर सिन कौना ४०. बूंद टिंचर स्ट्रोफेनथस ४ बूंद, स्पिरिट कै मफर १० बूंद, एकुवा कैमफर १ औंस। ऐसी एक खुराक दिन में तीन चार बार दें जब बुखार

नीबू, सेब, खट्टा अनार, या सन्दल इनमें से जिस चीज़ का शर्बत मिल जाय उसको पानी में मिला कर बर्फ से ठंडा करके पिलावें दिलकी कमज़ोरी और हाथ पैर की जलन दूर करने के लिये चन्दन और कपूर गुलाब जल में घिसकर और उसमें कपूर तर करके छाती पर रक्खें और दवाउल मुश्क या याकूती इत्य खिलावें।

दर्द सर और बकवाद के दूर करने के लिये सिर का, गुलाब और गुलरोगन में कपड़ा तरकर के रोगी के सिरपर रक्खें और चन्दन या खसके इत्र या कपूर का लखलखा सुघावें—गिलटियों पर बकायन या नीम के पत्तों की पुलटिस बांधें या आक का पत्ता या घीगुवार का गूदा गर्म करके बांधें जब गिलटियों में पीप पड़ जाय तो नश्तर देकर उस को साफ करादें और घाव के भरने का मामूली इलाज करें।

इति श्री जर्राही प्रकाश पांचों भाग समाप्तम्।

श्री चौथमल्ल ग्रन्थमाला का पुष्प नं. ७

॥ श्रीमतेऽर्हते नमः ॥

श्री जैन पद्य-रामायण

संशोधकः—

श्रीमज्जैनाचार्य श्री चौथमल्लजी म० सा० के सम्प्रदायस्थ
स्थविरपद विभूषित पूज्य गुरुदेव श्री शार्दूलसिंहजी
महाराज साहब के प्रधानशिष्य मुनि
श्री रूपचन्द्रजी महाराज

संग्राहक व प्रकाशकः—

जैनोपदेशक वैद्य धूलचन्द सुराणा,

मु० पो० पीपाड़ सीटी (मारवाड़)

मुद्रकः—

पं. बालकृष्ण उपाध्याय,

नारायण प्रिंटिंग प्रेस, ब्यावर (राजपूताना)

विक्रमार्क १९९७
वीराब्द २४६७
चौथ संवत् ११८

प्रथमावृत्ति
१०००
मूल्य २।) रु०